CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9-1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

## किस्किन्धा तथा सुन्दर कान्ड

भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य

लेखक —
महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

सम्वत-२०२० वि०, साके १८८[illegible], ईसवी १९६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नाथ' ग्रन्थावली के सोलहवाँ पुस्प—

# साहित्य-रामायन

## ( किस्किन्धा तथा सुन्दर कान्ड )

भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य

ले० महाराज कुमार दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ

लेखक के सर्वाधिकार सुरच्छित

सम्बत-२०२० विक्रमी, साके-१८८५, ईसवी सन् १९६४

प्रकासक—नव साहित्य मन्दिर, रैन बसेरा, दलीपपुर,
जि० साहाबाद ( बिहार )
टेलीग्राफ आफिस—जगदीसपुर

प्रथम संस्करन ] [ मूल्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

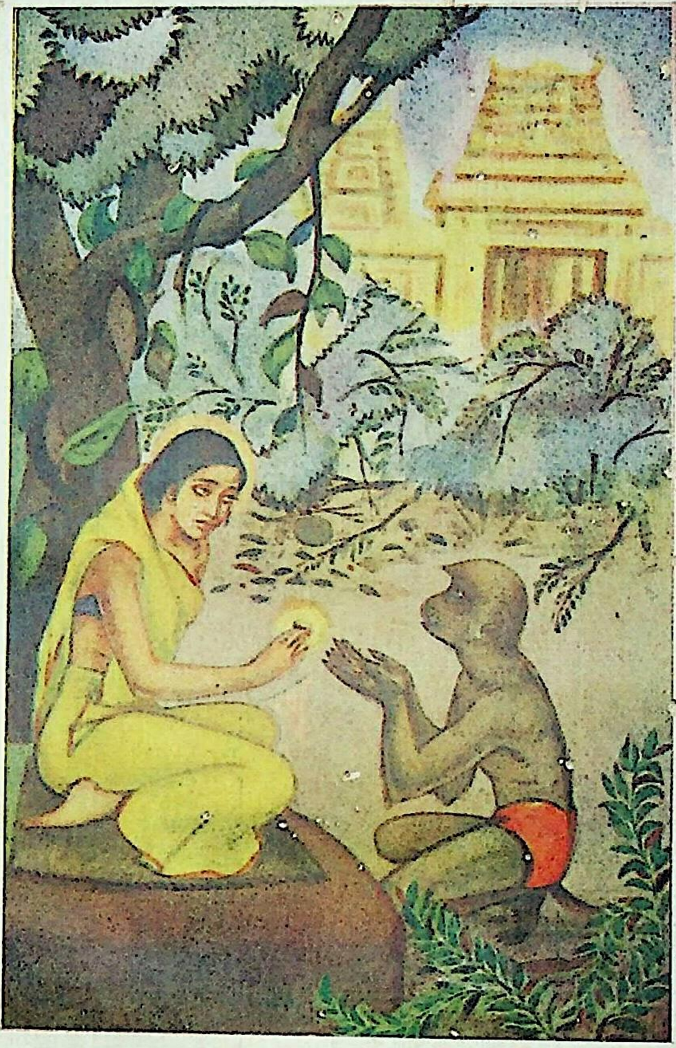

ोरि विनती राम से कहवि । भाँति बहुत समुझाइ निहोरवि ॥
सहि दुख सिय कातरि भइलि । जीवन-बोझ नाव लदि गइलि ॥
आगे कछु हौंस न बाय । अस ना होय जे बाय नसाय ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## समर्पन

सिया-राम के पदकमलन में मनसा वाचा कर्मना—

विरुदायवली निज मो अघ करनो।
गुनि प्रतीति मन कीरति अपनी॥
करबि उचित जे मो हित मनलीं।
हम त नाथ, अनाथ, होइ गिरलीं॥

'नाथ'
रैन बसेरा
दलीपपुर
१—१—१९६४ ई०

## सप्रेम भेंट

सरस्वती के साहित्य-मन्दिर के सरस मर्मज्ञ पुजारिन के
तथा भगवत भक्त वर सन्त समुदाय के
कर कमलन में सप्रेम भेंट।

'नाथ'
रैन बसेरा
दलीपपुर
१—१—१९६४ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## लेखक के अन्य प्रकासित रचना—

(१) ज्वालामुखी, गद्यकाव्य १९२९, सरस्वती प्रेस, कासी (२) गद्य-संग्रह १९३३ खड्ग विलास प्रेस, पटना। (३) हृदय की ओर, उपन्यास, १९३६ बाल सिच्छा समिति, पटना। (४) भूख की ज्वाला, शब्द चित्र, १९४१, जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, साहाबाद (५) भोजपुरी, लोकगीत में करुन-रस, १९४४, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। (६) नारी जीवन १९४५, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। (७) फगार की डायरी, प्रगतिसील साहित्य, १९४६, हिमालय प्रेस, पटना, स्टाकिस्ट. नव साहित्य मन्दिर, दलपपुर, साहाबाद। (८-९) वह शिल्पी था, तुम राजा मैंरक, लेखक कीकहानियों का संग्रह १९४६ हिमालय प्रेस, पटना, स्टाकिस्ट नव साहित्य मन्दिर, दलीपपुर साहाबाद। (१०) कुअर सिंहएक अध्ययन १९५६, अन्तरस्ट्रीय प्रकासन मंडल, पटना। (११) सामूहिक खेती १९५५, बयस्क सिच्छा बोर्ड, पटना (१२) भोजपुरी के कवि और काव्य, १९५८, बिहार रास्ट्र भासा परिसद्, राजेन्द्र नगर पटना (१३) एटम के युग में भोजपुरी काव्य १९६० अखिलभारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन बक्सर। (१४) गुनावन भोजपुरी काव्य (अध्यात्म) ६० नव साहित्य, मन्दिर, दलीपपुर, साहाबाद (१५) कुँअरसिंह भोजपुरी नाटक १९६२ विद्या-भवन खजानची रोड पटना।

## लेखक के अप्रकासित रचना—

(१६) डैन टूट सारस कहानी संग्रह १९४३, (१७) अतीत भारत राष्ट्रीय नाटक १९३० (१८) युवक युवती क्या जाने काम विज्ञान १९४४० (१९-२२) भोजपुरी लोक गीत में श्रृंगार, सान्त, वीर तथा हास्य रस १९४५ ( २३-२४ ) करार की डायरी २ भाग १९४४-४५ (२५) भोजपुरी निबन्धों का संग्रह १९४४ (२६) लेखनी की बहक स्फुट लेखों का संग्रह १९४५ (२७) बिरही हृदय या बिरह चालीसा १९३० (२८) ससि माला काव्य असमाप्त १९३६ (२९) रचाञ्जलि कविता संग्रह (३०) मालवा के राजा भोजदेव (१००५-१०५५) की भोजपुरी भासी प्रदेसों पर विजय तथा १६८ वर्षो तक सासन (३१) भोजपुरी भासा के ४० नया आविस्कृत सन्त कवि (३२) भोजपुरी के गत ५० वर्सों में विकास का सिंहावलोकन (३३ तब जब भोजपुरी पर कोई नहीं लिखता था (१९३३) ( ३४ ) भोजपुरी लोक कथा ( संग्रह )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

लेखक—महाराज कुमार श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह, 'न[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# आपन कुछ आवस्यक बात

## श्री गनेस

आपन भोजपुरी के पहिला दुगो काव्य ग्रन्थ 'गुनावन' आ 'ऐटम के युग में' छप चुकल रहन सऽ। संग्रह और सोध ग्रन्थ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' बाजार में आ चुकल रहे'। लेखनी फुरसतिआह अस अनुभव करति रहे। अपना बिमरिहा पत्नी के पटना एक महीना रहि के दवाई करा के घरे लौट भी चुकल रहीं। उन का बिमारी में पहिले से बहुत फायदा भी हो चुकल रहे। एह से ऊ भीर भी कुछ कमे हो चलल रहे। चित्त के वृत्ति चंचलाह ना रहे। ८ जुलाई १९६१ ई० के संझा के समय रहे। बदस्तूर टहरे जाये खाती रामप्रीत नाम के यादव नोकर से पुकारि के छड़ी मँगली। हाथ में छड़ी लेले आकास ताकत ऊ कहत निकलल—"कहाँ जाइल जाता? बदरी पेन्हाइल बाइ। वे बरिसले ना मानी।'

हमरों नजर आकास देने घूमलि। अल्हड, नवही बदरी, झूंड के झूंड में, आपस में धक्कम धुक्की करत, झगरत, हँसत कूदत, भागल, पछिम का ओर चलल जात रही सऽ। देखि के मनऽ हरखि उठल। नोकर से, "बरिसे के उमीद नइखे बुझात हो" कहि के चल देलीं। बदरी खाती पेन्हाइल सब्द के प्रयोग आ आसाढ़ी संझा के सुहावन दृस्य दिल आ दिमाग पर अइसन प्रभाव डललन सऽ कि टहलते टहलत मुँह से कहाये लागल —

पेन्हाइल गाइ बदरी बाइ, हड़बड़ाइल पवन पुरबा बा
हँकले जाता जल्दी जल्दी ताकत कतहीं टीपुर—
धवरी बाइ, सोकनी बाइ, गोली कृस्ना, सँवरी बाइ–
पीअर। बाइ, कइली बाइ, कबरी कल मुही बाइ,–

× × ×

टहरते टहरत यही तरह दू तीन दरजन जोडा लाइन मुँह से आपे आप कहा गइली सन आ कहाते रहली सन जब रैन बसेरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



में पहुँच के कलम पकडा गइल । कविता बारह बजे रात तक लिखाते गइलि । बिसय बे सोचले समुझले अपने आप एक पर एक टेकुरी का सूता अस धरात गइल । कुछ दरसन आइल, रितु बरनन भइल, ग्रीस्म, नरखा दूनो कहा गइल । बाकी प्रकृति महारानी के नोकर चरवाहा पवन का बदरी के गइअन के आकास का बधारि में हाँकत बटोरत आ ऊँच बथानि में दूहे खाती ले जाये के प्रयास में एको छन के फुरसत ना मिलल । ओह वेचारा के परेसानी के एक एक बरनन, एक एक दौड़ धूप सब फुलझरी अस मन का मुँह से दिमाग में झरत गइल आ गनेस जी रूपी लेखनी तेज गति से ओन्हन के लिखति गइल । एही में सिङार भी आपन रंग जमावे से चूकल ना। हर उदीपन का साथे जबरन आ आ के सोझा खाडा होते गइल ।

त—एह तरह हाँकत बटोरत नोकर चरवाहा-पवन जब अपना असाढ़ी फउदि के दखिना खन्ड के ऊँचका टीपुर पर पहुँचल त अनायास परबरखन परवत पर राम जी लउक गइलीं—

जहाँ बइठल राम चन्द, लखन हनुमान साथे,
चिन्तित मुदरा में सोचत रहीं, गम्भीर गहन—
बात, गँभीर मन, पहाड़ के ऊँच एक सुन्दर चटान पर—
बरगत के नीचे बिछल कुस के चटाई पर।

× × ×

बस उहाँ के बरनन होखे लागल । चिन्ता मिलल करुना भाव त पहिले ही लाइन में बालमीक जी के सर बेधल क्रौंच पंछी अस आ गइल रहे, बाकी मधुर भाव के अन्तद्वन्द भी एह असाढ़ी फउदि के दस्य के अवलोकन से सीता के स्मृति में उहाँ का मन में कहा उठे से बाजि ना रहल, बाकी दरसन का झीनी चादर से ऊ ओही घरी तोपाये भी लागल । त—एह तरह मानो प्रथम प्रथम राम के मन के सिङार आ सान्त रस के भाव के रूप में ही साहित्य-रामायन एह श्री गनेसी कविता में अवतरित भइल । त—एही क्रम में आँखि से आँसू गिरत देख के लखन का सुग्रीव के वादाखिलाफी पर रोस भी उमड़ आइल आ धनुहा उठि गइल । सिङार सन्त का बादे रौद्र रस भी आ टपकल । इहो घटना क्रम सास्त्र पुरान के इतिहास का खिलाफे अपने आप कहा गइल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बाल्मीक आ तुलसी बाबा त किस्किन्धा कान्ड में राम जी के ही पहिले रोसिअवले बा लोग। रौद्र रस आइल त राम के सान्त भाव, भी साथ आके ओके सान्त कइलसि। ओने लखन जी राम जी के मैत्री भाव के बरनन सुन के सान्त हो के हनुमान का साथे किस्किन्धा पुर चलली आ एने रामप्रीत इन्तजार करत करत ऊब के सामने आ के कहलन "त तीन डडियवा बीच आकास में आ गइलि। कब खाइल जाइ? भोजन ठंढ़ा गइल।"

बस लिखल बन्द हो गइल। दूसरा दिन सबेरे फेन कुछ लिखाइल, बाकी ऊ दिमागी प्रयास रहे। लेखनी ना चललि। अधूरी रचना का फाइल में कागज धरा गइल। जइसे प्रायः हर नयी रचनन का साथ हो जाइल करेला।

दू तीन महीना बीत गइल। ई सब बात बिलकुले भुला गइलन सऽ। अनायास एक राति घोर निद्रा में सपना देखलीं–हम कहीं एक अति रम्य फलल फूलल तपोभूमि का आस्रम में घूमतानी। ओकर छवि देखि देखि के गुनतानी,-'इहाँ के महात्मा तप करता? बड़ा सुन्दर प्रभावकारी तपोभूमि बा। टहरत टहरत उहाँ पहुँचलीं जहाँ से सामने एगो ऊँच चटान पर लताकुंज का भीतर एक महात्मा बइठल लउकत रहन। डेरात डेरात दबल पाँवे धीरे धीरे उहाँ पहुँचलीं। नीचे ही से माथा टेकि के नमस्कार कइलीं। महात्मा जी महान देव तुल्य दिव्य मूर्ति देवता अस चमकत रहीं। तेज जानों सूरज का किरिन अस मुख मन्डल से चारो ओर बगरत रहे। बड़े बड़े आँख, तेज से भरल, हाथ का पोथी पर टिकल रही सन। भहूँ, आँखिके पपनी भी ऊजर हो गइल रही सन। बाकी कसल सरीर, गोर बरन के सोना अस दमकत रहे। हमरा के सीस नवावत देख के महात्मा के ध्यान हमरा ओर जब भइल त हम अदब का साथ, डेराइल, धीरे से सामने पहुँच के, हाथ जोर के खडा हो गइलीं। ऊ देव मूर्ति हमरा ओर ताकि के मुस्काइलि आ कहलसि :–

"तुम अब तक कहाँ थे? मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता था? उस दिन की नई रचना में तुमने राम-चर्चा करके भी उसे अधूरी छोड़ दी? उसको पूरा करना युग की माँग को पूरा करना होता?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हम हक्का बक्का सा होके सोचे लगलीं। कवना रचना के महातमा जी कहतानी ? कुछ ना याद पड़ल तब पूछ बैठलीं, "भगवन—कवना रचना के हुकुम होता ? याःदि त नइखे पडति ?"

हमरा एह प्रस्न पर ऊ देवता गम्भीर भाव से हंसलन आ कहलन—"जन कल्याणी चर्चा की बातें लोग ऐसे ही भूल जाया करते हैं" बस अतना कहिके ऊ दिव्य मूर्ति आकास में धीरे-धीरे उठे लागलि आ देखते देखते बिलोप हो गइलि। हम घब डइला अस हो के "ऊ कवन रचना रहल जवना के देवता जी संकेत कइली हाँ" सोचत सोचत लवटलीं। बगले में एगो झरना गिरत लउकल। उहां जाके जल पींअली आ चुप बइठ के दृस्य देखत देखत सोचे लगलीं कि "ऊ कवन अधूरी रचना रहे जवना के संकेत मिलल हा ?" तबले बदरी के गरजला अस आवाज भइल आ ओकरा बाद हमरा बहुते मधुर सान्त बानी में सुनाई पडल—मानो केहू ऊपर आकास से समुझावत होखे—

"आस्था, निस्ठा, विस्वास, त्याग, लगन, प्रेम" अतना सुनते रही तवले बुझाइल कि केहू झकझोरि के हमरा के जगा देलसि।

नफे नींद ना आइल। सबेरे तक इहे सोचत रहि गइलीं कि "ऊ कवन अधूरी रचना रहलि हा जवना में राम चर्चा हम कइले रहलीं हॉ।" सोचत सोचत ओह कविता के ख्याल आइल आ फाइल खोजि के कविता निकाल के जब पढ़लीं त भाखा आ विसय दूनो बड़ा जोरदार बुझाइल। बस ओही घरी लिखाये सुरु भइल आ किरिन निकसत निकसत ऊ सरग समाप्त हो गइल। ओह पर पालीस बाद मे कइल गइल। त एह तरह से साहित्य-रामायन के श्री गनेसी सरग लिखा गइल। एकरा बादे लखन के अनुपस्थिति में राम के सीता बिछोह से आ लखन का लवटे में देर भइला से चिन्ता आ राम के विरह व्यथा वाला सरग भी ओही छन्द में लिखाइल। बाकी ओकरा के बाद में चौपाई में ही परिनत कर दिआइल। त जब ई दुगो सरग वे सहारा के लिखा गइलन सन तब भाव आइल कि महात्मा के चेतावनी का आधार पर पूरा रामायन काहे ना पूरा कइल जाय ! आ तब क्रम से वालमीक आ तुलसी के पद के कथा क्रम के मन में पचा के आ तब ओही पृस्टि भूमि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर ओकर बरनन नये सिरे से होना सुरु भइल आ किस्किन्धा कान्ड प्रारम्भ से लिखाये सुरु कइल, गइल। ओह क्रम मे श्री गनेसी सरग, दसवाँ सरग आ ओकरा बाद राम के बिरह वाला सरग एगाहहवाँ सरग के नम्बर पवलनसन।

चूँकि यह रामायन के लिखे के आ पूरा करेके प्रेरना अपना निरछर भट्टाचार्य नोकर से आ एक अज्ञेय देव मूर्ति से मिललि रहे एह से कथा क्रम में प्रतिपादित बिसय में से ढेर के प्रेरना जन सांधारन आ सन्त साहित्य से हमरा मिलत गइलि। हमार एकरा बादे ई आदत हो गइलि कि यह रामायन का बारे में छोट बड़, मूर्ख, पन्डित, आस्तिक नास्तिक, साधु सन्त, सबका से जब जब मोका मिलल जिकिर करत गइलीं आ जे चाहल ओकरा से सुनवलीं भी। ख्याल रहल कि सायद ओकरो से कुछ नया सुझाव मिल जाय। तसहीं बिबिध रामायनन के सँगा के पढ़लीं आ सन्त साहित्य के भी बिसेस तरह से अध्ययन करत गइलीं। यह सब के फल ई होत गइल कि धर्म तत्व, साहित्व, समाज, नीति, मनो विज्ञान कथानक, काव्य आदि के कतना कतना बात दिमाग में पचत गइली सन आ फेन ओकर प्रतिक्रिया का रूप में स्वतन्त्र विचार रचना काल में कलम से उतरत गइलन स।

त-एह प्रयास में ढ़ेर ढ़ेर कटु मधु अनुभव भइलन सऽ जवनन के स्मरन करके हँसी छूटे ला। भक्त सन्त या साधु से बात करत के ई बुझाय कि ऊ निरछर दम्भी भक्त या साधु हमरा के महान मूर्ख समुझत होखे। अइसन ऊ बेढ़ंगी बढ़ंगी बात कहे, बेढ़ंगी बेढ़ंगी आलोचना करे—कबहीं भोजपुरी सिखावे, कबहीं धर्म सिखावे कि मन खीझि उठे, बाकी तबो धीर ना खोयीं। तसहीं बिद्वानन के साथ वार्ता के भी फल रहल जे ही बिद्वान कहे जाये वाला ब्यक्ति से चर्चा चले से ही हमरा के अपना से बहुते बहुते नीच स्तर के बिद्वान या कवि या लेखक मानि के बेढ़ंगी बेढ़ंगी बात आ आलोचना करे आ आपन पन्डिताव के धाक जमावे के कोसिस करे कि ओकरा दयनीय दसा पर खीस आ तरस आवे। केहू व्याकरन सिखावे, केहू छन्द बुझावे, केहू भोज-पुरी गल्ले पढ़ावे लागे। त एह निन्दा से हम दुःख ना मानीं। आलोचना के सोचीं समुझीं आ कबहीं कबहीं ओहसे लाभ भी हो जाइल करे। बाकी कुछ लोग अइसन बिद्वान भी मिलत गइलन जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सहानुभूति का साथ सुनलन, समझलन, आ प्रोत्साहन देलन, सुझाव बतलवलन जे लाभप्रद सिद्ध भइल।

एह बिबिध अनुभव के जिकिर कइला से कटुता बेकार बढ़ी। त एह तरह साहित्य-रामायन के श्रीगनेस के प्रेरना के इतिहास सही सही पाठकन के सामने हम एह से रखली हाँ कि पाठक जानि लेसु कि ई हमरा पन्डिताँव या प्रतिभा के फल नाहऽ एह मे कवनों पारलौकि सक्ति ही हमरा माध्यम से आद्योपान्त काम करबलसि हा आ बल दे दे के एह बुढ़ापा में—यह थकित सरीर से बिपत्ति काल में भी एकरा के पूरा करवलसि हा।

## भगवत सहायता आ कइसे लिखाइल

त एह तरह साहित्य--रामायन के श्री गनेस भगवत प्रेरना से भइल आ ओकरे प्रेरना से अतना बिकट परिथिस्ति में रामायन तैयार हो गइल। त--एकर भूमिका भी उहे भगवान लिखिहन जे एकरा के पूरा करवलें। आ भगवान का बाद अगर केहू भूमिका लिख सकी त उनकर प्रतिनिधि जनता जनार्दन में से केहू भक्त रसिक साहित्य मर्मज्ञ बिद्वान ही सायद हमरा सरला पर ही लिखी। हम अपने चीज के भूमिका का लिख सकतानी ? सिवाय एकरा के कि जइसे अब तक तीन बरिस में उनकर जस गवलीं उहे इहों अपना कथ में कि कइसे कइसे राम के मदत यह रामायन का रचना में सदा मिलति गइलि आ कठिन से कठिन परिस्थिति में भी रचना क्रम ना रूकल और कहिये का सकतानी ?

त—भगवान त प्रथम प्रेरना दे के कहाँ दो लुप्त हो गइलन, बाकी जनता जनार्दन का ओर से केहू ना केहू उनके प्रेरना से हमरा जाने जब जब साहित्य-रामायन के सीरजन के काम में सिथिलता आवत गइल तब तब कवनो ना कवनो तरह से मन में रह रह के प्रोत्साहन के भावना अइसन जाग्रत करत गइल कि फेन-फेन कलम पकड़ाते गइल आ लिखाये के काममें कबहीं ह्रास ना आइल। गत तीन बरिस के समय जवना में साहित्य-रामायन के श्री गनेस भइल आ किस्किन्धा आ सुन्दर कान्ड लिखा के तैयार भइल आ प्रकासित भी भइल सब कुछ सुख सौभाग्य के सामग्री रहत भी विधि के प्रेरना कहीं भा अपना प्रारब्ध कर्म के भोगाभोग कहीं अइसन, बिपत्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मय, दुखद, कस्ट साध्य, अस्थिर तथा सदा मन के उत्तेजित, चिंतित करत रहेवाला समय गुजरल कि अपना जीवन के सबसे बड़का विपत्ति ग्रस्त १९४१ से १९४६ तक के राजनैतिक जेल आ फरारी जीवन के बिपदा भी माँत कहाई। तब बाहरी द्वन्द रहे। देस खाती सब करना धरना रहे आ ओहमें जो घर का ओर से बिपत्ति उठावल गइली सऽ जवन से आपन आर्थिक कठिनाई पराकास्टा पर चहुँपल रहल से सब सहर्स सहलि गइल आ अर्थ पिसाच से लड़के सफलता लावल गइल। ओह सबसे खुलम खुला लड़ेके तब हिम्मत रहल आ सोभा भी देलस, बाकी एह तीन बरिस में त अर्थ पिसाच से पिंड छूट के भी अपने खास परिवार में अइसन कुमति आइलि आ भगवान ओकरा साथे धर्म पत्नी के मृत्यु-रोग अइसन पकड़ा देलन कि अपना किंकर्त्तव्य बिमूढ़ हो हो के सब बरदास्त करत आ घुट-घुट के मरत रहना पड़ल। उहे आपन कहे जाये वाला लोग अइसन अइसन उप-द्रव करावल कि हमरा सामने दू तरफो खाईं सदा खोदात गइल आ हम दायें बायें के ओर टस से मस ना हो सकत रहो। 'भइ गति साँप छुछुन्दर केरी' आ 'कहीं त माय मारी जाय ना कहीं त बाप कुत्ता खाय' के हालत रहे। सब सहि के, दुस्मनन के वार के जबाब ना देके, बुद्धि-मानी से, धीरे-धीरे नाँव के किनारे लगावे खाती, जमके पतवार पर बइठल रहे के सिवाय दूसर न डाँड के थपकी के आस रहे न पाल के। पाल तानीं त नाव उलट जाय, डाँड चलाईं तबो बैलेन्स बिगड़ जाय। एह बिपत्ति के पराकास्टा तब पहुँचल जब अपना पत्नी के सेवा सुस्रुसा करेके वास्ते भी हम अकेल छोड़ दिअइलों आ पत्नी मरन सज्या पर १॥ बरीस ले परलें रह गइली। एह कठिन समय में भी, जब केहू बड़का धीरवान के भी धीरज टूटल समुझल जा सकता, अपना के कहाँ से दो भगवान बल देत गइलन आ जब जब रामायन के सिरजन में रुकावट आवत गइल, चाहे ऊ—अपना बुधि के थकान, भा सिथिलता, भा सूझ के अभाव हो, भा बाहरी दिमागी के परेसानी केहो, सब में कवनो ना कवनो माध्यम से हमारा प्रोत्साहन भा रहनुमाई, भा सूझ-बूझ मिलत गइल आ रामायन लिखाते गइलि। ओने पत्नी के सेवा सुस्रुसा करतानी आ जब उनका नींद आ जातिया त कलम चलावे लागतानी। पत्नी के देहावसान के विपत्ति में आ सर्वत्र से ओह बिपति में भी बहिस्कृत हो गइला पर जब सोक सन्ताप के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ठिकाना ना रहत रहे, सब हित कहे जाये वालन का ओर से आक्रम कारी प्रवृत्ति के ही जोर रहत रहे आ आपन चिन्ता, व्यग्रता तथा मानसि अस्थिरता परा कास्टा पर सदा पहुँचले रहत रहे, तब भी कहाँ से दो अपना यह सबसे लड़े के आ रामायन लिखे में मन बहलवले रहे के ब भगवान का प्रेरना से कइसे दो सदा मिलते गइल। आ सदा म का ओह समय में भी जब बुझाय कि सगरो के बवंडर हमरे पर टूटि के हमरा के उडा ले जाइल चाहता, कहाँ से दो--कइसे दो यह रामा यन का गोदाई में ही सान्ति, आनन्द आ समय काटे के साधन मिलत गइल। ई हम बात नइखीं बनावत सत प्रति सत सही घटन के बरनन करतानी। एह से केह का दुःख ना माने के चाहीं; बल्कि ईस्वरी मदत पर भरोसा करेके सिच्छा लेवे चाहीं। हम अपना हर बिपत्ति में अपना अइसने स्वभाव के दृढ़ता पावत गइल बानी। जवना के प्रतिक्रिया ईस्वर आस्था मे परिनत हो हो के 'गुनावन' के छन्दन में व्यक्त भइल बाड़ी स आ ओकर प्रतिक्रिया रूप 'ऐटम के युग में' नामक काव्य पुस्तिका रचाइल।

त—एह परिस्थिति के ज्ञान हो गइला पर पाठक हमरा साथ एह बात से सहमत जरूर होखिहन कि एह साहित्य-रामायन के एह दू कान्डन के सिरजना कवनो तपोभूमि में—सान्त वातावरन में नइखे भइल बल्कि जीवन के महान से महानतम संघर्स के घड़ी में ही लिखाइल बा आ एही से एह प्रयत्न के हम अपना जीवन के सबसे बड़की तपस्या मानतानीं, सबसे लमहर भगवत सहायता—अनुकम्पा मानतानीं। जवने के प्रतिफल स्वरूप सगरी बिजय मिलल आ सब अंधड़ बवंडल अपने बुता गइल। आ जे जे अइसन कइल आपन गलती खुद समुझलेल। त—अइसन घटना के हम जवना में सुरू से अन्त तक सदा अदृस सक्ति ही सहायता करत गइलि बाइ आ जरत आवाँ में सरदूल का अंडा अस हमरा के निदाग बचा ले ले बाइ, हम भगवान के प्रेरना, सहायता आ बल प्रदान ना मानबि त का मानबि? ई ना रहित त हम आपन सक्ति आ साधन नइखीं देखत कि यह तुफान में से हम बिजयी अस बँचि के कसहूँ निकल सकितीं आ रामायन लिखा सकित।

संसारीये वाताबरन ना रामयन के सिरजन के सिलसिला में भी हम साँच कहतानी इहे अनुभव सदा होत गइल कि जब जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आपन प्रतिभाके सक्ति थाकि के, हारि मानि के, ई सोचिके कि अब आगा का लिखीं, ई प्रसंग कइसे सुलझाईं, इहवाँ त अन्हार हो गइल, आगे कुछ लउकते, नइखे-कइसे कलम चलो, का लिखीं, कुछ बुझाते नइखे, कलम धऽ देलीं आ महीनन बीत गइल तब तब अपने आपे अपना हृदय का हृदय में, मन का मन में, बुधि का बुधि में के सोचले समुझले कुछ अइसन सूझ एक-बा-एक उठ खडा भइलि कि ऊ जिच जहाँ पहुंच के कलम धरा गइल रहे खुद बखुद हल हो गइल एगो बुझाइल की बुद्धि का आँखी में केहू अँगुली डालि के राह दिखावत होखे आ सामने अँजोर के-प्रकास के लाम लाम किरिन ओह पथ पर फैल के, सगरो अँजोर अस जानो कइले होखे। जहाँ भटके के कुछ कारन नइखे सब साफ लउकता। बस ओही छन बिचार धारा दौड़ पड़लि आ जइसे राह भूलल सूरदास के केहू हाथ पकड़ के राह धरा दे आ सूरदास डंडा ठेंघत ओह पर डेगगर चले लागसु, तसहीं आपन लेखनी भी ओह दिसा में दौड़े लागल। अइसन अवसर कबहीं बुधि में जिच पैदा भइला के घंटा दू घंटा बाद, कबहीं एक दू दिन बाद, कबहीं हप्तन बाद आ कबहीं महीना दू महीना बाद सामने आवत गइलन सऽ आ सहायता मिलत गइलि, आ जब अइसन घड़ी आवत रही स तब अतना तेजी से गद्या भा पद्य में बिचार दौड़े लागत रहे, कि तब सबके सब कइसे संजोइ के, इकठा कइ के कइसे जल्दी से जल्दी अंकित करके रखि लिहीं कि ओन्हन में से कुछ भुला ना जाय के भाव उत्पन्न होखे लागत रहे। कबो कबो त ई हड़बडी बिचार स्रोत के प्रवाह में रुकावट डाले लागति रहे।

तब जो कलम कागज ना मिलल त जमीन पर, दिवाले पर डंटा से या कोयला से मुख मुख लाइन टँका जात रहीं सऽ जवनन के बाद में पढ़ि के उन्हन के आधार पर पूरा प्रसंग बतावल जात रहे। अइसनो अवसर अइलन सऽ कि जब जिच हटल त चौपाइये में भा छन्दे में बिचार व्यक्त होखे लागल आ पूरा प्रसंग पद्य में ही कहा गइल। अइसन परिस्थिति में बिचार के प्रसंग आ मुख मुख लाइन याद कर लिआत रही सऽ जे बाद में जल्दी से जल्दी समय में कागज पर फेन से लिखात रही सऽ। यह प्रयास में कुछ उहे लाइन उठि आवे आ लिखा जाय आ कुछ ओही के आधार पर नया रचना हो उठें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पद्दी के लेखक लोग मूड कहे ला। हमहूँ ४५ बरीस से लिखतानी, आ मौलिक लेखक हईं, आ मूड पावत आवतानी; बाकी ओह मूड में आ एह में महान हमारा अन्तर सदा बुझात गइल जवना से एह के हम पार लौकिक सहायता या प्रेरना ही मानतानी जे अपना सक्ति के परे के चीज बुझाले।

त—अइसन अइसन छोट बड़ बहुत बहुत अवसर अइलीं सन जवना में ढेर भुला भी गइलीं सन। बाकी तबो मुख मुख स्थान त याद ही बाड़न सऽ। दू एक उदारहन का रूप में नीचे उलेख कर देल अच्छा होखी।

किस्किन्धा कान्ड के सातवाँ सरग (प्रस्ट २९) में जब बालि का राम के बान लागि गइल आ ऊ राम के सो झा अइला पर अमनख मान के राम के बहुत साफ सब्दन में ब्याध अस छिप के तीर मरला के घोर निन्दा कइलसि तब राम जी जे उत्तर देलीं से बाल्मीक आ तुलसी कृत रामायन के पढ़ि के उत्तर रचा के चौपाई में बँधा गइली सऽ। बाकी मन का एह उत्तरन से सन्तोस ना भइल। हमेसा इहे बुझाय कि ई उत्तर बालि के तर्कन के पूरा माकूल करे वाला उत्तर नखइन स बुझात। बस बौधिक जिच पैदा हो गइलि आ कलम धरा गइल। मन ब्याकुल हो ऊठल। अब का लिखों ? बुद्धि माकूल जबाब कहाँ ले ढूँढ़ि निकासो ? दू गो महान पथ प्रदरसक माहत्मा कवि के दिखावल उक्ति से परे नयी उक्ति, नया जबाब आ तर्क जे बालि के मुख बन्द कर दे कहाँ से सोचि के निकासो ? कुछ जबाब ना सूझल आ दूतीन महीना ले काम रुकले रहि गइल। कुछ लिखाय भी त बेगार टरला अस। लिखे में मन ना लागे। एक दिन देर से बेर बिसवत टहरे निकललीं आ सुनसान नहर पर टहरत टरहत बालि के प्रस्नन के जबाब अपने आप कहाये लागल। चौपाई में खाली धर्म-तत्व के नीव पर जबाब भुलभरी अस निकले लागल। नव बजे रात तक नहर पर टहरत टहरत सारा उत्तर कहा गइल। हर प्रसंग के मुख मुख चौपाई स्मरन भी कर लिअइली सऽ। रैन बसेरा पहुँच के सारा उत्तर टँका गइल। बाकी ओकर ऊ रुप ना उतर सकल जे मुँह से ओह घरी निकलल रहे। ओह चौपाइन के प्रवाह, सुनरता, उनके बोधता आ सहजता अतना सुन्दर रही सन कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ओन्हन का सामने स्मृति रुप में हमारा इन्हन के रुप बहुत बहुत फीका अबले बुझाला।

तसहीं सुन्दर कान्ड के बारहवाँ सरग में प्रवरखन गिरि पर हनुमान से चूड़ामणि पाके राम का जे सोक भइल आ बाद में लज्जा आ क्रोध आइल कि हमन के बिअहलि हरा गइलि, पता भी मिलल त हमन बटोर के इन्तेजार कर तानी ? आ तब जे अपना के धिक्कार दे के धनुस बान उठा के उहाँ का चल देलीं। आ तब जब लखन आ सुग्रीव धाइ के गोड़ पर गिरलन त सालीनता बस बइठ त गइलीं बाकी क्रोध के आवेस सान्त ना भइल आ ओह घरीं अपना सहायक न के ओन्हन के विध्वंसक रूप में ही स्मरण कर-करके आह्वान करकर के जे कविता कइले बानी से भी नहर पर एक संझा के कहाइल। बाकी एह चौपाइन में बाद के ढ़ेर संशोधन अइसन बदलल गइल कि ओन्हन के कृत्रिमे रूप रहि गइल। मूल वाला रूप नष्टे अइसन बा। सुन्दर कान्ड के सरग २ से ६ तक में ढ़ेर स्थान जे सीता के बिरह, त्याग, तपस्या, पातिव्रत-धर्म, देस-प्रेम, पति-प्रेम, कुल-मार्यादा के सम्बन्ध के बाड़न सन जहाँ सीता के चरित्र पराकास्टा के पहुँच गइल बा, कबहीं सूतला में सपना देखत के, कबहीं टहरत आ काम करत क जूनि सुरता पर अइलन सऽ। लंका के दृस्य लिख गइला पर अक्तूबर १९६३ में वेस्यालय वाला दृस्य एक दिन अनायास उठि आइल आ पीछे से छपत के जो डाइल।

त - एह सब घटनन के सुन के पाठक भी हमरा बिस्वास से सायद सहमत होखबि कि साहित्य-रामायन के सिरजन में हमार आपन आज तक के बुद्धि आ प्रतिभा ओतना काम नाही कइलसि जतना काम कवनो अदृस्य सक्ति परोछ से राह सुझा सुझा के हर जिच के हल कर करके आगे बढ़ावति गइलि आ तबे अब जब ग्रन्थ छपल त देख के अनुमान दृढ़ हो जाता कि ऊ सही बा काहे कि कह जगहन क ऊ रूप जे ओह में निखरित बा अपने अबतक का अध्ययन में कहीं अन्यत्र ना पढ़े के मिलल रहे। ओही महान अलख 'अकल्पित' चेतन सक्ति के हम भगवान मानतानी बुद्धि बादी; युग ओकरा के जे मानें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## भोजपुरी में ही काहे ! हिन्दी में काहे नाहीं !

एह दूनो प्रस्नेनन के उत्तर हमरा इमानदारी के तकाजा के कारन साँच-साँच ई देना पड़ता :—

१—भोजपुरी में एह से कि एह में जे जें हम चहलीं आसानी से सहज रूप में, मनका अनुकूल बिना अधिका प्रयास के कहे आ रचे के से से सुन्दर से सुन्दर रूप में कहि आ लिख सकलीं।

२—खड़ी बोली हिन्दी के रूप में एह से नाहीं कि एह में जे हम चहलीं, जइसन सुन्दर, सरस, सरल आ भाव पूर्न ओह के बनावल चहलीं से अपना ४५ बरिस तक हिन्दी गद्य लिख लेला पर भी सहज, मन के अनुकूल, ओकरा के पद्य में उतारे के सक्ति अपना में नाहीं पा सकलीं। जब जब प्रयास कइलीं तब तब खड़ी बोली के पद्य रचना में बिफलते हाथआवति गइलि।

बाकी उहे काव्य सक्ति-भोजपुरी में जब 'गुनावन' 'ऐटम के युग में' काव्यन के भा साहित्य रामायन' के लिखे बइठलि त ना जाने कहाँ से दो ओकरा बल, प्रतिभा, सूझ सब मिलत गइल आ सफल रूप में ग्रन्थ तैयार होत गइलन सऽ! इन्हन के पहिले भोजपुरी में दू-चार बरिस पहिले तक कबहीं कविता करे के भा भोजपुरी के कालेज भा ग्रन्थन में पढ़े, लिखे भा अध्ययन करेके सिवाय सन्त साहित्य के हमरा कवो मोका भी ना मिलल रहे ?

एह कहला खाती हिन्दी के प्रेमी भाई हमरा के छमा करबि काहे कि साँच कहे खातीं केहू के केहू दोसी नइखे बना सकत आ हमार ई कहल ओतने साँच बा जतना ई साँच बा कि हम यह घरी जीअतानी आ साहित्य-रामायन के 'आपन कुछ आवस्यक बात' लिख रहल बानी।

हमरा पास एह कथन के पुस्ट करे के प्रमान में अपने भुक्त भोगी अनुभव बा। पुरनका द्विवेदी युग के लेखक लोग जाने ला कि १६१७-१८ में हमार कलम पद्य में ही पहिले पहिल लिखे सुरू कइलसि। ओह घरी आपन छेत्र पद्य आ 'गद्य काव्य' के ही छेत्र रहे। १९२३-२४ तक हम ब्रजभाखा में अच्छा कविता रचे लागल रहीं। खड़ी बोली के गद्य काव्य के छेत्र में त हमरा अपना प्रथम गद्य सिरजना में गद्य-काव्य के सर्ब प्रथम पुस्तक हिन्दी में लिखे के सौभाग्य द्विवेद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जी आ प्रेमचन्दजी का जीअते में १९३० के पहिलेओही लोग का कलम से मिल चुकल रहे। सायद १९२५ के लगभग के बात हेर। (कासी में फाइल ना रहला का वजह से ठीक समय नइखे दिआत ) इलाहाबाद से पं० राम नरेस त्रिपाठी कवि-कौमुदी आ अइसने कविता नाम के पत्रिका निकालत रहीं। ओकरा एक अंक में समस्या निकललीं 'मनकी'। हम ओह घरी के प्रथा के अनुसार ब्रजभाखा में पूर्ति लिखके भेजलीं—

ऊधो अब न रही सुधि तन की।
उतते बहुरि कान्ह मोहि हिलिहैं यह तो बात कहन की॥
कुबरी कूबर से उबरि कान्ह नहिं सुधि लैहैं बिरहिन की।
कर पुट विनती कहियो स्याम सों सुधि रखिहैं गोपिन की॥
हम तौं सकि भर धीर बधैहौं दसा सुधरिहौं 'मन की॥'

एह पूर्ति के कवि कौमुदी में ना छापि के त्रिपाठी जी हमरा पास लिख भेजलीं—" आप ऐसो सुन्दर काव्य प्रतिभा पाकर ब्रजभाषा में क्यों लिखते हैं ? ब्रज भाषा के दिन लद गये। खड़ी बोली अपनाइये।"

ई बात हमरा तीर अस लागल। का काव्य प्रतिभा पर भाखा के प्रतिबन्ध लगावल उचित बा ? ई प्रस्न बार-बार मन के मन से उठला पर भी ब्रज भाखा छोड़ि के खड़ी बोली अपनावल गइलि। पिंगल आ कोस देखि देखि सैकड़न कविता लिखा गइलीसन। अलंकार ग्रन्थ पढ़ि के बिबिध छन्दन में बिबिध अलंकारन के प्रयोग भी कइल गइल। विसय रहत रहे वर्तमान युग के देस प्रेम, समाज सुधार, रितु बरनन आदि आदि। बाकी दू बरिस के अथक परिस्रम का बाद जब एह परिस्रम के बुझारत होखे लागल आ सुरु से सब रचनन के पुनरावृति कइलि गइलि त ई सारा के सारा परिस्रम बेकार अस बुझाइल। ओह रचनन में कतहीं भी कविता के प्रान आ धुकधुकी भी कहीं चलत ना बुझाइल। सब के सब कविता ताजिया के ठठरी अस चमकदार कागज आ पन्नी से खूब चमकत रहीस त जरूर बाकी ओन्हन का भीतर प्रान अस कवनो चीज अइसन ना लउकल जवना के पढ़ला से मन ओने खींचा जाय—ठीक ओसहीं जइसे एक महान रूपवती के देख के लोक लाज का डरे नजर केहू के रोकला पर भी बलात ओने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



खिंचाइये जाले भा पपीहा के बोली सुनते छाती में समा जाले। जइसे ताजिया में माँटी धइ के प्रान प्रतिस्ठा कइल रहे ला ओसहीं ओह कवितन में भी रंगल चूँगल माँटिये लउकलि, प्रान के चेतना ना मिललि। बस कविता कइले हम छोड़ देलीं आ तब से 'गुनावन' का पहिले पद्य रचना ४० बरिस तक बन्दे रहल।

एही बात से मिलत जुलत भारतेन्दु हरिस्चन्द्र के भी एगो उदाहरन सुनीं। १९५१-५२ में भोजपुरी के इतिहास पर सोध करत के जूनि हरिस्चन्द्र जी के एक छपल 'हिन्दी' नाम के किताब पढ़े के मौका लागल। ओह में उहाँ के भोजपुरी के रचना छपल बा। ओह पुस्तक में हरिस्चन्द्र जी भाखा के बिबिध रूपन के अपना रचना में प्रयोग करके उदाहरन का रूप में कइ गो छन्द छपले बानी आ लिखले बानी कि "इन छन्दो में प्रयोग की गई भाषाओं के विविध रूपों में मुझे ब्रज भाषा से मिलता जुलता रूप वाला छन्द आसान और सरस प्रतीत हुआ।"

त—एह दूगो उदाहरनन से हमार पहिलका उत्तर समर्थित हो जाता। आ बिचारे के भी बात बा कि उहे प्रतिभा जे ब्रज भाखा के पद्य रचना में सफलता पवले रहे खड़ी बोली के पद्य रचना में विफल काहे भइलि? का बात एह में कारन बा कि अइसन भइल? कहा सकता कि कुछ खास बात होई जे रुचि विसेस से सम्बन्ध रखत होई। बाकी फेन जब ओही बिफल प्रतिभा के साहित्य-रामायन के सिरजना में डा० भुनिश्वरनाथ मिश्र 'माधव' के सब्दन में महाकाव्य लिखला के सफलता मिलल कहा तिया तब त मानना नू पडता कि रुचि विसेस के सम्बन्ध नाही कुछ भाखा के ही ओह बिफलता में कारन रहे।

यह अनुभव के भी समर्थन अनायास स्वर्गीय डा० सिवपूजन सहाय 'पद्य भूसन' अपना मरेका २ महीना पहिले अपना पटना के मिठा पुर का डेरा में हमरा से दिल खोलि के कर देले रहीं। जब साहित्य-रामायन में, राम द्वारा सीता सौन्दर्य के बरनन आ आपन विरह निवेदन उहाँ का सुनलीं त दूनो आँखी में ढ़ब ढ़ब लोर भरि के कहलीं—"बाबू साहब, साँच कहतानी खड़ी बोली में देसज भासा अस अभिव्यक्ति सक्ति के अभाव बा आ सायद ई अभाव दूर भी ना होई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



त—इहे व्यक्तिगत अनुभव के बात भासा सास्त्र के इतिहास देखला पर भी मानना पड़ी। आज जे हिन्दी के स्तम्भ कवि लोग बा ओह में प्रायः पूर के पूरी जामावाली देसज भाखन में लिखे वाला कविन के ही बा। ई कवि लोग आज के परिस्कृत खडी बोली के रूप काहे नइखे अपनवले ? मुसलमान हिन्दी कवि भी जे खडी बोली के जन्मदातन में केहू केहू गिनालन एह रूप के ना सपना देखले रहे लोग नू एह रूप में कुछ रचले रहे लोग। हाँ ब्रज के बाद के जटिलता से हट के आसान रूप लोग जरूर कहल, आ ई के आदि रूप बहुत बहुत पहिले से खुसरु का मुकरी में कहाये भी सुरू हो गइल रहे। इहो देखल जा सकेला।

त—नामावली ढूंढ़लापर सूर, तुलसी, विद्यापति, जायसी, कबीर, मीरा, आदि स्तम्भ कवि लोग त ब्रज, अवधी, मैथिल, राजस्थानी भोजपुरी के रूपन के ही अपना कविता के माध्यम बनावल जे ओह लोग के मातृ माखा रहे। ई सब काहे अइसन कइल ? त—एकर उत्तर एक मात्र इहे बा कि अपना अपना देसज मातृ भाखा में बिचार के अभिव्यक्ति, रस के परिपाक, मन चाहल बातन के कहे के सहूलिअत, परिस्कृत भाखा के तुलना में अधिका बाटे। स्वतन्त्रता भी बाटे। ब्याकरन का छान्ह बान्ह में सदा बन्हाइल रहला के भाव जे मन में खटकल करेला, जवना वजह से अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता भा स्वच्छन्दता या स्वतन्त्रता के सदा ह्रासे भइल करेला से यह देसज भाखन में नइखे। नू देसज भाखन में सब्द भान्डार खाती कोस देखे भा अध्ययन करे के जरूरत बाटे। कवन सब्द हिन्दी के हऽ, कवन परिस्कृत हऽ, कवन अन्य भाखा के हऽ कावन ग्रामीन हऽ, कइसे दूसर भाखा के सब्द हटावल जाय, आदि आदि भावन के रुकावट के, सोचे विचारे के जरुरत देसज भाखा के प्रयोग में नइखे। फेन सबसे परे के ई बात बा कि ओन्हन के कवन सैली हो, कवन ढ़र्रा भा मान्यता विसेस हो, केकर परिपाटी हो, भा भाव जे विद्यालयन के सिच्छा परंपरा के कारन ओह विद्यालयन में से निकसल विद्वानन का मन दिमाग पर छवले रहता, जेह से ऊ बँधल अस अनुभव करत रहता—स्वछन्द रूप से कहे में भय खाता, से बात देसज भाखा में नइखे। आ ईहो भय नइखे कि केहू के सैली विसेस से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बाहर ना जाये के चाहीं, केहू के उधारल, बटोरल, पढ़ावल चीज के बाहर गइला से साथी बिद्वान हँसीं ई धारना परतन्त्रता के आ बन्धनके जे भावना के, प्रतिभा के, दबवले, रहत बा देसज भाखा के लेखक के सामने नइखे। ई भावना के नासे के—क्रान्ति करेके भाव जब हिन्दी के नवही कवि में आवति भी बा तब ओह लोग का हिन्दी भाखा में अतना सक्ति ये नइखे मिलति कि बल देके क्रान्ति के क्रान्ति ऊ सफल बनि सकसु। फल होता कि ओकरा अपना नवकी सैली के कविता के समुझावे खाती पृस्ट भूमि लिखे के पड़ता है त ई नयी परिपाटी प्रकारान्तर से यही अभिव्यक्ति सक्ति के अभाव के प्रतिक्रिया हटे जे कुबि कहत सायद लजाता। नात कविता त ऊ भूत हुई कि अपने माथे चढ़ि के बोले ला। एने मुँह से निकसल ओने तीर अस भाव जा के छाती में समा गइल। तीर में जइसे घाव करे के आपन सक्ति बा तइसे कविता में भी भाव जगावे के सक्ति बा जहाँ यह सक्ति के अभाव बा तहाँ नू तीर बा नू कविता बा।

त यह चीज के, यह परतन्त्रता के भावना के जइसे जइसे समय बीतत जाता आ हिन्दी बिकास का ओर अधिक अधिक बढ़ति जा लिया तइसे तइसे बढ़तीये होत जाता घटती नइखे होत। बाकी अइसन होना भी स्वभाविक बा। अइसन हमेसा से होत आवता। इतिहास देखला पर आदि काव्य काल रामायन का समय में भी उत्तर भारत में द्विजन के राज भाखा संस्कृत का साथ देसज भाखा रही सऽ जवनन के आम जनताबोलति रहे। बाल्मीकि जो अपना रामायन के सुन्दर कान्ड के ३० वाँ सरग के स्लोक नं० १८, १९ में हनुमान से सीता के सामने राम गुन गावत के कहववले बानी—

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरीव संस्कृतां।<br>
रावणं मन्यमानां सीता भीता भविष्यति॥<br>
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत।<br>
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथे यमनिन्दिता॥

यदि मैं द्विज की भाँति संस्कृत वाणी का प्रयोग करता हूँ तो सीता मुझे रावण समझ कर भयभीत हो जायगी। ऐसी दशा में अवश्य ही मुझे उस सार्थक भाषा का प्रयोग करना चाहिये जिसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अयोध्या के आस पास की साधारण जनता बोलती है। अन्यथा इन सती साध्वी सीता को मैं उचित आश्वासन नहीं से सकूँगा। ❀

जब-जब राजभाखा का रूप में सांस्कृतिक विकास के कारन दुरुहता, कृत्रिमता, सजाव-धजाव आदि के विकसित बुद्धि के प्रभाव से बहुलता होखे लागे ला तब-तब जन भाखा का ऊ बनावटी बोझ बरदास्त के बाहर के बात भासे लागे ले। फल होला कि अपना स्वभाविक प्रवाह से परे के चीज ओह के समुझि के जनता आपन अभिरुचि ओकरा ओर से हटा के अपने भाखा में सीमित कर लेले। जन भाखा का सीधा सादा गंगा के स्वच्छ जल प्रवाह अस भाखा के भी प्रवाह के जरूरत बा—ऊ आपन स्वतन्त्रता कवनो तरह कृत्रिमता का आड में नसावल भा दबावल नइखे बरदास्त कर सकति। आकास के निसीमता आ छितिज के सीमा-बाँध अस सीमित रहत भी सदा सीमा के बढ़ाव आ बन्धन हीनता, कहीं सीमा के बन्धन नइखे अइसन स्वतन्त्रता के, सादगी के, पवित्रता आ प्रवाह के, स्वाभाविकता के ओकरा जरूरत बा कि जवना में ओकरा हँसे, खेले, बिहरे आ आमोद-प्रमोद में कतहीं बाधा विघ्न भा रुकावट ना हो। जन भाखा के कवि अपना जन काव्य के, साहित्य के परिभासा परिस्कृत भाखा के परिभासा 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के परिभासा से परे भावना के नीव पर दूसरे बना रखले बा—

ना बिरहा के खेती भैया, ना बिरहा के ठाँव।
बिरहा उपजे हिरदा में, जब उमगे त गाव॥

त एह तरह जब एक जन भाखा, ओह समय के दुरुह कठिन राज भाखा से, जे पहिले कबो जन भाखा ही रहे आ राजा-भाखा से विद्रोह कर के राज-भाखा के हटाइ के ओके स्थान छीनले रहे—विद्रोह करके अलग होखे ले तब कुछ दिन तक ओकर सादगी आदि बनल रहे लें बाकी धीरे धीरे संस्कृत हो हो के उहे फेन बुद्धि प्रधान पंडितन का संग से राज-भाखा के रूप धइ ले ले आ जनता खाती दुरूह हो उठे ले। यह से ओकर अलगाव

❀ देखिये गीता प्रेस से प्रकाशित वाल्मीक रामयण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



फेन हो उठे ला। वाल्मीक जी के रामायन के काल के उदाहरन देइये चुकल बानी जवना घरी द्विज के भाखा संस्कृत रहे तबो देसज भाखा दूसर रहे। बाकी उहे द्विज के भाखा आजु मृत भाखा बाई। बुद्ध भगवान का समय जब संस्कृत के दुरुहता बढ़लि आ भगवान बुद्ध का जनता से सन्देस सुनाना जरूरी हो गइल त ऊ ओह घरी के धर्म के माध्यम के भाखा संस्कृत छोड़ के जन भाखा पाली के अपनवलन आ फेन जब पाली धर्म आ राज भाखा हो के दुरुह होखे लागलि त चौरासी सिद्ध लोग देसज जन भाखा के रूप अपनावल जवना से बँगला उरिया, मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि जनमली सऽ। तसहीं सौरसेनी से अवधी, व्रज आदि जनम लेली सऽ। त इतिहास के ई परिपाटी यूरोप के ग्रीक भाखा के इहवाँ भी दुहरावल गइल जवना से फ्रेञ्च, अँगरेजी, इटालिअन आदि भाखा पनपली सऽ। एक जरमन फिलासफर फ्रेञ्च आ जरमन भाखा के तुलना करके कहले रहे जरमन भाखा आपन सम्बन्ध बजन-भाखा से बनवले रहि के जंगल के प्राकृतिक सुन्दरता रखतिया आ फ्रेन्च भाखा परिमार्जित होत होत जन भाखा से अलग होके पार्क के छाटल छूटल बनावल सुन्दरता रखतिया। दूनो में उहे अन्तर बा जे पार्क आ बनस्थली के सौन्दर्य में अन्तर बा।

त एह वास्ते जरूरत बा कि हर प्रधान विकसित भाखा आपन सम्बन्ध अपना स्रोत दायक देसज जन भाखन से बनवले रहे तबे ओकर जन-प्रियता कायम रही आ नया नया भावन के आगम होत रही। ओकरा स्वतन्त्र प्रवाह में सिथिलता ना आवे पाई बाकी खड़ी बोली अपना यह विकास का युग में यह सिद्धान्त के भुलवा रहलि बा आ खतरा बा कि जइसे ऊ व्रजभाखा के जटिलता, दुरुहता के बढ़ती के कारन ओकर अखिल भारतीय व्यपकता हटा के आपन धाक थोड़ ही दिन में जमा लेलसि तसहीं उहो आज अपना सचिवालय आ विद्यालय के आविस्कृत जटिलता के कारन अपना में दुरुहता, अबोधता अतना अधिका उत्पन्न करति जातिया कि ओकर सम्बन्ध आम जनता से टूटल अस जाता। आ जन-भावना के अभाव के कारन ऊ आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जनता में जन-प्रियता नस्ट करति जातिया। इहे कारन बा कि देसज भाखन के विकास होखे लगलन सऽ। मैथिली, बँगला, भोजपुरी, मगही के मौलिक लेखक, कवि मातृ-भाखा के अपनावे लगनन। जहाँ हिन्दी नव युग के अनुकूल विकास के ओर बहुत तेजी से पाँव बढ़ा रहलि बा तहें छय-रोग अस ओकरा सरीर में विद्वानन द्वारा देसज भाखा से ओकरा के दूर करे के अनजाने प्रयास अइसन हो रहल बा कि हिन्दी के लोक प्रियता जन-भाखा से दूर हटला का वजह से धीरे धीरे नसाये सुरू होखे लागलि बा। विद्यालय आ सचिबालय के प्राचार्य लोग हिन्दी के रूप सँवारे में ही भुलाइल बा। एह महान कमी का ओर ध्यान नइखे देत जवना के घातक परिनाम होखे जा रहल बा। विस्वविद्यालय के भा पारिभासिक सब्द कोस के कर्नधार लोग जे देसज भाखन से व्यवहारिक, खरल सब्दन के ना अपना के खाली व्याकरन का जोर से संस्कृत के सब्द लोग रखत जाता भा बनत जाता तवना से ई अलगाव अवरू बढ़त जाता। अगर ओह विकास के प्रयास में रूपया में चारो आना उत्तर दखिन के देसज भाखन के सब्द अपनावल जइती सऽ भा किताब पोथी में उन्हन के प्रयोग विद्वान लोग प्रेम चन्द जी अस, तुलसी, सूर, जायसी, कबीर, विद्या-पति अस करत जाइत त आजु जे नयका कविनके कविता खाली कुछे लोग का सुने आ समुझे के चीज होत जातिआ से ना रहीत। यह भावना से विद्वान समाज का सबक ले वे के जरूरत बा। आज आचार्य्य लोग हिन्दी के उपभाखन में साहित्य सिरजना देख के जे घबड़ाता, डेराता से अवरू अलगाव के भाव जाग्रत करत जाता। पहिले जइसे अवधी, मैथिली, ब्रज, भोजपुरी, मगही के साहित्य के चीज के विद्वान मन्डली हिन्दी के चीज समुझति रहे—आदर करति रहे—ओह के आपन कहि के पनावति रहे, आ ओह पर नाज करति रहे, हिन्दी के संग्रह ग्रन्थन में उन्हन के प्रमुख स्थान दिआत रहे, से भाव में कमी आवता एह से हिन्दी के सागर में जो हिन्दी के उपभाखन के स्रोत निरन्तर गिर गिर के ओकर विसालता पहिले बढ़ावत जात रहे तवना के बेकार गलत भावना आ भय से रोकल आ हिन्दी के खजाना के अभिवृद्धि के जरिया काटल कहाँ तक उचित बा ई सबे समुझि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सकता। आ जे सूर तुलसी विद्यापति के हिन्दी कवि कहत बा की नवकी भा बूढ़की पीढ़ी के अच्छा कबिनके नाम के आगे देशज भाखा के कवि लिखाता—ओकर रचना अच्छा से अच्छा भी पढ़ाति नइखे, 'संग्रह में नइखे रखति से काहें ? यही प्रयास से हिन्दी, उर्दू, जे हमरे जीवन काल में एक रही सन, एक दूसरा में भेदेना रहे, से आज एक दूसरा से अलग हो गइली सन। ई होखे में एक मात्र कारन इहे अलगाव के भावना काम कइलसि। से ही विद्वानन के जाने भा अन जाने प्रयास से हिन्दी के आ ओकर उपभाखन के बीच पैदा कइल जारहल बा। जब ई मानल बात बा कि हिन्दी के सब उपभाखा अपना अपना अस्तित्व के हिन्दी में विलीन कर देले बाड़ी आ हिन्दी उन्हन के समिलित रुप के आपन रूप मानति आइलि बाच आ आजो ओन्हने के निधि के आपन निधि मानतिआ त विद्यालय से भा सचिवालय से परिभासिक सब्द सिरजना के भांडार में ओकर बहिस्कार कइल हिन्दी के, हिन्दी के विकास, लोक प्रियता में बाधके नू कहाई। ई बात कई मुख्य विस्वविद्यालय के कई मुख्य प्राचार्य लोग हमरा से 'साहित्य-रामायन के सिरजन सुन के यह तरह के भाव व्यक्त कइल जवना से ही आपना अतना इहाँ कहे के जरूरत पड़ल हा। जब तक हिन्दी के सम्बन्ध पहिले अस अपना उपभाखन का साथ बनवले रहे के पूर्न रूप से—खुले दिल से हिन्दी के पठित समाज द्वारा, विद्यालय के प्राचार्जन द्वारा आ सचिवालय के अफसरन द्वारा मन में ना लावल जाई तब तक हिन्दी के अहित होखे के भय जे सुरू होखे लागल बा ना दूर होई। आ ई भय के जगह दिनो दिन होत जाई कि उर्दू वाला उदाहरन हिन्दी कहीं आपन प्रान स्वरूप अपना उप माखन का साथे ना पेस करदे।

हम अपना के सबसे बड़कन हिन्दी के प्रेमी आ सेवकन में मानीला आ ओही नाते अपना अनुभव आ सेवा तथा हिन्दी प्रेम के कारन अतना कहे के जरूरत भी इहाँ पड़ल हा। साहित्य-रामायन भोजपुरी में जो हम ना लिखले रहितीं त अइसन का कुछुओ ना लिखाइल रहित। त ई कवन समझदारी के बात कहाई कि हम जब हिन्दी में अपना यह भावन के उतारे में अपना के असमर्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पवलीं ओह खूबी से जे चहलीं आ तब भोजपुरी में लिखली त हम आपन अइसन नीमन चीज के लिखल खाली यह खयाल से काहे बन्द कर दीं कि ई हिन्दी में नइखे लिखात। भोजपुरी में लिखा के भी त हिन्दी के ही गौरव ई बढ़ाई। एकर लोक-प्रियता हिन्दी ही के त लोक प्रियता कहाई। त यह तरह यह मिलाप का युग में जब विस्व एक होखे जा रहल बा, ग्रह उपग्रह तक से सम्बन्ध जोड़े के प्रयास बा, हिन्दी के प्राचार्य्य लोग हिन्दी के उपभाखन के देन के ओसही अपनावे के भावना रखे जइसे पहिले लोग रखले रहल हा। आ उन्हन के देन के हिन्दी के निधि माने, उन्हन के अपना संग्रह ग्रथन में ओसहीं के स्थान दे जइसे पहिले के कवि विद्यापति, सूर, तुलसी जायसी भा सब बिहौरी आदि के देत आवत रहल हा। उन्हन के कविन के लेखकन के हिन्दी के लेखक कवि मान के अपना में खपवले रहे आ नयकी पीढ़ी के नवहीं छात्रन के ऊन्हन के खूबी से परिचित करा-करा के उन्हन का मन में दुराव भा विद्रोह के भाव ना जागे दे जवना से देसज भाखन के बोलवइअन के मन में हिन्दी के प्रति एकता के भावना बनल रहे आ अलगाव के अलगाविलगी के भाव ना उठे। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, के भाव आज भी उहे बा जे पहिले रहल हा। ई तीनू के तीनू अपना अस्तित्व के हिन्दी के अस्तित्व में विलीन कइले बाड़ी सऽ आ हिन्दी के इतिहास भी इन्हन के अपनवला के ही एक मात्र इतिहास रहल हा आ बा। ई परम्परा ना टूटे चाहीं आ जे जे काम तूरे के अनजाने ऊपरका जिकिर के अनुसार हो जाता तवनन के निराकरन करना बहुते जरूरी बा। आज भी हिन्दी के उपभाखन के इहे कहना बा—

सुनी हिन्दी रानी, भगिनी हम राउरि हईं,
अवधी ब्रज मैथिल भोजपुरी कहीं राउरि हईं।
माई के एके कोखी से जनमलीं, वढ़ली, हँसली,
खेललीं, कूदलीं, पनपलीं बनि राउरि हईं॥
रउरा बर राजा मिलल हमन के भिखारी बाकी
राजा भिखारी बनल खून दूनो एके हईं।
रउरे में बिलीन, नामो आपन तेजि क कीर्ति
रूप में राउर निज रूप "नाथ" बगरत हईं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायण

## किष्किन्धाकाण्ड

## विषय-सूची

### प्रथम सर्ग पृष्ट १ से ८ तक

परम ब्रह्म, प्रकृति सत्ता, सरस्वती, विष्णु, शंकर, पंच देवता तथा राम की क्रम से बन्दना और सुमिरन। पम्पा सरोवर पर राम लखन का पहुँचना। बसन्त वर्णन, राम-विरह बर्णन, लखन लाल का समझाना और पुष्कर्णी पार करके ऋषिमूक की ओर दोनो भाइयों का प्रस्थान। छिपे हुए सुग्रीव का इन दोनों को देखकर डरना।

### दूसरा सर्ग पृष्ट ९ से ८ तक

राम को बालि का भेजा हुआ दूत समझ करके सुग्रीव के दल में भय का उत्पन्न होना और भगदड़ तथा दल का सुरक्षित स्थान में छिपना। सुग्रीव के यहाँ सभा और राम के बल विक्रम का बखान तथा भय प्रदर्शन। सुग्रीव द्वारा हनुमान को राम के पास भेजा जाना; राम हनुमान परिचय और सम्वाद; राम का अपना परिचय देना और हनुमान द्वारा प्रस्तावित सुग्रीव की मित्रता का प्रस्ताव-सन्देश स्वीकार करना। तदनन्तर हनुमान का राम लक्ष्मण को अपनी पीठ पर चढ़ाकर सुग्रीम के पास ले जना।

### तीसरा सर्ग पृष्ट १३ से १८ तक

हनुमान का राम लक्ष्मण को सुग्रीव के गुफा के पास बैठा कर स्वयं सुग्रीव के पास जाना और राम का सब हाल बताना और मित्रता स्थापित करने की राय देना। सुकन्ठ और हनुमान का राम के पास आना और मित्रता स्थापित करने का प्रस्ताव रखना। राम का उसे स्वीकार करके अग्नि को शाक्षी देकर मित्रता निभाने का प्रण करना। सुग्रीव का भी प्रण करना। राम सुग्रीव वार्ता। सुग्रीव का सीता द्वारा फेके गये आभूषणों और वस्त्रों को राम को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## दसवाँ सर्ग पृष्ट ४६ से ६६ तक

आषाढ़ की प्रथम वर्षा और ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु का प्रयोग बादी छन्दों में वर्णन। प्रदर्षण पर्वत पर राम लक्ष्मण निवास। वन उपवन का वर्णन। राम के अन्तर्द्वन्द, तापस भेष और चिन्तित मुद्रा का वर्णन। राम की चिन्ता देखकर लक्ष्मण के मन में रोष और हनुमान से सुग्रीव का सीता-खोज की प्रतिज्ञा को भूल जाने की निन्दा करना और रोष प्रकट करना। राम का उनको शान्त करना और मैत्री का अर्थ समझाना। फिर समझा बुझाकर सुग्रीव को कर्त्तव्य ज्ञान कराने के लिए लक्ष्मण को हनुमान के साथ भेजना। हनुमान लक्ष्मण का किष्किन्धापुरी जाना। वहाँ की कला, राजसी ठाट बाट-नगर, सैन्य आदि का वर्णन। सुग्रीव, लक्ष्मण तथा तारा सम्वाद। सुग्रीव की क्षमा याचना और लक्ष्मण का क्षमा दान देना। सुग्रीव का लक्ष्मण के साथ प्रवर्षण गिरि के लिए पैदल प्रस्थान।

## एगारहवाँ सर्ग पृष्ट ७० से ७७ तक

किष्किन्धा पुरी से लक्ष्मण के लौटने में देर होने से प्रवर्षण पर्वत पर राम की चिन्ता तथा इस बात पर क्षोभ की क्यों अकेले लक्ष्मण को बालि की किष्किन्धा पुरी में भेजा। अयोध्या तथा वहाँ की मधुर बातों का स्मरण। अपनी विपत्ति पर विचार। सन्ध्या समय चन्द्रमा को देखकर सीता का स्मरण और सीता की सुन्दरता के साथ उसकी तुलना। विरहानुभूति और संताप। विरह में विभोर होकर सीता की कल्पित मूर्ति को देखना, वार्ता और प्रलाप अन्त में मूर्च्छा का आ जाना।

## बारहवाँ सर्ग पृष्ट ७७ से ८३ तक

अवतारी राम ब्रह्म के मूर्छित होने पर संसार में प्रलय का दृश्य उपस्थित होना और त्रिदेव तथा अन्य देवताओं का प्रवर्षण पर्वत के ऊपर आना और राम की मूर्च्छा छुड़ाने का प्रयत्न करना। वन देवी का आह्वान और उनका सीता के स्वांग में राम के पाँव का अँगूठा छूना। राम की मूर्च्छा का छूटना और वन देवी को नमस्कार करके उनसे अपनी विलाप लीला का कारण बताना तथा सृष्टि सृजन का इतिहास कहना और माया तथा अन्य शक्तियों के अपना-अपना कर्त्तव्य पालन करने में सचेष्ट रहने पर सन्तोष प्रगट करना। प्रभात का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



होना और सुग्रीव तथा लक्ष्मण का आना। सुग्रीव को क्षमा याचना और राम का क्षमा करना।

## तेरहवाँ सर्ग पृष्ट ८३ से ८८ तक

राम सुग्रीव वार्ता। सुग्रीव का राम की आज्ञा लेकर कपि दल की वृहद सभा करना। सुग्रीव, राम, लक्ष्मण आदि का सभा में भाषण। शरद ऋतु के पूर्व सीता की खोज करा लेने का प्रस्ताव पारित होना और उसके अनुसार बड़े बड़े यूथपतियों के नायकत्व में कपि दलों का चारो दिशाओं में शोध हेतु, प्रस्थान की योजना। सुग्रीव के आग्रह से राम का सभा के सन्मुख सीता जी की हुलिया बताना।

## चौदहवाँ सर्ग पृष्ट ८८ से ९१ तक

सुग्रीव का राम से आज्ञा लेकर महावीर बानर बिनत के नायकत्व में पूर्व दिशा में शोध हेतु सेना भेजना और पूर्व दिशा के विवरण बताना।

## पन्द्रहवाँ सर्ग पृष्ट ९२ से ९५ तक

सुग्रीव का पूर्व दिशा में विनत को भेजकर उत्तर दिशा में अपने मित्र शतबलि नामक बानर के नायकत्व में सेना सीता खोज के हेतु भेजना और उत्तर दिशा का हाल बताना।

## सोलहवाँ सर्ग पृष्ठ ९५ से ९८ तक

सुग्रीव का पूर्व और उत्तर दिशा में शोध-सेना भेजकर पच्छिम दिशा में तारा के पिता सुखेन के नायकत्व में दूत-दल को भेजना और पच्छिम दिशा का विवरण बताना।

## सत्रहवाँ सर्ग पृष्ट ९९ से १०४ तक

सुग्रीव का तीन दिशाओं में शोध सेना भेज चुकने के बाद दक्षिण दिशा में अंगद की नेतृत्व में जाम्बवन्त, हनुमान, नील आदि महावीर बानरों की सेना सीता की खोज करने हेतु भेजना और दक्षिण दिशा का हाल बताना। राम का हनुमान को अपनी अँगुठी सहिदानी स्वरुप देना और सेना को विदा करना। शुभ सगुन का होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## अट्ठारहवाँ सर्ग पृष्ट १०४ से १११ तक

हनुमान आदि बानरों का दक्षिण दिशा में सीता का शोध करना और मयासुर कृत आश्रम में स्वयंप्रभा से भेंट। स्वयंप्रभा और हनुमान वार्ता। स्वयंप्रभा का सीता का पता बताना और समुद्र तट पर सारे कपिदल को आँख मुदाकर अपने तप, बल से भेज देना। स्वयंप्रभा का स्वयं राम के पास जाना। समुद्र तट पर समुद्र को लाँघने की असमर्थता समझ कर अंगद का हिम्मत हारना और अन्नशन कर के प्राण त्याग करने का निश्चय। मिथ्या विराग जानित कुतर्क के प्रभाव से मिथ्या तर्क और कुबुद्धि जनित मोह का होना। सम्पाति का कन्दरे से निकलना और कपिदल का डरना। सम्पादि अंगद सम्वाद और सम्पाति का आत्म कथा कहना। जीव, ब्रह्म, देह, सृष्टि आदि तत्वों की व्याखया। सम्पाति द्वारा जटायु को तिलाञ्जलि देने के बाद उसके पंखों का जमना और गगन में उड़कर सीता को लंकापुरी में देखकर उतरना तथा कपि सेना से वहाँ जाने की बात कहकर महा प्रस्थान।

## उन्नीसवाँ सर्ग पृष्ट १११ से ११७ तक

समुद्र लाँघने के सम्बन्ध में कपिदल में विचार विमर्श। सबका अपनी-अपनी शक्ति का परिचय देना। जाम्बवन्त द्वारा हनुमान के जन्म की कथा सुनाया जाना और हनुमान की वीरता की प्रशंसा करके उन्हें समुद्र पार जाने को उत्तेजित करना। हनुमान का समुद्र पार हेतु प्रस्थान। मैनाक, सुरसा आदि से भेंट। समुद्र पार करके लंका तट स्थित सुवेल पर्वत पर उतरना।

## बीसवाँ सर्ग पृष्ट ११७ से १२५ तक

प्रवर्षण गिरि पर राम का लक्ष्मण से वर्षा ऋतु का वर्णन करना। फिर बिरह निवेदन और हनुमान आदि के अब तक नहीं लौटने पर परेशानी तथा ज्ञानोपदेश और लीला का रहस्य, बताना। फिर शरद ऋतु का वर्णन और सीता की सुधि न मिलने से व्यग्रता-ज्ञापन और प्रण करना कि यदि शरद ऋतु के पूनो के पूर्व सीता की खोज नहीं हो जाती है तो राम, राक्षस-वंश को समूल नष्ट करदेने के लिये बाण छोड़ेगें और सूर्य्यास्त के पूर्व असुर वंश का सर्वनाश कर देगा। ऐसा प्रण करके धनुष टंकोरना। धनुष टंकोर सुनकर तारा का डरना और सुग्रीव को प्रवर्षण पर्वत पर भेजना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य रामायन

## सुन्दर कान्ड

## विषय-सूची

### प्रथम सर्ग पृष्ट १२६ से १३२ तक

ब्रह्मवन्दना, रामास्तुति, आत्मकामना।

समुन्द्र लाँघ कर सुवेल पर्वत पर बैठकर हनुमान जी का लंका की शोभा देखना। नगर का वर्णन करना। फिर उसके बल, वैभव पर विचार करना और शंका करना की कैसे कपि-सेना इस बली लंका पर विजय पा सकेगी, साम, दाम, भेद, नीति बरतने पर भी कोई कुछ नहीं कर सकता। फिर चिन्ता त्याग कर सीता खोज की बिधि पर विचार करना और नगर प्रवेश की उपाय ढूँढ़नी। प्रवेश करने का निश्चय करके आगे की ओर बढ़ना। लंका नाम की निशाचरी से भेंट। वार्ता और मुठभेड़। हारकर लंका का अपने वर का हाल बताना और हनुमान से नगर प्रवेश करने को कहना। हनुमान का नगर प्रवेश।

### दूसरा सर्ग पृष्ट १३३ से १४१ तक

हनुमान का लंका में सूक्ष्म रूप धारण करके रात में चारो तरफ घूमकर सीता की खोज करना। नगर के विभिन्न स्थानों का वर्णन। युवति समाज के रंग राग का दर्णन। वेश्यालय वर्णन। राच्छस जीवन के विलास भोग आदि का वर्णन। रावन के महल, रनिवास रेखेलिन, और नाच रंग आदि के वर्णन। रावन के साथ सोयी हुई मदोदरो को देखकर उसे सीता समझ कर हनुमान का खुश होना और फिर तुरंत ही अपनी वुद्धि को इस गलती के लिये धिक्कारना। सीता को नहीं पा सकने पर दूखित होना और प्राण त्याग करने का सोचना। फिर राम भक्ति से उत्साहित होकर आगे खोज करनी। विभीषण के घर आना भेंट और भक्ति की चर्चा! विभीषण का सीता का पता बताना और उसी बताये मार्ग से हनुमान का अशोक वन गमन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## तीसरा सर्ग पृष्ट १४२ से १५२ तक

विभीषण के बताने के अनुसार हनुमानजी का अशोक वाटिका में जाना। अशोक वन का वर्णन। सीता जी के विरहिणी रूप का वर्णन। हनुमानजी का अशोक वृक्ष पर बैठकर सीता को देखना। रावण का आगमन। रावण वर्णन। रावण का सीता को प्रलोभन देना और अपनी पत्नी बनने का प्रस्ताव करना और राम की निन्दा करना। सीता का फटकारना और राम की तारीफ करना। रावण का सीता को भय दिखाना। सीताजी का प्रत्युत्तर और तिरष्कार। रावण का तलवार लेकर सीता को मारने चलना। मदोदरी और धन्यमालीन का रोकना और रावण को समुझाकर लौटाना। निशाचरिनों से सीता को राजी करने की कोशीस करने के लिये रावण का आज्ञा देना।

## चौथा सर्ग पृष्ट १५२ से १५६ तक

रावण के सीता से वार्ता करके चले जाने के बाद अनेक तरह की रूपवाली राक्षसिनों को जमात का आना और सीता को घेर कर रावण के कुप्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए समझाना और भय दिखाना। फिर सीता का राक्षसिनों की बात मानने से इनकार करना और राम की सराहना करना और राम के प्रति अपना प्रेम बताना। तब राक्षसिनो का भय दिखाना और सीता को जीन्देही एक एक अंग काट कर खा जाने की धमकी देना और हथियार आदि का तानना। दण्ड और भय नीति का प्रयोग करना। सीता का अंतिम निर्णय ना, ना, कहकर और राम राम पुकार कर मूर्छित होना। तब त्रिजटा का राक्षसिनों से अपनी सपना का हाल सुनाना, बताना और मूर्छित सीता का उसी समय दहिना अंग का फड़कना। त्रिजटा का उसे दिखाकर राक्षसियों को समझाना कि रावण का नाश निश्चय होगा। हमलोगों को सीता से अच्छा व्यवहार करना चाहिये। त्रिजटा का सीता जी की सेवा करके होश में लाना और सब निसाचरिन का अच्छा व्यवहार करना।

## पाचवाँ सर्ग पृष्ट १५७ से १६२ तक

त्रिजठा जब अन्य राक्षसिनों के साथ आदर भाव से सीता जी की मूर्च्छा छोड़ाकर उनसे सद् व्यवहार करने लगी तब सीता को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आश्चर्य हुआ कि इतना जल्द राक्षसिन के व्यवहार में परिवर्तन कैसे आ गया। अंत में यह निश्चय करना कि इनलोगों का यह व्यवहार बलिदान होने वाले बकरे को मारने के पहिले भोजन देने का ही अर्थ रखता है। सीता का निसाचरिनों से कहना कि वे लोग सीता को कुछ देर के लिये अकेले छोड़ दें जिससे उनको शान्ति मिले। राक्षसिनों का हटना और सीता का अकेले में विलाप करना और प्राण त्याग देने का निश्चय करना। आत्म-हत्या करने के साधनों पर विचार और बार की रस्सी बट कर उसीसे फाँसी लगाने का निश्चय कर के उठ खड़ा होना और सासुर, नइहर और राम को याद कर के विलाप करना। तब तक शुभ सगुन का होना और अनामाय चित्त में प्रसन्नता के भावों का जागृत होना, जिसका अर्थ अत्म हत्या को ही शुभ काम सीता का लगाना। फिर गला में केश की रस्सी से फाँसी लगाना और अत्म,हत्या की तैयारी। तब तक हनुमान का ऊपर से राम को अँगूठी गिराना। मुंदरी गिरने की आवाज से सीता का ध्यान उधर जाना और मुनरी पहिचान करके भावातिरेक के कारन बुरी दशा का हो जाना। यह देखकर हनुमान का राम के बन निवास की कहानी गाना और सीता का होश में आना। नाना प्रकार की शंकाओं का करना। अकुशल को शंका करके व्यग्र होना। हनुमान का प्रगट होना। राम-कथा सुनाना। सीता का विश्वास न होना। तब हनुमान का राम के अंग, स्वभाव आदि का वर्णन करके विश्वास दिलाना। तब सीता का राम का समाचार पूछना।

## छठाँ सर्ग पृष्ट १६३ से १६८ तक

सीता जी जब हनुमान से राम के सम्बन्ध में एक एक बात कर के और यह प्रश्न करके कि राम क्या अब भी हमारे सत्य पर विश्वास करते हैं और मुझसे पूर्वत प्रेम रखते हैं, रोकर चुप हुईं तब हनुमान का दुख से दुखित होकर राम के दिनचर्या का हाल बताना और सीता के एक एक सवाल का जबाब देना। राम की सक्रियता, प्रेम, विरह, विकलता आदि का विवरण हनुमान के मुख से सुनकर सीता का रोना और फिर सुधि बुधि भूलकर संज्ञा शून्य हो जाना। तब हनुमान का राम-धुन-गाकर सीता को होश में लाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



फिर हनुमान का राम के प्रेम का वर्णन करके खुद भक्तिभाव में विभोर होना और सीता का भी वैसा ही होना। हनुमान के सीता को अपनी पीठ पर चढ़ाकर ले जाने का प्रस्ताव करना और सीता का हनुमान की शक्ति बल पर शंका करना। हनुमान का वृहद शरीर धारण करके विश्वास दिलाना। सीता का बानर पीठ पर चढ़कर चोर जैसा जाने से राम की निन्दा होगी इस भय से जाना इन्कार करना। हनुमान से अपनी कृतज्ञता जाहिर करना। हनुमान का फल-फूल खाने को आज्ञा माँगना। सीता की आज्ञा लेकर हनुमान का अपने पिता पवन को स्मरण करके तुफाना बहाना और अशोक वन को विध्वंस करना अशोक वन के रक्षकों का भागना और रावण से हाल सुनाना।

## सातवाँ सर्ग पृष्ट १६६ १७३ तक

अशोक वन के आठ हजार रखवारों के मरने का हाल सुन कर रावण का रोष करना। जम्बुमाल को बुलाकर हनुमान को पकड़ कर लाने के लिये भेजना। जम्बुमाल हनुमान का युद्ध वर्णन। जम्बुमाल की मृत्यु सुनकर रावण का मन्त्री के सात सुतों को युद्ध के लिए भेजना। उनलोगों की भी हार हो जाने पर दुरधर, प्रघस आदि पाँच सेना सेनापतियों को युद्ध करने को तथा हनुमान को पकड़ने के लिऐ भेजना। युद्ध और पाँचों का हारना। तब रावण का अपने लड़का अक्षकुमार को युद्ध करने के लिये महान सेना देकर भेजना। उससे हनुमान का युद्ध वर्णन। अक्षकुमार की मृत्यु। रावण की चिंता और शोक।

## आठवाँ सर्ग पृष्ट १७१ से १७६ तक

अक्षकुमार के बध का सन्वाद सुनकर रावण की चिन्ता और इन्द्रजीत को बुला कर उसकी प्रशंसा करना और शत्रु बल का विवरण बता करके युद्ध करने के लिये भेजना तथा जीते ही हनुमान को पकड़ लाने का आदेश देना। इन्द्रजीत का सिंह-रथ पर सवार हो कर जाना और हनुमान के साथ संग्राम करना। युद्ध वर्णन। ब्रह्मास्त्र का प्रयोग और हनुमान का बँधाना। रावण के पास हनुमान का बाँध कर ले जाया जाना। रावण हनुमान वार्ता और हनुमान के बध का आदेश तथा बिभीषण का दूत बध न करने की बात समझाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## नवाँ सर्ग पृष्ट १७६ से १८० तक

विभीषण की राय सुनकर रावण का हनुमान की पोंछ में कपड़े लपेट कर आग लगाने की आज्ञा देना। राक्षसों का हनुमान की पोंछ में कपड़ा लपेटना और हनुमान का अपनी पूँछ बढ़ाना। कपड़ा चुकते देख कर रावण का खीझना और हनुमान को नगर में घुमाने का आदेश देना। हनुमान का बाजा गाजा के साथ राक्षसों द्वारा नगर में घुमाया जाना और नगर के दृश्य का वर्णन। रावण पास पुनः लाया जाना और पूँछ पर तेल घृत का पोता जाना तथा भण्डार और बाजार के तेल घृत के समाप्त हो जाने पर भी पूँछ का न भींजना। रावण का व्यंग और हनुमान का उसी व्यंग में उत्तर। रावण का क्रोध करके आग लगाने की आज्ञा देना। पूँछ में आग का लगाया जाना और हनुमान का लंका दहन। जलती लंका का सांगोपांग वर्णन। जनता की बुरी दशा और भगदड़। लंका जलाकर हनुमान का समुन्द्र में कूद कर पूँछ बुझाना।

## दसवाँ सर्ग पृष्ट १८१ से १८६ तक

समुन्द्रमें पूँछ बुता लेने के बाद शान्त भाव से हनुमान का जलती हुई लंका को देखना और उस दृश्य का वर्णन, फिर अकस्मात् मन में शंका का होना कि इस भीषण अग्निकाण्ड में सीता भी तो नहीं जल मरीं। इस शंका के उठते ही मन में खेद और पश्चाताप का उठना और अपनी कुबुद्धि को धिक्कारना। उसी समय आकाश वाणी का होना और सीता जी के सतबल की प्रशंसा और जयकार करना। सीता का अपने सत-बल से इस अग्नि काण्ड में जीते बचने की सूचना सुनकर हनुमान के मोह का नाश और अपने ऊपर लज्जा का अनुभव होना। सीता के पास जाना और अपने मोह का वर्णन सुना कर क्षमा माँगना तथा लौटने के लिये अनुमति माँगना। सीता का भगवान की लीला और भक्तों की रक्षा सदा करते रहने के रहस्य को समझाना और हनुमान को सन्तोष दिलाना। अपनी कृतज्ञता हनुमान के प्रति प्रकट करके सदा पूजित होते रहने का वर देना और राम से कहने हेतु अपनी शुभ कामना का सन्देश सुनाना। हनुमान का सीता से सहिदानी माँगना और सीता का चूड़ामणि देकर उसका इतिहास बताना तथा अपनी दयनीय रक्षा का विवरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सुनाकर राम से कहने के लिये अपना सन्देश देना। हनुमान की पीठ पर उनके सुझाव के अनुकूल चढ़ कर राम के पास जल्दी जाने को अपनी कामना होते हुए भी राम के यश में उससे धब्बा लगने और निन्दा होने की सम्भावना के भय से न जाने का निश्चय सुनाना। अन्त में राम के साथ अपनी गोप्य बातों को कहकर राम से सुनाने और उन्हें विश्वास दिलाने के लिये कि सीता से हनुमान की भेंट हुई है रोना और सन्देश देना। हनुमान का प्रस्थान।

## एगारहवाँ सर्ग पृष्ट १८७ से १९४ तक

सीता से विदा होकर हनुमान का सागर तट के अरिष्ट नामक पर्वत पर आना। पर्वत का वर्णन तथा हनुमान का कूद कर सागर पार लौटना। सागर के भारत-तट पर प्रतिक्षा करती हुई कपि-सेना से स्वागत। हनुमान का सीता का हाल सेनाको बताना। सब हाल सुनकर अंगद का उस सेना सभा में प्रस्ताव रखना कि किष्किन्धा लौटने के पूर्व हम यहीं से लंका जीत कर सीता को साथ लेते चलें। समय का अभाव है। इस पर जामवन्त की आपत्ति और हनुमान द्वारा उस आपत्ति का समर्थन। सारी कपि-सेना का किष्किन्धा के लिए-आकाश मार्ग से प्रस्थान। प्रस्थान का वर्णन। किष्किन्धा के पास मधु बन नामक राज-बाग में मधु तथा फल फूल देख कर कपि-सेना का अंगद से खाने पीने की अनुमत माँगना और अंगद का अनुमति देना। कपि-दल का मधु-वन में प्रवेश और उनके मधु पान तथा उसके प्रभाव का वर्णन। मधुवन के प्रधान रक्षक दधिमुख का, जो अंगद के नाना होते थे आना और अंगद से संग्राम। मार खाकर दधिमुख का प्रवर्षण पर्वत पर सुग्रीव के पास जाना और कपि सेना के उतपात की शिकायत करना। सुग्रीव दधिमुख वार्ता और कपिदल की सफलता का अनुमान करके सुग्रीव का प्रसन्न होना और दधिमुख को समझा कर कपिदल को शीघ्र सतकार के साथ भेजने का अदेश देना। दधिमुख के जाने के उपरान्त लखन सुग्रीव वार्ता और राम से शुभ सम्वाद सुनाना।

## बारहवाँ सर्ग पृष्ट १९५ से २०३ तक

राम द्वारा हनुमान आदि का प्रवर्षण गिरि पर स्वागत। अंगद का संक्षेप में राम और सुग्रीव से सीता की सुधि पाने की सूचना देना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राम का इस पर सहसा विश्वास न होना। तब हनुमान का प्रभु-लीला की प्रशंसा कर के यात्रा का हाल संक्षेप में बताना और चूडामणि देना। राम का चूडामणि लेकर देखना, तन मन बचन से विभोर होना और विलाप तथा क्रोध करना और अकेले उठकर धनुष बाण ले लंका जाने को तैयार होना। लखन और सुग्रीव का दौड़कर पाँव पर गिरना। राम का शालीनता वश अपने को रोक कर शिलाखण्ड पर बैठना। पर तब भी क्रोध के आवेश में वीर रस से प्रेरित हो काव्य पूर्ण भाषा में अपने सहायक मित्रों को उनके विध्वंसक रुप में आह्वान करना। उसी समय चूड़ा मणि का हाथ से गिर जाना और ध्यान बट जाने से क्रोधावेश का कम होना। और तब आगे बढ़कर सुग्रीव का हाथ जोड-करके आज्ञा माँगना कि आप यहीं बैठ कर कपि सेना को आदेश दें। वह सीता को लंका नाश करके लाने के लिये समर्थ है। किन्तु आप सीता का सन्देश पहले सुन समझ लें। लखन का अवसर देखकर युद्धि के कारण का वर्णन करना और सबके साथ जाकर असुर को परास्त करके लंका विजय कराने का सुझाव राम के सामने रखना। राजा से लड़ना है तो राजा की तरह ही दल बल के साथ चलकर उसको परास्त किया जाय।

## तेरहवाँ सर्ग पृष्ट २०३ से २१० तक

हनुमान का राम के पूछने पर लंका यात्रा का विस्तार पूर्वक वर्णन सुनाना। सीता से भेंट, सीता रावण सन्बाद, सीता का विलाप, उनका सत-बल आदि आदि का विस्तार पूर्ण वर्णन, सीता का फाँसी लगाने वाली घटना, हनुमान का मुंदरी गिराना, अंगूठी देखकर सीता की विभोरता तथा विलाप, शंका आदि आदि बातों का वर्णन सुनाना। सीता की दशा सुन कर राम का विलाप करना। और अन्तिम सन्देश पूछना। हनुमान का सीता के सामने उनको पीठ पर चढकर भाग चलने का जो प्रसाव था और उसका उत्तर जो सीता ने दिया था वह सुनाना। अन्त में सीता की कही हुई सहिदानी स्वरुप गोप्य बातों को सुनाना और सीता का अन्तिम सन्देश कहना। राम का विलाप। फिर हनुमान का लंका दहन, युद्ध आदि घटनाओं का सारांश सुनाना।

## चौदहवाँ सर्ग पृष्ट २११ से २१४ तक

राम का हनुमान से वार्ता सुन कर अपनी कृतज्ञता प्रगट करना और अपना प्रेम दान देना और लंका का सैनिक दृष्टि कोण से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वर्णन पूछना और हनुमान का लंका की सैन शक्ति का विवरण सुनाना।

## पन्द्रहवाँ सर्ग पृष्ट २१५ से २२१ तक

हनुमान से लंका की सैनिक शक्ति का विवरण जान कर राम का सुग्रीम से तुरत सेना प्रस्थान करने का आदेश देना और अनुशासन रखने के बिधि विधान तथा प्रस्थान बिधि का निर्देश करना। सेना का प्रस्थान और उसका बर्णन। समुद्र तट पर सेना का पहुंचना और उसका विश्राम तथा समुन्द्र का दृश्य बर्णन।

राम की विरहानुभूति और लखन से वार्ता तथा मधुर स्मृतियों का स्मरण और अन्तर्द्वन्द।

## सोलहवाँ सर्ग २२२ पृष्ट

वहाँ लंका में जब रावण ने राम के कपि-सेना के साथ समुन्द्र तटपर पहुँचने की सूचना पायी तो उसका चिन्चित हो उठना और मन्त्रियों के बुलाकर परामर्श करना। विभीषण का रावण के नीति शास्त्र का वृहद विवरण सुनाकर रावण का पक्ष नीति संगत न बताना और हर तरह से समझा कर सीता को वापिस करने की राय देना। मन्त्री तथा मन्त्रणा के लक्षणों को व्याख्या करना और पुलस्त का सम्वाद कि सीता के वापिस कर देने में ही असुर कुलका कल्याण है सुनाना। रावण का निरुत्तर होकर मनमें बुरा मानना और दूसरे दिन प्रातः वृहद सभा करने का आदेश देकर महल को प्रस्थान।

## सत्रहवाँ सर्ग

दूसरे दिन रावण के वृहद सभा में शरीक होने के लिये तैयार होकर जाते समय मदोदरी का आना और राम की चढ़ाई का हाल बताकर तथा जब से हनुमान का आगमन हुआ तब से अपशकुन के होने की बातें कहकर और सीता के सतबल की महानता बताकर रावण से सीता को वापिस करने की राय देना। रावण का प्यार पूर्वक मदोदरी को समझाना और सभा में जाना। वृहद बटोर की सभा की कार्य्यवाही। रावण का प्रस्तावना भाषण और सभा की राय पूछना। कुम्भ कर्ण और विभीषण को छोड़कर सबों का रावण के अभिमत का समर्थन करना। प्रहस्त का सीता पर तुरत बलात करके सत नाश कर देने का प्रस्ताव करना और बताना कि इस कृत्य से राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के सामने सीता तब्या हो जाँयगी और सारे झगड़ों को नीव ही इस तरह खतम हो जायगी। रावण का ब्रम्हा के श्राप का हाल सोचकर अपनी विवशता बताना। कुम्भकरण का रावण द्वारा सीता हरण के कार्य की निन्दा करना, फटकारना और कहना कि अनीति पूर्ण बाते हो जाने पर भी भाई होने के नाते वह राम को मारकर रावण को जीता देगा। विभीषण का रावण से शास्त्र और नीति युक्त बातें बताकर सीता को वापिस करने का प्रस्ताव रखनां। विभीषण और प्रहस्त की वार्ता विभीषण की फटकार। फिर इन्द्रजीत और विभीषण की वार्ता और उसको भी विभीषण का फटकारना। तब रावण का क्रोध और विभीषण को धिक्कारना और लंका छोड़कर भाग जाने की आज्ञा देना और उनके ऊपर देश-द्रोह का अपराध अरोपित करना। विभी-षण का तुरत आकाश में अपने मन्त्री के साथ उड़ कर जाना और वहीं से उसको चेतावनी देना और पुनः सँभल कर सीता को वापस करने की बात बुझाना।

## अठारहवाँ सर्ग

आकाश मार्ग से विभीषण का समुद्र पार कर के भारतीय तट पर राम सेना के ऊपर आकाश में खड़ा होना और अपना परिचय देकर राम के शरण में जाने का निश्चय सुनाना तथा अनुमति माँगना। कपिदल का आश्चर्य से शत्रु को आकाश में खड़ा देखना। सुग्रीव का सेना को सावधान होने की आज्ञा करना और राम से विभीषण को बातें सना कर उसे मार डालने की आज्ञा माँगना। राम सुग्रीव वार्ता। फिर राम का अन्य मन्त्रिओं से विभीषण के आने के अभिप्राय पर राय लेना। हनुमान को छोड़कर सबका सुग्रीव के पक्ष का समर्थन करना। हनुमान का विद्वता पूर्ण सुझाव। राम का भी विद्वता पूर्ण, नीतिशास्त्र से समर्पित बात तथा शरणार्थी को शरण देने के अपने स्वभाव के आधार पर विभीषण को अपनाने की राम का समर्थन करना। तब भी सुग्रीव का न मानना और अपनी मत का समर्थन करता जाना। तब राम का अपने शरणार्थी का शरण देने के स्वभाव का विश्लेषण करते हुए सुग्रीव को विभीषण को लेआने का आदेश देना और सुग्रीव का सन्तुष्ट हो कर विभीषण को लिवा जाना। उधर विभीषण का प्रभुशरण में जाने और दर्शन करने तथा उनके लीला रूप को देखने की उत्कट भक्ति भावना में विभोर होना। राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के सन्मुख जाना और त्राहि-त्राहि कहकर चरणों में गिरना। राम का विभीषण को अपनाना और लंका का राज समुन्द्र जल से माथा टीक कर देना। राम विभीषण वार्ता। लंका के सैनिक शक्ति तथा शत्रु छिद्रो का विभीषण द्वारा वर्णन। तब कपिदल का समुन्द्र लाँघने की बिधि पर विभीषण से परामर्श करना और विभीषण की इस राय का कि राम पहले समुन्द्र से मार्ग माँगे राम द्वारा समर्थन। राम का लखन के आपत्ति करने पर सत्याग्रह सिद्धान्त की व्याख्या करना और लखन की शंकाओं का समाधान करके समुद्र तटपर अनशन करना तथा समुद्र की बन्दना करना। परन्तु तीन दिन बीत जाने पर भी समुद्र जब नहीं प्रगट हुआ तब राम का लक्ष्मण से दुष्ट स्वभाव का विवरण बता कर दण्ड नीति के अवलम्बन की आवश्यकता बताना और क्रोध करके बाण मारना। बाण के आघात की प्रतिक्रिया। फिर दूसरा बाण मारना और उसकी भी प्रतिक्रिया। तब समुन्द्र का प्रगट होना और राम की स्तुति करना और शरण में गिरना। राम का अभय दान देना और समुन्द्र का नील द्वारा पुल बंधवाने की राय देना और राम की स्तुति करना।

## उन्नीसवाँ सर्ग

वहाँ लंका में विभीषण के जाने पर रावण का शार्दूल नामक सेनापति की सलाह से अपने शुक नामक मन्त्री को छद्म वेषोदूत बनाकर राम की सेना का बल-आदि बाते जानने के लिए और उसी बहाने सुग्रीव से दूत रूप में भेंट करके उसको समुझाबुझा कर राम का साथ छोड़ा देने के लिए भेजना। शुक का सुग्गे का रूप धारण करके राम की सेना सेना में जाकर सारा भेद लेना और सुग्रीव के पास जाकर रावण का सन्देश सुनना। सुग्रीव का उसको पकड़वा कर नाक कान काटने का आदेश देना। शुक का चिल्लाकर राम के शरणागत होना। राम का उसको क्षमा कर के छोड़वा देना। शुक का रावण के पास आकर सभी बातें बता कर रावण को सीता वापिस करने की राय देना और बताना कि राम अजेय हैं रावण का शुक को लात मार कर देश निकाले का दण्ड देना। शुक का राम के पास आना और शरणागत होने पर अपने पूर्व ज्ञान को प्राप्त करना और भक्तिदान पाकर अपने आश्रम को प्रस्थान। राम की आज्ञा से पुल का बँघना। सेतु बँधने का वर्णन। पुल तैयार होना और राम की सेना का सागर पार करके लंका पहुँचना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा सँकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### पहिला सरग

प्रारम्भ-तिथि—कुआर सुक्ल पच्छ १०, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार-४ अक्तूबर १९६१ ई०, दिन बुधवार।

(देव वन्दना, पम्पा सरोवर पर राम लखन के पहुँचल, बसन्त बरनन, सीता के वियोग से दुखी राम जीके बिरह बरनन, लखन लाल के समुझावल आ पुस्करनी लाँघि के रिखिमूक परवत ओर प्रस्थान, सुग्रीव के इहाँ सबके देखल आ डेराइल)

### परम ब्रह्म सुमिरन

१५ बर्निक छन्द

सुमिरी ला प्रथमे चेतन तत्व हीय के।
सद चिद परभंस गति जे तुरीय[1] के॥
सपना जागल नित[2] सूतल आनन्द के।
एके ब्रह्म निस्कल[3] के नाहीं भूत संघ के॥

---

१—तुरीय=तुरियावस्था। २—नित=अनादि। ३—निस्कल= निस्कलत्व से बना=अविभाज्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दूजे भजीला मन वच कर्म अगम[१] के।
बाचा बिभाले निखिला[२] किरिपा से जेह के ।।
जेके भजेलें निगमा[३] नेति-नेति कह के।
ते देव-देव के, अज, अग्रज, अचुत[४] के ।।

तर्म में नमीला तीजे सुरजा के जोति के।
पूर्न सनातन संज्ञा नरोतम पद के ।।
सेस आ[५] असेस मूर्ति जेकरा में जग के।
रसरी में प्रतिभास साँपे अस होत के ।।

## प्रकृति-बन्दना

२० बर्निक छन्द

मंडित वसन-सिन्धु सैल-अस्तन जेकर लउके लें।
तेहि हरि-पतिनी-प्रकृति के सुमिरी ले पैयाँ परी ले ।।
सत्ता जे ई माध्यम निमित्त बनि भीतरी ले।
झाँकति सासति तेहि के नमी ले श्रद्धा से गोडे गिरीले ।।

## सरस्वती-बन्दना

तन पर वसन धवल, माल कुन्द इन्दु दीखति बा।
बीन कर धारि माई आसन कमल जे बइठलि बा ।।
बन्दिता जे महादेव, देव, ब्रह्मा, बिसनू से कहलि बा।
से सरसुती करीं जड़ता असेस जे मोरि प्रबलि बा ।।

## भगवान बिस्नू के बन्दना

छीर-सिन्धु सेस-सूतल, सान्त, जे के नाभी प सुरेस बा।
बिस्व के आधार बनल, बरन अंग जेकर मेघ बा ।।

---

१—अगम = अगम्य । २—निखिला = निखिल = समस्त; सब; सम्पूर्ण । ३—निगम = वेद । ४—अचुत = अच्युत = कभी न गिरने वाला । ५—सेस आ असेस = शेष और अशेष ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नयन बा कमल, कान्त लछिमी के, ध्याने जोगी ज्ञेय बा।
बन्दी ले से बिस्नू, भयहर्ता, त्रिलोक नाथ, के जे एक वा ॥

## संकर भगवान के बन्दना

हाथ कैल, पाँव, कर्म, काया, चित्त, हिय के कैल जे।
कान कैल, नैन कैल, तनमन, इन्द्री, जीभि के कैल जे ॥
जाने अजाने कैल अपराध सिव छमबि हमार जे।
जय, जय, जय सिन्धु देव महादेव संकर जे ॥

## पंच देव-बन्दना

### २६ वर्निक बिरहा छन्द

(१६ अच्छर पर यति, अन्त दीर्घलघु)

दाहिने मैया सारदा सोभावा गनेस बसीं, हिया हरि भरि रसधार।
मनवा दिमागवा सिव सुन्नर अवघडवा, लेखनी में ब्रह्मा टाँकी मार ॥
पाँचो देवतवा मिलि रच्छा करीं जगती के, जिनगी के पथ प अँजोर।
हियरा के बिरहा सुतलका जगाइ दिहीं, जनम जनम के बटोर ॥
सरगा से सरसुती सँगवा गनेस आइ, बारबि दिमाग दीप-ज्ञान।
पाँव लागीं मैया, हियरा छन्द गति भरबि, करबि गनेस हे मिलान ॥
हिलि-मिलि मन दुनो देव बसल रहबि, भाव में भरबि अनुराग।
कि रचि नीक पूर्न रामायन सिरजन हो, जिनगी के पथ प अँजोर ॥

## भगवान राम के बन्दना

राम के चरनिया कमल के पँखुरिया त, अँडी के ललौहीं छबि-आभ।
अँगुरिन के नखवा दीपक जनु टेम्हिया, भगता के प्रेमवाँ के लाफ ॥
गोड सुडौल खम्भ केदली के सुनरि छबि, केहरी के डाँड़ करे माँत।
भवँर-सरित-बीच ढोढ़िया सोहति जनु, बाटे पेट पुरइनि पात ॥
छतिया चटान गिरि, रोम-रेख ज्ञान-पथ, निहसत संखवा सुग्रीव।
बहिआँ अजानु दुनो इन्दर के धनुहवा, सोभे जनु सरगा अजीव ॥
मुखड़ा कि चाँद के दमके मंडलवा, गगना में खिलल सजीव।
गालवा कि पुअवा, काव्य के चसनिया में, छानल कोमल रस घीव ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कानवा कि लामका नीलम सितुहवा, नाक नीक सूनर कि कीर।
काटत अधरवा पाकलका बिम्ब फरवा, छबि-घरे रात सत भीर॥
तवना प चंचल दू खँडलिच डोरा लाल, बाँधलि बा पलका से ढांकि।
भँहुआ कमान लेइ मारत भाल सुरुजा, बिपुल बरौनी बान ताकि॥
ऊपरा बइठल बा जटा-घन ऐंठि जस, गहुमन बैठे मारि फेट।
ऐसन छबिमानवा के करीं नमस्कारवा, प्रेमवा से भरि भरि पेट॥

## १५ मात्रिक चौपाई

चढ़ल चइत रस नस सरसाइल। माँतलि प्रकृति मन बउराइल॥
रँग रँग के तृन तरु टुसिआइल। पम्पा सर सिङार सजाइल॥
मग कबन्ध बतावल धइले। किस्किन्धा लखन प्रभु अइलें॥
लखलें सर सरिता क सोभा। जनु धनि-पम्पा नर मन लोभा॥
सिय दरसन हिय भाव जगलें। मदि रस-अनुभव राम भनलें॥
लखन, लखऽ बसन्त अब अवलें। मलय पवन रस नस जगवलें॥
कत सुखदा बन घन मनोहर। कत रमनीय, थल कत सुन्दर॥
फलि-फूलि लदि घवदि तरु उचके। छुअत गगन होड़ जनु करके॥
पर अस समय सुखद हे लछुमन। भरत-दुख, सिय-हरन क चिन्तन॥
सोक जगावत दुनु मन मिलि के। बेधत बिरह काम-सर हनि के॥
जदपि बिकल हिय तात हमार। हरति थकान बसन्त बयार॥
बिविध भाँति क तरु फल घवदल। मलय पवन बहत जल सीतल॥
ढँकलि रंगलि कमल पुस्करनी। खग कपि पसुचरति तट हरनी॥
सर तट प तृन घासि पसरलीं। महि कालीन प्रकृति डँसवलीं॥
दृस्य लखत मन होत बेहाल। रहि रहि उठ सिय-मिलन क ख्याल॥
घवद-पुस्प सटि लत्तरि चूमति। मद बउरि जनु दम्पति बिहरति॥
सन सन बहत पवन तरु ओट। धइ धइ मिलवत क्रिम द्रुम जोट॥
तरु चढ़ि लत्तरि बिलसति माँति। पल्लव-अधर पिअति बहु भाँति॥
सहजे चइत करत मद जोर। ते प तात, पुसकरनी क भोर॥
बिरह, सीय-हरन हिय चिन्तन। बन उपवन क सहज उदीपन॥
करत बेहोस होस जे मन के। हो अधीर धीर नसत जे जिय के॥
लखऽ न लखन, बन के ई गेह। बरसंत मनो फूल भुइँ मेह॥
वायु वेग दोमि बिरिखन दे। बरसि फूल सिला थल ढँकि दे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लटकल गिरल, गिरत, अधगिरल । परल भूमि,भँवरं घुरि लिपटल ।।
अस पुसुपन सँग बिहरति बायु । सटि, मिलि, घुसिं, उर छू उलटाय ।।
झोमि साल पवन जब ससरत । केलत मधुप कलि हिय बिछुरत ।।
भन भन करत पवन अनुसरत । बन्दी जन जनु गावत दउरत ।।
गावति निकसति बायु गुफा के । कोकिल बीन बजावति गाके ।।
गोल खाढ़ तरकुल नभ नीकं । प्रकृति राज रितुराज क टीक ।।
हिलत मिलत झुकि झुमि क पवधा । भेंटत मीत परसपर नवधा ।।
लखन, परसु ई बसन्त[१]-उसाँस । जनु तन परसत युवति क साँस ।।
एक त विरहे पीड़ित गात । तेह प उदीपति प्रकृति बलात ।।
खग ललकारत बोलि अजबे । हनि सर मारत काम गजबे ।।
लखन, लखऽ ना हउ झरना के । बोलत डाउक[२] कस हरखा के ।।
बिहरे कतना, कत हुलसावे । सिय मिलन रत राम बिरावे[३] ।।
आस्रम तात, जब सिय रहली । सुनि यहि सूना क कस हरखली ।।
लखन, लखऽ पंछी नर माँदी । बिहरति कस क हो आनन्दी ।।
भँवरी भँवर फूल प जोटत[४] । चखत पराग अलसि क मोदत ।।
सुनऽ तात, चिरइन चीतकार । निसि बिछोह, चकई क पुकार ।
यही ब्याज साजि जनो साज । अनँग उदीपत तन रितुराज ।।
तात, जनात बसन्त इ आज । सब बिधि जारक, सूजि क समाज ।।
फूल असोक क, लाल अँगार । लाल पात लव-लपट उजार ।।
अगिन क चट-चट,भँवर क गान । सब मिलि झट-पट जरिहें राम ।।
भरलि बरौनी, मधुरी हाँसि । सिया सुकेसी, मृदु, लघु भासि ।।
ते बिनु जिअल, भइल अब भार । लखन, लखऽ इहे प्रेम क सार ।।
रितु बसन्त ई, बन क सिङार । हीय मनोहर बेधत कटार ।।
कोइलि कुहुक, पिहक पपिहरा । मलय पवन अरु तरु पतहरा ।।
करत बिकल ई हम क इहवाँ । कस बीती सिय क ऊ जहवाँ ।।
सिय सँग रितु सुखद जे लगलें । जारक दुखद आजु बिलगले ।।
हा ! अकसरि दुख सिय कस सही । उहाँ बसन्त प्रिय का न बही ।।

---

१—बसन्त उसाँस = वसन्त की स्वासा, २—डाउक—जलकुक्कुट, जलमुरगी, ३—बिरावे—चिढ़ाना । ४—जोटत = मैथुन करते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मदन फूँकि सोकागि जगवलसि। गुन बसन्त* क ईंधन लवलसि ॥
राम सिया क ई वे जरले। तात, न छड़िहें बेमुअवले ॥
लखीं न इहवाँ हा, सीता के। देखीं पर बन बिरिछ लता के ॥
लखन, अनँग-जर जे अधिकाइल। कि सिय बिना मरन निअराइल ॥
लखी न यहँ विदेह-कुमारी। विरह सोक-अगिनि धधकारी ॥
चइत पवन जे स्रम-कन पोछलसि। से हिय आजु, सोक संचरलसि ॥
चिन्ते, सोक जरत तन तात। ते प मदन, मृग-नयनी क याद ॥
तवने पर ई चइती बतास। बहि महि पसरति मलय सुबास ॥
लखन, लखऽ ऊ नाचत मयूर। संग मयूरनी मद में चूर ॥
आ मयूरनी कत हो विभोर। छवि निरखति तकि नाचत मोर ॥
नचि पुनि मोर डयन झकझोरि। थिरके सहुएँ प्रिय मुँह जोरि ॥
तात, दृस्य ई अति संतापत। मदन-दीप टेम्हि-गुल झारत ॥
अस बन विच यह चइत क मास। असह, दुखद बिनु सिय सहवास ॥
हउ, लखऽ मोरनी वेकरार। कस अभिवरतति निज क भतार ॥
जो वसन्त संग सिय रहिती। असहीं प्रेम विकल मो मिलिती ॥
हाय, बसन्त झुकल फूल भार। बीत चलल निस्फल विनु यार ॥
सिय अँगुरी कलि-कनइल फूल। हिलि क बोलावति मो, तरु सूल ॥
ढेरि में जहँ रस रमत सिङार। बरसत कलि-मन भँवर गुँजार ॥
पंछिन कर ई बिहरत झुंड। उर उमगावत काम उदन्ड ॥
यदि वसन्त उहाँ जँह सीता। सहि कस सकी दुख भय भीता ॥
यदि सिय जहाँ विहीन बसन्त। तबो ते जीअल असह नितान्त ॥
मानऽ, वस बसन्त जहँ सीता। का बसाय ? जे परबस जीता ॥
लजवति प्रफुल्ल कमल दृग कान्ति। जेंकरि अलपि वयसि छवि क्लान्ति ॥
बालि मीठि, चलनि मन हरनी। राम प्रिया त जनक नन्दिनी ॥
से सिय सह अस कस उतपात। चइत बतास बसन्त के घात ॥
लखन निसचय इ हो हिय मोर। रहे अलग सिय जीही थोर ॥
कुँअरि-विदेहि मोहि अनुराग। मो अनुराग बिदेहि में जाग ॥

---

* गुन वसन्त = गुण वसन्त = मन्द हवा का बहना, नये नये पत्तों का निकलना, कोकिल की मधुर मधुर बोली, कमलों का फूलना और चतुर्दिक सुगन्ध का फैलना वसन्त के गुण कहे जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भरलि सुगन्ध ई सीतलि बयार। जगवति सुधि जनु जरत अँगार॥
जे बयारि संग सिय सुखदा। से बिनु सीय बनलि अब दुखदा॥
हाय, कुटिल कत काम क बान। वेधि खिंचत मन-मीन सर-ध्यान॥
जे संग सिय लखलें सुन्दर। से बिनु सीय आजु असुन्दर॥
हे लखन, दल-कमल क सेनो। लखऽ समान नयन मृग-नयनी॥
यहि बस आँखि मो इनके देखे। सगर घूमि, फिरि इन्हन निरेखे॥
लछुमन, मलय बसन्ती बायु। परसत तन सिय साँस बुझाय॥
जो पइतीं सतवंती सीता। ले वसितीं तेहि यहँ हे मीता॥
चाह न जागित इन्द्रलोक के। ना मन करित नगर लवटे के॥
लखन लखऽ गिरि-सिखर बिचित्र ऊ। हरिन मिथुन क कइल केलि ऊ॥
लखत हृदय मन मदन मसोसत[1]। सुधि-सिय सिमटि क हिय[2] अगोरत॥
लखन, चाह, जो जिअवल[3] राम। मिलव, सिय पुसकरनी धाम॥
जनक दुलारि मो प्रिय सीता। कस बिनु मो क जिही अलोता॥
का उत्तर हम देबि जनक के। जब ऊ पुछिहें कुसल सिय के॥
हा! लखन, जे धरम अनुसरि के। आइलि साथे छाया बनि के॥
कइसे धरम मूरि ऊ होखी। बिलपति कत ऊ झंखति होखी॥
कसत सकबि जी बिनु सीता के। तजलसि ना जे बन हमरा के॥
अलपि वयसि के साध्वी सीता। सहति दुख कत रहे बन मीता॥
तबो रंच दुखी मोहि देखते। रहे भुलाति दुख निज तुरते॥
निकट आइ प्रसन्न-मुख हँसत। रहे प्रसन्न मोहि मुदि करत॥
कस ते बिना रहीं बल पाई। मिलति न सिय खबरि हे भाई॥
पूछी मइया कुसल पतोहि। तब का उत्तर देबि हम ओहि॥
जा अजोध्या लखन, लवटि घर। रहऽ भरत सँग उहवें बसि कर॥
हम न जिअबि अब बिनु सीताके। मरबि अवसि तट यहि सरिताके॥
अस बिलाप सुनि राम के मन के। कहलें लछुमन जुगुति बचन के॥
सँभारी राम, अपना मन के। अधिका सोक हऽ जरि दुखदा के॥
बिनु उतसाह बुध ना सोहे। पुरुसोत्तमा जे अस कस सोहे॥

---

१—मसोसत = मलना, परिशान करना। २—अगोरत = रक्षा करती हैं, सदा हृदय में बसकर उसकी देखभाल करती है। ३—जिअवल—जिन्दा रखना चाहते हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



स्वजन बियोग सबके होला। सबका ई जग सहे पडेला ॥
अस गुनि बुध सनेह समतूले। सम-घृत पा जस बाति बरेले ॥
का अकास त का पताल हे। राम, लुका न रकसा सकिहें ॥
पता लिहीं पहिले पातकि के। दिही सीय न तु तजी प्रान के ॥
जो दिति गभ लुकाई सीय के। मारबि तहवों खेदि नीच के ॥
यह से राम धीर मन धारीं। हिय से दीन बिचार निकारीं ॥
करे न जे उद्योग उतसहि के। लहे अर्थ ना निज अभिस्ट के ॥
हिम्मत नसे न नर उतसाही। कठिन से कठिन बिपदा माहीं ॥
यह से लीं आस्रय उतसाह के। सकबि जीति तबे राच्छस के ॥
निज महानता राम सोचीं। कामी के अस सोचल मोचीं ॥
भूलल भाय, अपना के बानी। निज सरूप भुलवले बानी ॥
धरीं धीर रूप निज देखीं। दुस्ट दमन करतब निज पेखीं ॥
अवतरलीं जे हित हे गुसाईं। कइ लीला ते दिहीं दिखाईं ॥
भ्रात बात सुनि राम हँसलीं। माया बोधि काम सउँपलीं ॥
सोक ताप छन भर में नसलें। धीर प्राक्रम सहुँए अइलें ॥
नद नहा प्रभु पम्पा लँघलीं। परबत रिखिसूक निअरवलीं ॥
पुसकरनी तट छिपल कपीस। देखलसि घूमत भेख मुनीस ॥
डरि भागल मन धीर नसलसि। सोचि कि इनके बालि भेजलसि ॥
भगि मतंग गिरि लुकल छिपाइ। खोजि निरापद गुफा समाइ ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के पहिला सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि कार्तिक सुदी ८, सम्वत् २०१८ विक्रमी तदनुसार १५ नवम्बर १९६१ ई०, दिन बुधवार।

---

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा-बिहार ।

## किस्किन्धाकान्ड

### दूसरा सरग

प्रारम्भ तिथि—माघ बदी १, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार २१. जनवरी, सन् १९६२ ई०, दिन रविवार

राम-लखन के आगमन से सुग्रीव आ उनका सहायक कपि-दल में भगदड़ आ आतंक, सबके भाग के परबत के सिखर पर लुकाइल, फेन अपना-अपना जूथपति बानरन के सुग्रीव के पास भेजल,सुग्रीव के सभा कइल आ राम के बल पौरुस बखानल आ आपन भय दरसावल, हनुमान जी के समुझा कर के राम के पास दूत रूप में जानकारी वास्ते भेजल, राम हनुमान भेंट, हनुमान के राम-गुन बखान कइल आ आपन परिचय देके सुग्रीव के परिचय देल आ मित्रता के प्रस्ताव रखल। राम जी के आपन विपदा बरनन आ मित्रता के प्रस्ताव स्वीकार कइल। हनुमान के फेन कपि रूप धारन कइके राम-लखन के पीठी पर चढ़ा के सुग्रीव के गुफा के पास ले गइल ।

### १५ मात्रिक चौपाई

सगर खबर गिरि प झट फइलति । अइलें रिपु दुइ बालि पठवल ।।
रिपु भेजलसि बल बिघटे हमार । दल सुग्रीव क करे उजार[1] ।।

---

१ उजार=नाश ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हटि कपीस मतङ्ग गिरि लुकलें। जे बस स्राप निरापद मनलें ॥
सुनत समाद अस कपि डरलें। कलपि विलपि दल भयसे भगलें ॥
तूरत डारिह, कँपावत परबत। कूदत-फाँदत, सोर मचावत ॥
पसुन डरावत, सिंह भगावत। खग दल, जल, थल, सब उडावत ॥
प्रलय तुफान जनु आ ऊठल। भगदड़ मचल केहु न बूझल ॥
सकल जूथपति बानर बृन्द। दल ले चढ़लें डरि गिरि सृंङ्ग ॥
ऊँच से ऊँच सिखर धऽ लुकलें। डरल गुनत कि रिपु बड़ अवलें ॥
दल जुटि निज नायक क भेजलें। जहाँ छिपल डरि नृप कपि रहलें ॥
जा बइठलें जूथपति बानर। जहँ सुकन्ठ सीलगुन आगर ॥
चतुर सुकन्ठ मानि क बिपदा। नीति बात गुनि भय क दुखदा ॥
सभा मध्य कपि क समुझवलें। बली वीर इ बालि पठवलें ॥
करे बरे हमके निहसेस। अगिन सत्रु न रहन दे सेस ॥
स्वयं स्राप बस आ न सकलसि। तब रिपु तपसी भेख भेजलसि ॥
अवसि अवसि ई बड बलवान। बीर धीर बल गुन क निधान ॥
केहरि सम बा· कन्ध महान। भुज अजान बा, छाति चटान ॥
पीठि तुनीर त हाथ कमान। लटकति कमरि में खडग उतान ॥
तेज तपत मुख, कच सिर बँधल। ससि मंडल प जनु घन ओरमल ॥
स्याम गोर जस चलत गयन्द। तेज पुंज बल लखत बुलन्द ॥
इनसे लड़ि हम जाइबि हार। उतरी बालि क माथ क भार ॥
एह से जा तू हे हनुमान। हम में सब से चतुर सुजान ॥
बात बता अनुकूल कहिके। जनिहऽ मनके पहिलें उनके ॥
तब अभिस्ट के साधन तकिहऽ। कसहूँ उनके पच्छ में करिहऽ ॥
अधिक कहीं का तात, चतुर तूँ। ज्ञानी, धीर, बीर सुजान तूँ ॥
सब तरह तू दूत-गुन आगर। बल, बुधि, ज्ञान, सील क आकर ॥
करिहऽ होखे जेहि से हिताय। नाहि त इहाँ से अवसि विदाय ॥
विप्र रूप धऽ कपि तब चललें। अइलें गिरि जहँ राम रहलें ॥
राम क· देखि अलौकिक रूप। नमलें ब्रह्म जे अलख स्वरूप ॥
तन प्रनाम कइ राम लखन के। कपि निअरा गइलें तपस्विन के ॥
अचरज कइलें तपसि भेख प। राज रूप, बल, तेज, त्याग प ॥
तन क सुन्दरि कान्ति सरहलें। बन प्रवास क कारन पुछलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अंग अंग क रूप निरखलें। बरनि तेहि, रस-प्रेम भोरलें ॥
सर क सोभा, चाप क सोभा। असि लटकति कमरि कर सोभा ॥
सोन जड़ल तरकस क चमकल। मीना कइल बान क दमकल ॥
चाल गँभीर, अधर कै मुसुकल। सार महा-छबि क जनु सिरजल ॥
एक एक छबि देखि भुललें। पहिल जनम के परिचित मनलें ॥
तब हो मूक बिहवल मन कर। राम ब्रह्म के मन में नमन कर ॥
सीस नवा पुनि पुनि प्रनमि कर। कहलें गदगद भरल कण्ठ कर ॥
प्रभु न चिन्हली, हम त जनलीं। अवगुन कवने हम क भुललीं ॥
अबो त चिन्हीं नाथ दास के। ह्रास कबूल करी इ दास के ॥
मोर नाम हऽ हनुमत बानर। सड० सुकण्ठ बसीं यहि ठावर ॥
पवन पिता, अंजनि हऽ माई। देव देल योनि-कपि पाई ॥
बदलि त रूप सकीं निज बल से,। जाइ सकीं चाहीं जहँ मन से ॥
बली बालि सुकन्ठ खेदलसि,। इनकर राज नारि हडपलसि ॥
हीन सहाय नृप हऽ बिसासी। भागि मलय प बसल उदासी ॥
जहाँ बालि बस स्राप न आवत। यहि कारन सुग्रीव बाँचत ॥
नीति निपुन ग्यानी सुकन्ठ हऽ। बली, लोक प्रिय, मीत नीक हऽ ॥
बिरही, दीन, दुखी, असहाय। सखा हीन इत उत बिललाय ॥
बालि से डरि क खोजत मिताइ। मिले मीत मो करे सहाइ ॥
के हईं उरा? कहाँ से अइलीं। राजबंस, भेख मुनि धइलीं ॥
कारन कवन फिरीं दुखारी। तेजिराज बनलीं भिखारी ॥
भुज अजानु इ राज निसानी। रहनि सहनि इ राज घरानी ॥
बल प्रताप तेज प्राकरमी। गुन-गौरव लउकत बिकरमी ॥
ओइसे ग्यान सील भी भावे। चाल सौम्य गयन्द लजावे ॥
अस गुन आगर, असक जोरी। स्याम, गोर, मलय तन खोरी ॥
कि ई इन्द्र, कि कामदेव बा। कि ई ब्रह्म, कि मनुस सरीर बा ॥
केउ भी होखीं, जे तन धारी। नर, देव, सिध भा अवतारी ॥
जउँ निज काज साधल चाहब। भल सुकण्ठ सहायक मानब ॥
गरजमन्द मिलि गरज साधल। नीति सास्त्र भल इहे मानल ॥
निज प्रभाव नृप जन में रखलें। जदपि आजु उ हारल लखलें ॥
पर सत बल बा इनके संगे। धीरज ग्यान नीति बल सगे ॥
जहाँ सत तहँ विजय हो अन्तो। बेद पुरान कहें इ सन्तो ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह से नीति गुनि सोचबि तात । करबि विचार जे कहलीं बात ॥
हम सुकण्ठ क पठवल चललीं । उनकर चाह सखा क भनलीं ॥
निज मतलब क कहीं गुसाईं । गुनि हित, अनहित मन बताईं ॥
सुनि कपि बचन राम हरखलीं । कपि गुन, ग्यान, सील बखनली ॥
पहिला परिचय मन में गोपलीं । बस संकोच न कहि जनवलीं ॥
अंक भेंटि नयन जल ढरलीं । सखा बोलि हनुमत दुलरलीं ॥
कपि से आपन बिपदा कहलीं । सहज भाव अकपट बखनलीं ॥
कुल, पितु, मातु, देस बतवलीं । हित परिवार क बात कथलीं ॥
राज घोसना त बन आग्या । भरत भाव, केकइ दुराग्या ॥
लखन सिय सँग बन क अवाई । पिता मरन, त भरत मनाई ॥
बध मारीच-मृग, सिय क हरल । भेंट कवन्ध, उनके सब कहल ॥
सब समुझा पवन सुत कहलीं । सखा सुकन्ठ के बनल चहलीं ॥
हरखि पाँव हनुमान पड़लीं । कृपा सिन्धु उठा उर लवनीं ॥
तब हनुमत कपि रूप धइलीं । पीठि चढ़ा दुनों लेइ चललीं ॥
रखि दुनो सुग्रीव गुफा गृह । अइलें जहँ सुकण्ठ छिपल रह ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार, विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के दूसर सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि—माघ वदी १०, सम्वत २०१८ विक्रमी तदनुसार ३१ जनवरी १९६२ इसवी, दिन बुधवार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना-बिहिआ, जिला —साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## किस्किन्धाकान्ड

### *तीसरा सरग*

प्रारम्भ तिथि—माघ बदी १४, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार ४ फरवरी १९६२ ई० दिन रविवार ।

राम लछुमन के सुग्रीव के गुफा के पास बइठा के हनुमान के विप्र रूप फेन धारन करके सुग्रीव के पास दूर निरापद स्थान में गइल आ सब हाल बता के राम जी से मित्रता करे के सलाह देल । सुग्रीव आ हनुमान के राम जी के पास आइल आ राम जी के बड़ाई कइके मित्रता करेके प्रस्ताव राखल राम जी के मित्रता स्वीकार कइके अग्नि देवता के साच्छी देके मित्रता के प्रतिग्या कइल । फेन सुग्रीव से वार्ता आ राम जी के बालि बध करेके परतिग्या कइल । सुग्रीव के राम जी से सीता जी के फेकल गहना आ ओढ़नी दिखावल और राम जी के बिलाप । लखन आ सुग्रीव के समुझावल आ राम जी के रस प्रेम के महिमा बतावल ।

### १५—मात्रिक चौपाई

लखि सुकन्ठ दूत कपि आवत । मनलें सगुन देखि मृग भागत ।।
उठि हनुमत हरखि सतकरलें । आतुर हो हवाल सब पूछलें ।।
तब कपि कथा बिसेखि कहलें । राम लखन क परिचय दिहलें ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बंस, पिता,पुनि भनि कलह-गृह । बन आगम लखन सिय सँग कह ॥
धरम, सील,बल,बिक्रम कहि क । ग्यान, सुधीर,तप, तेज, कथि क ॥
सीय हरन क कथा सुनवलें । सम सुकन्ठ दुखी नृप भखलें ॥
कहलें, सुनीं, राम-मिताई । जो पवलीं त लहबि हिताई ॥
बालि-मरन, पुनि राउर राज । बनले मीत लाभ बा आज ॥
रामो चाहसु सिय कर जोह । पता ले अइलें रउरे सौंह ॥
चाहसु रउरो ऊ सहाई । करीं कपीस राम-मिताई ॥
नीति सास्त्र जग कहे समाज । समय परखि बुध साधे काज ॥
सुनि प्रसन्न सुग्रीव भइलें । कपि सँग मुदि ढिग राम अइलें ॥
रूप अलौकिक लखि क मोहलें । गुनि मन मायातीत मोदलें ॥
प्रभु क करि मन प्रेम प्रसंसा । सील भाव गुनि होइ निसंका ॥
चरन बन्दि सिर कर जोरलें । धरम, तपस्या, त्याग बखनलें ॥
पितु सँग निज क परिचय दिहलें । स्वर बिनीत में राम बिनवलें ॥
राम, रवाँ त रघुकुल भूसन । हम कपि जाति पातकि पूरन ॥
चाहीं प्रभु जो मोरि मिताई । हित मोर, बड़ भागि, बड़ाई ॥
जो मोहि अघी क नीक मनली । बढ़ल मोर ई हाथ ग्रहिली ॥
बनलि अटूट जे रहे मिताई । साखि प्रतिज्ञा मन मां दिढ़ाई ॥
अस कहि क निज हाथ पसरलें । ढर ढर दृग दुनों जल ढरलें ॥
भरल कन्ठ में स्वर रुकि भ्रमलें । मन, वच, करम, भगति बिनवलें ॥
बचन सुग्रीव के सुनि आरत । प्रेम भरल, सहज मन भावत ॥
अकपट बढ़ल हाथ पकड़लीं । भरि दृग नीर अंक लगवलीं ॥
दखिन उत्तर देस इकाई । धऽ बँधली करि राम मिताई ॥
हनुमत तब अगिनि सुनगवलें । धऽ फल-फूल बेद बिधि पुजलें ॥
पुनि धइ खडग निकासि खापी । कहलें नृप से मैत्री थापी ।
तब सुग्रीव प्रभु कऽ प्रदछिना । सिर नवा भइलें बधं बचना ॥
बनल रही मैत्री हम दुइ के । करत रहबि हित एक दुसर के ॥
जे न करी बनी बड़ दोसी । गिरई गाज बिधि ते प रोसी ॥
अस प्रतिग्य मुदि नृपति बइठले । डारि्ह तूरि सुग्रीव जे डँसले ॥
मलय साख तूरि उत हनुमन । डँसा बइठले सँग ले लछुमन ॥
निरखत एक दुसर नृप मुदि के । तुस्ट न होत हिय मन उनके ॥
तब सुकन्ठ राम लखि कहलें । सुख-दुख हमन एक अब बनलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राम निकासल घर के रहलीं। भय आतंक बस बन फिरलीं॥
नारि मोरि बलात छिनाइलि। घर दुआर सबे हड़पाइल॥
बड़ भाय जे बालि कहवलें। नारि छीनि मो घर से निकसलें॥
से भय भागि यहि गिरि प बसलीं। चित विकल हिय अति दुख सहलीं॥
भयातुर जे बा तेह सेवक के। सखा दान अब दिहीं अभय के॥
करि उपाय राम भय नासी। भनल सास्त्र क धरम विकासी।
दृग जल ढ़ारि ताकि चुपइलें। द्रवित हीय राम लखि भइलें॥
भरल कन्ठ तब राम कहलीं। सखा यही लगि मो प्रन सुनिलीं॥
कहीं प्रमानि के धरम साखि के। मारबि न्हिचय तोर भाइ के॥
ई कमान अरु ई तुनीर सर। अवसि अवसि क हती बालि सर॥
इन्द्र बज्र क चोट भयंकर। जस गिरि मर्दि गिराव भुइँ पर॥
तसहीं बालि गिराइबि मारि। आ ला देबि राज तो नारि॥
जो न करीं त ना रघुबंसी। अधम उधारन न हरि अंसी॥
सुनि अस प्रन सुकन्ठ हरखलें। गदगद हो पद राम पकड़लें॥
उचरल काग सगुन जनइलें। दहिने से मृग बायें गइलें॥
भरल घइल सिर निकसलि भिलिन। साथ मोटरिया धइक धोबिन॥
नील कन्ठ उड़ि क सहुँ बइठल। तीन जगह अंग संग फरकल॥
सिय, सुग्रीव, निसाचर आँखि। कमल, हेम, ज्वाला सम साखि॥
फरकलि बाँव दाँव इक साँस। धुधुक वजल जय भनल अकास॥
देव सुमन नभ से बरिसलें। पसु पंछी बन मुदि बोललें॥
मलय मधुर सुचि बहलि बतास। दिग दिगन्त में फिरल सुबास॥
नृपन, लखन, हनुमत हरखलें। कि विधि बाँव दाहिने गमलें॥
तब चित सान्त कपीस भनलें। प्रभु वृतान्त तोर कपि कहलें॥
कइसे बन बिचरलीं साईं। गइलि कसत हरल सिय माई॥
कस जटायु क राच्छस मरलसि। कसक रवाँ बिरह संतपलसि॥
हम सम बिरह रवों त सहलीं। नारि राज हरन दुख जनलीं॥
करबि खोज हम सियक लानबि। जोहबि सकि भर उठा न राखवि॥
नभ पताल ढूँढ़ि सब छानबि। बिरह दुख ध्रुव राउर नासबि॥
बेद वाक सम प्रन प्रमानबि। सखा धरम अरथ संथापवि॥
जो न करीं हम अस हे राम। पाईं नरको कतो न ठाम॥
जहर मिलल अस भोजन सीय। केउ नहिं पचा सकी अस तीय॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आनबि अवसि अवसि त सीता। ना त मरबि ध्रुवे जरि चीता॥
देखलीं नाथ एक दिन नभ में। राछस नारि एक धऽ गोद में॥
उड़ल जात रह दक्खिन ओर। रहे साफ दिन समय त भोर॥
बिलखि नारि रोअति रह जोर। तड़पति नागिनि जनु मुँह मोर॥
हाय राम, राम, हे लछुमन। डाकि पुकारि चीखति अनमन॥
कइलीं एह से हम अनुमान। उहे रही सिय राउर राम॥
देखली जब ऊ पाँच कपिन क। बइठल भुइँ पर ताकत उनक॥
गहना काढ़ि उतारि पछोरि। फेंकली ताकि हमनके ओरि॥
सचिव मंत्रि धइ रखलीं तिनके। लावत बानी परिखीं उनके॥
तब गुफा सुग्रीव समइलें। ला सबे प्रभु सनमुख धइलें॥
हरखि राम रखि हाथ लखलीं। हिय निज चिन्हा चिन्हि लवलीं॥
हिया उठल एक अजब तुफान। करुन सिङ्गार क भइल जुटान॥
भाव एक प एक लहरलें। मूक राम बनि सबे परिखलें॥
मन चंचल द्रवित हिय बिलखल। हरख बिखाद सथवे उमगल॥
सिथिल अंग मुख आव न बात। धड़कत हृदय त काँपत गात॥
छिपल निहार चाँद अस आँखि। ढँपलसि पलक रूप मन साखि॥
मूक अचेत बनलें रहलीं। डरि तब लखन राम पुकरलीं॥
राम धीर गुनवान रउरा। अस कस बिलपीं बनि अधीरा॥
चिन्ही बसन भूसन न अउरी। पहिचानीं प अँगुठा अँगुरी॥
करत प्रनाम नित्य जे देखली। से अँगुठा ई अवसि परिखलीं॥
यह से सत बा भैया इहे। रही ठीक सिय भउजी उहे॥
आ ऊ गइली दक्खिन ओर। तब तजि बिलपल बाँधी जोर॥
उतसहि क करीं दक्खिन खोज। बिलपे से हम नासबि ओज॥
तब निज नयन राम उघरलीं। फनधर सम रिसाई उससलीं॥
पुनि दृढ़ बोधि सखा पुकरलीं। हाँ हमारि उहे सिय रहली॥
असुर रूप भयंकर धारी। हरि ले गइल कहाँ हा! प्यारी॥
कहाँ बसे संकट संघाती। मीत पता दऽ तेहि कि बिघाती॥
नाहीं सवहीं ओकरे कारन। जगक असुर मरन निअरालन॥
हरि बिदेहि रिस मोरि बढ़वलसि। खोलि कपाट मौत बुलवलसि॥
हे कपि, ऊ जे मोके छलिके। सिय हरलसि अपमान कइके॥
अधम वध्य अरि हउए मोर। पता कहितऽ मरिती सर घोर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



इहवें से जहँ छिपल ऊ चोर। जे कइ दिहित असेस बिनु सोर ॥
अस कहि राम रिसि धनु धरलें। थल अकास जल परबत कँपलें ॥
लखि सुग्रीव राम दुख रोस। कहलें पानि जोरि नमि सीस ॥
राच्छस परिचय, पता, निवास। कुल, बल, बिक्रम, बसगित खास ॥
जदपि न जानी हम हे तात। पर प्रन करिले हम यहि बात ॥
कि तुरते जानबि सब हे नाथ। आ लानबि सिय पता क साथ ॥
यह से करीं सोक परित्याग। नासे बल, बिक्रम जे आग ॥
करीं सहज बल धीर क याद। जेहि अवतरलीं ले निज साथ ॥
सहज गँभीर बुधि नसि दीहल। अवतारी प्रभु तो न सोहल ॥
जदपि हईं हम बानर जात। कामी अबुध असंजमि तात ॥
तदपि जानि निज क यह बिपदा। बिलपीं न रखि बिरहा हिरदा ॥
अपने बड़का पँडित महान। सभ्य, संस्कृत, बल धीरवान ॥
मरजादा करबि कस लंघन। सात्विक धीर पुरुस क बंधन ॥
जे भय, सोक, संकट, बिपदा। करे उपाय बुधि बल अपना ॥
धरि भरोस धीर पौरुस के। से हो सुखी कस्ट परिहर के ॥
नर जे बिपति रहल घबड़ाइल। बुद्धिहीन हो निपट डराइल ॥
लदल नाव अस बोझ अपना। बिवस होइ होखी जल मगना ॥
सोक, कइल जे सुख से, बिनासल। तेजहीन हत, हित गँवावल ॥
सहज भाव से बातबिंसेसीं। मीत-भाव बस, नहिं उपदेसीं ॥
अस कहि क सुग्रीव चुपइलें। राम हरखि कपि क समुझवलें ॥
भाव तोर मीत, आदरलीं। नीति निपुन तो बात सरहलीं ॥
पर ई सखा, सत्य ते मनिहे। मिलि सिङार बीर रस पनपे ॥
बीर करुन रस परम मिताइ। एक एक मिलि गुन अधिकाइ ॥
बिना एक के हऽ एक दोख। रूप हिताय न ओकर होख ॥
करुनामय तहँ दया निधान। दया जहाँ, बल, बीर महान ॥
यह से तात, ते आन नहिं मान। बिरह, प्रेम-गुन बरधक जान ॥
जेकर हिय रसराज न सरसे। से नर पसुवत जीवन बिनसे ॥
रस सिङार रज-गुन क निखार। बिनु रज, सक्रिय के संसार ?
मानुस जोनि रस कर हऽ खान। करे इहे नर पसु अलगान ॥
रस सुख दुख कर कारन मेल। सब सापेछ परसपर मेल ॥
सान्त, सिङार, बीर, त करुना। बिभत, रौद्र, हाँस रस जतना ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हवें हीय भाव बिसलेसन। नर हिंय मूल बसें सिंहासन॥
जे बुधि, अनुभव हवें आधार। पंच तत्त गुन सहज निखार॥
जेहि माध्यम से चेतन सरसे। माध्यम जे अनुभूति ले बरसे॥
एह से तात, सींय अनुराग। विगत विकार त सत्य क आग॥
विकार रहित अनुराग हऽ प्रेम। प्रेम मूल जीवन सुख नेम॥
मोर बिलाप न अवगुन भाव। विगत विकार जे सत अनुभाव॥
पर हित क तव बात सुग्रीव। उचित हितैसी, मितता नीव॥
सखा साँच जस राखे भाव। तस हिताय तव बचन, सुभाव॥
भाव प्रधान बात कर चाह। जहँ नहिं भाव न तहँ मो बास॥
जे कुछ चाह तोहर मन होय। कहिहऽ सुग्रीव पुरइबि सोय॥
बालि बधे क प्रन हम कइलीं। करबि अवसि अवसि दोहरवलीं॥
कहि अस बात राम चुपइलें। मुदि सुग्रीव सर पद धइलें॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम- दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के तीसर सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि फागुन कृस्न पच्छ ३ सम्वत् २०१८ विक्रमी, तद्नुसार २२ फरवरी, सन् १९६२ इसवी, दिन मंगलवार।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम— दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# किस्किन्धाकान्ड

## चौथा सरग

प्रारम्भ तिथि—फागुन कृस्न ८, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार २७ फरवरी १९६२ इसवी, मंगलवार।

राम जी के साथ सुग्रीव के सुख-दुःख बतिआवल। रामजी के पूछला पर कि बालि सुग्रीव के घर से काहे निकललसि सुग्रीव के विवरन बतावल, फेन मय दानव के बेटा मायावी दानव के बालि द्वारा बध के बृतान्त सुनावल।

## २६ बर्निक बिरहा छन्द

(१६ पर यति अन्त दीर्घ लघु)

बसले सुकन्ठ राम रिखिमूक परबत, हिलि मिलि मीति वेवहार।
हनुमत लखन सेवकइ करें ठहरे, बीतल दू तिन दिन चार॥
देखि दुखित दुख कपि से राम पूछलन, काहे भाय देलसि निकालि॥
कहलें सुग्रीव निज कहनी बिसेखि कर, जस करि खेदलसि बालि॥
हड़पलसि जस इन राजपाठ तिरिया, कत मारि मरलसि रोज॥
विनय विसेखि सभे हलिया बतवलें, भनलें बल बालि क ओज॥
त राम गुन गवलें आसरवा लगवलें, कइले चरनवा क ध्यानि॥
कहलें कि पिता तुल्य बालि के जनलीं, आदरलीं स्वामी अस मानि॥
राजपाठ सकल युवराज पद तेजलीं, सेवलीं बड़कवा व जानि॥
तवनो पर मनवाँ के बालि के मइलिया, मिटलि ना तनिको मिटाय॥
साथी आ सँघतिया मोर जेजे राज रहलें, देलसि ते नोकरी छोड़ाय॥
तब रहे चमकल मायावी मय बेटवा, दुन्दुभी के बड़ रहे भाय॥
नारि कारनवा बालि भइल दुसमनवा, दिने दिन बैर अधिकाय॥
त राति समैया रहे बालि रनिवास रहे, मदन के केलि रहे जोर।
आइल मायावी किस्किंधा के फटकवा पर, युधि ललकरलसि घोर॥
सहि नाहीं सकल बली बालि ई करखवा, नारि सोझा रिपु ललकार।
उठि झट निकसल धवलीं हम हूँ संगे, करखा बोलल ठोकि ताल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



देखि के मायावी भागल पोंछिया दबवले, खेदलीं हमन हलकान।
त भागत भागत भुइँ ओबरा[1] समाइल, उहे रहे ओकर मकान॥
पहुँचलीं जो बालि हम तहवाँ ठठमलीं,[2] क्रोध रहे बालि के महान।
प्रन तब करि घुसलें बालि भुँइ ओबरा हथवा में लिहले निसान॥
बिना रिपु मरले त हम नाहीं लवटाब, रुकिहऽ तू तबले धऽ धीर।
पर पख भीतरे अवसि हम बहुराब, नासि दुसमनवा सरीर॥
एक पख, दुइ पख, चारि पख बीतलनि, तबहूँ ना निकसल बालि।
बहल प्रबल धार रकत के बीलिया से, बहुते त भइलीं बेहालि॥
बालि क मरन, परकिरित मायावी गुनि, भगलीं बोली प सील टेकि।
मन्त्री लोगे घरवा सिंहासन बइठवलें, बरबस देलें राज-टीकि॥
पर पख बादे राम, बालि आइल घरवा, ठनलसि हमरा से रार।
चहितीं जो राजवा हम बालि के पछरितीं, करितीं ते निपटे संहार॥
भाई गुनवे खुसीखुसी राज से उतरलीं, देलीं ते सिंहासना बिठाय।
पर समुझावे बालि नेकिओ ना मनलसि, दिहलसि मारि मो हटाय॥
बरबस छीनि मोरि नारि अपनवलसि, भये फिरी मारल जहान।
थकल दुखल हम त बिरहा के मारल, बसलीं सरन गिरि आन॥
जहाँ मुनि स्राप बस बालि नाहीं पहुँचत, तबो भेजे मारे खाती दूत।
इहे त कारनवा हऽ राम दुसमनिया के, जे के हम दिहलीं सबूत॥
जगवा के स्वामी मीत, दुखवा निदान करीं, मारि बालि करीं मो सहाय।
सुनिके बचनिया राम दया क सागरवा, मधुरे कहलीं मुसुकाय॥
अपने से जानीं मीत, सोक तोरा हियरा के, अवसि के करबि सहाय।
बालि मारि बान एही राज नारि तोहरा के, निहचय देबि लवटाय॥
सुनत बचन सुग्रीव भइलें गदगद, प्रेम में बिभोर हो गम्हीर।
झट उठि राम के चरनिया सिर धइलें, ढर ढर ढारि दृग नीर॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार बिरचित साहित्य रामायन के किस्किन्धा कान्ड के चौथा सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि फागुन कृस्न ११, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार २ मार्च १९६३ इसवी, दिन सुक्रवार।

---

१—भुइओबरा = भूमि में स्थित तहखाना। २—ठठमलीं = किं कर्तव्य विमूढ़ हो खड़ा रह गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी-कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर; जिला—साहाबाद, परगना—बिहिआ, सूबा—बिहार

## किस्किन्धाकान्ड

### *पाँचवाँ सरग*

प्रारम्भ तिथि-फागुन कृस्न १३, सम्वत २०१८ विक्रमी, तदनुसार, ४ मार्च, १९६२ ईसवी, रविवार

सुग्रीव के रामजी से बालि के पौरुस बतावल आ बतावल कि कइसे बालि दुन्दुभी दानव के मार के ओकरा लास के मातंग बन में फेंकलसि। फेन बतावल कि मातंग मुनि कइसे बालि के स्राप देलन। फेन दुन्दुभी के हड़खारि[1] देखा के राम जी के बल के परीछा लेल।

### पन्द्रह मात्रिक चौपाई

पुछलीं राम, कहीं कपि राय। मुनिहिं स्राप-कारन समुझाय,॥
जेहि भय बालि इहाँ न आवत। जानत जदपि तूँ इह वें रहत॥
अवसर पा कपि मन क कहलें। महाबली हऽ बालि बखनलें॥
कहलें, बालि क बल हम जानीं। युधि उतसाह, दच्छ, अभिमानी॥
जस सुत इन्द्र, बल भी ओइसे। आन, बान, दम, डर, न कोइ से॥

---

१—हड़खारि=ठठरी सारे अवयव की हड्डियाँ एक में यथा स्थान सम्बद्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सुरज़ उदय से पहिले धावे। जोजन सत प्रमानि न थाके ।।
सिखर चढ़ि नभ फेंके ढोका। लखि गिरत कुदि उपरे लोका ।।
बन क साल बृच्छ जे बड़का। अजमावे बल तूरि तड़का[1] ।।
यदपि भरोस रवाँ में थपलीं। पर बल राउर ना परिखलीं ।।
यह से तात, बालि बल भखलीं। दम, पौरुस, धीरज जनवलीं ।।
रिपु बल, निज-बल, गुनि, तुलि तात। करीं उचित जे समुझीं बात ।।
भाखे नीति बात निरधार। बिनु बल गुने करे नहिं रार ।।
थपलीं मैत्री आगि दे साखि। मन, बच, करमे, धरम से भाखि ।।
सखा भाव बतावे धरमा। निज-हित मित न करे कुकरमा ।।
मीत हीत सँग छल न राखत। जेहि मिताइ बिससि संथापत ।।
एह से छमबि मोरि ढिठाई। सरहलीं जे बल रिपु क भाई ।।
भाव आन नहि मानबि हिय के। सहज भावना प्रेम क मन के ।।
दानव दुँदुभी बात पुरान। भइसा रूप बसल यहि ठाम ।।
बल हजार हाथी के राखे। करि तप, मद-बल दम्भ भाखे ।।
काल कलूट महा विकरमी। रोस, तेज तस चाल उधमी ।।
दम्मे सागर क ललकरलसि। युद्ध देहि क करखा बदलसि ।।
सागर डरल जोरि निज कर के। मनलसि हारि असमरथ कथि के ।।
प बदलसि सिवगिरी हिमालय। दिही अवसि युधि, बल क आलय ।।
जहँ बड़ खोह, कँदरा, झरना। रिसि आस्रम, गंग उदगमना ।।
सुनि सम बान दुन्दुभि धावल। चढ़ि गिरि सिखर तूरि भुइँ डारल ।।
डरि हिमालय काँपि बिनवलें। अत, कत बली तो सम बसलें ? ।।
जो चाहसि ते जोग लड़ाई। किस्किन्धापुर बालि प जाई ।।
जोग जोग से बल समतूले। अबल त अपने हारल हउए ।।
सुनि क सर सम महिस सरकलें[2] । पल में बालि क द्वार करखलें ।।
सींधि से मारि कपाट तुरलें। हूँफि, कूदि, भुइँ मर्दि खुरुचलें ।।
महल केलि में मस्त बालि रह। घिरल जोन्हि चाँद खेलत जहँ ।।
सुनत क्रोधि क नारि ले निकसल। मद से मस्त लाल मुँह दमकल ।।
कहले बालि बोलु दुधुकड़ी[3] । मय क सुत, मायावि मयकड़ी[4] ।।

---

१—तड़का = नवा कर किसी चीज को पनच निकाल देना यहाँ तक कि वह टूट जाय। २—सरकलें = तेजी से चला। ३—दुधुकड़ी = दुन्दुभी का तिरस्कारित नाम। ४—मयकड़ी = मय का तिरष्कारित नाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तोर भाय बल मोर जनलसि। जमपुर जाइ जीव बचवलसि॥
मरन हेतु फिनगी वनि नन्हीं। अइले सहुँ दीपक क टेम्हो॥
भागु भागु न त अबे मारबि। ऐंठि के सींध भुआ में गाडबि॥
हँसि क महिसा कड़कि रिसाइ के। बचन कहल गम्भीर अड़कि के॥
अरे बालि नारि कर सहुँए। का बकसि कामी घिन हउएँ॥
देखिले बल, आइ सहुँ लड़ि ले। मद पी कर अतना मत बकि ले॥
बनि उदार निसि रोकबि रोस। भोगिले नारि, न जवले भोर॥
संघी साथी मीलि, देइ ले। रे बानर, घर नगर क लखि ले॥
निज, परकीय क रमि जी भरि ले। पूतक आपन राजटीकि ले॥
नसइल, सूतल, युधिक भागल! रमत नारि, बिना असि, थाकल।
हते जे से जगत कपि राई। पातक घातक गर्भ कहाई॥
सुनिके दमकि, कूदि कपि चीखल। घन घुमडि ठनका जनु ठनकल॥
भँइसा, तोहरा जो इ बुझाइल। पीके मधु बा बालि मताइल॥
त लड़त जूनि, बल लखि जनबे। हेतु युधि औसधि मद मनबे॥
अस कहि, कर गहि, सींधि दबाय। इत उत हुलि चहुँ ओर घुमाय॥
उठा पटकलसि महिस क बालि। गिरते लिहलसि प्रान निकालि॥
उठा महिस सव फेंकलसि मूक। आइ गिरल जे इहाँ रिखिमूक॥
जहँ मतंग मुनि आस्रम रहल। पसु पंछी, जल, सर, नद भरल॥
लखि मुनि रकत, लोथि सरपले। रे कपिराज कत बल मखले?
घुसि आश्रम ते न सकबे मोर। इक जोजन प्रमानि चहुँ ओर॥
जो अइबे त स्राप बस जरबे। पूत कलत्र बंस क नसबे॥
तब से बालि इहाँ नहिं आवत। निरखत बन इ थर थर काँपत॥
इहे हऽ हाड़ देखीं ई पूर। फेंकलसि बालि जेहिक अत दूर॥
ई सत साल साल क बिरवा। मोटा कत देखे में बड़ बा॥
इन्हन बालि दोमि क तूरे। पकडि हिलाइ निपतई करे॥
अस बा बली बालि, हे राम। मारब रउरा कस संग्राम?
मुसुकि लखन कपिराज पूछलें। परखबि बल प्रभु क का कइले॥
जेह से राउर उर-भ्रम जाय। राम क बल विस्वास जमाय॥
सोचि सुकंठ बात उचरलें। छमबि, भाव सहज जे उठलें॥
बिरिख जे सात साखु कलउकत। करे पार बालि सर बिधिवत॥
भेदि जो पार राम सर करे। करबि विस्वास तब बल पूरे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भा जो राम महिस हड़खार। गोड़े फेंकीं सौ धनु पार॥
तब जानबि बध बालि करिहें। ना त राम बिनु काज लड़िहें॥
अत बल विपुल बालि क ताकत। जेसे डरि हम फिरी ला भागत॥
बड़ भागि राम मीत मिललीं। सिव सम हितकर मोर बनलीं॥
जे मिताइ निज आस्रय लहलीं। बिनु सोचे नासल न चहलीं॥
अस कहि नयन मूदि के आपन। गुनत कपीस थम्हलीं भाखन॥
सुनि क राम बचन मुसुकइलीं। फिर बानर क उत्तर दिहलीं॥
बल हमार कपि यदि न मानबि। पर युधि समय तेहि बिसवासबि॥
भनि अस उठि सहजे कौतुहलीं। अँगुठा क बल हाड़ उठवलीं॥
जोजन एक प्रमानि फेंकली। रंच मात्र बल अवर न लवलीं॥
तब झुकि सिर सुग्रीव कहलें। प्रफुल नयन अचरज से तकलें॥
नाथ दास, क दुसरो संका। असहीं मेटि करी निसंका॥
हँसि धनु बान राम उठवलीं। धनुख टंकोरि धऽ सर सधलीं॥
खींचि कान तक बान छोड़लीं। सहजे सातो साल भेदलीं॥
पुनि भेदलीं सहुँ जे पहाड़। सातो तल तक मही पताल॥
लवटि क तब सर घुसल तुनीर। बाँधल रहे जे राम सरीर॥
कपि गन देखि गद गद भइलें। सिर सुकन्ठ राम पद धइलें॥
धोइ लोर पद, भरल कन्ठ से। मुदि कहलें सुग्रीव राम से॥
संका मोर अब प्रभु, नसलें। उर भरोस राम-बल जमलें॥
इन्द्र, देव, नर, असुर समाज। रउरा बिनसि सकीं सब आज॥
प्रभु दुख मानवि न मो संका। दुखी अथिर मन होय अतंका॥
छमबि छमबि मो दास ढिठाइ। दीन हीन बल बँधल मिताइ॥
नाथ, तुरंते मारीं बालि। दिहीं मोर दुख भय झट नासि॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के पाँचवा सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-वैसाख बदी १० सम्वत् २०१६, विक्रमी, तदनुसार २६ अप्रैल, १९६२ इसवी, दिन रविवार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### छठवां सरग

मिति प्रारम्भ—वैसाख कृस्न ११ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार ३० अप्रैल १९६२ ईसवी।

राम के सुग्रीव के बालि से लड़े खाती भेजल आ लखन लाल साथ अपने भी गइल। सुग्रीव के ललकारल आ बालि के रनिवास में बिलसल। बालि आ सुग्रीव के युद्ध आ राम के दुनो के एक समान रूप देख के पहचान ना सकला के कारन बान ना चलावल, मारि खा के सुग्रीव के भागल आ बालि के खेदल। सुग्रीव के मातंग आस्रम में प्रवेस कर गइला पर बालि के हट गइल। राम सुग्रीव सम्बाद, सुग्रीव के ओरहन देल आ राम के ना बान चलवला के कारन बतावल आ चिन्हा पहिरा के फेन सुग्रीव के बालि से लड़े वास्ते भेजल आ अपने गइल। रास्ता में बन उपबन के दृस्य बरनन, आ स्थान स्थान के परिचय देल, सप्त जन आस्रम के कथा कहल, सब केहू के आस्रम के नमस्कार कर के आगे बढ़ल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## १५ मात्रिक चौपाई

बचन सुनत सुग्रीव आरत। धऽ हिय लवलीं राम दुलारत ॥
कहलीं भल बिलम्ब नहिं तात, तुरत बालि मारबि अग्यात ॥
अगवाहे चलि तू ललकारऽ। हेतु मल्ल युधि बालि पुकारऽ ॥
हमहुँ रहब लखन सँग निअरे। समय पाइ हनबि सर हिअरे ॥
कसि लँगोट हाथ ले मुक्का। जें सम बज्र लोह क चुक्का[1] ॥
नमि के राम चरन मन लाई। बढ़ल कपीस काटि अगवाई ॥
किस्किन्धापुर जाइ पुकरलसि। रे कामी कत ते लुकइलसि ॥
निकसि आउ त जोर कराईं। नारि चोर, क पाठ पढ़ाईं ॥
सँग बसि नारि भइले नारी। नारि तजि करु मरन तयारी ॥
तवले झट इक झुरमुट[3] राम। छिपलीं ले सर धनु संधान ॥
इहाँ बालि बिलसत रनिवास। मद बउराइल युवति बिलास ॥
मधु, मधुमास, नारि क उदगम। रस सिङार ससरीर बिहरन ॥
अस सिङार सरिता में केलत। बालि, बीर-रस मधु क पीअत ॥
गिरि सिखर सम चमकत उजवल। जनु धनि-लतरि[2] तन-तरु लिपटल ॥
काने पड़ल तेज तब करखा। टेरलसि जे सुकन्ठ तहँ बिरुखा ॥
परे कुन्ड में जस घृत आहुति। बरि उठलि तस क्रोधित आकृति ॥
टारि नारि मद, खोलि कपाट। दउड़ल बालि गरजि रिपु डाँट ॥
जाते मूक नाक प मरलसि। मुरछि गिरत सुकन्ठ बचवलसि ॥
बगली, झपकी, लंगी, दाव। एक प एक दाव कइ आग ॥
झटपट करे बालि जे लागल। तेकर काट सुकन्ठ काटल ॥
धोबीपाट त कमर उखाड़। दस्ती, गिरह त मोजा, आड़ ॥
किल्ली, घिरसा, चटकन, थप्पा। कमरतोड़ त मुक्का धप्पा ॥
कइलसि, मरलसि, दाव प दाव। करत सुग्रीव काट प पाट ॥
दम मारे कर फुरसत नाहिं। लड़े मनो ग्रह मंडल राहु ॥
बढ़त गइल पर बालि क मार। राम क पता न कतो दिदार ॥
हो निरास सुकन्ठ तब भागल। खेदलसि बालि, पीठ प धावल ॥
आस्रम सीम कसहूँ पइठलसि। जहँ भयभीत हो बालि तकलसि ॥

---

१—चुक्का = लौह मुस्टिका। २—नधि-लतरि = लता रूपी तरुणी।
३—झुरमुट = धाँध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



खीझत, हाँफत, लहू लुहान। कोपल, हारल, भरल थकान॥
जा बइठल सटि गुफा के भीत। लखलसि आवत राम जे मीत॥
कहलसि जरि भुनि हिय रिस रोक। ना भगितो मरितीं, रिपु कोह॥
रउरे कहले लड़लीं बालि। मुकरि क रउरे कैली घाति॥
अस जो करे क रहे हे राम। कहलीं काहे करू संग्राम॥
डरल छिपल दिन काटत रहीं। मारि खाय ले बाँचल रहीं॥
रवों विससलीं हमू परिखलीं। बल क भरोसि बालि से लड़लीं॥
जो भरोसि क लड़ते रहितीं। मारल अवसि आजु त जइतीं॥
मीत घात आ आस दे घात। जग हऽ बड़का पाप हे तात॥
देखीं तन के हालि हमारि। सखा बनवलीं जेहि क करारि॥
चुप भइलें तब आँसु गिराय। माथ हाथ धइ नयन मुदाय॥
द्रवि दृग राम नीर बहवलीं। निज कर सखा पीठि परसलीं॥
कहलीं मीत कहल तो साँच। दोस मोर बा पर जो जाँच॥
करब तूँ जनब, सचकी बात। मनबऽ तबे अदोसी तात॥
बालि आ ते हऽ एक उतार। एक सम जस असनी कुमार॥
भूसा, भेस, त कद, तन, साज। कान्ति, दृस्टि, मुह बोलि, अवाज॥
ध्यान से देखलो पर न अन्तर। कस परिखतीं ग्यात न मन्तर॥
बस सन्देह बान न मरलीं। के सुग्रीव के बालि न जनलीं॥
करितीं तात, जो लरिकाई। मरितों तोहि बालि भ्रमभाई॥
तोर मोर, सिय, भरत सत्य के। भ्रमे अहित कत होखित जग के॥
अभय दान जेहि दिहल गइल हो। तेहि मारे अधराध महा हो॥
मोर लखन सिय क अधार तूँ। बन में हम क आस्रय मात्र तूँ॥
अस गुनि विससि तेजु ते संका। चलि लड़ऽ, चिन्ह पहिर निसंका॥
अबकी हतबि बालि युधि माँहि। रही ना चीन्हे में दुविधाहि॥
अस कहि के गज पुस्पी माल। गले सुग्रीव दिहलीं डाल॥
लखि कहले सुग्रीव अधीर। बधे नाथ हारल कस धीर॥
जुटते बालि क यहसे मारबि। देर होत त फेनि पराइबि॥
अस कहि उठि पुनि बाँधिक धीर। चलले संग लखन रघुबीर॥
सुगठित ग्रीव सुकन्ठ आगे। जहाँ बली लखन सँग लागे॥
नल, हनुमान, नील जे बानर। नियरे तार तेज क आकर॥
ता पीछे तपसी रघुनाथ। तरकस पीठ प धनु सर हाथ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चलते, लखत, फूल, बन-तार । सर, तड़ाग, नद, नदी, उतार ॥
सहरस, जँह, जलमुरगीं, हंस । पंछी बहुतन जलचर बंस ॥
डाउक, चकवा, टीका, टील । बंजुल, बकत, लउकडो, चील ॥
चरि, चुँगि क्रीड़त जल चहु ओरि । उडि, नहात, बिहरत, मुदि सोरि ॥
तसहीं, कँदरा, खोह, बीअर । पहड़ा, पहड़ी प गिरि, सीखर ॥
सगर चर, भुइँ रहवा चिरई । तितिर, बटेर, चकोर, तहँई ॥
चनक, चँडूल, अगिन, भुलोटनी । लवा, कुहुकनी, सुनर, हुकनी ॥
लोटति,कीडति,बोलति मुदिक । चरि, उडि,बइठति,फुदुकि, चहकिक ॥
तसहीं तहवाँ पसुन जमात । बिहरत निरभय, चरत लखात ॥
रोज, गोद त हाथी, हथिनी । साम्हर, चीतल, गाइ, हरिनी ॥
हुँडरा, हुँडरी, चतुर सियार । भालु, बाघ, लोखरि हुसियार ॥
चरत सिकारत, बिहरत, लड़त । करत केलि, मुदित मन टहरत ॥
तसहीं तरु तन हरिअर डार । फलि फुलि घबदल सुनर पतार ॥
बइठल तहँ खग सकल जमात । करत केलि इत उत हरखात ॥
डारिहन, डारिहन, टेरि क जोरि । खग जमात तहँ बसत किलोरि ॥
खोंतत, जोटत, करत जे केलि । लड़ि भिडि खूबे करि लें मेलि ॥
पपिहा, कोइलि, स्यामा, मोर । मद उदीपि गावत निसि भोर ॥
पड़ुका, पड़ुकी, हारिल, कीर । लाल, चपुरनो, के भल भीर ॥
सिनाबाज, कुमरीं, भल बोल । मैना, दामा, अरु नकलोल ॥
बिबिध कबूतर, लग्गड़, बहरी । बिहरत तरु प पतवन भीतरी ॥
अस बन जीव जल थल विहरत । जड़ चेतन सगर सब हरखत ॥
सोभा इनके इत उत देखत । बढ़त गइल दल मग प हरखत ॥
मग में राम कपि बतकहलें । ठवर ठवर क कहनी कथलें ॥
आस्रम सत जन सहुएँ पड़ । सुखमा लखि मन राम हरखलें ॥
उनकर कथा सुकन्ठ कहलें । तहाँ कसत मुनि सात तपलें ॥
सिर नीचे कइ कस क टँगले । कसत सयन क जल में बसलें ॥
कसक थिर इक ठाँव बइठलें । कस अहार पवन कइ जिअलें ॥
तपत बरिस सात सत रहलें । ससरीर तब सरग सिधरलें ॥
तब से इन्द्र देव असुर के । भइल कठिन अस्रम पहुँचे के ॥
पसु पंछी भीतर न पइठसु । जासु त निकसि कबो न लवटसु ॥
तहं बानी, गहना-झंकार । अवो नाद बाजन गुंजार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कबो कबो घृत जग्य के धूँआ। उठत अकास लउके ऊहाँ॥
कथ बिसेखि सब प्रभु से कहलें। नमि उदेस मुनि मन बिनवले॥
सुनि कर कथा नाइ कर माथा। कइल प्रनाम दल एक साथा॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार। विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के छठवाँ सरग सम्पूरन भइल। मिति सम्पूरन—वैसाख सुक्ल १० सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार १४ मई १९६२ इसवी, दिन सोमार।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराजकुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### *सातवाँ सरग*

प्रारम्भ तिथि—वैसाखसुदी ११ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १५ मई १९६२, मंगलवार।

सप्त जन आस्रम के प्रनाम करके जमात किस्किन्धापुरी ओर चलल आ लम्हर रास्ता पूरा करके सब किस्किन्धापुरी पहुँचल। तब सबसे पहिले घन बन देखिके राम जी लखन जी का साथे छिपके बइठलीं। तब सुग्रीव के सगरे अपन जनम भूमि के देखिके, अपना कुल देवता, नगर देवता के बन्दना कइके आ ग्राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जो से किस्किन्धा पुरी के बखान कइके, ओकर सैनिक बल के ज्ञान कावल आ राम से फेन बालि मारे के निहोरा कइल आ राम के आस्वासन देल। सुग्रीव के ललकारल, रनिवास में बालि के विलास वरनन। करखा सुन के नगर आ रनिवास में कोलाहल आ अन्य नारी के साथ तारा के बालि के समुझावल आ सुग्रीव से सुलह करे के सलाह देल तथा राम के बल के परिचय बतावल आ जाये ना देल। बालि के ऊपर एकर सफल प्रभाव। बाकी तुरंते सुग्रीव के करखा सुन के होनी बस लड़े वास्ते बाहर निकलल। बालि सुग्रीव में घोर मल्ल युद्ध आ राम के बालि के मारल, बालि के राम के उराहना देल और निन्दा कइल। फेन राम के ओकर जबाब देल आ अन्त में सास्वत धर्म जे भगवान चाही ला आ जवना के रच्छा हेतु भा जवना के हानि भइला पर दुखी के पुकार सुनि के भगवान अवतार लिहींला तवना सब के विनय विसेखि के राम के बालि के समुझावल आ बालि का ज्ञान के भइल। तब राम के बर माँगे के आज्ञा देल आ बालि के पावनि भक्ति हृदय में सदा जन्म जन्मान्तर तक बनल रहे के वर मागल आ भगवान के वर देल आ बालि के बदना आ मरन।

## १५ मात्रिक चौपाई

तब चलाइ किस्किन्धा चहुँपल। चुनि गहन बन लुकि दल बइठल॥
तब सुग्रीव ताकि चहुँ ओर। बल बुधि साहस सकल बटोर॥
कुल घर गाँव देवि क नमलें। डीहा, डूह, ब्रह्म, बिनपलें॥
कहलें प्रभु से तवे प्रनामि के। नाथ नगर ई मोर जनम के॥
धजा, यन्त्र, कपि, अस्त्र, सस्त्र से। सिजल सुदृढ़ स्वा बल विक्रम से॥
सहुएँ फाटक, नगर, द्वार के। चमकत सु बरन बनल साँच के॥
प्रने जे कइलीं बघे के बालि के। पुरइवि अवसर मिलल पुरय के॥
ठीक ओसहीं जइसे लतरि। पा समय घवदे ले फुलिफरि॥
नि सुग्रीव क सहज बयान। अबकी डर ना कहलीं राम॥
पुस्प-माल लखि चिन्ह सरीर। नखत हार जनु चाँदि पहीर॥
दुविधा बा ना अब पहिचान। के सुकण्ठ के बालि महान॥
बोझ बयर भय दुनो माथ के। आजु उतारबि तोर अवसि के॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दिखा भर दऽ तूँ बालि क भाय। देखब्ऽ लोटत तेहि धुरिआय ॥
लउकि के बालि भागि जब जाय। मन भर कोसिहऽ पेट अघाय ॥
सहि अत दुख झूठ ना बोललीं। सदा धरम करम से डरलीं ॥
यह से राखि बिसबास राम में। मन थिर रखिहऽ युद्धि समय में ॥
सुनि उतसहि, गरजि, ठोकि ताल। नमलें सुकन्ठ हरखि उछाल ॥
बोललें करखा पुनि पुनि जोर। नगर कोलाहल महलें में सोर ॥
सुनि करखा जब बालि मखलसि। तारा नारि संग बिनवलसि ॥
ई गृह-द्रोह नास के कारन। बनो सकल बिपदा के भाजन ॥
बालि सुकन्ठ सहोदर भाय। बल बुधि विद्या एक जनाय ॥
जाई का ई द्रोह असहीं। लाई अबसि असुभ त कबहीं ॥
हाथ जोरि, अंक भरि तारा। ढ़ारि लोर, नारि बल सारा ॥
कहलीं, नोति बात बिचारीं। हम का कहीं बुधि लघु नारी ॥
हव सुग्रीव मूढ़, न पागल। रवें समान बल बुधि माँजल ॥
रउरो प्रेम क मन में राखे। पिता सरिस सद भाव भाखे ॥
एक बेरि मानी कि कहे के। दोसी बनलें साँच भने के ॥
तेकर फल भी खूब पवलसि। नारि राज दूनो गँववलसि ॥
छमा तबो कइ बार मँगलसि। नित प्रभु क सेवकई बिनवलसि ॥
नीति, वेद, स्रुति, सास्त्र, पुरान। भन सरनागत दे सनमान ॥
सुनलीं हम कि पातकी भीत। जाते सरन राम कर मीत ॥
दुइ बेरा रिपु आजु करखल। यह में गुप्त रहस्य हव छिपल ॥
जस खड जन्त्र इहाँ चलत बा। प्रभु निरापद कहल गलत बा ॥
नृप के रिपु हरदम जग रहलें। सम, दम, भेद नृपति बरतलें ॥
अपनवले सुग्रीव हव लाभ। बिलगवले होखी पछताव ॥
असुभ अंग मो आजु फरकलें। तिय सुकन्ठ सुभ अंग डोललें ॥
रहि रहि के मन मोर घबड़ाय। का भविस्य बा कुछ न बुझाय ॥
का कारन कि हारि क सुबहीं। ललकरलसि रिपु आइ अबहीं ॥
एह बार क गरजल, चोखल। जोस, तेज, ललकार जे सूकल ॥
में प्रभु आजु अजब मगरूरी। कारन जेंह क अनत ठऊरी ॥
मोर जान लेइ प्रबल सहाय। आइल कि अस करखे चिलाय ॥
काज कुसल, बुधिमान, रईस। तस गँभीर, सुकन्ठ नीतीस ॥
बनई मीत न बिनु बल जँचले। अधिका बली हो न जे तोहले ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अंगद मुहें सँमाद सुनलीं। मीत सुकन्ठ राम बनवलीं ॥
साठ गाँठ हऽ भइल भितरिया। रखि अधार बालि सिय बतिया ॥
भाई दुइ सुत अवध नरेस। पितु-प्रन पालें तपसी भेस ॥
कुल इछ्वाकु दसरथ के पूत। लखन राम बल कर मजबूत ॥
संकट दुख में राम सहारा। सुर सहाय असुर संहारा ॥
जस के पात्र, आर्त के आस्रय। ज्ञान भन्डार, गुन के आलय ॥
यह से जाये नाथ, नहिं देबि। जो जाइब बिखि खाइ मरि लेबि ॥
कहि तारा लिपटलि कर धारि। अवरि नारि धइलीं अँकबारि ॥
छन-भर बरे बालि चुपाइल। बात जुगुति सुनि चित घुमाइल ॥
जागल उर विवेक आचार। नारि राज गृह पूत क प्यार ॥
नीति सास्त्र के बात दिढ़ाय। देलसि सब बुधि सही बताय ॥
नारि सभाखन[1] क सनमनलसि। बइठि सान्त चित मन विचरलसि ॥
पर उपाय बुधि जस अनुमाने। हिया बात हित के मनमाने ॥
पेरि क बिधि सुकन्ठ कहवलसि। निकसु बालि ते कहाँ लुकइलसि ॥
आउ निकसि निज बल अजमाईं। बल बिक्रम युधि करि फरिआई ॥
नाहिं त चीर पहिन बनु नारि। तजिक दर्प भुज मानि ले हारि ॥
करखा सुनत बुद्धि बिलाइलि। सिखबल[2] बझबल सब हेराइल ॥
नारि हटावत, कसत लँगोट। निकसल बालि करे झट चोट ॥
आवत गरजि माखि पुकरलसि। आजु भाय न गूनबि कहलसि ॥
नासबि दरप अवसि सुग्रीव। मदति करीं भल सहुँ आ सीव[3] ॥
नहिं कायर क असि गहि मारबिं। मल्ल युद्धि तेहि धरि पछारबिं ॥
भनि अस तड़पि करखि क लपटल। कइ सुकन्ठ पयँतरा छटकल ॥
झपटि क तुरते बस में कइलसि। बले पकडिक दाब प लदलसि ॥
दस्ती खींचिक ढाक मरलसि। पटकि हतल कसि फाँस[4] चहलसि ॥
कइ के काट सुकन्ठ तवले। मारि गिरह आकास ठेकलें ॥
ताल ठोकि तब पाँव रोपि के। गगन निहारत भुज उठाइ के ॥

---

१ सभाखन=संभाषण, मुन्दर कथन। २ सिखवल बुझवल=सिखाया हुआ और बुझाया हुआ। ३ सीव=शिव, महादेव। ४ फाँसि=दाव विशेष जिसके द्वारा फाँसी ऐसा बाँह कौ गला में बाधकर कन्ठ दवाया जाता है कि प्राण निकल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बालि गरजलें छाती तान। लोकि कि मारबि उपरे जान ॥
तब सुकन्ठ सहमि प्रभु तकलें। भाव डरल मन'क संकेतलें ॥
लखि, धनु राम सर संधनलीं। खींचि कान तक बान'मरलीं ॥
जा छाती जे बालिकं बेधलसि। ताकत खाढ़ तबो ऊ रहलसि ॥
बल बटोरि, रिपु धइल चाहत। लड़खड़ात सहुँ पग बढ़ावत ॥
कहिक राम, पर, गिरल दहाड़। गिरे टूटि जनु सृंग पहाड़ ॥
कढ़ि, बह रकत धार पवनार[1]। रोअल सुकन्ठ बालि निहार ॥

तब घन बन से बाहर निकसत। राम क बालि लखलसि आवत ॥
नमि मन माहिं ब्रह्म बिनबलसि। पर ओरहन मख मानि दिहलसि ॥
रिपु मोहि मानि भाय पिअरलीं। कारन कवन नाथ मो मरलीं ॥
धरम हेतु प्रभु त अवतरलीं। व्याध सरिस कस छिपिक मरलीं ॥
छत्रिय धरम जो कहीं सिकार। हमे अहेरी कहि क अहार ॥
गैंड़, गोह, सुअरि, कछ, साही। भनल सास्त्र भख अउरी नाहीं ॥
असहुँ अहेर मिस छलि मारल। छिपिक व्याध अस तीर चलावल ॥
टारि न सके कलंक जे लागल। जे मरजाद रवाँ सिर बाँधल ॥
रघु, दसरथ, दलीप, मन्धात। सब कलंकित जे कुल जात ॥
साम, दान, धृती, सत, पराक्रम। छमा, दंड भूप गुन विक्रम ॥
इनसे परे राउरि करतूत। केउ अदोस न कही अछूत ॥
हम त बानर साकाहारी। रवाँ नरोत्तम आर्य भारी ॥
वयर क कारन कहाँ रवाँ से। क्रोध भाव का पसु मानुस से ?
सोना, रतन, नारि, भुइँ चारि। कारन लड़त नृपत्ति हम मारि ॥
कपि क पास आबास न इनके। कसत बालि तब पात्र क्रोधके ?
गुनि, प्रतीति राम मरजादा। धरम करम रघु कुल के ज्यादा ॥
सिखबल नारि क हम न मनलीं। सोचि कि राउर का बिगड़लीं ॥
रउराँ सहुँ समान हम भाइ। सम सुग्रीव हऽ मोरि मिताइ ॥
सीय खोज कारन जो कहितीं। सत्रु सहित लाइ सिय दीहितीं ॥
सत्रु बोलि सहुएँ जो लडितीं। भाइ बन्धु ले खुलि क भिड़ितीं ॥
त कुल राउर, सास्त्र दद के। नर अवतारी राम नाम के ॥
सैन्य धरम अरु बीर भाव के। रुसोत्तम मरजाद राम के ॥

१ पवनार = पनारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बढ़ित ना निन्दा, भा बालि के। कहे के अवसर मिलित माखि के ॥
मरितीं ना त मारल जइतीं। दुनो दसा में बीर कहइतीं ॥
ना पछतावा मन में रखितीं। रउरो भी लछना से बचितीं ॥
जदि जिततीं ए नाथ क जिततीं। सदा दास रउरे कहइतीं ॥
महिमा रउरो यह से बढ़ित। भगति भाव में नव रूप रचित ॥
कल्पान्तर ले नाम कमइतीं। रवें नाम सँग हमू जपइतीं ॥
रउरो जग लीला के सार। प्रचारि क यस पइतीं संसार ॥
मुइतीं जो गति वीर पइतीं। तब त सहजे ना निहोरतीं ॥
भनि अस बालि आँखि क मुदले। दृगन कोय चारु जल ढ़रले ॥
उमगल प्रेम जनम पूरब के। जागल भाव-भक्ति कपि मन के ॥
तब लखि दसा राम बालि के। भनलीं सार, न्याय-धरम के ॥
सुनु, कपि धर्म रूप अति सुछम। सुर-नर-बुधि न सहजे तहँ गम ॥
रहल अभाव पूर्व सत युग के। नीति, विधान, दन्ड दन्डित के ॥
बली करत उतपात निबल के। रहत निरीह हीन सद रछ के ॥
तब विधि करे बरे हित जग के। नास हिताय हिंस बृति खल के ॥
रचल एक परम बल राजा। दे सक्ति ते उपर समाजा ॥
अग्नि, इन्द्र, जम, वरुन बायु से। रबि, कुबेर, चन्द्र, अठ देव से ॥
सार-तत्व तेज, बल, लेइ के। राज-सत्व में सब प्रदानि के।
राज-तत्व सिद्धान्त सिरजलन। मनु व्यवस्था-मानव रचलन ॥
तन्बन, परबत, जगत क राजा। कुल इछाकु भरत समराजा ॥
बसें बीच में जत जीवधारी। तेक भरत दन्ड अधिकारी ॥
विक्रम, बिनय, नीति, सत जहवाँ। नृपति क गुन मानल हऽ तहवाँ ॥
धरम रच्छ आज्ञा-नृप, बिपदा। पालत फिरिले जग मरजादा ॥
विधिवत दन्डिले भ्रस्ट धरम जे। सुर, असुर, पसु, नर चाहे जे ॥
ते सठ, सदा अधरम अचरले। करम रजोचित न कबो बरतले ॥
सदा धरम के बाधक बनले। सद पुरुखन के निन्दा पवले ॥
धरम त्यागि भवहिं के केलले। निज दातव्य अनुज हड़पले ॥
लोक बिरुध हो कर्म जे करे। बिनु तेहि दन्डे जग न सुधरे ॥
ऊँच बंस छत्री हम जाता। छमि न पाप सकीं सुनु, ताता ॥
"अनुज-बधू, भगिनी, सुत-नारि। सुनु सठ, कन्या सम ई चारि ॥
इन्हन कुदृस्टि बिलोकइ जोइ। सब बिधि बधे ते पाप न होइ ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ते पर दुखी दीन सुकन्ठ जे । हो सरनागत बनल मीत जे ।।
करन अभीस्ट मो प्रन कइलसि । भगति-भाव हर तरे बरतलसि ।।
देव साखि प्रन हित क कइलीं । नारि राज देन ते कहलीं ।।
तब नृप-नीति भा प्रन निज के । कसत तेजि न दन्डी तोह के ?
राजोचित जो करम आचरिते । हम जे कइलीं से ते करिते ।।
करम मोर व्याध अस भाखसि । पँर बनि नृपति नीति भुलावसि ।।
कारन अन सुनु, सठ, मन लाइ । जे बस बधीं तो व्याध के नाइ ।।
छत्रिय धरम अहेर प्रधान । सास्त्र पुरान त नीति बखान ।।
राजर्सि-गन मृगया खेलसु । भागतें, छिपल, मृग छलि मारसु ।।
भनत सास्त्र साख-मृग कपि ते । तेह से बध्य अहेरि अवसि ते ।।
सास्त्र भनित भल करतब सत ई । भले मानु ते नीति व्याध ई ।।
सठ, बुधि मन कर तरक बिवाद । न्याय, प्रचार त सबतर वाद ।।
समय, परिस्थिति, युग व्याख्यान । बाल क खाल निकासल ज्ञान ।।
वेद त दरसन-ग्यान, पुरान । बुधि बल, जनहित करम विधान ।।
व्याख्या हव सब समय समय के । हऽ इतिहास समाज सुधार के ।।
जेहि समाज बरते अनुहारि । स्तुति कर अनुमति जगत प्रचारि ।।
त-सठ, चाहु साँच जो धरमा । जानल सचमुच सार करमा ।।
त-सुनु, करि निरमल बुधि, सधना । कइ बिकार हीन मन अपना ।
का हव भाव-कुभाव क मतलब । धरम करम कस तहँ हैंऽ सहमत ।।
बुधि तरक, परपंच न जानो । सास्वत धरम एक क मानीं ।।
पँडिताई त कुछ न सधावति । उहापोह पौंड़ाइ थकावति ।।
अन्तर सान्ति धरम क लच्छन । जे अनुसरे भाव क मंजन ।।
जब जग करम प्रधान कइलीं । भाव अधार तहवों रखलीं ।।
त-ई जानि क पूछु ते अतने । संका, तरक बिनासि अपने ।।
बुधि क काट-छाँट मन चंचल । रोकि-थाम्हि निज क अन्तर बल ।।
आस्था, निस्ठा, आस , रोपि के । भाव-प्रधान त नीयति करि के ।।
दंभ-भाव, मन क छल छाड़ि के । क्रोध, लोभ, मद, हम विनासि कें ।।
हिय भीतर विबेक जगा के । आसा मोहि में दृढ़ जमाइ के ।।
जानु पूछि क सास्वत धरमा । नर क मन, बुधि, सास्वत करमा ।।

---

१—पवनार—पनारा, का भोजपुरी रूप, धारा, छोटा नाला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तबो न पूछु कसत रहीला। तबो पूछु न कसत करीला॥
मत ते पूछु, का मो कर्मा। मत ते पूछु, धरम क मरमा॥
मति पूछसि तें कहाँ से अइलीं। कहाँ उतरि क कहवाँ बसलीं॥
जनि पूछसि कवन मग गरहीं। मग पुरान, स्त्रुति, वेद कि भनहीं?
का दरसन, कि न्याय क व्याख्या? का हऽ तज्य, ग्राह्य, कर्त्तव्या॥
का धरम? का करम? विग्यान? का अचार, बिचार, का ग्यान?
का सुचाल, कुचाल बखाना? कबन करम हऽ मोर महाना?
कवन करम हव धरम क सार? कबन तत्व हव धरम क भार?
ई तरक के उतर क बुद्धी। रख महत्व न धरम क बृद्धी॥
बस पुछु अतने का जे चहलीं। बसलीं कहाँ त का आचरलीं॥
त-चाहीं जे सेही धरमा। जे आचारी से हऽ करमा॥
बसीं जहाँ सेही हव तिरथा। जहाँ न बास ठवर अतिरथा॥
त-जग-दुख अवतरीं नसावे। सठ तोर सम जगत दुरावे॥
चाहीं लखल दुख हिय दरदा। नासल आहि भगत क हिरदा॥
रह जहँ दुख भगत हिय बसि क। कोना कतो बइठि लुकि छिपि क॥
तहाँ पइठि क चाहीं खोजल। कोन कोन में छानि क देखल॥
कहाँ बइठि क दुख सिसकत बा? कहाँ मौन आहि कहँरति बा?
कहवाँ बइठल सुसुकत धीर? कहवाँ सूतल सिहरत पीर?
का भाव ऊ मन बँधले बा? कि बिकार, कि प्रेम रखले बा?
सचमुच टीस, पीर बसल बा? कि बिकार, छलना ग्रसले बा?
अनुसरले हिय भाव वइठल? कि बा अबुधि विकार क सिकरल?
सहज कृत्रिम कि केवल पोल? अबुधि ग्रसल भ्रम, कि हीय-बोल?
सब ई जानि परखि हम देखीं। अन्तर भाव नीयति पेखीं॥
हिय कत सच क भाव बरतलसि? कत आस्था हमरा में थवलसि?
कहवां तक कइलसि बिसवास? प्रेम भगति रखि हमकर आस?
आस्था, निस्ठा हम में रखिक? बुधि प्रभाव वस छलना तजिक?
निज बल, पौरुस तजि अभिमान। आस समेटि जगत से तमाम॥
नसि भरोस निज अहंकार क। भाव राखि सरनागत हिय क॥
सउँपि संकलपि के सब हम क। चाहत कस्ट निबारल जगक॥
दुख बिनासे खाती तेकर। पीर बिनसे खाती तेकर॥
विकल, अधीर हम होखीं व्यग्र। ते अपनाइ दुख नसीं समग्र॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कम से कम में, छन क छन से। से दुख चाहीं, पल पल बिनसे ॥
दउड़ीं तारे हो बेचैन। तत् छन चाहीं ओकर चैन ॥
लेइ चैन न पाईं कसहूँ। तन मन बुधि बिकल रह हियहूँ ॥
बिना बिनसले, बिनु सफलले। दुखी मीत क त्रान दिअवले ॥
त सठ, सुनु हम एह प्रयास में। यह उद्योग आ दौड़ धूप में ॥
जे कइलीं हव से ही न्याय। जगत त्रान इक मात्र उपाय ॥
सेकर रूप समय अनुसार। जे जगत संचरे अनुहार ॥
इहे सत करम क तत सार हऽ। इहे धरम क मरम अधार हऽ ॥
सास्वत धर्म इहे हम मानीं। जवना क जब होले हानी ॥
ले अवतार दिखईं करमा। जीन जस रूप तस ते धरमा ॥
तेहि ठाट स्रुति ठटरे करमा। मूल में रखले धरम क मरमा ॥
धरम तत्व हऽ सार इ बानर। लखी उहे जे मद न आन्हर ॥
त-सुनु, सठ, ते ई सत मान। बात साँच हम कहीं प्रमान ॥
हिय-गृह भाव सुग्रीव भेख। ठीक कसौटी कसि अस देख ॥
तेहि बस हो सठ, तो मरलीं। नीति व्याध न जनलीं कबहीं ॥
हिय तोरो भइल अब तस बा। जे चाहसि सब पास धइल वा ॥
तन चाहसि भा राज नारि क। भा भोगल सुख सरग आदि क ॥
सब प्रस्तुत बा सनमुख तोर। माँगु चाहु जे नाहिं निहोर ॥
सुनत परल बालि उठि चरना। त्राहि त्राहि कहि बल ला अपना ॥
बल प्रताप अब राम जनलीं। अपन अविद्या मोह सकरलीं ॥
वर राउरि भगति हम चाहीं। जनम जनमान्तर जे निबाहीं ॥
सदा रहीं निरत तेहि साईं। दम्भ, दर्प, मद, मोह नसाईं ॥

## २२ वर्णिक छन्द

त-मधु बचन सुनि राम के, मर्दक, गुमान, अभिमान के ॥
अनुबरत मारग धर्म के, मुदि भने वालि नसि संक के ॥
होइ के अचेत सर धाव जे, कहलीं कठिन कटु बात के ॥
छमबि जानि अजान दास के, गुन सुभाव निज विचारि कें ॥
जे नयन गोचर जाहि गुन, नित नेति कहि स्रुति गावें लें ॥
जय पाइ मद मुनि जीति मन, धइ ध्यान कबों जेहि पावेलें ॥
से जानि, मद रत खाढ़ सोझे, मोहि कहने रा खु सरीर के ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस कवन मूढ़ हठि काटि, आम के बाग रोपी बबूर के ॥
अब नाथ करुना क बिलोकीं, मोहि दिहीं वर हम माँग जे।
कर्म बस जे जोनि जनमीं राखी भगति तो नित्य हीय जे।
चित बृत्ति रमे निंत राम में अभिलाखीं जन दुख नास जे।
कल्यान रत अन मन सदा प्रभु भाव धरि मन राखि जे।

## १५—मात्रिक चौपाई

बिनती अस क बालि चुपाइल। प्रेम मगन हो दुख सुलाइल ॥
एवमस्तु कहि, बर दे आसीस। तोखलीं राम कपि धऽ कर सीस ॥
तब सुकण्ठ पडि पाँव बालि के। हाथ जोरि कहलें पुकारि के ॥
तात तोहिं कपट से मरलीं। जनमि के भाई, सत्रु बनवलीं ॥
हम अस अधी जगत के बसलें? नारि राज हित भाय नसलें?
तात, छमा मोहि अब दीहीं। मन विराग न जीअल चाहीं ॥
दुनु भाय सँग चिता जराईं। निज निज करनी क फल पाईं ॥
अस कहि बिलखि लिपटि क चरना। पुक्का फारि क कइले रुदना ॥
तवे बालि खोलि निज नयना। ला हिय भाय प्रेम हो मगना ॥
सिथिल अंग, हिय, भरल कन्ठ से। बिलखि क कहलें रहित दम्भ से ॥
तात, पूर्ब कृत पाप से आपन। नसि बुधि कइलीं तोहिं दुरावन ॥
जेहि क फल तन आजु नसात। छमिहऽ मो अपराध तू तात ॥
मोर जान विधि हमन भाय क। नाहिं भ्रातृ सुख लिखल माथ क ॥
जे विपरीत हमन आचरलीं। बयर भाव क कारन बनलीं ॥
करऽ ग्रहन ई राज-कपि तात; बालि तयार त सरग क जात ॥
तारा अंगद तोहि अधीन। सदा अदरीहऽ न करिहऽ दीन ॥
तारा, सम्मति सदा तू मनिहऽ। एकर सूझ अनुसरि केऽ चलिहऽ ॥
राम काज निसंक हो करिहऽ। सदा अदरिहऽ, न कबो बिलगिहऽ ॥
जो यह से बिपरीत आचरबऽ। हमरे अस त तुहूँ मरइबऽ ॥
पहिनऽ माल देल पितु जीअते। नात श्रीहत होखी मुअते ॥
अस कहि भाय क दे असीसना। नवल माथ में डललें गहना ॥
तब लखि राम अपलक नयना। भाव बिनबलें मूक बयना ॥
बुँद बुँद रकत अर्पि प्रभु चरना। भाव समेटि प्रेम मन मगना ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दोहा

बन्दि राम पद नाइ सिर, गद गद प्रेम बिभोर।
तन तजि पंछी उडि चलल, प्रभु पहँ प्रेम निहोर ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार, विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के सातवाँ सरग संम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि—जेठ सुक्ल १२, सम्वत २०१९ विक्रमी तदनुसार १५ जून १९६२ इसवी, दिन बुधवार।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## क्स्किन्धाकान्ड

### आठवां सरग

प्रारम्भ-तिथि—जेठ सुक्ल पच्छ १०, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार-४ अक्तूबर १९६१ इसवी, दिन बुधवार।

प्रारम्भ-तिथि—जेठ सुक्ल १३, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १६ जून १९६२ इसवी।

बालि के मृत्यु के बाद तारा के आगमन। ओकर बिलाप, फेन राम से वार्ता। राम के ज्ञान के उपदेस देला पर तारा के प्रस्न आ राम के समाधान कइल जीव, ब्रह्म, माया आदि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिनय बिसेख ब्रनन आ कर्म सिद्धान्त के विवरन बतावल तब भी तारा के मोह के ना गहल आ सती होखे के निसचय कइल। सुग्रीव के समुझावल, अंगद के मोह में तारा कं विलाप। बालि के अन्तिम संस्कार आ राम के सुग्रीव के राज तिलक तथा अंगद के युवराज तिलक के आदेस देल आ रिखिमूक परबत पर निवास।

## १५ मात्रिक चौपाई

उत पोटि[1] छाती, बिखरल केस। रोइ कानि कर बिगड़ल भेस॥
अँचरा लटकल, द्दग वह लोर। सुधि बिहीन मन होय बिभोर॥
डँकरति[2] तारा, हँकरि[3] पुकारि। लिपटलि बालि बाँधि अँकवारि[4]॥
जानो तरई[5] टूटि अकास। गिरि के छितिज पर भइलि बिनास॥
मूर्छा रत तन संग्या सून। सकल अंग, हिय जनु बिनु खून॥
अबर नारि जँह तहँ बइठि के। सिर धुनि रोअलीं पुका फारि[6] के॥
तब निअरा हनुमान आइ के। गवें उठबलें गस[7] छुड़ाइ के॥
पकड़ि क ला ढिग राम कहलें। चहति तजल तन बिन तो बोधले॥
राम देखि तारा चिहइलीं[8]। अप्रमेय पुरुसोत्तम कहली॥
रच्छक धरम जितेन्द्री कथलीं। छमासील सारस सुइँ भनलीं॥
कमल नयन धनुस सर धारी। करि क बल, अजानु भुज भारी॥
करि-सुँढ़ पाँव, सिंह कमर बा। उसा क लजवत लाल तरवा॥
अस सब उपमा दे बिनवली। राम रवाँ घरमग्य कहइलीं॥
जोड़ा-फूट दुख अनुभवलीं। बिरह-पीर क टीस समुझलीं॥
जे सर मो पति मारि मुअवलीं। सेइ सर हनि हमरो क मरितीं?
अस हतिक मुहि जो पति दानबि। ते पुन तिय-बध-पातक नासबि॥

---

१—पीटि=पीटकर। २—डँकरति=दुखित स्वर में गाय के बोलने की क्रिया को डकरना कहते हैं। उसी अर्थ का स्योतक है। ३—हँकरति=गाय जब बच्चे को देखकर उससे मिलने के लिए हुँफनती हुई चलती है उस बोली को हँकरना कहते हैं। यानी मिलने की इच्छा से विह्वल हो पुकारना। ४—अँकवारि=अंक में बाँध कर। ५—तरई=तारिका ६—पुकाफारि=गलाफार कर जोर से रोना। ७—गस=गश मूर्छा ८—चिहइली=अचम्भा की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



व्यंग बचन कहि क अस आरत। प्रभु पद पड़लि नारि बिलापत॥
सजल नयन राम तब तकलीं। निज करुना से करुना हरलीं॥
कहलीं नर क नियति हऽ साधन। करम क सब कहाइलि कारन॥
स्वकृत[1] व्यवस्था काल के नाम। जेहि नियति भन बेद पुरान॥
कारन-काल प्रान निओगे। सगर से पेरि[2] करम संजोगे॥
केउ स्वतंत्र हो करम न करे। ना करवल[3] बल अन से धरे॥
बरते ला स्वभाव संसार। जेकर काल परायन[4] सार॥
सकल जगत स्वभाव अधीन हऽ। सदा स्वभाव काल अधार हऽ॥
करम प्रारब्ध, भनल स्वभाव। अरजे जेहि नर करम क भाव॥
कालो सके न काल के टारि। कबो ना होखे काल क हारि॥
अर्जि स्वभाव केउ सके न नास। चाहे जस के करे प्रयास॥
काल निबाहे न भाय-चार। ना ऊ बरते जाति गोतिहार॥
जग उपाय ना बस करेके। बिक्रम कुछ ना बल चले के॥
हेतु-ब्रह्म बस काल-जीवन। विमुख काल जा सके जीव न॥
तेहि से ज्ञानी साधु पुरुसु। हो अधीन काल निज सौंपसु॥
अरथ धरम काम फल जे जे। मिले ले काल क्रम बस ते ते॥
बालि सरग जे रहे जितले। धरम संयोग से निज जिअले॥
पवलसि से सरग तन तजि के। युधि में तन मन बल से लडि के॥
इहे सर्ब स्रेस्ट गति तारा। कइल बिलाप वोर वेकारा॥
पंच तत्त तन बनल बालि के। रोअसि ते जे बरे छछनि के॥
ते सहुए पडल सूतल बा। त केहि कारन ते रोअति बा॥
जहँ क जीव रहे तहँ गमनल। मानु अमर जो तब कस मूअल?
सुनि, गुनि, तारा धीर बँधलीं। पद पर राम बिलखि क गिरली॥
कहली, बिनती नाथ ई मोर। सुनि, पुरि, करीं पीर मोर थोर॥
पति अधार नित जगत नारि क। बिन पति जीअल व्यर्थ ताहि क॥
हम अनुगमल चहीं पति, नाथ। दीं आज्ञा कि जरे तन साथ॥
अस कहि क कसि पाँव पकड़ली। आरत दीन बचन उचरली॥

---

१—स्वकृत व्यवस्था=अपने से बनायी हुइ व्यवस्था, २—पेरि= प्रेरित करके ३—करवल=दूसरों द्वारा कराने का बल धारण करना। ४—परायन=पुनरावृति, परायण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राम, कहीं तन काठ समान। जीव नित्य, चैतन्य महान ॥
त-प्रपंच, ई सुख-दुख कइसन ? समुझि न आव अचरज अइसन ?
कह प्रभु, सुनु तारा ई मरम। अविवेकी नर जान न धरम ॥
अहंकार सम्बन्ध से ,जब तक। देही इन्द्री सँग रह तब तक ॥
बस अबिवेक फँसल जगजीव। ज्ञान रहित भोगत दुख सीव ॥
मिथ्या जग आत्मा में रोपित। जस ग्यानोदय बिनु न निवृति ॥
जस बिसयी सुख-दुख क सपना। निद्रा में देखत ऊ कतना ॥
पर सच में ऊ हवें मिथ्या। भासत नर बस हो अविद्या ॥
अनादि अविद्या जनित अहं जे। स्थपलसि संसार, मिथ्या जे ॥
होत निरर्थक भरल राग से। सदा संकुलित पूर्व द्वेस से ॥
भासत मन भ्रम से संसार। मन ही बन्धन कर हव सार ॥
मन अतमा जे मानल समान। तद गत दुख सुख बँधल से जान ॥
जस स्फटिक लाख रंग गरहे। पर उर साँच में रँग न निबहे ॥
तस बलात अतमा संस्तृति से। बुधि आदि इन्द्री संसरग से ॥
भेद स्वलिंग क, मन क गुनि के। विसय सेव राग-गुन बँधि के ॥
बाँधति विवसि निज जग क चक्रमें। आ बँधि घूमति बिसय-मोह में ॥
पहिले रचति मन के गुन, राग। पुनि संजोग ते जग अनुराग ॥
आ अस करि नित नव नव करम। बँधलि फिरति फल करम क मरम ॥
भा रागादिक गुन, बँधि अपने। गुन प्रभाव से कृत कर्म तन में ॥
करति रहति बहु रंग क करम। फँसति रहति नित अस नव भरम ॥
अस करमन क ताँताँ बँधले। भ्रम वस निज के ते में डलले ॥
ढँकत जीव नित जात छाया से। लखे न सत्य परे माया से ॥
भनल करम ई तीन तरह के। स्वेत, लोहित, करिया रँग के ॥
तिन बस जीव क गति संचरे। बँधि यहि से जोव करम क करे ॥
करम चक्र में भ्रमि नित रहत। आवा गमन के ताँताँ रचत ॥
प्रलय काल तक असहीं भासत। आबा गमन में पुनि पुनि पड़त ॥
प्रलय समय जब भूत सब लय हो। तबो बसी कर्ता भोगत हो ॥
त्रिसय, कर्म अनादि अविद्या। से बँधाइल रह जीव नित्या ॥
जब नव जगत पुनि रचि ऊठत। तब जीव पूर्व विसय रत विवसत ॥
घटी यन्त्र बत उत्पति लेत। आ क्रम पहिला चल कइ देत ॥
जो विसेस निज पुनि परिपाक से। साथ होत यहि भक्त मोहि से ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पलटत चित यहि मोरि ओर तब। जनमत स्रद्धा कथा सुनत तब॥
जे बा दुरलभ बड़ जग संग। कर्म प्रभाव बस प्रेरित अंग॥
तब स्वरूप ज्ञान अनायास। गुरु प्रसाद होत हिय भास॥
तबे मो बाक क अरथ ग्यान। सहजे होय हियरा में भान॥
देही, इन्द्री, प्रान, मन, ज्ञान। समुझि भेद जीव, मुक्त जहान॥
तब निज अहंकार जे राग। नसि नसाय मो लह अनुराग॥
तब करि दरस सत्य जीव पावे। कर्म जनित बंधन नसावे॥
सुनु तारा, सत धरम ई सार। पावत नर बिरले संसार॥
भनि अस राम जबे चुपइलीं। तारा सुसथिर झट उचरली॥
नाथ, अज्ञान ग्रसि जीव मोर। पड़ल कूप भव झँखत अथोर॥
निज कृत कर्म बुधि होति न साफ। लखि न सकें दृग सत्य क लाफ॥
करीं दया, प्रभु, गिरलीं चरना। नासीं नींद, बिनसीं सपना॥
अस भनि नारि गिरलि पुनि सहुना। करति भाँति बहुते बिलपना॥
तब लखन सुग्रीव सँकेतलें। समय समान धरम बुझवलें॥

धऽ सुग्रीव तारा उठवलें। अंगद सनमुख लाइ कहलें॥
अंस-बालि अंगद का नाहीं? रकत बीज तेकरे नू आहीं॥
त-भउजी, कस सती तू होखबि? का सुत में पति अंस नकारबि॥
पति-रूप सुत में लख जां नारि। हो न सती अस स्रुति निरधारि॥

न धरम पूत भर जनमावल। बुधि बल दे धर्मग्य बनावल॥
पोसि पालि मानव सँवारल। धरम करम रत कइ, बिआहल॥
जे पितु मा न, करि ई, पावे। उरिन न सुत-रिन से कहावे॥
अनु गमनेली पति से नार। जेकर जग ना कहूँ अधार॥
अस गुनि अंगद लखि धरु धीर। बनु मो मीत न पीटु ते सीर॥
सुनत बचन प्रीति सुत जागलि। तारा धऽ अंगद हिय लावलि॥
तवे राम बचन संभखलीं। सुत, तारा, सुग्रीब कहलीं॥
नग्र, राज, अंगद, ई तारा। तो, अधीन सुग्रीव सारा॥
गुनि क यह से राज-निज-धरमा। राजोचित करु बालि करमा॥
सोक रुदन न मृतक भलाई। करम-प्रेत करु सब मिलाई॥
तब आदेस सुग्रीय दिहलें। पल में नग्र, दल जुटलें॥
रतन जड़ल सुसिविका आइलि। बिबिध कला सँवारि सजाइलि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



फूल, माल बसन सुचि भूसन। रचि बहु बिधि सजावल नीमन[1] ॥
सेना-बिपुल, जूथ-पति बानर। सबे लुटावत घन मुकता वर ॥
नाउ, बारि, विप्र दे टीका। लेइ समान स्राद्ध अनेका ॥
चलल दल सब सिविका लिहले। बिलपत, दुखित, धीर बँधवले ॥
पहुँचल सब तुंङ भदरा तीर। सजल चिता तहँ भारी भीर ॥
अंगद आगि बिधिवत डलले। तिलांजलि चचा संग दिहले ॥
तब सब आ राम ढिग जुटलें। हनुमत हाथ जोरिक कहलें ॥
प्रभु किरिपा तो सब सम्पूरल[2]। अब जे कहीं करीं अदेसल[3] ॥
चली कृपा क नगर प्रवेसीं। टीकि कपीस जन आदेसीं ॥
भनल राम, सुनु सकल जमात। पुरी प्रवेस आदेस न तात ॥
सो आदेस कपि नृप टीकसु। ते सिंघासन जा बइठावसु ॥
सुनु, सुग्रीव सब गुन ग्यानी। राज-काज, नीति तू जानी ॥
करु जुवराज अंगद अभिसेक। जे बल बिक्रम में बा एक ॥
मात-पूत, बड़, सदा उदार। सबे तरह यह पद अनुसार ॥
नीति, धरम, सद करम, बिचार। राजोचित सकल बेवहार ॥
ध्यान राखि सत राज चलावऽ। पसरे जे जग धरम क भाव ॥
बरखा भरि हम गिरि पर बसबि। लखन सहित तँह तप रत रहबि ॥
सीय खोज यहि बीच करइहऽ। खोजे में कछु उठा न रखिहऽ ॥
गत बरखा जे करी चढ़ाई। मुअति सीय क लिहीं बचाई ॥
यह में बोच परी जो भाई। आई बिपति नसी कमाई ॥
राज, नारि, मद, अजय जे तीन। बस क इनके रखिहऽ, अधीन ॥
जाइ घरे अभिसिक्त तू होखऽ। तारा अंगद प्रजा क तोखऽ ॥
अस कहि राम रिखि मुक रहलें। किस्किन्धा सुग्रीव बसलें ॥
इहाँ नगर में बजल बधाई। गिरि प उहाँ बिरह रोआई ॥
इहे चक्र-सुख-दुख क संसरत। करम कोल्हु में सब क पेरत ॥
नभ चटान पृथवी प घूमत। जगत समस्त पीसि क छोड़त ॥

---

१—निमन = अच्छा। २—सम्पूरल = सम्पूर्ण हुआ। ३—अदेसल = आदेश दिया हुआ। ४—पसरे = फैले विस्तरित हो। ५—सैसरति = मुस्किल से धीरे-धीरे घूमता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के आठवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-आसाढ़ सुदी १३, सम्वत् २०१६, विक्रमी, तदनुसार १५ जुलाई सन् १९६२ इसवी, दिन रविवार।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### नवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—आसाढ़ सुदी १४, सम्वत् २०१६ विक्रमी, तदनुसार १६ जुलाई १९६२ इसवी दिन सोमार।

सुग्रीव के राज-तिलक हो गइला पर रामचन्द्र जी के लछुमन जी का साथ प्रबर्खन गिरि पर रहल और उन्हा के बिरह पूर्न दिन चर्चा आ ज्ञानोपदेस। लखन लाल के समय पा क्रिया योग जाने वास्ते प्रस्न कइल आ भगवान के क्रिया योग के विधि आ व्याख्या बतावल आ लछुमन जी के बोध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## १५ मात्रिक चौपाई

बसलीं राम जब गिरि परवरखन । नित कृत करि दिन काटीं खिनमन ॥
सदा ध्यान जप, जोग, समाधि । पूजा, पाठ, क्रिया-जोग साधि ॥
करत, समय क बितईं पुनीत । फल मूल खा तन रखीं पवीत ॥
लखन समय पा ज्ञान उपदेसीं । सास्त्र पुरान अरथ बिसेखीं ॥
धरम करम क मरम बुझाईं । जग लीला क रूप सुझाईं ॥
तबो न पा हिय कसहूँ चैन । सिया-बिरह रह मन बेचैन ॥
पर करतब, प्रभु, संयम, सील । सहुँ रखि, नसीं बिरह-दुख दील ॥
संझा तक अस समय निबाहीं । पर निसि आगमन काल बुझाहीं ॥
तारक सँग सब नभ जनु जरत । छछनि चाँद फिरत तहँ लहकत ॥
परसि पवन हिम तन बन लूह । पिक चातक सुर बरसत हूक ॥
सिय-सुधि रहि रहि करति अधीर । बिरह-ताप जरि स्याम सरीर ॥
अविनासी, परम ब्रह्म, राम । कारन आदि, सक्ति, बल धाम ॥
सिय अभेद, अभिन्न, दुइ-जान । एक प्रेम, एक सम रस-खान ॥
परे ताप-दुख, परम प्रकास । जेहि से पुरुस-प्रकृति बिकास ॥
से अवतरि, करि नर अस लीला । निबहत सृस्टि-नियम निज सीला ॥
सेइ राम जब भोर करि ध्यान । कुटी सिला प बइठलीं आन ॥
तब लखन हो अतिहीं बिनीत । पुछलें कर जोरि, मन पुनीत ॥
नाथ, पुरब कथ सब गरहलीं । लीला सार तत्व समुझलीं ॥
अनादि अबिद्या बस सन्देह । नासि क ज्ञान जगल हिय-गेह ॥
पर प्रभु, क्रिया-जोग क पद्धति । चाहीं जानल कस क सिद्धति ॥
ब्रह्मा, नारद, रिसि, मुनि, व्यास । भनलें सब यहि मुक्ति अभ्यास ॥
तात, चारि आस्रम अरु बरन । सब लगि बद उत्तम यहि धरम ॥
नारि, सुद्र, नर, पातक, भारी । सबहिं मार्ग ई करत उधारी ॥
प्रभु, हम तव भगत, अरु भगई । जग हित कहीं हम के बुझाईं ॥
कह प्रभु, "लखन, पूजा-बिधि मोर । नहीं अन्त पथ बिबिध अथोर ॥
तबो कहबि संछेपि बखानि । जे सुनि कर जग हो कल्यान ॥
नर रखि भगति मोरि, तजि जड़ता । स्वकुल उक्त प्रकार लहि द्विजता ॥
भगति मोरि रखि गुरु पहें जावे । भाव सुधा युत कान फुकावे ॥
पुनि बुध गुरू कह बिधि अनुसार । मो अराधना प्रेम निरधार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नित हिय मो रखि पूजन करे। रवि, प्रतिमा, सिल, जस मन भरे ॥
सब में मानि मो एक रस पूजे। मन भा सिला अगिनि जस सजे ॥
करि बिधि यहि बुध पूजन मोर। भाव भगति हिय रखि अथोर ॥
विधिवत सन्ध्या पाठ क करे। अस प्रतिपादि करम करि निखरे ॥
प्रथम संकल्प सिद्धि हित करे। गुरु, मन, प्रतिमा भक्ति क धरे ॥
सालिग्राम सिल स्नान करावे। प्रतिमा मार्जन सब मो भावे ॥
पूजे पुनि फूल गंधादि से। मन वच करम से सुद्ध भाव से ॥
छल-प्रपंच तजि, आस धऽ गुरु, कथ। भाव भगति बुध पूजत सद पथ ॥
भाव से कइल प्रतिमा सिङार। लागत प्रिय मो सद संसार ॥
नर अस पूजि फल पाव तुरंते। बाधा बिघ्न आपु सब नसते ॥
अगिनि पूजन से जे आराधे। घृत धुप आहुति दे मो साधे ॥
जेहि नर रवि में पूजन प्रिय हो। वेदि खचित तेहि मूर्ति पुज्य हो ॥
सहित भगति मो पानी दीहल। भला बुझात भाव से लीहल ॥
तसत भोग, अच्छत, पकवान। हवं प्रिय सुनु तात, भगवान ॥
अब सुनु पूजन-विधि नर तात। विधि व्यवहार जे सास्र बतात ॥
कुस मृगचर्म भा आसन डसाय। बइठे सुध चित देव सोझाय।
न्यास मातृका अन्तर बाहर। करि चौबीस नाम जप सादर ॥
तत्व-न्यास तब करे सचेत। भाव भगति रखि प्रेम समेत ॥
मन्त्र से पंजरन्यासि मो मूर्ति। करे विस्नु-पंजर विधि सूक्ति ॥
पुनि निरालस प्रतिमा न्यासे। दहिने बाँव कलस फूल राखे ॥
अर्घ, पाद्य, मधुपर्क, आचमन। चारि पात्र धरे तहँ सुचि मन ॥
तब तेज-रवि सम निज हिय में। जीव-नाम मो कला धऽ ध्यान में ॥
तन क व्याप्त निज देखे तेह से। बसत व्याप्त लख प्रतिमो हम से ॥
क आह्वान कला जीव हमरी। अर्घ स्नान विधि पूजत भितरी ॥
रखले भाव निस्कपट मन में। पूजा करे सब अरपि के हममें ॥
धूप दीप नैवेद, कपूर। कुम कुम, चन्दन, अगर, कस्तूर ॥
पान, गन्ध, उत्तम, फल फूल। पत्र भाव रखि हिय मूल ॥
वेद विधि दस आवरन पूजे। भाव अर्चना स्रद्धा साजे ॥
पूजन यहि विधि जे नर करे। ते सहजे भव सागर तरे ॥
भूखि मो भाव भगति विसवास। स्रद्धा, निस्ठा, आस्था दास ॥
हब, अस पूजा मो प्रिय तात। पाप पाखन्ड से सदा दुरात ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मन्त्रि कोविद पूजा क अन्त। करे हवन बिधि से नितान्त ॥
तस सास्वत अगस्त कथ बिधि से। गुरू मन्त्र भा पुरुस सूक्ति से ॥
मन्त्राहुति देइ हवन कुण्ड में। चरू, हवि हवन क यज्ञागिन में॥
डाले सुध चित अरपि मोहि के। यज्ञ-पुरुष रूप ध्यानि हमहि के ॥
आ दें बलि मो 'पार्सद गन क। सम्पूरन अस करे हवन क ॥
तब जप मौन हो ध्यान धऽ करे। प्रीति पान मुख बास ढिग धरे ॥
अन्त नमे सास्टांग दन्डवत। भाव मग्न प्रसाद ले भगवत ॥
जीव-कला[1] आह्वानि हऽ आनल। अस गुनि प्रतिमा बुध विसरजल ॥
भाव भगति विभोर हो अस पूजन। नर भव सागर सहजे तरत ॥
पावत दरसन मोर निज हिय में। नहिं सन्देह तात, रचि यह में ॥
गोपनीय निधि ई सनातन। मो कहल कथ सास्त्र पुरानन ॥
सुनि व्याख्या अस क्रिया जोग क। भइले मुदित लखन मन गुनि क ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना–बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के नवा सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि सावन बदी १४, सम्वत् २०१६ विक्रमी, तदनुसार ३० जुलाई १६६२ इसवी, दिन सोमवार।

---

१—अर्थात् भगवान या ब्रह्म के जीव कला को जिस प्रतिमा में आह्वान्वित करके जो मैंने पूजा की है उसको अब मैं विसर्जन करता हूँ। ऐसा समझ कर बुधवान पुरुष प्रतिमा का विसर्जन करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा-बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

*दसवाँ सरग* *

प्रारम्भ तिथि ११ बदी आसाढ़, सम्वत् २०१८ विक्रमी, तदनुसार ८ जुलाइ १९६१ इसवी।

रितु बरनन, उपमा उपमेय के साथ असाढ़ी बरखा के बरनन, परबरखन परवत पर राम लखन के बरनन, राम के सीता के बिरह से खिन्न आकृति आ चिन्तन, लछुमन के सुग्रीव के सीता के खोज के बात भुलइला पर क्रोध कइल आ राम के उहाँ के सान्त कइल आ मित्रता के लच्छन बतावल फेन किस्किन्धापुर भेजल, किस्किन्धा पुर के बरनन, स्वागत, सुग्रीव के माफी मागल, तारा लछुमन वार्ता, सुग्रीव के सेना बरनन, सुग्रीव साथ लखन के राम के पास प्रस्थान।

### नयी कविता
### नया प्रयोगवादी छन्द

पेन्हाइल[1] गाइ बादरी बाइ, हड़बडोइल[2] पवन पुरवा बाइ,
हकले जाता जल्दी-जल्दी ताकत कतहीं टेपुर[3]—

---

* पाठकों की जानकारी तथा साहित्य-रामायण के सृजन इतिहास के ज्ञान के लिये यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि साहित्य-रामायण का-

शेष अंश दूसरे पृष्ठ की पाद टिप्पणी में देखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



घबरी[४] बाइ, सोंकनी[५] बाइ, गोली[६], किरिस्ना, सँवरी बाइ,
पीअरी बाइ, कइलो[७] बाइ, कबरी[८] कलमुँही[९] बाइ,—
टीकीर[१०] बाइ, मयनी[११] बाइ, बयरिया[१२] बान, महुअरि[१३] बाइ,
अबलखि, खंड सिंहीं, सिंह टूटी त चवरी[१४] बाइ—

---

पृष्ठ ४६ की पाद टिप्पणी से आगे।

सृजन पूर्व चिन्तन यानी इसके आकार प्रकार के सम्बन्ध में पूरा सोच विचार कर के एक निश्चित रूपरेखा निर्धारित कर लेने के बाद इसके लिखने का काम प्रारम्भ नहीं किया गया बल्कि अनायास एक घटना विशेष की प्रेरणा से भावना का उद्वेलन हुआ और बिना सोचे समझे काव्य रचना का क्रम उठ खड़ा हुआ। ८ जुलाई १९६१ की सन्ध्या को घन घटाओं से नभ को आच्छादित देखकर निरक्षर भट्टाचार्य नौकर ने, मुझसे टहलने जाते समय कहा, "कहाँ जाइल जाता ? बदरी पेन्हाइल बिआ" अर्थात् कहाँ जा रहे हैं बादल ठीक उसी तरह जल से भर उठी है जिस तरह दूहते समय गाय का थन दूध से परिप्लावित हो उठता है। इस पेन्हाइल विशेषण का प्रयोग बादल के साथ सुन कर मन प्रसन्न होकर हृदय की भावनाओं को उद्वेलित कर दिया। प्रथम आषाढ़ी वर्षा का दृष्य अलग प्रभाव जमा रहा था। अनायास निम्न लिखित वाक्यों का मुख से स्फुरण हुआ और पहले रितु वर्णन फिर उपमा उपमेय और तब प्रवर्षन परवत का वर्णन तथा वहाँ राम का होना आदि बातें स्वतः वर्णन क्रम में आती गयीं और जब राम लक्ष्मण तथा उनकी चिन्ता सामने आयी तब रामायण के कथानक का क्रम पकड़ में स्वतः आ गया और पूरा सर्ग लिख उठा। जब एक श्री गणेशी सर्ग प्रयोग वादी नयी कविता के विलक्षण शैली के रूप में स्वतः लिख उठा तब रामायण को पूरा करने का हौसला जंगा और आगे पीछे के शेष सरग रचे गये। इसी से साहित्य रामायण का श्री गणेश बालकाण्ड से न होकर किष्किन्धाकाण्ड से हुआ है।

"पेन्हाइल गाइ बदरी बाइ; हड़बड़ाइल बायु पुरवा बा
हकले जाता ;जल्दी-जल्दी ताकत कतहीं टीपुर।
घबरी बाइ सोकनी बाइ, गोली कृस्ना सँवरी बाइ,—
पीअरी बाइ, कइली बाइ, कबरी, कलमुँही बाइ,—
टीकरि बाइ, मयनी बाइ, बयरिया बान, महुअरि बाइ,—

शेष पृष्ठ ५१ को पाद टिप्पणी में देखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वहिली[१५] बाइ, सोरही[१६] बाइ, बछिया[१७], कंलोर[१८], धेनु[१९],
लगही[२०] बाइ,—
एकै में ऐक सटल, कइले सब धक्कम धुक्की—
आपस में, बढ़तै एक ओर चलल जाता पच्छिम—
बदरो के गैयन के गोल, गील नभ में;—
डँकरत[२१], हुँकरत[२२], भोंकरत[२३], होंफनत[२४]—

पृष्ठ ५० की पाद टिप्पणी के शेष अंश—

अवलखि, खड सिंघी, सिंघटूटी 'त चैवरी वाइ,
वहिली वाइ, सोरही वाइ, बँछिया, कंलोर धेनु लगही बाइ।

१—गाय जब वच्चा पिलाते समय दूध ढ़ील देती हैं और उसके थन में दूध उमड़ आता है गाय के उस अवसर को पेन्हाइल कहते है। २—घबड़ाहट के साथ जल्दी काम पूर्ण करने को प्रयास करने की अवस्था ३—ऊँचा स्थल ४—सफेद रंग की गाय ५—जरा कालापन लिये हुए सफेद रंग वाली गाय, ६ लालरंग को गाय ७—जिसकी आँख और वदन तथा चमड़े भी रोएँ के साथ सफेद हो। ८—छीटे दार रंग की गाय ९—जिसका मुँह काला हो १०—जिसके माथा पर दूसरे रंग का टीका हो और वदन का रंग दूसरा हो। यह अशुभ हानिकारक ऐब है। ११—वह गाय जिसकी सींघे पागुर करते समय तक भी हिलती हैं। यह शुभ लक्षण है १२—बेर के रंग की गाय १३—जिसका माथा लाल हो १४—जिसकी पूँछ के बाल सफेद चैंपर ऐसे हों १५—जो गाय वच्चा न देती हो १६—जिस गाय की पूँछ घनी चैवर समान हो यह एक जाति विशेष ही है जिसकी पूछ के चैंवर बनते हैं। १७—वाछी जो बरदायी नहीं हो। १८—वह बाछी जो साँड़ से लगकर गर्भ धारण कर ली हो। १९—वह गाय जो दूध देती हो, बच्चा देने के बाद ४-५ मास तक धेनु कही जाती है। इसके बाद के समय की लगही गाय को बकेन कहते है जिसका दूध गाढ़ा हो जाता है। २०—थोड़ा थोड़ा दूध देती हो या अधिक देती हो जो गाय बच्चा पिला कर दूह ली जाती हो उसकी लगही कहते है। २१—दुःख के साथ दर्दनाक स्वर में गाय की बोली। २२—वच्चे को देख कर पिलाने के लिए जो गाय बोलती है। वह बोली जिसमें बच्चे से मिलने की अभिलाषा हो। २३—जोर जोर से चिलाने के स्वर वाली बोली। २४—टुक खीझके साथ मारने कीं अवस्था वाली बोली। २५ तेज चाल से चलना। २६ देखता हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हुरुकल, कहाँ चलल जात बा दुहाये खाती कहवाँ ?
आ दउडि-दउडि, ऊँच हो हो, चारो ओर देखत —
हाँकत, बटोरत चरवाहा-पवन, गइअन के सगरो से—
दूहे खाती, भागल जाता कहवाँ दो धरती के निरेखत ?
—कि जहाँ पी सकसु दूध माता बसुन्धरा जी—
अइसन कि अधाइ उठसु सगरो बाल बच्चन सँग
जामल, बाढ़ल, जे बाड़ें उनका बच्छस्थल पर;—
हुकुम बा इहे मलकिनी परकिरित जी के—
कि न्याय हो, पिआवे में दूध, ई पानी के,—
बनावल जे गइल बा, जिआवे खाती जग के;—
आ नोकर चरवाहा-पवन राखल बा यही वास्ते,—
बसाइ के जगती में जिआवे लागि सबके;—
कि न्याय हो, रच्छा हो, करतब के पालन हो,
तामील राम-आगृथा हो आ पालन अनुसासन के हो—
प्रकृति महारानी जी के जगत के सासन के।
त-एही डरे जोर जोर देत सिसकारी[1] तेज,—
चरा के समुन्दर पर, पेट भर अघा[2] के खूब—
दूहे खाती हुरुकल, हाँफत चरवाहा पवन—
हँकले गोल नभ-गइयन के उहाँ जाता जहाँ दूहि के तिरपित[2] करे-
सूखल साखल धरती के मूअत पवधन के,
भूखल-पिआसल जमात नर, पसु, पंछी सबके,—
जे फागुन से जेठ तक कसहूँ तपि, सूखि सूखि,—
सूरज के तपत तेज किरिन से जीअत बाड़ें,—
आस लबले यही दूध देवे वाली गइयन के असाढ़ी;
आ जे लगते पख पहिला, महीना असाढ़ के—
पीये खाती दूध ई पानी के पिआसल,
ताकत मुँह बवले, आस लवले बाड़न बइठल,
आकास के धूरिन में धूमिल किरिन बीच—

१—सिसकारी=मुख से सीटी ऐसा शी शी करके मवेशी को हाँकने का स्वर विशेष। २—अघा=तृप्त करके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अवाई पुरुब से दिन रात गोल-गौ के बरसाती;—
आ जे जड चेतन, लगातार, जेठ तक चइत से,
रहलें सतावल, दुखावल गइल रात दिन,
आ जरावल, झुलसावल गइल रहलें जेठ के दुपहरी बीच,
अल्हड़, उतपाती, पिअक्कड़ सुभाव वाली ओही लूह मतवाली से;—
आ जे नर नारी, लुकाइल कहीं खोजत सुख चैन बाड़ीं—
बाग आ बगइचा बीच, मड़ई आ इमारत नीचे—
बेचैन बनल, पिआसल, तरासल, चट-पटात[1] मुँह—
प्रेम में, बारुनी में,—तरकुल के लबनी[2] में,—
से सब सुनि के, जोर जोर, हाँकल, हाँटल वायु-चरवाहा के—
थान ओरमल[3] दूध चूअत, नभ-गइयन के झुंड के,—
करत धक्कम-धुक्को, हल्ला-गुल्ला, दौड़-धूप, आपस में,—
चहकि के, हरखि उठलें, गाइ ताल ठोकि के मलार उठलें;—
आ नाचि उठलें ताकत सब्बे एके टक पूरब ओर—
जड-चेतन, पसु-पच्छी, नर-नारी सब एके साथ—
एके भाव, एके मन, एके चाह, एके खयाल ॥
आ देखे लगलें फउदि एह बदरी के गइयन के—
जे तड़-तड़, पड़-पड़, कड़कड़ाई, घहरि, घोर,—
चमकि, दमकि के, गरजि, हुंकारि जोर से,—
छोड़ति बा, गोलन के धुआँ, करिया-करिया नभ से,—
आ फेंकति बा चमकत फरी बानन के गगन से—
पानी के बूदन में, जरत, तेज, चमकत, किरिन अस—
लाम लाम धार में, लरी अस सुन्दर, निरन्तर—
गगन के घटान में, चढ़ल इन्द्र-धनुस से,
खींचि खींचि, तानि तानि, ताकि ताकि के सगरो;
पृथिवी, पहाड़ पर, नदी, नद, टीला, टापुर पर,
छान्ही पर, छप्पर पर, आँगन दुआर पर,—

---

१—प्यास से मुँह सूखा हुआ, जीभ तालू में सट जाती है।
२—ताड़ पर से ताड़ी चुलाने वाला लम्मा मिट्टी का बरतन। ३—लटके हुए थनवाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तरुनिन के माथन पर, खुलल अध चोलिन पर
गोल'गोल गालन पर, पलक बरौनिन बीच—
चमकति, नाचति, कालो पुतरिन पर—
आमे के फाँकी अस सुन्दरि सुन्दरि आँखिन के।
तस हीं जल के ई सुन्दर मूसल धार, बरसि बरसि के—
छटकति बा गोर गोर, छरहर[1] गातन पर से—
नवही[2] नवेलिन के लचकति पातरि कमर पर से,—
पीठि प के छहरल, करिया केस-रासि के सेवार पर से,—
कान छूअत दृगन के पलकन के समूह पर से,—
खेलति बरखा में जे बाड़ीं प्रथम मेघ के पानी में ॥
आ तइसे गुदगुदावति बाइ रसे रसे धार ई पानी के,—
उनके ऊँच-ऊँच कुचन के, जे ऊपर उठल, उचुकल,आकास ताकत
झाँकताड़ें चुपुके चुपुके, छीपल मौन बनि के,—
चोलिन में कसल, बँधल, बन्दन के बीच से,—
आ भरिके रस सिङार से फुलावति,[3]उकसावति[4], सरसावति[5] वा
उनके जोबन के दाख अस भौंरा झलकत कसल कसइलिनके[6],
आ तसहीं चूमति बाइ सटि के चमकत बतीसी[7] उनके,
साटल जे बाइ मुख में हँसत दाना अनार के,
आ टपकति बाइ बनिके मनि मोती उनके—
कमान अस उतान तनल भहूँअन के करिया-करिया बारन से;—
आ बड़कन पलकन में धसलि लमहरि बरौनिन से,—
आ कपोल, कुच, गालन पर के लटकल चीकन लटन से,—
जानो बिकराल महा बिखिधर, निज जीमि फाटलि पातरि से,—
उगिलत होखे रहि रहि के निरमल चमकत मनि के ॥
तसहीं पड़ति बाइ ई बूँदी, बान बनि के सरस हरखावे लागि,—

---

१—छरहर = पतला दुबला सीधा शरीर। २—नवही = नयी उमर वाली। ३—फुलावति = फुला रही है। ४—उसकावति = उठने को प्रेरित कर रही हैं। ५—सरसावति = रस के रस से भरकर रसानुभूति करा रही है। ६—कसइलिन = कुच का अग्र गोला भाग। ७—बतीसी = दाँत की पंक्तियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बकुला के पातिन पर, क्रौंच सहरस मिथुन पर,—
चकवा चकई के हिअरा में जरत ज्वालन पर,—
पपिहा कोइलरि के पीर भरल मधुर मिठकी गीतन पर,—
पड़ुका, कबूतर, हारिल, अगिन, स्यामा, दामा[1] के,—
चारा बाँटत, केलत, जोटत,[2], बिहरत नर मादा जोड़िन पर,—
चिग्घारत हाथी झुंड पर, भागत हरना हरनी पर,—
किलकारत, गुर्रात, घोंघिआंत, कपि, बाघ, रीछ दल पर,—
पेड़नपर, डारिन पर, घासि-फूस, काटन पर,—
काँस कुस के जरिन पर, जवासन के पीतन पर—
थानन पर दूबिन के, पौढ़न पर उनके, माँटी में सटल सटल,—
झंखत, सुखाइल, मूअल, पाँव कुचरल[3] सोरिन[4] पर—
जोरत, बटोरत, सानत[5] धरती के कना[6], पानी के रस से,—
जे काटि, कूटि, तूरि-तारि, फेकल गइलें बसुन्धरा पर—
धूरिन में, बालून में, ढेला[7]-ढुकुर रोड़ा में—गरमी भर—
परबरखन परबत पर दन्डकारन बन के ॥
जहाँ बइठल राम चन्द्र, लखन हनुमान साथे,
चिन्तित मुदरा में सोचत रहीं गम्हीर गहन —
बात, गम्हीर मन, पहाड़ के ऊँच एक सुन्नर चट्टान पर,
बरगत के नीचे बिछल कुस के चटाई पर ॥
सरीर रहे लम्बा कद, रंग रहे साँवर गाढ़,
बाहि रहे आजान बाहि, छाति चमकल पहाड़ अस ॥
पेट जनु तलाब भरल, कमर सिंह के लजावति रहे,
पूरनिमा[8] के चाँद अस चमकत मुख आकर रहे ॥
तेज-पुंज, तेज भरल, दमकत[9] जोति-ज्वाला रहे,
राजीव कमल नयन रहे, लाल डोरा छितरल रहे,

---

१—दामा = छोटी लाल पत्ती जो अगिन ऐसा बोलता है।
२—जोटत = मैथुन करते हुए। ३—पाँव कुचरल = पद से रौदा हुआ।
४—सोरिन = जड पर, सोर पर। ५—सानत = सानते हुए, मिलाते हुए।
६—कना = कण। ७—ढेला = छोटे मोटे ढेले, मिट्टी के टुकड़े।
८—पूरनिमा = पूर्णिमा। ९—दमकत = चमकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नाक नीक पातरि रहे, सूगा के लजावति रहे,
लाल-लाल कुंगरू फल ओठ जानू बइठल रहे ।।
चमकति बती-सी रहे, साटल दाना जनु अनार रहे,
संख अइसन कंठ रहे, कंधा सिंह के गरदन रहे ।।

माथा पर जटा रहे, देह भर में बलकल बसन रहे,
गाल रहे टिकल कोमल कमल-तरहथ्थी पर,
नोक केहुनी के रहे अड़लि ठेहुन के चकरी[1] पर ।।
माथा कुछ झुकल रहे, जटा भी ओरमल एक ओर ।।
काने क तुलसी-कुंडल पड़ल रहे पातर अँगुरिन पर ।।
नीचे लाल तरवा से मानो झाँकति कोमलता रहे,
आ अँगुरी के नख-पाँती, दिखावति रहे, बारि बाती दीया के[2],
देह के सँवराई के घनाई[3] अँधियारी में मानो—
अवतार पुरुस देहधारी राम के मन में—
ब्रह्म के माया के सिरजल, मनमथ के भावन के,—
करत कलोल पंच तत्वन के त्रिगुन प्रभावन से ।।
उहाँ के मन खिन्न रहे, चिन्ता नागिन से डँसल रहे,
घेरले माया के घुँआ रहे मानो परम तेज पुंज के ।।
तबो वीच ओकरा से जगहे जगह फूटति रहे—
तेज के किरिन, तूरे खाती फँदा माया के,—
बंधन के, मन के मंथन के, मोह ममता जगत के,
आ दिखावे खातिर राह, राह-भूलल पथिकन के,—
ब्रम्ह पेरित माया के जरिये बनल सिरिस्टी के,—
सुन्हर खेलवाड़न में, बिकट संघरसन में, देह धारी मानुस के,
आनन्द में, भोग में, बिलास, सुख दुख में,
झंखत उहापोह में, विद्या-अविद्या बीच फँसल नर-वृत्ति-चित्त के—
उरझलबले[4] मुक्त आतमा के भ्रम के जंजाल में ।
त—अइसन देहधारी अवतारी पुरुस राम के
मन में, चित्त में, भाव में, सिया के विछोह से,

---

१—चकरीघुठने पर की गोली हड्डी । २—दीपक की वत्तीजलाकर ।
३—धनी । ४—उरझाये हुए, लिपटाये हुए ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उठलि जे चिन्ता, से मोहि लेलसि निरगुन के सगुन में,—
आ निरगुन जब सगुन बनि क्रीड़ा कइलसि देहि में—
अवतारी पुरुस राम के,—त फूटि धार आँसू पडलि,
आमे के फँकी अस कमल-दल आँखी से—
जे कुछ कुछ लोराइल[1], एक टक ताकति रहीं—
नभ के एह फउदि[2] के, जे डारति रहे प्रभाव अजब—
मन पर, बान लगला से मनमथ के धनुस से ॥

त—पीराइ[3] उठल सगुन, तृगुनी सरीर झट,
आ देखे लागत नयन, मन में दुख के सुख सपना;—
बनबास के दिनन में खेलल-खुनल[4] सीता संगे ॥*
त रोड़ा मरलसि[5] कसि के माया, छीर सागर के सान्ति में—
आ पौंड़े लागलि एक पर एक लहर बिचार के समुन्दर में—
सुन्दर भावन के, बीतल बातन के, रस-भरल[6] मन में ।
हँसि देंलें तब राम चन्द्र देखि के बजावत हुकुम,
सौंपल जे गइल बा, माया के मथ्थे काम के,—

१—अस्रुपरिप्लावित । २—फौज, सेना । ३—पीडा देने लगा । ४—रस रंग, क्रीड़ा, ५—मारी । ६—वह मन जो रस की बातों को सोच कर रसवत हो गया था ।

* राम जी यहाँ बन में सीता के साथ बिहार करने की बीती बातों को सोच सोच कर चिन्तित हुये हैं । इस पर भक्त गण मुझ पर रोष प्रदर्शित कर सकते हैं कि भगवान को मैंने मायालिप्त बना दिया और बनवास के समय ब्रह्मचर्य के धर्म के खिलाफ उनके आचरण को दिखाया जो उचित नहीं हैं । परन्तु भवभूति के अलावे वाल्मीकीय रामायण में, कौशल रामायण में, तुलसी कृत रामायण में भी राम जी के काम भावना का द्वन्द दिखाया गया है । देखिये किष्किन्धा कान्ड प्रथम सर्ग के श्लोक,नं० १२½ ३८½, १११, २८½ २३,१०८,४२,४५,४७,१०८, और १११ ।

तच्चार्वचितपद्माक्षं सुगन्धि शुभम व्रणम् अपश्यतो मुखं तस्याः सीदतीय मतिर्मम ॥१०९॥ प्राप्य दुःखं वने श्यामा माँ मन्मथविकर्शितम । नष्टदुः खेव दृष्टेव साध्वी साध्वभ्यभाषत ॥१११॥

फिर देखिये सर्ग सप्तविंश किष्किन्धा काण्ड श्लोक ३०-३३ तक ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तवे काम खेले लागत दामन धइ के राम के,
आ इआदि[1] पड़लि पंच-बटी, चित्रकूट, कुटी बालमीक जी के,
जल भरल नदी के कलोल[2]कइल-लहर के हिलोर में हवा मद मातलि संगे,
हरना के हरनी संगे, चकवा के चकई संगे, सारस साथ सारसी-
कपोत कपोतनी के नाचल, खेलल खुनल हँसल केलि,
आ आपन[3] भी ओइसे कुछ ओही दरिया के लहर में,—
नहात संगे सीता के, लखन जब सिकार रहलें खेलत दूर बन में।
त—सफेद धार नदी के लहरि में बहति जब रहे,—
लहरत तवना पर रहे छहरल करिया केस सीता के,
अंक भरले राम के जे रोकले रहलीं अपना के,—
बहे से तेज धार में, गरदन भर पानी में,—
आ राम के साँवर बाँहि घूमि के चारो ओर
बंधले रहे सीता जी के छाती के चटान से;—
आ माथे के जटा लाम लाम साँप अस पौड़त रहें,
डूबत उतरात[4] बीच केस रासि के सेवार में ॥
थिरकत आँखि सीता के नाचति रहे पुतरी बीच राम के,
आ राम भी भोराइल, मदाइल, अलसाइल अस,
ताकत रहलीं सीता जी के आँखीं में डालि आँखी के ॥
सुरज निकसिके ओने भाँकत चन्दा के रहें—
एने भाँकत चाँद मुख राम-मुख छवि के रहे।
त-ई छबि तब राम के मन के मसोसि[5] देलसि,
देखिके असाढ़ी फउदि चढ़ाई करत परबरखन परवत पर ॥
सामने उहाँ के बाड़े लखनलाल बइठल चुपचाप बीरासन मरले
कान्हे पर बा धनुस चढ़ल, कमर में बा तिरकस,
माथा पर बा सोहत जटा, तन में बलकल बसन बा,
रंग बा गोर, तेज लहकत अंगार अस—
कान्ह बा सिंह अस त छाती निन्दति बा चट्टान के।

---

१—याद स्मरण, २—कलोलकइल=क्रीड़ा करना, ३—अपनी भी वैसी ही क्रीड़ा करने की स्मृति। ४—तैरना उतराया हुआ ५—परेशान कर दी ऐंठ दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पीठ पाट धोबी के बा त पेट पुरइन के धवल चीकन पात बा,
कमर बाटे कमल नाल, जाँघ जानो हाथी सूँढ़ के लजावत[1] वा,
आ ललाई पाँव के बाटे निहसति सिङ्गार रस के ॥
त-देह पर अइसन खड़ा बाटे वहाने मुख-छबि के चाँद,
चमकत सगरो[2] से कला लेले आपन सब सोरहो,—
तबना में खँडलिच अस थिरकति बाइ सूघर आँखि,
ताकति मुख राम के बाइ, भाव मनके बाई निरेखति,
सिकार जेकर बनल राम डूबत उतरात बानी मन के समुन्दर में ॥
एही बीच गरजि घुमड़ि, घटा घोर थहरि उठलि,
आँखी से तबे चू पड़लें ढ़रकि बूँद राम जी के गाली पर ॥
देखते ई लखन लाल कोपि के लाल भइलें—
जागल जनु सिंह सूतल, हाथी के चिघ्घार से—
आ सूतल जनु बीर रस खोदि के जगावल केहू ॥
फड़के लागल गाल, तमतमा मुखके रंग गइल,
आँखि के ऊपर भहूँ, खींचल कमान बनल ॥
भुजा भी फरके लागल, हाथ गइल तिरकस पर बरबस,
बाकी संकोच उनके धइले रोकले रहल,
क्रोध आइल बाकी ओके संजम संजोइ लेलसि,
रघुकुल कुलीनता दबा देलसि जानो स्वभाव के ॥
दाबि के क्रोध के तब उफनत पिआला लखन,
ताकि बगले बइठल हनुमान जी से गते कहलें—
काहे, हनुमान भाई, सुग्रीव सब भूलि गइलें ?
पाइ नारी, राज-पद भोरइले अस मोह में—
कि भूलि गइलें वादा ऊ जे राम जी से कइले रहलें ?
ताकि तब राम के, हनुमान, कहलें विकल हो,—
मरजी सरकार होखे कि जाईं किस्किन्धापुर,
पूछीं, समुझाईं, जानीं, कारन एह मुलइला के ?
जबले राम जी मुखातिब होखीं लखन तबले रोसिआइ कहलें,
समुझावे आ जाने से कारन होखे के फल का बाटे ?

१—जिन्दा कर रही है। २—तमाम से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बाहीं में जो बल बाटे आ हाथे तीर धनुहा बाटे,
त राहे लाके सोझे सोझ हुकुम देबे के बा राजा अस ।।
राजा जे बनावल राजा, बेराज से काहेना करी ?
भगिहैं सुग्रीव जब पाछा अपना परतिग्या से ?
उनके भरोसे हमन अइलीं ना आयोध्या से—
बल रहे आपन, छत्री धरम पराकरम रहे,—
कपीस जी चेति खुदे जाइब तीर चढ़ी जब परतञ्चा पर ।।
राम के का कहीं, बात, दास का कम बा ?
आ बजरंगी के बज्र भी त साथ एकरा हइए बा ।।
हुकुम भर राम के हो मारीं जाके ओ के हम बालि अस,
दर्प, गर्व, सब्बे, तूरि किस्किन्धापुरी डारीं जारि ।।
आ कान छेदि. कमर बाँधि नचावत, लाईं कपि के मदारी अस
आ दूनों महारानिन से डँवरु बजवावत आईं—
ई जो ना करीं नाथ, नाग सेस अवतारो ना ।।
कहाईं ना लखन-भाई राम रघुवंसी के ।।
त—कडकि के धनुहा धइलें, तमकि के खाढ़ भइलें,
आ हाथ गइल तीर धरे तरकस पर बरबस ।।
तइसे राम, "सान्त" बोललें, ताकि के लखन जी के,
लखन भाई, रोस जीते हमन बन आइल बानी ।।
तोहार जो चलित त द्वन्द छिड़ित ई अजोध्या में,
बाकी मरजादा के तब रखवारी के करित हो ?
जवने खाती बलकल धरलीं, खइलीं बन फूलफल,
तेजिके हरिन मासु बनावल सुआरन के,*

---

* रामजी के मुख से माँस खाने की बात सुनकर भक्तजन् नाखुश हो सकते हैं लेकिन वाल्मीकि जी भी अपनी रामयण में इस बात का राम के मुख से कहलाये हैं—देखें वाल्मीकीय रामायण अयोध्या काण्ड "विंश सर्ग श्लोक न० २९ रामजी कौशिल्या से कहते हैं—

चतुर्दश हि वर्षाणि वत्स्यामि विजने वने ।
कन्द मूल फलैर्जीवन हित्वा मुनिवदामिषम् ।।

शेष पृष्ठ ६१ की पाद टिप्पणी पर देखो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज तेजलीं, पाठ तेजलीं, माता पिता सग्गे तेजलीं,—
भरत के मनावल आ समुझावल बसिष्ठ के तेजलीं,
त तवने के तूरे खाती नू, तोहार ललकारल अस ?—
क्रोध कइल नांस के तुफान–ई[1] जोरल अस ?—
धरम के विरुद्ध मरजादा तूरे खाती क्रोध अस कइल हो ?—
आ हौसला के बाँधल अस कहाई का उचित हो ?
सास्त्र, आ पुरान, वेद बँधले जे जे मरजादा बाटें—
धरम-करम, रहन-सहन, मानुस के इहाँ कांमन के—
तवनन के रच्छा कइल मानुस के करतब होला,
करतब बिहीन मानुस असुर नू कहाला हो ?
जगत में आइल गइल होत बा रोजे रोज,
आइल ओकरे आइल होला निबाहल जे धरम-करम,
करतब कइल, आदमी के रखवारी मरजादा के ॥
मीतताई मीत से त सबे जोरत नित जगत बाटे,
पर कपट के खटाई परते रस फाटत मीत तुरते बा ॥
मीतताई[2] मीत से जोरल आसान बा काम बहुत,
मीतता निबाहल बाकी बड़ा कठिन काम बा—
बादा, परतिग्या स्वारथ के फकत भीति पर—
मीतता में हमार कइल कहऽ क दिन खड़ा रही हो ?
सुग्रीव के मिताई उनका मन में जे हो रहे दऽ,
अपना मिनाई के तू कसऽ सदा एक एही कसौटी पर ॥
बाकी बात बाटे इहे, माने के जे सबका पड़ी कि—

---

पृष्ठ ६० की पाद टिप्पणी का शेष अंश।

तुलसीदास की 'पावन मृग' वाली चौपाई को सब जानते ही हैं। भवभूति जी भी अपने नाटक में इस बात को कहे हैं और वाल्मीक ने तो बहुत-बहुत जगहों पर कहीं राम, कहीं सीता से इसको दोहरवाया है। देखिये वह प्रसङ्ग जहाँ रावन सीता के कुटी में साधु वेश में हरने के लिये गया है। सीता ने वहाँ उसके अतिथ में फल-फूल देकर कहा है पति देवर शिकार को गये हैं और वे गोह, गेंड़ा के विपुल माँस लेकर आते होंगे।

१—तूफान उठाना, २—मित्रता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मीतता के मीत सदा रहेले खड़ा सचाई पर ॥
बाकी सचाई में भी गलती के सम्भावना बा
जवना के निराकरन कइल करतब बा सच्चा मीत के ।।
एही भावे लखन भाई, ले के हनुमान साथे—
किस्किन्धापुर जाके समुझाव, सुग्रीव राजा मीत के ।।
तबो जो ऊ ना मानसु, राज-मद बस सठता करसु—
त सठ-मीत के सुधारे खाती बनल मीत बा राजनीत ॥
जवने के छत्र-छाया में पनपे लें सब धरम करम—
समाज, मरजादा आ सचाई के भी रच्छा होले ॥
राज-नीति राजा के हाथे वइठलि दन्ड रूप में बाड़—
जेही पालक न्याय के, समाज के, सासन के बा ॥
इहो बात सगो से जब थाकि जइहऽ हनुमान तूँ—
त समुझा दीहऽ भाई सुग्रीव के काने में, गते से,—
जे सायद राजमद में भुलाइल मिताई होखसु,—
काहे कि मिताई में बचावे के मीत के भी बा—
परम करतब मानल गिरे से घोर खन्दक में ॥
त—एही नाते भ्रम में पड़िके अर्थ के अनरथ नाहो ॥
कहीं का समुझा के आगे, चतुर दूनो जाना बाड़ऽ तूँ ?
सखा के मनमें भी कबो-विकार के प्रभाव से—
त्रिगुनी सरीर के, माया के सिरजल सृस्टि के—
उपजे ले भाव अइसन द्रोही जे नीति धर्म के,—
प्रेम के, करतब के, समाज के, भक्ति भाव के ॥
त—ओइसन बिकारी बुद्धि सखा के सुधारे खाती—
करतब हमार होला तूरे के ओकरा मद के, दम्भ के, भ्रम के
माया के, मोह-ममताके, बिकारी बुद्धि के अविद्या के,
आ तबे निरबाह सच्चा सखा-भाव के हम करि पाईला ॥
त एही भावे सखा सुग्रीव के सुधारे खाती—
करिहऽ उपाय जहाँ उचित जे समुझिहऽ तू ॥
जवना से रच्छा हो सखा-धरम के सास्वत भाव-
आ बनल रहे मारग-स्रुति भ्रस्ट होखे से सदा—
जवना के रच्छा हित अवतारी अवतरे ला ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



त-नीति भरल बात सुनि गद गद कपि लखन भइलें—,
ताकि एक दूसरा के भाव चले के जनवलें ॥
तब आदर सहित बन्दि राम जी के चरन कमल,
चलि पड़लें हरखित मन किस्किन्धापुर सहर तरफ ॥
सैल से उतरते तुरते सड़क उनके पक्की मिलाँल—,
तब चललें हुरुक पाँव, पथ पर चमकत जे चाँदी अस रहल ॥
पहुँचलि जब युगल जोड़ि राजद्वार नगर निकट
सजावट कारीगरी देखि लखन मने मन लुभइलें ।
खम्भन के पच्चीकारी देखलें, बनावट मुख्य द्वार के सगर,
ऊपर नीचे, अगल-बगल, बनल इंच-इंच, जगह-जगह,—
रंग आ विरंग के चित्रन के बारीकी, चित्रकारी के,—
चित्रित जे रहलीस संगमरमर के दिवारन पर,—
केवारन पर, चौखट पर, खम्भन पर, फरस पर,
चउतरा पर, सीढ़ी पर, रेलिंग, पखवाई पर ॥
तसहीं लुभइलें मिनारन के उचाई देखि,
गवाच्छन के कटाई, कलाकारी मूर्ति पत्थर पर के,
खिलानन के, कारनिस के ढलाई, सूत, साहुल में नापल-तुतल,
ऊपर-नीचे, अगल-बगल सगर, जगह-जगह, बनल,—
रतन जड़ल, मीनाकारी, सुबरन के बारीक गजब-गजब के,—
कइल जे रहलीं स बिल्लौर पत्थर के बारीक अति कामन में,
पच्चीकारी में, चित्रकारी में, खुदाई में, ढलाई, बनाई में ॥
तइसे तल्ला, दुतल्ला, तितल्ला, चौतल्ला वाली,
अटारी—कइ तल्ला, दीखातें किला भीतर रहलीं,—
मानो सृंग-सीखला उचकल हो, गगन चूमे खातीर ॥
आ चारो ओर अथाह जल भरल नहर बहत किला के रहे,
जानो बीचो बीच किला टापू अस उहाँ बसल रहे—
भा इन्द्रपुरी भागि उहवें इन्द्र से रुठि आइ बइठलि रहे—
जवना के सोभा अति लोभाइ लेले मन लखन के रहे ॥
त इआदि पड़लि आपन अयोध्या के जनम नगरी,—
आ गाली प लुढ़कि पड़लि उनके आँखी से मोती लरी ॥
देखि के तब दसा ई लखन लाल के हनुमान जो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आ जानिके कि मन पड़लि उन्हका बा आपन जन्म नगरी,
आ लुभाइ उठल बाडें ऊ कला कौसल से दखिनी,
हरखि उठलें मने मन आ करे गजब गरब लगलें,
सोचि के ई बात कि याद लखन के पड़लि बा आपन जन्म नगरी-
आ भइल प्रभावित बाडें, कला से सुनर हमरी ॥
तबले देखत हनुमान संगे आवत रूप तेज लखन जी के—
धाइ पड़लें कुछ जोधागन सुग्रीव ढिग महल में,
आ कुछ बढ़ि आगे अगुआई कइलें लखन जी के ॥
स्वागत कइ लवलें बइठवले आसन सोना के,
दउड़ि दउड़ि सेवा सत्कार करे में निरत भइलें ॥
ओने सुग्रीव सुनलें लखन के अवाई कपि संगे जइसे,
राजनीति निपुन, बात जानि भीतरी झट लिहलें ॥
याद पड़लि बादा जे राम जी से कइले रहलें,
आ आपन भुलाइल दोस ईंची-ईंची देखि लिहलें ॥
भय उपजल, प्रीति उपजलि, मन में नीति ज्ञान उठल—
याद पड़ल बालि आ मारल पीटल ओकर सब,—
आ आपन सरन गइल बान मारल राम जी के बालि के ॥
तब रची रचो लउकि गइल कूबत के हाल आपन—
आ राम जी के बल-प्रताप हनुमान के बतावल सब ।
तब सीस-मुकुट हाथ लिहलें, दूनो रानी आगे कइलें,
पाँव प्यादे हांफत झट लखन ढिग चलि पड़लें,—
फाटके पर भेंट करे खाती अगुताइल उठलें,
भाब जेमे ना दूसर रंच मात्र प्रगट हो ॥
राजा सुग्रीव के जब देखलें मुकुट हाथ लिहलें,—
आवत तब मिले खाती लखन उनका से उठि आगे बढ़लें—
लखन हाथ बढ़ल जइसे मिले खाती छाती से—
तइसे गोड़े पर मुकुट धइ सुग्रीव माथा टेक दीहलें ॥
जबले सुकन्ठ कुछू मुख से उचारसु तबले—
तारा लोकि अवसर, मद भरल, चढ़ल नयनन से ताकि के,-
लखन जी के ओर, हाथ जोरि, तेजिके स्त्री सुलभ लाज भाव,—
बारुनी के नसा के प्रभाव से, जे पीके ऊ मस्त रहलीं,—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चले के पहिले साथे सुग्रीव के, रनिवास के केलि में,
कहली, दिढ़ाई के, विनीत स्वर साफ में, गम्हीर बात,
जे नीति से भरल रहे, ज्ञान भरल राजा अस ॥
राज, नारि, मदिरा तीनू, जगत में अजेय'जे कहल बाटें—
तिन के जे दिहलीं राम जी सुकन्ट हाथ एके साथ,—
पाइ के सेही सुग्रीव, दुखी, भुखासल-पोआसल बहुँत दीनन के—
स्वामी हमार, बउरा उठले', भोग में, बिलास में, क्रीड़ा में,
आ खाये पीये रंग में, भुललें हो के मस्त अइसन कि—
भुला गइले' देस-दुनिया, बुरा-भला, सील, आचरन के,
उचित-अनुचित करम, आ प्रतिग्या अपना कइला के ॥
त-कपि-जाति असहीं सुभाव के चंचल आ काम के धनी ठहरलि,—
तेह प ऊ पाइ लेलसि राम जी से तीनू अनरथ के निधि ऐके साथ ॥
तब कइसे ना भूलि बइठे ऊ करतब के अपना ?
त-एही कमजोरी बस राम सहुँ सुकन्ठ भुलले'—
प्रेम के, स्रद्धा के, प्रीति-भाव के, करतब के, कइल प्रतिग्या के,—
आ खबरि ना लिहले' सीता जी के खोजावे के लाने के ॥
दूसर ना भाव रहे, लखन जो, रंच भी विद्रोह के, कुभाव भा मगरूरी के ॥
त-राम जी समरथ्य[1] बानी, तेकर भाई रउरो जे आइल बानी,
ओइसे हईं समरथ्य बीर, धीर, ज्ञानी करम-धरम के,—
आ सेसनाग अवतारी, ब्रह्मचारी, बली, महा जे जहान के ॥
त-छमीं हमनी के, छमा हमन चाहीला, अपना भुलइला के, दोस के, अपराध के,—
आ समरथ के जे चाहीं से रवाँ बरताव करीं, गीरल सुग्रीव से ॥
गिरला के उठावल त सुभाव रघुबंसी के हटे,—
जे राम रवाँ दूनो ओही बंस में जनमल सुरुज हईं ।
आ ब्रह्म तेज, सेस अंस, देव तुल्य, ऊपर से हईं ;—
फेनु जामलो त दसरथ के हईं, तीनू लोक में ज़े बचन के अपना धनी रहीं—
प्रान तेजि देलीं बाकी बचन से नाहीं बिमुख भइलीं ॥
त-गुन आपन बपौती देखीं, आ जाँचि देखीं लघुता मदइल[2] बानर के ॥

१—समर्थवान। २—शराबी; मद से माता हुआ, काम वासना से लिप्त ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आ तब करीं करतब उहे बड़का जे करेला बड़का के साथ में ॥
उठा लिहीं, बाँहि धरीं, गिरल राजा सुग्रीव बाटे,—
राम से अनुग्रह लागि, रउरे सहुँ, रउरे किरिपा के आसरा में;
अंगद भीं, तारा साथ, खाढ़ बाड़े, जातिसंगे बानर लेके,
माँगत छमा के दान रउरे भरोसा में,
रउरे आसरा में, उदार भरल हिया के दया के प्रेम भाव के ॥
त-सुनत अस सार भरल नीति निपुन पुनीत बानी तारा के,
आ देखत ऊ मदाइल बड़की कान छूअत आखिन के—
मस्तानी, निड़रि नजरि आ सोखी के भाव, भरल नारि हिय के,—
भुलाइ गइलें लखन रोस खूँटा बाँधि के लवलें[1] जे रहलें—
बदला लेबे के, दन्डे के, डरावे के, सुग्रीव के,—
चलत जूनि राम सहुँ, गिरि पर, सुगन्ठ के नगर ओर;—
तवना प सुकन्ठ के सुनर, सील भाव, आ आपन कुलीनता से—
प्रेरित बंस के महानता आ बड़ाई बपौती के, सबे एके साथ मिलिके-
बिवस कइलें, उनका के, छमादान देवे के, आ उठावे के सुकन्ठ के।
साथ ही करुना, आनन्द जनित, पोर के, मथि के, हिअरा के,
फफनि[2] जे ऊठलि रहे, भीतर हियरा के, आ आसू बनि के—
रहे ढुरे लागलि दूनो गाली पर मोती अस जे झट से,—
आ ओने लगलें सुग्रीव माँगे छमा बार बार दीन दुखी आरत हो-
अपना भुलइला के बिसरला के, राम जी के सामने कइल प्रतिज्ञा के.-
से सब मिलि के एके साथ पेरि के लखन के हाल अस बेहाल कइलें[3]-
कि उठा के ऊ लगा लिहलें, सुकन्ठ के अपना हिअरा से,—
भाव से, प्रेम से, छोह भरल बानी बोलि सखा के ॥
आ तोखि कहलें, अभय दिहलें, राम ओरि से छमा कइलें,—
आ बतवलें उनकर करतब आगे के सब झटपट,—
कि तुरत चलऽ सेना संगे, लाव लस्कर सबे लेले,—
चले के तइआरी कइले खोजे खाती माता सीता के ॥
त-तारा संकेत देली आ पाँव परि धन्य कहली

१—गाँठ बाँधकर जो लाये थे। २—उफन उठी थी। ३—दशा को—
ऐसी कुदशा में बदल दिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आ सुग्रीव वादा कइके, हुकुम माने पर तैयार भइलें;
आ दसो नोह जोरि के आरत हो विनती करिके
लिवाई चललें लखन जी के अपना रनिबास ओर।।
सजावल जहाँ गइल रहे, सिंहासन सुन्दर राजसी,
साज धाज करिके, इनके बइठावे खाती महलं में।।
चले के त चल लें लखन रनिवास ओर बाकी जाके
रुकलें जब पहुँचलें ड्योढ़ी के मुख्य द्वार पर।।
हँसि के तब सहज भाव कहलें, सुन, हो सुग्रीव भाई,
बात बाटे कुछ कहे के गुने के बा गम्भीर होके।।
इहाँ तक त अइलीं हम खातिरदारी सब कबूल कइलीं;
बाकी अब आगे ना आग्रह कर जाये के;—
काहे कि राम साथे हमहूँ कइले प्रतिग्या बानी—
रहे खाती चौदह साल वन में ब्रह्मचारी बनि।।
जतना खातिरदारी कइल गदगद हम हो गइलीं—
बेसी मत आग्रह करऽ गुनि के धरम हमार तूँ।।
चलि चलऽ, जल्दी से राम जी के निकट तैयार होके—
आ सोच तरकीब उहाँ खोजे के सीता माता के।।
आग्या दऽ तबले कि ठहरीं हम किला बाहर राज बाग में,
जबले तइआर होइ के आवत तू बाड़ऽ निज लाव लस्कर ले।।
काहे कि बिना साथे तोहरा गइला से राम जी के मन में
का भाव होखी, ई जान ताड़ऽ नीति निपुन तूँ।।
सुनि के गूढ़ लखन जी के बात गम्भीर बड़,
मानि गइलें सुग्रीव राजा ज्ञानी रहसु राजनीति के।।
पल में इन्तजाम भइल किला बाहर आराम[1] में—
लखन के ठहराव के आराम[2] के बिसराम के—
जहाँ रानी दुनो निज हाथे सब सेवा कइलीं,
आ अंगद युवराज भाव आदर के दिखवलें।।
राज के आराम[3] में आराम के तैयारी एने,—

१—आराम=बाग। २—आराम=सुस्ताने के, आराम करने के क्रिया। ३—राज बाग में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ओने किला में फउदि होखे तैयार लगलीं ॥
बीगुल बाजल, धूधूक बाजल, फउदि के तइआरी के—
तब जूमि पड़ले, दौड़ि सैनिक अपना-अपना जगह पर ॥
हाथी, घोड़ा, लाप, लस्कर, नाना रंग आयुध सब,
लेले क सैनिक सावधान होके खड़ा भइलें ॥
कपि दल, रीछ दल, आदिवासी मानव दल,
आयुध[१] जीवी, धनुसधारी, विज्ञान-सेना[२] अलगे,
वायु-सेना, साढ़नी सवार, बड़की पैदल सेना,
रथ-सेना, जल-सेना, अग्नि[३] तरुआरि सेना,
सजि सजि सब खाड़ भइली नापल तुलल फासिला पर—
कतार के कतार में, पाँती में, धारी में बराबर के,
एक एक जोधा टेकुआ अस खड़ा सीधा—
लउके लगले सगर परेड के मैदान में,
जइसे लउके पौधा रोपल धान के तरीका जापानी में ॥
कइ कइ कवायत, कूँच, सेना घूमि रुकलीं जगह एक—
जब सेनापति, देखि-भाल गइलें सुग्रीव ढिग ॥
आ राजा सुग्रीव सजि, सेनापति साथ ले ले,
जइसे पद रोपले परेड के मैदान में,
बाजलि झट बीगुल, सलामी सताध्नि[४] देलसि ॥
सेना सलामी बोललि, झंकार भइल अस्त्र के ॥
लेके सलामी तब सुग्रीव अति प्रसन्न भइलें
आज्ञा देले कूँच के प्रबरखन परबत के ओर—
आ अपने चलि पड़ले अतिथि ओर राज बाग में,—
जहाँ राज-अतिथि, लखन लाल टिकल रहीं ॥
देखि के सुग्रीव-राज, आवत अतिथि-भवन ओर,—
भइले सब कर्मचारी तेज निज निज के करतब में ॥
आइ कइलें सुग्रीव सम्वाद सेना के कूच करे के,

---

१—जिसकी अस्त्र शस्त्र चलाकर लड़ने की जीविका हो। २—जिस सेना में विस्फोटक यन्त्रों का प्रयोग होता हो। ३—वह सेना जिसमें अग्न्यास्त्र बन्दूक आदि का प्रयोग होता हो। ४—सताध्नि = शतघ्नि = तोप।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आ कइलें प्रस्ताव अपनो लखन संग चले के—
बग्गी से या बिमान से अथवा घोड़ा हाथी से ॥
जइसे नीक समुझसु लखन जल्दी पहुँचे के उहाँ ॥
तब लछुमन जी चिन्तित हो, गुनि मन में नीति बात,
कहलीं आदर-प्रेम से, सुग्रीव से, विनीत हो,
आ जी कपीस राज, अच्छा का भाई होई नां कि
अपने आगा चलीं संगे ले के चतुरंगी सेना.
आ आईं हम पैदल हनुमान जी के संगे पगडंडी से—
बीचे बीच राह काटि, सीधे राम जी के सैल पर ॥
काहे कि तापस भेखधारी, ब्रह्मचारी कइसे,
चढ़बि हम सवारी पर, बग्गीपर, चौकड़ी पर ॥
बात सुग्रीव गूढ़, सुनि के, हो बिनीत कहलें—
हम त कपि बानर जाति पेडें के रहवैया हईं—
कइसे ना सकबि चलि पैदल साथ सरकार के ॥
आ कइसे हम चढ़बि बग्गी पर, जब पाँव प्यादे लखन जइहें ?
पैदले चलबि हम हूँ राम काज करब सेवक अस ॥
राजा त बनावल केवल राम-राजा जी के हईं हम ॥
हुकुम रहे के बा सेना से पाँच कोस एनिये—
उहाँ से जहाँ से प्रबरखन वन सुरू बा ॥
बात सुन्दर, सहज, निस्छल भाव, भरल प्रेम के,
सुनि के भइलें लखन गद गद अति मन में,
आ कहलें, सुग्रीव भाई, छमा करऽ तूँ हमरा के—
संका खाती मन में जे हमरा अव्वे जगह कइले रहे ॥
हमरा हनुमान से भी बढ़ल प्रेम बा अपने के—
कि राम प्रति सेवा भाव जागल बा अइसन मन में ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार, विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के दसवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि—१३, सावन सम्वत २०१८ विक्रमी तदनुसार ६ अगस्त १९६१ इसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### *एगारहवां सरग*

प्रारम्भ तिथि--भादो सुदी ६, सम्वत् २०१६ विक्रमी, तदनुसार ८ सितम्बर १९६२ इसवी दिन सनिवार।

किस्किन्धापुरी से लखन लाल के लवटे में देर भइला पर रिखिमूक परबत पर राम के चिन्ता। अयोध्या आ उहाँ के कुल परिवार, हित, नात के याद कइल। आपन दुख बिपत्ति पर बिचार कइल आ लखन कै अकेले भेजे पर पछतावल। संझा समय चाँद के देखि के सीता के स्मरन आ चाँद के दोस-गुन बखानि के सीता के सुनरता के बखान कइल। चाँद के छोट बतावल। फेन बिरह के व्याकुली में सीता के बन उपवन से पता पूछल। उहाँ के कलिपत रूप देखल ओकरा से बार्ता आ विच्छिप्त बुद्धि हो के बेहोस भइल।

### १५ मात्रिक चौपाई

रिखिमुक, राम बइठि गिरि आप। गूनत रहीं बात चुपचाप॥
गइला लखन के कऽ, दिन बितलें। अइलें खुद न खबरि पठवलें॥
चित्र चिन्तित त मन बेहाल। मिलल न अजुओ उनकर हाल॥
दुरदिन आपन आइल याद। पूरल भांय क बहुरन म्याद॥
तब छन छन मन चिन्ता बढ़लि। गुनि न लखन उचित तहँ भेजल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के मित्र, के रिपु, जग चीन्हल। महा कठिन समस्या बूझल॥
मन पड़ली अजोध्या नगरी। बयभव तहँ क, सुख, घर सगेरी॥
निज पराय रहले जे उहवाँ। नचलें आ के दृग में इहवाँ॥
माता, पिता, भरत जे भाई। गुरु-जन, पुर-जन, हित, मिताई॥
बोलल, चालल, खेलल, हँसल। छोह, ममता, सब कर प्यारल॥
मन पड़लें सब एक प एक। मोह उठल हिय नसँल विवेक॥
याद पड़ल, लखन सँग खेलल। बगसर गमन त बन अनुसरल॥
रहलीं मन पछताइ भीतर। गूनत भूल कि पठवल अकसर॥
सिय छोड़न क फल जब पवलीं ! तब धिके बुधि कि लखन पठवली ?
तीनि जना सँग बन सिधरलीं। बुधि बस निज तीनू बिलगलीं ?
हाय, राम के हत यह भागि ! जहाँ जात तहँ लागति आगि ?
डूबल सुरज ओने तुरते। दुख मानत कुल, राम लखते॥
एने चाँद उगल जे हँसते। खिंचलसि ध्यान राम क दिखते॥
तेह के लखे एक टक लगलीं। हिय पट चित्र सिया क खिचलीं॥
झट दृग नचली सिय के मूरति। सीतलि निज, त अगिनि उदीपति॥
लुतुकी बिरह-आगि जिअवलसि। धधकि राम जे जारे लगलसि॥
जागल बिरह त बधि भुलाइलि। सिय भर में चित वृत्ति समाइलि॥
गूने बात सिया क लगलीं। अजब तरह बिकल मन पवलीं॥
हा ! हमारि सिय कहवाँ गइलि ? नभ पताल कि कहाँ समाइलि ?
कस रो रिपु घर छछनति होखी ? कत बिछोह दुख सहति होखी ?
कत रोना रोवति ऊ होई ? पडि अकेलि कस विसुरति होई ?
अत्याचार सहति उ कतना। होई झंखति सुनति ससना ?
असत गुनत सिय, ससि से तुललीं। अवगुन बहुत चाँद में पवलीं॥
चन्दा हँसत देखि के मखलीं ! हिय परजरी सुभाव लखलीं॥
दुखित होइ खीझि तेहि तकलीं। बिधिवत तेहि क निन्दा कइलीं॥
सियकर अलपि बयसि क ससना। देखि चाँद, अगरात कतना ?
हरखत कत तें डाह भाव से ? हँसत कसुत तें अतुना नभ से ?
रूप क गरवे जो ते माँतल ? वृथा तोर भरम अस मानल ?
जो पटतरीं तोहि सीता से। दूसर के बुधि हत हमरा से ?
घटत बढ़त दिन तीसो रहले। कटा जुटा तन दुख नित पवले॥
दिने दहडने सदा हतइले। ग्रहन समय असि राहु कटइले॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चमकति हिय जे जोति इ हँसनी। पोतलि लउकति तहाँ करिखनी॥
जे कलंक कर भइलि निसानो। कइलसि तोरि जगत हँसानी॥
बड़ सरहजि तोरि अँजोरिया। सेऊ बिनसति तरगन जोतिया॥
जोति ई आपनि हइ न तोरि। उधारलि सुरूज से कान्ति बटोरि॥
कहलें लोग सुधा ते बरिससि। जो ई साँच अमा कस बिनससि?
बिख के संग ते चाँद जनमले। मन्थन-प्रसव समुद सतवले॥
जस मदिरा तस तोर सुभाब। भाय बहिन सम नाहिं दुराव॥
सान्त समुन्दर के पगलवले। जग में पागल रोग बढ़वले॥
लखि तोहि क बिरहिंनि दुखइलीं। स्रापि हिय तोर भाँझर कइलीं॥
जेहि बिच लउकति नभ सँवराइ। बिपदा अस ते सहसि छिपाइ॥
राका रिपु ते सदा कहइले। घिन परजरी सुभाव पवले॥
गुरु-पतिनी कर सत ते नसले। उर कलंक स्राप बस छपले॥
बुध जन त तो सदा निरदलें। डरि उमाद तो विभव न लखलें॥
भरल दोख चाँद ते रहले। के कवि मूढ़ कि सिय से तुलले?
सिया सुनरि त परम पुनीता। निस्कलंक, तस जग क मीता॥
बाहर, भीतर एक सुभाव। सहज प्रेम, नहिं कपट, दुराव॥
दिव्य जोति क सीता मूरति। सहज सुभाव सीतलि सूरति॥
प्रिय सँगीत सम सील सीता। सती, गुनाकर चिर, अभीता॥
सीता छन छन पल पल जवन। निरमल जइसन गलल सुबरन॥
लहकति, चमकति, दहदह गोरि। सीतल-दीप टेम्हि जनु भोर॥
महा तेजक जीअति मूरति। रूप सरलता सहजहिं बरति॥
करति अँजोर से सगरो फिरति। सील, सान्ति, सुन्दरता, निखरति॥
घर अनुराग क, सपना मन क। अस सिय छबि कमनीया जग क॥
भाव-दीप कर बरति बाती। सहज सुभाव के धइल थाती॥
रति, सत, सती, सवित्री, गिरिजा। रम्भ, मेनका, सची, समुदजा॥
सबसे परे सुनरि छवि-सीता। सीता प्यारी सती पुनीता॥
अस सीता सुखदा क आगे। रंक चन्द तुच्छ ते लागे॥
तोहि से अस जे हम सिय तुललीं। ते कारन सिय रूठि कि तेजली?
लखन खचित जे रेख लाँघि के। बनि सिकार गइली राछस के?
कि सुधि अजी न राम क लिहली। ना ओ कुछुओ ओ सनेसे दिहली?
बिरहे बिलपत, तड़पत रोई। बिनु सिय कस ऊ जीअति होई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



त-चन्दा टुक दया ते करिहे। बिनु स्रम के उपकार जनइहें ॥
बस सुभाव गगन में घूमलसि। कइ अँजोर निसि जग क लखलसि ॥
करि टुक दया सिया के तकिहे। कहाँ छिपवलसि निस्चर लखिहे ॥
परबत, खोह, कवन कँदरा में ? की पताल मैं, की आकास में ?
थल पर, जल पर, रूख, बिरिख पर ? लखिहे ससि मुँदि रखलसि कँहँ पर ?
देव-सुभाव सब ई जानें। अनुचित उचितु बात ऊ मानें ॥
सत, निन्दा, भा साँच बात से। अमनख मानि न करें हानि से ॥
जे लघु कहलीं छबि सीता से। दुख ते मनिहे नहिं मीता ! से ॥
बनि उदार तें खोजिहे सिय के ! रूप रासि जगत कमनीय के ॥
तजिहे देव, न देव भाव के। कहिहेऽ मूट पवते सुधि सीय के ॥
रंच पता पइतीं सीता के। काल जीति लइतीं उनका के ॥
निस्चर का, त्रिदेव, इन्द्रसत। स्वयं बीर रस, रवि प्रचंड सत ॥
सक्ति तेज धइ क सरीर जो। लड़िते सहुँ मिलि एक साथ जो ॥
छन में सबें पछारि जीति रन। सिय बइठइतीं हिय सिहासन ॥
जब उत्तर न चाँद से पवलीं। आहत दुखी निरास बनलीं ॥
चाँद से आँखि फेरि तब राम। तकलीं बन परबत के ठाम ॥
सबके बोधि पता सिय पुछलीं। बँधि रथ-निसचर जे नभ गमली ॥
कँदरा ! खोह ! हे बन क टील ! समतल, असम भूमि, नभ नील !
नदी, नार, गुड्ही, हे, गड़हा ! सरिता, पोखरि, कूप, सुरहा !!
झरना, झील, भरल अध भरल ! कीच-काँच, बन ठवर सूखल !!
हे गिरि क पगडंडी टूटल ! जहाँ तहाँ साँप अस घूमल !!
हे तृन, घास, बगल क जामल ! कचरल-कुचरल, जीअल, मरल !!
हे वहु भाँति क वड लघु पवधा ! लिपटलि रूख से बेवरि नवधा !!
मिरिच, लवंग, मसाला, जिनिस ! अमलतास, सिरफल, बर, सिरिस !!
आम, वहेरा, हर्रें, चीर ! चन्दन, नरिअर, भरल सुनीर !!
बाँस, ताड़ बट, पनस, खजूर ! पाकड़ि, गूलरि, छोट-धतूर !!
देखलऽ कतहीं कबहीं सीता ? बँधलि असुर-रथ जाति मीता ?
बिरही ताड़, हे खाढ़ एकान्त ! रोअत, बिलपत, झँखत नितान्त !!
जीवन भर दुख सहलऽ ताप ! बिरह-पीर हिय जनलऽ आप !!
जाड़ा, गरमी, हरदम खाढ़ ! जोहलऽ बरसत, थकल असाढ़ !!
देखलऽ कबहीं मग यह जात ? सिय सुकुमारि क रोअति चिलात ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हे पपिहरा, लवा, चकोर ! तितिर, कबूतर, पँडुका, मोर !!
सिकरा, जोरा, बाज, बटेर ! हारिल, कोकिल, कीर, कनेर !!
लाल, चपुरनी, अगिन, दामा ! भेंगराज, हरेवा, स्यामा !!
सहरस, टील त हे जल सिलही ! चहा, चील्ह, टीक, पनडूबी !!
निसि नित बसलऽ बन क ठवर तूँ ! जल, थल, नभमें सगर घूमत तूँ !
देखलऽ बिलपति जाति मो सीता ? बाँध बँधाइलि, कलपति मीता ?
हे कपि, भालु त बघवा, बाघिन ! सेर, सेरनी, हरिना, हरिन !!
चीतल, कोटर, गोय अमोल ! साम्हर, रोज, गाइ कर गोल !!
सिअरा चतुर, हुँडार, लंगूर ! चीता, लोखरि, मृग-कस्तूर !!
कछुआ, ग्राह, सूँस, जल गाह ! सब नभ थल पसु, खग बन माह !!
यह मग जात देखलऽ सीता ? सहमलि, सुसु कति, झँखति मीता ?
आतुर बिलखति, कहति सनेस ? कानति, बिवसि कुँवरि मिथिलेस ?
हे हो हंस-मिथुन 'जुगल' तू ! करि कलोल बिहरे लऽ नभ तू !!
हे चकवा तव दिन क दोस्ती ! गूथल माल-बक, नभ क मोती !!
हे तू गीध, गगन क प्रानी ! देखलऽ कहूँ अवध क रानी ?
रानी, जे दुख-धुआँ सनाइलि ? जोति-रेख, मुँह क पिअराइलि ?
ढारलि मूरति, तन क पातरि ? धँसल गाल प, मोती ढारति ?
बिखरि केस, मलिन मुख, बिलपति ? बिरह-रूप अस झंखति रोवति, ?
मिलन घरी क आस लगवले ? छछनत प्रान, साँस जोगवले ?
आहति नागिन अस जे तड़पति ? राम लखन के नाम पुकारति ?
लखलऽ, जल थल गगन में कतहीं ? सतवन्ती सुकुमारि बिदेही ?
अस मूरति सतवन्ती क जो । देखिहऽ नभ-चर, तू कहीं जो !
जनिहऽ तेहि क सीता बन्दी । दीहऽ खबरि मीत मोहि जल्दी !!
इनहूँ से जब उतर न पवलीं । विकल राम पुकारि क कहलीं ।।
हे हो सीता, प्यारी, अब त ! नामे तोर सहारा भरत !!
जिये मुये क मन्त्र इ जनिह्रे ! उलटि सोध जपिक दिन कटि हें !!
जप क बल जो जीअत बचलीं ! त तोहि प्रिया सीय कहि पवलीं !!
नाँ त राम जपि उलटा जाप ! मरि जाई ई अपने आप !!
हा सिया, तूँ कहवाँ छिपलू ? छाड़ि अकेल कहवाँ भगलू ?
बोल, इची, तूँ इहवाँ आवऽ ! निकसि खोह कँदरा से धावऽ !!
आ समुझाव राम क बिरही ! रोअत झँखत खोजत तोही !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रिय सनमुख आ पोंछि दऽ लोर ! ढाढ़स दे हिय करि दऽ अँजोर !!
अस कहि के हो राम निरास । सिय-छबि लखलीं खाढ़ि अकास ।।
जे छबि रूप-तेजके सान्ति ! कुन्दन कइल हीर के कान्ति !!
भाव-कुंज बिच कलपित सीय ! निखरति, चमकति, उमगति प्रीय !!
करमो करम छबि बढ़लि जवन ! तन सजीव धइलसि सिय तवन !!
त परम सुन्दर सहज सुन्दर ! हिय के भाव अन्तर से जगि कर !!
प्रगटि छबि-गृह पुंज-तेज रति ! रूप मनोहर अतुल सिय बनि !!
लखलि सजीव राम क समना ! दृगन विभोर लखलें सपना !!
उठल पीर, विगत बुधि भइलीं ! करे बतकही ओह से लगलीं !!
त छितराइ गाल पर परलें । जे मोती नछावर कइलें ।।
मुँह के मुँह-देखी में नयन ! कोस खोलि हिय करुना अयन !!
तव छबि एक से एक तबके ! एक से एक कहनी रस के !!
दिखवे कहे लागल अपने । जनु केहू मने मन समने ।।
त अतमा छाती में बइठलि । सूने देइ क कान लागलि ।।
बिरह-कथा रस भरल हिय के । वन में सँगे बिहरल सिय के ।।
बिलखाइ उठलीं राम तब तऽ । दुखी सधारन मानुस अस तऽ ।।
फूटि फूटि के रोइ पढ़लीं । बचन विभोरि आरत भखलीं ।।
लगलीं करे बोधि बतकही । कलपित मूरति सिय गुनि सही ।।
जे आँखि सोभा खाडि रही । बिरह के बनल मूरति रही !!
अहो प्रान, राम-प्रिय सीता ! जिनगी भर त बनलू मीता !!
जीवन-जोति रहलू राम क ! राम के मन क धन हरदम क !!
बात क तोरि मिठास छन छन ! पडत याद चित होत खनमन !!
रंच देखि क मो मन अनमन ! रहलू होत कतुना खिनमन !!
यादि मसोसति आ सहुँ राम ! लखि के मवन अस तोहि क बाम !!
अइसन दया क मूरति सीय ! बोलति नहखू काहे प्रीय !!
कि लखि चुप हो ताकऽ समने ? बनि निरमोहि न बोल ऽ अपने ?
कइल जोग मृतक मृग जानो ! टोना कइलसि आइ मानो !!
भूलल जस अपना क बाडू ? तसत राम भरमवले बाडू ?
आ कि हरि हमार बुधि जइसे ? मो मारींच ले भागल तइसे ?
तन धइ क छदमी असुरा ? हरे बरे प्रान ई हमरा ?
जादू बनि के आइल हटे ? भरमवले ई राम के बाटे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रेम बाकी टपकत बाटे ? लोर अँखिओ ढारति बाटे !!
छोह मोह मन भरल लउके ! हिय कर भाव आँखि से झलके !!
यह से जनात जादू ई नाहीं ! सिय सचमुच सहुँ खाढ़ि आहीं !!
त हो कवने कारन सीता । बोल नाहीं राम से मीता ?
हाय, आगि ई अब बिरहा के ! ना सहाति हमसे हियरा के !!
हा ! ऊ !! बन परबत उजिआर[1] ! धधकि जे जारत खर पतवार[2] !!
बरलि भर गरमी जे सब ओर—! इहे असढ़िया[3] बरखा जोर !!—
छन में कइलसि तेह क सान्ति ! आ जगत के मेटलसि क्लान्ति !!
बाकी हा, हिय-बन के आगि ! बिरह लुतुकिये[4] छन-छन जागि[5] ?
निसि दिन जरलसि तन क अबले ? मन के छन प्रति छन तपवले ?
ता में नभ बरसि घिउ डललसि ! लपकि ज्वाल क जीभि निकललसि ॥
जेहि से जरे राम अब चाहत ! निज सीता क समने ताकत !!
त-जो चाहऽ राम के सीता ? जरला से बँचावल मीता ?
बरसि क तब बरखा बानी के । बुता दऽ आगि वे पानी के ॥
ना त इहो ते निहचे जनिहे । भसम राम होई तब सँचुहे !!
पछतावा भर त पाछे रे । हाथ लागी नू सिय तोहरे ?
का अरथे तब रही मान के ? सोच प्रिय तुही मन आन के ?
प्रान-हीन जब राम होखी । सीतो जान बिहीन होखी ?
नसित निसानी राम होखी । जग बिहीन हमन जस होखी ॥
सीता, सीता, सीता हाय ! काहे गइलू असत भुलाय ?
ताकत सोझवे खाढ़ बाडू ! तबो सधले मौन बाडूऽ ?
अस कहि राम रो तब पड़लीं । उनमादी अस प्रिय पुकरलीं ॥
एने देखीं, ओने दउड़ीं । आँखि फारि क सगरो देखीं ॥
सिय कर रूप भाव-जगत के । कलपित-आँखी सगरो लउके ॥
मुख से आरत बात निकसे । सिय पुकारि राम रो बिहँसे ॥
हाथ हवा में घूमि घूमि के । चाहे धइल तन सिय छबि के ॥
बाकी विफल प्रयास लोइ के । हथवन हवामें घूमि घामि के ॥

---

१—उजिआर = उज्वल, प्रज्वलित, २ खर पतवार = बन के तृन पत्तों की ढ़ेर ३—असढ़िया = आषाढ़ वाली, ४—लुतुकिये = चिनगारी द्वारा। ५—छन छन जागि = क्षण प्रति क्षण प्रज्वलि त होकर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



इहवाँ उहवाँ जहाँ तहाँ ले। छाती से आ अपने मिलले॥
ओठ भी कुछ हिलि डोलि के। चूमे हवा में चुपुके ओके॥
जे बइठल अलोता सब के। आँखी सोझा छन छन लउके॥
पुनि, हँसि दउड़ि क 'धइलीं' कहीं। बिफल मनोरथ हो बिथकहीं॥
तब तन धारी राम ब्रह्म के। अस प्रमाद में बिकल देखि के॥
जागि भाव संचारी पड़लें। गत बुधि झट, उनुकाँ कइलें॥
त बके लगलीं, झँखे लगलीं। हँसि के फेनु रोवे लगलीं॥
ताकीं, मौनीं, पुनि बिलापीं। आँखि फारि क सगरो नापीं॥
रीझि क थकलीं, खीझि थकलीं। उपालम्भ बकि झकि क थकलीं॥
कहि बियोग, संयोग बताय। इत उत ताकि क, अति पागलाय॥
सीय पुकारि कहि, "आहि, आहि। भुइँआ गिरली राम कराहि॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना–विहिआ, जिला–साहावाद, सूवा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के एगारहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि कुआर वदी १२, सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार २५ सितम्बर १९६२इसवी, दिन मंगलवार।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# क्रिस्किन्धाकान्ड

## बारहवां सरग

प्रारम्भ तिथि—आसिन बदी १३, सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार २६ सितम्बर १९६२ इसवी, बुधवार।

सीता जी के बिछोह में बिलाप करके अवतारी राम के मूर्छित भइला पर जल, थल, नभ सगरो प्रलय के दृस्य खड़ा हो गइला पर देवतन के उहाँ पहुँचल आ बन देवी के बन्दना कइके सीता के रूप धराइ के उन्हका जरिये राम जी के होस करवावल। होस भइला पर राम जी के बनदेवी से वार्ता आ स्रस्टि के उत्पत्ति के क्रम बतलावल आ आपन अवतार-लीला के तथा नर रूप में नर अस रुदन कइला के कारन बतावल। फेन माया तथा ब्रह्म रचित सब सक्तिअन के प्रसंसा कइल कि सब अपना अपना कर्तव्य पालन में सचेस्ट बाड़ीसऽ। सारी रात के यही क्रम से असहीं बीत गइल। प्रभात के भइल, ओकर बरनन आ लखन सुग्रीब के आगमन। सुग्रीव के छमा मागल। राम सुग्रीव वार्ता।

### १५ मात्रिक चौपाई

त दिग्गज दस चिग्घारि पड़लें। दिसा दसो तब डोलि उठलें।
पृथिवी फाटि परवत कँपलें। सेस सीस फुंकारि हिलवलें॥
सागर-छोर खउले लगलें। नभ अनचास बयारि बहलें॥
आसन बिसनू डोलि उठलें। डरि लछिमी के तन सिहरलें॥
त काँपे नाल-नाभि लगलें। चँउकि क ब्रह्मा, सिव घबड़इलें॥
गरुड़ प चढ़ि के विसनू धवलें। बसहा प बइठि क सिव सिधरलें॥
ध्यान धइ के बरह्मा चलले। उड़न-खटोला देव उड़लें॥
धाइ क जुटलें जूथ सुरनके। वन ऊपर परबरखन गिर के॥
जहाँ ढरे बन काँपत रहे। झर झर पत्तई गिरवत रहे॥
तरु तृन डरपत थल थल रहे। लता लरकि भुइँ पौढ़ति रहे॥
डालि डालि प पंछी सबनी। भागत उड़ि क चीखत, रहनी॥
बइठलि कहरति बाँधिन रहे। गुर्रात मानि से सिंह रहे॥
बन में चिकरत हाथी रहे। सर किंकिआति, हथिनी रहे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कुक्कुर सगरो रोअत रहें । फेंकरति बन सिआरिन रहे ॥
भागत मृगा कुटी दिसि रहें । लमहा, लोखरि, छपकलि रहें ॥
चकवा चकई बिलखति रहें । बोलत मोर रेवाइ क रहें ॥
दउड़ि क सहरस चींखत रहें । निज निज पतिनी खोदत रहें ॥
डालि प कोकिल काँपत रहें । कोइलि, पपिहा, छिपकल रहें ॥
कछुप, गराह, मछरी ऊपरे । आँवट जल में बयखरि पँवरे ।
त जल, थल, बन, नभ, सगर इहे । भागु पराहु क भगदड़ रहे ॥
त हो उठलें देव बेहाल । देखि क परलय क ई हाल ॥
गुनलें कस क होस कराईं । कसत राम सचेत बनाईं ॥
मिलि के सबन सलाह कइलें । बन देवी क बोधि बुलवलें ॥
कहलें कि देवि रवें मदति से । सबकर संकट हटी जगत से ॥
दानव, देव, जगत, राम के । सीता, लखन, भरत भूप के ॥
त-धइली देवी सिय स्वांग क । छमवि कहि बनली सिय रूप क ॥
पुनि प्रनमि ब्रह्म-राम मन से । छमवि कहि छुअली पाँव भय से ॥
त फेरि करवट प्रभु अगड़ाइ क । कमल नयन पलकन उठाइ क ॥
इत उत सगरो देखि ताकि के । सहुएँ निरखि क बन देवीके ॥
झट उठि बैठि क माथ नवलीं । हाथ जोरि नमि लखि विनवलीं ॥
आभारी, तनधारी राम । कृपा क रउरे बा बन ठाम ॥
ओइसे इ कृतग्य बा मुदि के । करतब करत माया क लखिके ॥
जे हइ अनुसासति नियम जगत के । सत से निबहति सहज करम के ॥
करतब करे में राजा, रंक । भेद न रख नर, राम निसंक ॥
नारि, सधारन, सिय, जड़, चेतन । सब समान जे कइलसि सासन ॥
कारन जो तन ब्रह्म धइलसि । निज रचित माया अनुसरलसि ॥
राखी मुक्त तब ऊ कइसे ? अपना के जग बँधन नियम से ?
राखे के जो करी प्रयासि । ब्रह्म-सक्ति निज बल प्रकासि ॥
त-करे क लीला यह सृस्टी में । अरथे का होखी जगती में ?
जो धारन तन ब्रह्म कइलसि । बने सिकार से कस बँचलसि ?
उहापोह ग्रसि क माया के । तत्व प्रभाव बस तृगुनन के ॥
मानुस सरीर क किरिया के । रचल आप जग र लिया के ॥
बँधल सीमा, बेवहारन के । जगती पर के खेलवाड़न के ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सान्त ब्रह्म जब चिद[1] लहरवलसि[2]। बहू स्याम् क भाव जगवलसि ॥
अपने आप तवे चलि पडल । सृस्टी कर क्रम माया रचल ॥
नियमन के जे क्रम तब बँधले । करि अधार विज्ञान के चलल ॥
होइ क पेरित जे माया बल से । ब्रह्मान्ड[3] बने कर कारन से ॥
रचना, निरमान क सिरजन के । करम, धरम, जग पातक, पुनि के ॥
ब्रह्म भी देबी ओही क्रम के । निमित रूप धइ साखी बनि के[4] ॥
जीव रूप धइ भइल आबद्ध । क्रम से निज एह रचल समृद्ध ॥
सुभाव से जबना क सम्मान । तनधारी अवतारी राम ॥
लीला, करत, हऽ देबि, जगत के । लउकत बाय दिखात सबन के ॥
जइसे बनल जग लीला बा । जग के मरजादा जीअति बा ॥
सतक हित में करत हऽ न्याय ऊ । असत क करत जगत नास ऊ ॥

---

१—चिद=चैतन्य । २—लहराया, हिलोर उठाया । ३—ब्रह्मान्डों के बनने का, नथा सृजन के, कारण ये हो उपर्युक्त वातें हुईं । ४—तटस्त भाव से, विकार भाव से रहित, शाची स्वरूप बनकर । अर्थात—शान्त स्वरूप ब्रह्म के चिद शक्ति में जब उमंग की लहर उठी तब "एकोंह भ वहुस्याम" वेद वाक जाग्रत हुए । तब स्वतः माया की सृस्टी हुई और उसकी प्रेरणा से सृस्टी का क्रम चल खड़ा हुआ । इस क्रम में नियमों का सिलसिला बँध उठा सो बह्म की प्रेरणा से तथा माया के माध्यम से विज्ञान का आधार लेकर चल पड़ा । यह क्रम का प्रवाह जो चला वही ब्रह्मान्ड या सृष्टी सृजन का कारण बना । यानो इसी तरह ब्रह्म प्रेरित माया द्वारा जो यह क्रम प्रचालित हुआ उसी से सृष्टी की रचना हुई और उसी के अनुकूल तथा विरोध को भावना को लेकर धर्म तथा पाप, पुन्य की मान्यता स्थापित हुई । परन्तु चूँ कि बह्म के परे कुछ नहीं है इससे ब्रह्म भी निमित्त रूप से शाची स्वरूप निर्विकार तथा निर्लिप्त अवस्था में इस लीला क्रम के संचालन में स्वरचित समृद्धि (बल शाली) नियमों में जीवरूप धारन करके आबद्ध हो गया अर्थात् विद्या अविद्या की अवस्था विशेष मे बँधकर भी स्वतः सदा मुक्त रहा । अविद्या के प्राबल्य में वधा सा और विद्या के प्रावल्य में मुक्त भासित हुआ । किन्तु वास्तव में वह स्वयं बन्धन मुक्त केवल शाची स्वरूप निमित्त मात्र ही है कि उसका लीला क्रम चलता रहे जिससे धर्म कर्म समाज मर्यादा का अस्तित्व बना रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जो यह में व्यभिचार उठे ला। तब मरयाद ऊ रच्छ करे ला॥
तबे तेज ब्रह्म अवतर ले। रच्छिकर नियम धरम दिखव ले॥
जगती पर के पाप हरे ला। राह मनुस क सद दरसे ला॥
त-बन देबी, हें महरानी। धन्य, हऊ, तूँ जग ब्रह्मानी॥
कि बनकर विजन राज में जन के। मुरूछा नसलू राम क तन के॥
राम ब्रह्म प्रसन्न देवि बा! जे सृष्टी क्रम चलि रहल बा॥
अपने आप से करम चलत बा। करतब निस्ट नियम चालू बा॥
माया रचल प्रकृति कर सक्ति। नित सचेत सासति हर व्यक्ति॥
राम के बानो दिव्य सूनि के। धन्य हऽ बोलल नभ, थल मुदि के॥
तब बिमान से लागल बरसे। पुस्प-बृस्टि चहुँ बन, थल, नभ से॥
तब प्रनाम प्रभु देबी कइली। पग धइ क निज सीस नवावली॥
सान्त रूप तब राम हँसलीं। देइ असीस, बन देवि तोखलीं॥
नभ भर दुन्दुभि बाजि उठलीं। बन क चिरई चहके लगलीं॥
घासि पात विटप तृन पवधा। मुदि क हँसले हरिअर नवधा॥
हरना, बानर, पसु, खग, मोर। हरखि दउड़लनि आस्रम ओर॥
लतरि पतई जहँ सँग फूलन। नाचत थिरकत झूमि रहलन॥
तब प्रभात पह सुनर फाटल। तरगन हटलन ससि उदासल॥
तब तपि लाल सोन क थरिया। तेज पुंज जनु धइक देहिया॥
छितिज कोर पर पुरुब निकसल। छबि प्रकास कमनीय झलकल॥
ढेरि ढेरि किरिन रंग बिबिध में। फूटि पड़लि जल-थल-बन-नभ में॥
झुलफुलाह मुँह सब क लउकल। दिन, राति कर सासन बदलल॥
झुलफुलाह से साफ प्रकास में। बिक्रम, लखन, कपीस साथ में॥
चढ़त गिरि दिखलें बीच तृन से। पातरि घूमलि पग डंडिन से॥
उठि राम तब आगे बढ़लीं। लखन, कपिन क बन्दन ग्रहलीं॥
गिरल सुकन्ठ पाँव पर धाइ। लवलीं छाती राम उठाइ॥
बार बार हाथ तब जोरि के। बिनती बिबिध भाँति निहोरि के॥
भुलइला खाती अपना ऊ। छमा मँगलन पुनि पुनि नमि ऊ॥
तइसे राम गँभीर भाव से। दिखबत प्रेम सहज सुभाव से॥
छमा दान नृप कपि के दिहलीं। वर-अभय देकर के तोखलीं॥
तब कर जोरि बिनीत भाव से। नमि कहलें सुग्रीव राम से॥
करन खोज, सिय मन सरीर से। अब बा ततपर दास जीव से॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गिरि नीचे बा सेना प्रस्तुत। अज्ञा पाइ क पुरई अनुमत॥
होई आज्ञा जसत राम के। मिलि क हमन तस करब काम के॥
भूल चूक क मोरि जत बात। छमि के दास, भुलाई तात!
दोखी दास स्वामि ढिग तात! तवना पर हम बानर जात!!
चंचल सुभाव त बुधि क हीन। माया-मोह बसी अति दीन॥
निज उधार हित रउरे आस। हम आरत अति दुखी उदास॥
अइसन के कर हिय सरकार! तिय-दृग-बान न कइलसि पार?
काम, राज जे, बल, प्रभुत्व, मद। अनरथ मूल एक एक जत॥
ते पावल सब, कपि एक साथ। तोहरे कृपा, राम, हे नाथ!
तब कपि कस मद बस न होखो? बुद्धि-तुला चाहे जस जोखो?
अपना करम धरम नहिं आस। बल कर निज नहिं कुछहुँ बिसास॥
घर, बन, तात, नात, हित, जे बा। परिखल देखल सबे त ऊ बा।
आस एक नाथ, राउर बा। निरगुन ब्रह्म सगुन बनल बा॥
जग लीला हित देहि धारि क। मरजादा हित असुर नासि क॥
करे भक्तन क हित अवतरल। न्याय, सील, धरम, सत बरतल॥
जे आस सुग्रीव जीअत बा। आ यह क निस्तार बनल बा॥
प्रबल प्रभाव हवे माया के। कुछ्छ वस चले न बिनु दाया के॥
राम दया क मात्र सहारा। लेइ जे चलल तरल भव धारा॥
दृढ़ कः इहे दास गिरल बा। हो सरनागत पाँव पड़ल बा॥
सुर, नर, मुनि, सब, दास, बिसय के। का सुकन्ठ पातक बस, पसु के?
बँधल सरीर मोह-जाल के। हनत मदन सर ताकि ताकि के॥
चंचलता मन के तबना पर। उदवेलत तन इन्द्री ता पर॥
अभाव त्याग, तप के त अपनो। काम, बिसय में मन रित सपनो॥
निरबल जानि क अबर सबल हो। छन छन पल त घरी सोरहो॥
सब मिलि जारत नाथ, अबल के। बिना कृपा निस्तार कसत के॥
पार सुर, नर, मुनि ना पवलें? त का बस कपि जे वन बसलें?
ग्यानी, त्यागी, तपसी, बड़ा। साधक, साधु, सिद्ध, अबघडा॥
हरलें थाकि निज अभ्यास में। त्याग, साधना, तप, सन्यास में॥
राम-कृपा तब पार कइलसि। भक्ति दान देइ सान्ति दिहलसि॥
अस राउर सुभाव हऽ स्वामी। सरनागत क नासी खामी॥
सरन में गिरल सुकन्ठ राम के। दया क तारीं अब, अनाथ के॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हँसि क कहलीं राम, सुनि कपि के। ज्ञान से भरल बात जस मुनि के॥
अइलऽ सरन में मीत त कइसे। अछमनीय तू रहबऽ ओइसे ?
धइ लगाइ लिहलीं छाती से। बहि क लोर निकसल आँखी से॥
गद गद प्रेम बिभोर भइलीं। दान अभय क उनके दिहलीं॥
तब ओइसे विभोर होइ के। सखा-भाव के प्रभु प्रेम लखि के॥
अरज सुकन्ठ राम से कइलें। जोरि हाथ बिनीत हो कहलें॥
सेनापति, उमिर के बड़के। जामवन्त, भालू क बल के॥
सेन सहित जोहत निदेस क। खडा हवें नीचे परबत क॥
होय आदेस जो उचित जानि। भेजीं खबरि बुलाईं आनि॥
सखा से हँसि कहल तब राम। बुलावऽ मीत सब यहि ठाम॥
निज मन सुनि सुग्रींव मुदलें। हनुमत हुकुम बुझा पठवलें॥
त-नित्य करम करे सब चलल। आसा हृदय में राम के बँधल॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के वारहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि आसिन सुदी २७ सम्वत् २०१६, विक्रमी तदनुसार ३० सितम्बर १६६२ इसवी।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्रीं दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा-बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# किस्किन्धाकान्ड

## *तेरहवाँ सरग*

प्रारम्भ तिथि—आसिन सुदी ३ सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार १ अक्तूबर १९६२ इसवी।

सुग्रीव के सेना के साथे जामवन्त, अंगद आदि सेनापतिन के परबरखन गिरि पर हनुमान जी के परवत का नीचे से लिआ के आइल। सुग्रीव के सेना तथा सगरे से इकट्ठा भइल जोधा लोग के परबत पर जमा करके राम के सामने सभा कइल। सुग्रीव, राम, लखन, जामवन्त आदि के संभाखन। सरद रितु का पहिल हीं सीता जी के खोजे के प्रस्ताव पास। फेन दिसा विदिसा में जूथ पतिन के अगुआई में सीता के खोजे खाती जथ्था-नायक चूनल आ हर दिसा में भेजे के तय कइल। सुग्रीव के आग्रह से राम के सीता जी के हुलिआ बतावल।

## १५ मात्रिक चौपाई

करि नित करम धरम जलपान। बइठलि मंडलि बर तर आन॥
सबे करे बतकही जूटल। गहन बिचार सभा उघाटल॥
जामवन्त, नल, नील, अंगद,। नायक दलपति सबले हनुमत॥
सतबलि, बिनत, सुखेन, पतिजुथ,। बानर-राज बहुत मजबूत॥
एक एक महा रन-जोधा,। बल में वीर त रन गुन सोधा॥
तून-कुस आसन लेइ बइठलें। लखन, सुकन्ठ, प्रभु मध सोहलें।
तब उठि क कपिराज प्रनमलें। राम बोधि, सभा मध, कहलें॥
मो'भुज इहे कपि राय, राम,। बल प्रताप में इन्द्र समान॥
मारक दानव दइत समर क। एथी अथक, संचालक रन क॥
इनकें संग असेस सेना। लड़ल भिड़ल त प्रबल प्रबीना॥
जल, थल, गम में सम संघाती। किंकर सब हऽ राउर थाती॥
पालन राउरि आग्या करि हें। अभिमत बात सिद्ध कइ लनिहें॥
सिया खोज में दच्छ बुधि दूत। तस सधन अभीस्ट अवधूत॥
इन्हन हवें निपुन परवोन,। रहिहे हुकुम 'रवाँ आधीन॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस हिय निहचय रखि सरकार। आज्ञा दिहीं हमन दरबार॥
उठि सुकन्ठ हिय राम जवलीं। हरखि बचन प्रिय मुख से कढ़लीं॥
हे प्रिय कपिदल, पता लगावऽ। कुसल सीय कर पहिले लावऽ॥
जानऽ मीत ठवर ऊ जहवाँ। रखलसि सिया छिपाइ ठगवा॥
जब ई पता लेइ अइबऽ मीत। तब हम गुनबि जथा जोग नीत॥
कपिराज, करे में ई सिध काज। समरथ राम लखन ना आज॥
हे कपीस्वर, एह कर सिद्धी। करे में समरथ रउरे बुद्धी॥
जानि के एह से मोर अभीस्ट। दल आदेसीं समुझि जे सीस्ठ॥
जानी रउरा काज का बा। संसय रंच नहिं एह में बा॥
कहि अस हरखि राम वइठलें। जामवन्त उठि क तब कहलें॥
नाथ, भोर बुद्धि अब थाकलि। तदपि कहबि उचित जेहि मानबि॥
ऋतु बरखा चढ़ि सिर प वइठल। बड़ कारज जे रितु भर ठठमल[1]॥
का ई नीक न बात कहाई। दूत भेजिं यहि मध खोजाईं॥
आ-सब दिसा क चुनल नायक। चुनी एह सभा मन लायक॥
जे आधीन कइ दूत क सेन। पठईं सवतर सिय सुधि लेन॥
चढ़ि धाईं सरद गत उहवाँ। सिय क सुधि पाईं हम जहवाँ॥
सब के बात नीक ई लागल। साधु साधु सबे संभाखल॥
तब सुकन्ठ सतबलि क चुनलें। उतर दिसि क नायक बनवलें॥
पछिम दिसा सुखेन क दिहलें। पुरब बिनत जूथ-पंति पवलें॥
दखिन क अंगद, हनुमत, नील। नभ पताल सुग्रीव सुसील॥
नायक-दिसा सुकन्ठ चुनलें। पुनि हर दिसि क बिवरन दिहलें॥
सब दिसवन के देस कर नाम। कँदरा खोह, महल सब ठाम॥
देस देस कर बाधा बिघिन। नर नारी सुभावकर भिन्न॥
राजा, असुर, देव, गंधरव। किन्नर, जलचर नभचर सरब॥
कहि कहि कर के पृथक बतवलें। नायक दल क सुना सरेखलें॥
दूतन क तब जथ्था बटलें। आ अधीन नायक क कइलें॥
दसकंधर क रूप बखनलें। गुन, सुभाव, घर, ठाम कथलें॥
ओकर लङ्का, ओकर बुद्धि। असुर भाव, रजगुनी प्रसिद्धि॥
महाबली, चतुर तिय स्नेही। नास क भाव सुर नर द्रोही॥

१—ठठमल = रुक गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सये बताइ दूत सरेखले। दूत नीति क मरम बखनलें॥
कहि बल छल प्रपंच रावन क। कइलें सजग दूत बानर क॥
फिर सब बोधि सुने के कहलें। सिय-परिचय जेहि राम दिहलें॥
राम से कहलें नइ पुनि माथ। सिय करि परिचय दिहीं हे नाथ!
जेह क जानि क दूत पहिचान। सकसु, सीता के खोजि जहान॥
तब उठि राम कलपि क कहलीं। अलपे में सिय परिचय दिहलीं॥
हे कपि मीत, सीय सुकुमारि। सुन्नरि कोमलि जनक दुलारि॥
उमिर क सोरह, छविक आकर। रंग गोर त लचकति कामर॥
लखन से कद बा जरिके छोट। केस बा लमहर तन ना मोट॥
मुँह बा मीत, साँच क ढारल। छवि-रति दुखित मदन सुनि जारल॥
कमल नयन कान दू छूअत। भौं चाँप, दृग खंजन नाचत॥
माथ बा ऊँच, कंठ हऽ संख। नाक त कीर, अधर फल बिम्ब॥
दाडिम दाँत, बिजुरि मुसुकात। जे नाहिं सपनो लखबऽ तात॥
केल-खंभ जाँघ, त पद कमल। कनइल पोर, टेम्हि नख धवल॥
दुख से कातरि, मुँह पिअराइल। असअन गाल, धसल भिजाइल॥
बिरह क रूप बनलि सिय मोरि। झंखति, रोअति, उदसलि गोरि॥
साँस जोगले, प्रान बचवले। मिलन घरी क आस लगवले॥
जोहति बाट राम क होखी। राम नाम रट जपत होखी॥
निसिचर ससना सहति होखी। जीअति अस सतवंती होखी॥
बिरह क मूरति अस जो देखिहऽ। तेहि क राम क सीता जानिहऽ॥
परिचय देइ राम रो पड़लीं। सिया क खोज भीखि में मँगली॥
लघु, बड़ सबे दूत क बोधलीं। आपन मीत पुनीत भखलीं॥
पुनि रो कहलीं हाथ पसार। रखिहऽ हे प्रिय, मो संसार॥
जीअल मुअल मोर कपि हाथ। जनिहऽ दूत ई, साँच तू बात॥
हाथ पसारि मूक हो तकलीं। ढर ढर आँसु ढारि बइठलीं॥
सकल समाज बिकल रो पड़लें। समय जानि लखन उठि बोललें॥
सखा सुकन्ठ, जूथपति, तात। दूत समाज, सकल कपि भ्रात॥
तपसी भेख त अवध नरेस। कृपा-सिन्धु, बलधाम, रमेस॥
कुदिन जानि सरन तब अइलीं। बिधि गत बाम दसा ई भइली॥
निज क सखा सुकन्ठ बनवलीं। बल प्रताप निज बालि मरलीं॥
अस क बाँधलि मीत मिताई। उत्तर दखिन देस इँकाई॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कर कारन आपुस उपकार । राम सुकन्ठ क बल व्यवहार ।।
अब निबाह तेहि मितई यार । सिय-सोध आ बनल आधार ।।
राम पूर निज परन कइलीं । अब बारी सुकन्ठ क अइली ।।
जे रिन भार भरे कर बड़हन । माथे निज कपि जाति लिहलन ।।
त बिनती मोरि सुनींऽ सयान । बानर भालु जाति महान ।।
रवाँ मातु सीय खोज करबि । तन मन बचन सक्ति लगाइबि ।।
जेह से रहे एकता भाई । सखा भाव त मीत-मिताई ।।
चूक वनी नात अनरथ जरि । सब होइ जाई मिटिके धूरि ।।
जग अवतरि ब्रह्म तन धरलसि । नर लीला जे खेल दिखवलसि ।।
तेहि राम आगे रिपु घालले । का सिय-खोज, राछस मारल ?
छन में राम त सिया क आनबि । जो चाहब सुधि उनकर जानबि ।।
पर नर-तन ई मोह लीला । दिखवल चहीं दीन दयाला ।।
यह से ई सब खेल तमासा । राम ब्रह्म बिनोद मसाला ।।
मीत, हमार निहोर तू मनिहऽ । सिया के खोज में जान लगइहऽ ।।
जे कल्यान सकल जग होखे । असुर नास, सुराज विसेखे ।।
अस कहि क जब लखन चुपइलें । उठि प्रन सकल समाज कइलें ।।
राम-सुकन्ठ मित्रता आज । उत्तर दक्खिन बँधलसि लाज ।।
आर्य अनार्य करवलसि मेल । जेहि निबहल दुइ करतब भेल ।।
ते क आधार सिय-खोज बनल । जेहि मुदि दक्खिन माथे लीहल ।।
तेहि पुरवे क हम प्रन कइलों । तन मन धन होमल सकरलों ।।
अवसि अवसि सिय लानबि खोज । पुरइबि देस-जाति-प्रन ओज ।।
नभ वानी भनलि 'जय जय जय' । पृथिवी बोललि 'धनि धनि धन्य' ।।
गिरि चट्टान इहे गुंजरलें । बृच्छ डोलि इहे अनुमोदलें ।।
ससरल पवन हरखि हरखवलसि । सब क तन मन पुलकित कइलसि ।।
तब सुकन्ठ एक एक जथ्था । सुने बरे विसेखि क कथ्था ।।
अलग-अलग मिलन क कहलें । निज्ञ रुचि क दल लेन अदेसलें ।।
दक्खिन, पुरुब, पच्छिम, उत्तर । नायक दल के अलग बोलिकर ।।
समय मिलन क सब के बँटले । सजि के दल क आवन कहले ।।
सभा बीच आज्ञा अस देइ क । राम चरन पुनि हरखि प्रनमि क ।।
सभा विघटन क आज्ञा मँगले । जेहि क राम हरखि आदेसले ।।
तब सुग्रीव सभा विघटलें । दल प्रवेसि बन फल मूल भखलें ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के तेरहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-आसिन पूर्निमा सम्वत् २०१६, विक्रमी, तदनुसार १३ अक्तूबर सन् १६६२ इसवी, दिन सनिवार।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### चौदहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—कार्तिक बदी १ सम्वत २०१६ विक्रमी, तदनुसार १४ अक्तूबर १६६२ ईसवी रविवार।

सुग्रीव के राम जी से अनुमति ले के सीता जी के खोजे बदे जूथपति महाबीर बानर बिनत के पूरब दिसा में एक लाख सेना का साथे जाये के आदेस दे ल आ पूरब दिसा के मुख-मुख हाल बिनय बिसेख के बतावल।

### १५ मात्रिक चौपाई

बिनत बुला॰ सुकन्ठ आदरलें। पूरब दिसा में जान क कहलें॥
कहलें, लाख एक ले बानर। बिनत तूँ गुन में हव, जे आगर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गमन करिहऽ, सजि पूरुब देस। खोजिहऽ सगरो सधिहऽ उदेस ॥
*'भगिरथ', 'गंग', 'सरजु' कालिन्दी। 'कौसिक' 'जमुना' 'सुरसति' नदी ॥
'सोन', 'सिंधु' त 'जामन' गिरि पर। जल, थल, परबत, बन, नद, नगर ॥
बन उपबन सोहत जे फूलि फल। परम रम्य सुखद भुइँ समतल ॥
कृसक करत भुइँ पर तहँ खेती। खानत खूनत महि बिनु रेती ॥
ढुँढ़िहऽ घुमि फिर सिया क ध्यान से। पग पग प जँचिहऽदूत भाव से ॥
'ब्रह्म' 'बिदेह' 'मालव' 'कासी'। 'कोसल' 'पुंड्र' 'अंग' निवासी ॥
इन्हन देस बिदेहि खोजि हऽ। गँवई गाँव ताकि तक डलिहऽ ॥
सभ्य संस्कृत ठवर ई सुन्दर। आर्य सभ्यता क हव केन्दर ॥
रेसम थल जहँ चाँदी खान। घुमि फिरि खोजिहऽ तहों समान ॥
समुद पेट बिच परबत जँचिहऽ। "मँदराचल" चोटी प खोजिहऽ ॥
एक-पग-जीव जँह दुत गामी। नर-नर-भछी राछस प्रानी ॥
काँच मछ भख, नर पीत गात। जल-चर, नर-सिंह, रूप "किरात" ॥
नाक, ओठ, रंग सब अद्भुत। जस जल, ठाँव तस जन बदलत ॥
इनको देस, गिरि चलि, के जँचिह। पद से, यान से, नाव लेइ गमिह ॥
इन्हन लाँधि पहुँचबऽ उहवाँ। सात राज क टापू जहँवाँ ॥
"जव" "सुवर्ण" "रूपक" इन नाम। सोना चाँदी कर बहु खान ॥
सगर बिदेहि मीत तहँ खोजिहऽ। हुलिया उनकर सुरति प रखिहऽ ॥
लँघते 'जव' क 'सिसिर' गिरि पइबऽ। दानव देव दुनो तहँ लखबऽ ॥
उठल सिखर जनु गगन छूअत। सरग लोक क परसत चूमत ॥
अगर बगर सगर तहँ घूमिहऽ। रचि रचि भूमि खोजि सिय तकिहऽ ॥
तेह क लँघते समुन्दर पइबऽ। 'सिध' 'चारन' तहँ निबसत लखबऽ ॥
समुद पार नद* "सोन" पहुँचबऽ। तट अति सुन्दर लखत हरखबऽ ॥
बहत लाल जल तहँ द्रुत चाल। ढूँढ़िहऽ मीत, जमि क देखि भाल ॥

---

* यहाँ चारों दिशाओं के वर्णन में स्थलों तथा विवरणों का आधार एक मात्र बाल्मीकि रामायण कोही माना गया है। नाम सब भी वैसे रखे गये हैं। हाँ, उन नामों केरूप को भोजपुरी उच्चारण के अनुकूल गढ़ने का प्रयत्न कहीं-कहीं अवश्य किया गया है, परन्तु उनका स्पष्टीकरण पाद टिप्पणी मेंकर दिया गया है।

* यह दूसरी सोन नदी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



खोजिहऽ तहँ रमनीय तीर्थ में। बन विचित्र कर सबतर थल में॥
जहाँ तहाँ बिदेह कुमारी। कलपति, रोअति, अति सुकुमारी॥
इनक सफर जब कइ तूँ थकबऽ। आ सीता क पता ना पइबऽ॥
मिलिहें बढ़ते दीप समुद के। 'इछु रस' घिरल भयंकर जल के॥
उठत तरँग उदवेलत जल के। गरजत फफनत उठिकर गिर के॥
बड़ गिरि, तहँ जल-पेट बसलें। जल टकराइ घोर गरजलें॥
असुर बिसाल गिरि सम उहवाँ। बसलें भुखल भयंकर तहवाँ॥
छाया पकड़ि क भखसु प्रानी। चलिहऽ तहँ तू बड़ सबधानी॥
बड़ प्रयत्न से लँघते इनके। "लोहित" पहुँचबऽ सागर तट के॥
ध्वनि क भयंकर जे चितकारे। रकत लहरि घहरि सिसकारे॥
तहँ तरु "कूट सालमलि" लखबऽ। "वैनतेय" गृह क तहँ देखबऽ॥
रतन सोन जड़ल जे चमकत। सम कैलास बिसाल लउकत॥
तहँ "मन्देह" राछस बसलें। जे गिरि-सिखर प समुद लटकलें॥
बदलत रूप भयंकर लखिहें। नित उठि प्रात सुरज से लड़िहें॥
पर तपि ताप गिर झट पड़िहें। सुरा-समुद, में मरि, पुनि जीहें॥
फिर आ चढ़िक, सिखर लटकिहें। क्रम ई हरदम चलत रहिहें॥
आगे चलिक 'घृत-दधि' सागर। मिलिहे, लँघिहऽ तहवों खोजिकर॥
तब चलि "छीर सागर" दरसबऽ। उजवल छीर जल सम परसबऽ॥
सोभा जेकर मन लुभावति। लहर लहरि माथ उनमादति॥
मोती-फेन-माल लेइ लहर। हँसि पहिरावें गरे समुन्दर॥
ता मध "रिसभ" नाम क परबत। ऊँच, स्वेत, रजत जनु चमकत॥
दहँ पसरत तरु-फूल सुगंध। पनस, रसाल, किंसुक निगंध॥
गिरि पर सुसर, "सुदरसन" नाम। खिलल कमल सित, रजत समान॥
देवता, चारन, जच्छ, किन्नर। जल बिहार करें नित तहँ-सर॥
सागर तीर लांघत बानर। बढ़बऽ जब तू मग पर लमहर॥
पइबऽ मिठका सागर दुखवत। "औरव" रिसि क बड़वा प्रकटत॥
मुख बड़वा जरत जल प्रानी। रोअत, कहत दुखद कहानी॥
तेरह जोजन तहँ से उत्तर। कनक कान्ति इक परबत सुनर॥
"सेस नाग" तहँ बइठलि अनन्त। धारन कइले धरा दिगन्त॥
चाँद समान सुखद बा सान्त। फन हजार फुफुकार नितान्त॥
सबे देव तेहि नित बिनवलें। तन पर नील बसन लपेटलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ताड़-चिन्ह धज तहँ प लहरति। परम प्रवीन सोन से चमकति॥
तेहि नीचे अधार भुइँ बनलि। वेदी सोभति सुनरि सिरजलि॥
इहे-ताड़ धज पूरब सीम। सूचक चिन्ह बनल सालोम[1]॥
ता परे 'उदयाचल परबत। जहँ प्रात नित रवि मुदि निकसत॥
सुबरन सिखर तहँ तेहि सोभत। सौ जोजन प्रमान क फैलत॥
साखु, ताड़, कनेर तरु तहवाँ। रवि सम चमक सोन से उहवाँ॥
"सोमनस" नाम सिखर हऽ जँह प। प्रभु बामन पग धइलें तेह प॥
दुसर पाँव "मेरु" पर रखलें। आ पग तीन तिलोक नपलें॥
त रवि 'जम्बू दीप' परिक्रमि के। यहि गिरि पर रुकि, लउकत खुलि के॥
समन"सोमनस"दीप"सुदरसन"। नर जहँ लह प्रथम रवि दरसन॥
खोजिहऽ तहाँ बिदेहि कुमारी। जनक नन्दनी राम दुलारी॥
विधि सिरजलें प्रथम ई ठवर। यहि दिसि बनल पहिल भुमि दवर॥
तेह से नाम ई पवलसि पूरुब। काहे कि बनल सबसे पूरुब॥
ताके परे न रवि आबास। चाँद तसत न, कवनो प्रकास॥
सबे अगम, देव रजधानी। आदि अन्त न कतो निसानी॥
यह से आगे कपि ना बढ़िहेंऽ। खोजि क तहँ तक घरक लवटिहेंऽ॥
कातिक सरद पूनिमा पहिले। प्रान दन्ड पइबऽ न लवटले॥
सरद अन्त तक ई सब काम। पुरिहऽ मीत करि जतन तमाम॥
जनिहऽ एह क राज क आग्या। होखी बध जे करी अवग्या॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम- दलीप-पुर,परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा–बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के चौदहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि कातिक बदी ६, सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार १६ अक्तूबर, सन् १९६२ इसवी, दिन मंगलवार।

---

१—सालोम = सालिम, जो कहीं से खंडित नहीं हो, पूर्ण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिा—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## किस्किन्धाकान्ड

### पन्द्रहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि-कातिक वदी ७ सम्वत् २०१९ विक्रमी तदनुसार २० अक्तूबर १९६२ इसवी।

पूरब दिसा में विनत के साथ दूत-सेना भेजिके सुग्रीव के उत्तर दिसा में अपना मित्र सतबलि के अगुआई में दू लाख बानर सेना सीता जी के खोज करे खाती भेजल आ उत्तर दिसा के जाग्रफी बतावल।

### १५ मात्रिक चौपाई

पुरब विनत, सुकन्ठ पठाइ के। सतबलि ससतकार बुलाइ के॥
गाइ क गुन उन बात बुझवलें। उत्तर दिसि प्रस्थान अदेसलें॥
कहलें सतवलि, मीत तूँ बानर। बली चतुर-तूँ गुन क आगर॥
जम-सुत, कपि क लाख दू सेना। सहित लेइ प्रिय मन्त्रिन अपना॥
जाऽ उतसहि तूँ उत्तर देस। राखि क हिय सिय-खोज उदेस॥
हवऽ प्रयोजन समुझेवाला। भुजबल निपुन, रिपु बल घाला॥
प्रिय-हित हमन, राम जे सधलीं। दे बदला हम जीवन सफलीं॥
बिनु उपकार के मदति दीहल। कइ करतब, कत सुख नर लहल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



त उपकार क बदला फेरल। में होइ, कत्त जीवन मो सफल ॥
यदि हमरन कर करत राम के। सफल सिद्धि हो पूरन कामे के ॥
त-उतरी उपकार बोझ रिन। सिरकर लमहर, लदल जे हमन ॥
यह भावे अस बल मौत लइहऽ। कि सिय-पता तू कसहूँ लनिहऽ ॥
उत्तर "पद्मक" "लोध्र" तलसिहऽ। बन देवदार बिदेहि तकिहऽ ॥
तहाँ से बन 'सोभा स्रम' गमिहऽ। सुर गन्धर्ब बसें तँह खोजिहऽ ॥
अगवे सिखर "काल गिरि" पइवऽ। तहों सैल, बन, गुफा तलसबऽ ॥
तेहिमँह बस बहु सुबरन खान। आगु 'सुदरसन' गिरि क मिलान ॥
तहाँ "देवसख" परबत नाम। खग, तरु, कान्ति सुनर बस ठाम ॥
कानन तेहि घुसि नद, गुह खोजिहऽ। मन लाइ भाइ, सिया तलसिह ॥
बढ़ते आगु मिली मैदान। फैलल जोजन सौ सुनसान ॥
तहँ गिरि, तरू, नद, जिव क अभाव। लँघिहऽ झट कांतार फयलाव ॥
मिली लँघते परबत "कैलास"। चमकत, लखते जगी हुलास ॥
भवन-कुबेर सुन्दर लउकी। कृत विसुकरमा नभ में चमकी ॥
निकट कमल जल सरवर भरल। अप्सर, हंस, करंड क्रीड़ल ॥
तहँ कुबेर धनद, यच्छ राज। हवें रमत जे वन्द्य समाज ॥
गुह, झर सगर सिखर कैलास। घुमिफिर जँचिहऽ उज रहिम बास ॥
तहाँ से बढ़ि गिरी 'क्रौंच' पहुँचबऽ। बिअरि विसाल गुफा तहँ लखबऽ ॥
बड़ कठिन तेहि घुसल हऽ काम। सधिहऽ सजग हो घुसि हित राम ॥
तहाँ बसें रिखि, रवि सम अंग। सुरो नमें तिन तेज अनंग ॥
परबत 'कौंच' क सिखर अनेक। कँदरा, गुह, दरार बहुतेक ॥
सबन में सब ओरि घुमि क लखिहऽ। सीता मैया सगर तलसिहऽ ॥
तहाँ से आगु सिखर, तरु रहित। 'मानस' नाम, सनाटा सहित ॥
काम देव तहँ तप कइलें। 'काम-सैल' ते नाम दिअवलें ॥
प्रेत, असुर, सुर, तहँ न पहुँचसु। तबो तोर दल तहवाँ खोजसु ॥
लँघि मानस मैनाक क लखबऽ। मय, दानव स्वकृत घर देखब ॥
सिखर गुफा मैदान तलसिहऽ। बहुति तरह सिय खोज करइहऽ ॥
हय-मुख सम किन्नरि तहँ बसलीं। हय सदिस रति ऊ नित चहलीं ॥
बसेले 'आगु सिध' सेवित्र ठाम। 'बाल खिल' 'सिध' विखानख नाम ॥
नमि कऽ तूँ मिलिहऽ उनसे रोज। कुसल सीय पुछिहऽ बिधि-खोज ॥
बिखानख आस्रम ढिग सर एक। सर जल भरल कमल बहुतेक ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पिअर लाल हंस. तँह बिचरें। चमकति किरिन प लहरि लहरें॥
"सरब भौम" कुबेर-गज नाम। हथिनि लेइ क केलत यहि ठाम॥
लाँघि सरोवर आगे जइबऽ। रवि, ससि हीन सून नभ, पइबऽ॥
तबहुँ प्रकास अस तहँ लउके। जनु निज तेज-सुरज ले दमके॥
चमकत रवि सम निज क प्रभा से। चैन लहें रिखि तप के कृपा से॥
तहँ रिखि-अंग प्रभा अस बिखरित। करति अँजोर देस क सुखरित॥
लाँघि देस ऊ चले प दूर। नंद सैलोदा मिली जल पूर॥
कीचक-बाँस घन तट दूनो। सिध के पार कराव दुजूना॥
तट "सैलोद" बसे, "कुरु" देस। सन्त पुरुस तहँ रहें बिसेस॥
'उत्तर-कुरु' बहु नदी बिसाल। फूल पदुम जनु पन्ना लाल॥
फुललें कमल सरित बिच लाल। प्रात सुरुज जनु पौंड़त ताल॥
भरल पेट सरित मनि मोती। सहित रतन गिरि ठाढ़ सोती॥
तरु रह सदा लदल फल फूल। चहकत पंछी सगर प्रफूल॥
फरत तरुवर अन आभूसन। पेय, दिव्य, रस, गन्ध, भोजन॥
तरुनी, सुन्दरि, तन मस्तानि। जनमें डालि से जुवति जवानि॥
जिन सँग सिध, गनधरब, किन्नर। बिद्याधर, मदि बिहरें सबतर॥
सब सुचि करम क, सब रति परन! सब कर अरथ काम संपूरन॥
रवि सम कर्म, काम बस अंग। केलि परायन, जुवति क संग॥
हाँस, परिहाँस, रत, लय, यन्त्र। प्रानी मस्त लखब सरवत्र॥
यहि देस पइबऽ सबे प्रसन्न। घिन वृतिफँसि नहिं केउ अप्रसन्न॥
मनोरम लखब उनके स्वभाव। मिलि व्यवहरि के तजि क दुराव॥
खोजि क यहि जब आगे बढ़बऽ। समुद 'दिगवरत' उत्तर लखबऽ॥
"सोम" नाम परबत तहँ बसत। स्वर्ग-निवासी लखि क हरखत॥
इन्द्र ब्रह्म लोक भी बासी। करें जोति-दरसन हुलासी॥
लउके सुरज न "सोम" जहवाँ। गिरि प्रभ तबो प्रकास तहवाँ॥
रवि अँजोर जस लख थल ऊज़र। तसत लखात देस ऊ सुनर॥
बिस्व-आतमा बिसनू तहवें। सिव-रूप रुद्र ग्यारह उहँवें॥
मुनि, रिखि, ब्रह्मा सब तहँ बसें। तेज, सक्ति सृस्टि अनुसंसें॥
तेहि क आगु रवि देस न बास। तम नहिं प्रानी, ग्यान, प्रकास॥
'उत्तर-कुरु-मग' 'सोम' तक जइहऽ। सोम लाँघि कर रंच नहिं बढ़िह॥
केउ कर गम नहिं तहवाँ बाय। जच्छ, असुर, सुर जे कहलाँय॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



देवतो सकसु तहाँ न जाइ । लवटिहऽ देखते पीठि घुमाइ ॥
हे कपि, तेज अगिन सम तोर । प्रगति पवन सम, पौरुस जोर ॥
बल लगाइ खोजिहऽ तू सीता । जेह से जाति-जस बँचे हे मीता ॥
जे जस खोज सीय-हित करी । तस ऊ राम त मो हित रही ॥
राम क काज साधि जब अइबऽ । धन सम्पति जस चाहल पइबऽ ॥
रिपु-विहीन सह-बन्धु बिचरबऽ । पतिनी संग स्वच्छंन्द विहरबऽ ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के पान्द्रहवाँ सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि कातिक वदी १० सम्वत् २०१६ विक्रमी, तदनुसार २३ अक्तूबर १९६२इसवी, दिन मंगलवार ।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## किस्किन्धाकांन्ड

### सोरहवँा सरग

प्रारम्भ तिथि—कातिक सुदी ११, सम्वत् २०१६ विक्रमी, तदनुसार २४ अक्तूबर १९६२ इसवी, दिन बुधवार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पूरब आ उत्तर दिसा में दूत के सेना भेज के सुग्रीव के पच्छिम दिसा में तारा के पिता आ आपन ससुर सुखेन के अगुआई में सीता खोज करे वास्ते दूत दल भेजल आ पच्छिम दिसा के मुख मुख हाल बतावत।

## १५ मात्रिक चौपाई

उत्तर दिसा भेजि क बानर। तारा पितु, सुखेन क आदर॥
भनले कपि-नृप पछिम जाईं। सिय-खोज भरपूर कराईं॥
साथ "अर्चि" "मारीच" जइहें। सेन संग लाख दुइ रखिहें॥
जस आदेसबि तस ऊ करिहें। हुकुम क राउर मन से पलिहें॥
'व्लाहक' 'सोरठ' 'चँदचित' देस। अन जन-पद 'कुसि' रह जे सेस॥
सबन देखि सिय खोजल जाय। बल, पौरुस, बुधि पूर लगाय॥
गुह, गिरि, खोह, सबतर ताकब। पता चले त सिय-रिपु घालब॥
पछिम सर, नद, आस्रम, कानन। सगर तलासब परबत सघन॥
भुइँ मरु प्राय: ऊँच अति सीखर। भरल बरफ से माला गिरिकर॥
देस अजेय इत उत दुरगम। तप-भुमि सुनर छिट फुट आस्रम॥
बकुल, उदालक के बड़ फूल। बन-फल भोजन, क कन्द मूल॥
तहँ दल खोजि जो आगु बढ़िहन। त-तट पच्छिम समुद पहुँचिहन॥
तट तमाल नरिअर, समुन्दर। कुंज केवड़ा केल-सुन्दर॥
"तिम" नाम कर जल बस मछरी। भरल ग्राह, कछप भी सगरी॥
समुद तट परबत बन क देस। 'अङलेप' सुघर 'अबन्ती' विसेस॥
"पत्तन" "मुखी" "जटापुर" राज। रास्ट्र नग्र बड़ तहँ जे बिराज॥
सबन हेरि बन थल पुर लखबि। गम अगम सब जगह निरेखबि॥
'सिन्धु' समुद संगम गिरि 'सोम'। लिये सिखर सौं चमकत भोम[1]॥
बसें तहें सिंह नाम पंछी। बड़ बिसाल "तिम" मछरी भछी॥
उठा रखें खोंता में हाती। पाइ मान सर चरें जे माँती।
गिरि-सर, इत उत घूमि बिहरें। बन, लखि बाघ, घन सम चिकरें॥
तहाँ सगर ढुँढ बावल जाइ। कंदरा खोह में कपिस पठाई॥

---

१—भोम—पृथिवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह क समने समुद क बिचवे । लखबि सिखर "परियात" अगवे ॥
फैलल सौ जोजन जे प्रमान । लखि न सकें सब एक समान ॥
द्रुतगामी गनधरब बसलें । गरबित चौबिस कोटि गनलें ॥
बड़ तेजसवी अति भयंकर । चहत रूप बदलें निरन्तर ॥
तपत अगिन सम त बलसाली । सब से खुलि क लडत संघाली ॥
कपि उन निकट अधिक न जइहें । तहाँ न फल परबत से तुरिहें ॥
सगर अगोरल बन फल फूल । लखि अपराध उ करिहें तूल ॥
विजय लेल बड़ कठिन हऽ उनसे । तेज बली त भयंकर बल से ॥
'ढिग' परियात सिन्धु बन सिखर । परसिध 'व्रज' नमवा से सुन्दर ॥
कमल सरित, लत्तरि तरु भरल । हरिअर चूमत नभ में ऊठल ॥
खोजबि रउरा तहँ मन लाइ । रखलसि सिया कि कतहुँ छिपाइ ॥
समुद क चउथ भाग में लउकत । कृत बिसुकरमा चकर परवत ॥
नाम त "चक्रवान" कहलावे । तेकर कथा स्रुति अस गावे ॥
तहँ से दानव "हयग्रीव" बधिके । "पँचजन" नामके दानव हतिके ॥
लवलें बिस्नु चढ़ि क खग पंख । "चक्र-सुदरसन" "पँचजन-संख" ॥
तेहि क लाँघि जब आगे बढ़बि । गिरि बराह समुद बीच भेंटबि ॥
चौसठि जोजन तेहि बिसतार । सिखर ते कर जस सोन निखार ॥
नगर नाम "प्रजोतिस" उहवाँ । 'नरक' नाम असुर बस तहवाँ ॥
चाहीं सिय कर तहवों खोज । सिखर, गुफा, गिरि, बन में रोज ॥
"गिरि बराह" लाँघि कछु बढ़ते । बस गिरि जहँ सहस झर झरतें ॥
सुबरन मय हव तेह कर अंग । बन, थल, हरिअर, भुइँजस गंग ॥
हाथी, सिंह, बाघ बस दाप[1] । चिकरें, गरजें प्रतिधुनि आप ॥
तात, "मेघगिरि" एकर नाम । तहें इन्द्र पवलें सनमान ॥
नृप पदवी दिहलें भगवान । इन्द्र चढ़ा हय हरित महान ॥
मघवा रछित गिरि "चकर" लाँघ । बढ़बि रवाँ जब आशु निदाघ ॥
सहस-साठि, सोन-गिरि मिलिहें । रवि सम दीपति कान्ति लउकिहें ॥
सुबरन मय सुन्दर फल फूल । हेम सदस तरु लदल अतूल ॥
तिन बीच परबत "मेरु" राजा । गिरि सिरोमनि लखत बिराजा ॥
जेहि के कबो वर सुरुज दिहलें । होइ प्रसन्न मुदि क अस कहलें ॥

---

१—दाप—गर्व अभिमान ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रही तव आस्रय जे दिन रति। तेहि तन सुबरन बिनु पछपात॥
सुर गनधरब असुर जे बसिहें। सोन-कान्ति, भगति-मो पइहें॥
"बसु" "बिसुदेब" "मरुत" अन देव। करें उपसना तहँ रवि सेव॥
पूजित हो रवि तहें समालें[1]। "अस्ताचल" दृग ओट जालें॥
दस सहस्र ज़ोजन जे 'मेरु' से। अध मुहुर्तिं रवि पहुँचे झट से॥
सनिध-भवन रवि तहें सिखर प। रवि सम दिपत लखत हव तहँ प॥
कृत विसुकरमा दिव्य भवन ई। सुन्दर महल भरल अनेक ई॥
पंछी बिबिध रूप क बसलें। बृच्छ बिचित्र प्रकार सोभलें॥
मध्य "मेरु" "अस्ताचल" खाड़। सुबरन दस-सिख, रुख हव ताड़॥
तेहि तर बेदी सुनरि राजति। सब बिधि परम पुनीत भासति॥
तहवों खोजबि तात, सिया के। ठवर कुठवर ताल, सरिता के॥
रिसि साबरन 'मेरु" प बसलें। बिधि क सम तप, बल, जस, पवलें॥
तात इहें तक पच्छिम जाइबि। परे ताहि के कछु नहिं पाइवि॥
नहिं आगे रवि देस प्रकास। लवटबि तजि तहँ, आगु प्रयास॥
अवसि सरद पुनो तक लवटबि। राजाज्ञा प ध्यान दे राखबि॥
हे कपि-दूत, लाख दू सेना! करिहऽ ससुर सुखेन क कहना!!
करतब निस्ट हव तू बानर! ससुर क करिहऽ हम अस आदर!!
पता जे लाई सिय क भाई। बड़ सम्मान राज जस पाई॥
अवधि समय तक जे नहिं लवटी। प्रान दन्ड सिर निज अवघटी॥
अस सुनि आग्या, कपि दल चलल। पच्छिम दिसा, असुर सिर बथल॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार, विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के सोरहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि कातिक वदी १४ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार २७ अक्तूबर १९६२ इसवी, शनिवार

१—समालें=अस्त होते हैं, प्रवेश करते है।
२—बथल=पीड़ा देने लगा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

(स्वतंन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन)

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्रीं दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## किस्किन्धाकान्ड

### सत्रहवां सरग

प्रारम्भ तिथि—कातिक बदी १५, सम्वत २०१६ विक्रमी, तदनुसार २८ अक्तूबर १२६२ इसवी, रविवार

सीता जी के खोज करे ख़ाती सुग्रीव के अँगद का अगुआई में जाम्बवान, हनुमान, नील आदि योधन के दक्खिन दिसा में भेजल आ दक्खिन दिसा के देस-विदेस, पहाड़, नदी आदि के बरनन सुनावल । हनुमान जी के राम जी के चीन्हा सरुप आपन अँगुठी देल आ दल के खोजे खाती प्रस्थान कइल ।

#### १५ मात्रिक चौपाई

भेजि क सेन असत दिसि तीन । सिया खोज हित परम प्रवीन ।।
दखिन दिसा में भेजन खाती । चुनलें नृपति बीर विख्याती ।।
जोधा 'नील' 'सुखेन'[१]अंगद । तिसर 'सुखेन' 'उलक मुख' 'मैनद[२]'।।
'सेरारि' 'सुहोत' आ 'जमवान'[३] । त सुत-पवन 'गवाछ' महाम ।।
'गवय', 'वृसभ' अवर'गँधमादन'। दल सुकन्ठ क चुनल जवानन[४] ।।

१—यह सुखेन तारा के पिता से दूसरे सुखेन है । २—मैनद = मैन्द
४—जमवान = जम्बवान ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सबन बोधि सुकन्ठ बुलवलें। चुनि अगुआ अंगद बनवलें॥
सिय खोजन दिसि दखिन कहलें। बहुते विधि सनमानि बुझवलें॥
खोज क यह महत्व बतवले। दिसि यहि सिया होन अनुमनले॥
दखिन रहें जात जे लखले। राच्छस सियक धइले लिहले॥
से कहि कर अनुमान समरथलें। खोज बिसेख करे क कहलें॥
तव सुकन्ठ मुख सुख असथान। ग्राम, दुरगम, कइ कर के बखान॥
सब बतलवलें कपिन सनमानि। बाधा विधिन क कहि अनुमानि॥
कहलें, कपि गिरि दखिन कितेक। भाँति भाँति तरु लदल अनेक[1]॥
सहस सिखर 'विन्धाचल' नाग। सेवित नदी 'कृस्न' 'महभाग'॥
'गोदावरि' 'नर्वदा' सुनदी। रमनिक सुन्दर तट 'महनदी'[2]॥
बसल देस 'दसारन' 'मेखल'। सुखल 'अवन्ती' जलभर 'उतकल'॥
इनकर नगर 'पुरी' 'अवन्ती'। अन लघु बहु बड 'आत्रवन्ती'॥
खोजिहऽ घुमि फिरि सगरे सीता। बन, थल, नद, नगर, गिरि, मीता॥
'रिस्टिक' 'देस' 'विदर्भ' 'महिसक'। सुजल रम्म कलिङ[3] बङ[4] कौसक[5]॥
'केरल' लखि 'दन्डक बन' जइहऽ। 'आन्ध्र' 'चोल' 'पान्ड्र' 'पुन्ड्र' तकिहऽ॥
'अयोमुख' गिरिपर गमिहऽ तहँसे। भरल, धातु, बहु सिखर, अजबसे॥
गजब क पुस्पित पुस्प कानन। सुनर सबतर फूलल चन्दन॥
तिन महँ सिया क सगरो खोजिहऽ। गुफा, कन्दरा, थल, चहुँ छनिहऽ॥
तहाँ स्वच्छ सलिल कावेरी। बिहरति जस अप्सरा सुनरी॥
'मुनि' 'अगस्त' मलय गिरि आस्रम। गिरि पर लखिहऽ करिक परिस्रम॥
महातेज क जीअति मूरति। मुनि क स्रेस्ट फैलत जग कीरति॥
तरिहऽ मुनि पुछि, 'तामरपरनी'[1]। भरल ग्राह, सुनरि बिस्तरनी॥
जे, जल, दीप, मलय-बन, रँगल। साड़ी, पहिन, युवति अस सरल॥

---

१—दक्षिण दिशा के देशों के वर्णन में वाल्मीकजी ने आर्यावत के दक्षिण के देशों का ही वर्णन किया है। आर्यावर्त की सीमा पूरब में समुन्दर से पश्चिम तट के समुन्द्र तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक मानी गयी है। २—महनदी = महानदी। ३—बङ = बङ्ग। दूसरे बाल्मीक रामायण के पाठ से वङ्ग मत्सह। ४—कलिङ = कलिङ्ग ५—रिस्टिक = दृष्टिक ६—माहिसक = माहिषक ७—को सक = कौशिक। ८—तामरपरनो = ताम्रपर्णी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मिलति हऽ धाइ समुद प्रीतम से। अँइठति, इतरति,उँमगति मद से ॥
तहँ से कपि, आगे जस बढ़बऽ। द्वार-नगर तहाँ पान्ड्य पइबऽ।
सुबरनमय, मुकुता, मनि जड़ल। 'पान्ड्य' वंस राजन क बनवल ॥
चलि तहवाँ से समुदं तट जइबऽ। पार करे क बिधि वहु सोचबऽ ॥
मुनि अगस्त क बनवल परबत। नाम 'महेन्द्र' बड़ं तहँ लउकत ॥
चित्र विचित्र सिखर तरु भरल। जल में, सोरि प्ताल गिरि गमल ॥
सुर, रिसि, स्रेस्ठ, जच्छ, अपसरा। चारन, सिद्ध, बसत सबतरा ॥
सहस नेत्र, इन्द्र तहँ आवसु। हर परब, गिरि-सोभ बढ़ावसु ॥
घुमि फिरि करके खोजिहऽ, तहवों। जनक नन्दिनी के तूँ उहवों ॥
पार समुद के बड़ एक दीप। सौ जोजन फैलल तट सीप ॥
नर नहिं पहुँचसु, लखसु विसाँति। खोजिहऽ तहँ बिसेखि बहु भाँति ॥
राच्छस राज बस तहँ रावन। वड़ पंडित पढ़ि सास्त्र पुरानन ॥
तहँ राच्छसि सागर बिच दखिन। वसति नारि 'अङारिक[१]' पापिन ॥
खींचे धइ क छाया प्रानी। करे लीलि उदर झट गामी ॥
तहाँ, जहाँ सन्देह बुझाय। खोजिहऽ उहाँ पूर मन लाय ॥
संसय सब विधि जब मिटि जाय। त-करिह गमन आगु बल लाय ॥
लंका लाँघि आगु जव जइब। गिरि 'पुसपितक'[२] समुद बिच पइब ॥
सौ जोजन समुन्द्र विस्तार। लहरि भयंकरि, अति जल खार ॥
गिरि सोभत फल फूल सुबास। चारन, सिध अस्थान निबास ॥
रवि-ससि सम दुतिमान लखात। जरि पताल तक घुसल बुझात ॥
सिखर घुसल नभ में जनो तीर। भा खींचलि होय नभ में लकीर ॥
सुबरन रजत मय दुइ सीखर। सेवत निसि दिन चाँद दिनकर ॥
नास्तिक पुरुस कृतघ्न नृसंस। लखि नहिं पाव रंच तिन अंस ॥
नाइ सीस नमिहऽ ऊ परबत। ढुँढ़िह, विदेहि बल ला जत तत ॥
लँघते ओह परवत के आग। 'सूर्यवान' गिरि लउकन लाग ॥
"पुसपितक" से चौदह जोजन। चहुँपतं चलत में हव बड़ बिघिन ॥
तेही लँघतेहि गिरि 'वैद्युत'' पइबऽ। लत्तरि तरु, बन सुन्नर देखबऽ ॥
चाहल फर तहँ तरु प लदरें। सम सोभा सभ रितु में बिखरें ॥

१—अङारिक = अङ्गारका नाम की राचसी। २—पुसपितक = पुष्पितक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तहाँ खाइ फल मूल गिरि पर । सेवन जोग मधु पी मन भर ॥
बढ़तेऽ आगे 'कुंजर' पइबऽ । गिरि कंचन सम चमकत लखबऽ ॥
तहें बाय मुनि भवन अगस्त । जे बिसुकरमा रचल समस्त ॥
दस जोजन ऊँच ऊ लउकत । जोजन भर बिस्तार फैलत ॥
रतन लडल कंचन बिभूसित । जल थल परबत सरप बासित ॥
नगरी तहँ इक अति सुख धाम । सरप भरल 'भोगवती'[२] नाम ॥
सड़क विसाल नगर सुरच्छित । थल थल मनिधर बिअरि बासित ॥
नाम भयंकर 'वासुकि राज' । करें राज तहँ नाग समाज ॥
सजग नगर प्रवेस ऊ करिहऽ । सीघ्र खोज बहु भांति करइहऽ ॥
आगे 'रिसभ' नाम क परवत । मनि मुकुता से भरि क सोभत ॥
अगिन समान चंदन उपजत । दिब्य रूप तेहि बचिहऽ परसत ॥
बसें 'गनधरब' 'रोहित' नाम । पाँच नृपति तिन सुरुज समान ॥
'रिसभगिरि' आगु पृथवी अन्त । पुनि-करमा तहँ बसें दिगन्त ॥
पित्र लोक बस तेहि के परे । जइहऽ कपि तूँ न ओहि ओरे ॥
हवे जमराज ऊ रजधानी । जाले तहँ बस मृतक प्रानी ॥
हे कपि, दक्खिन यहँ तक जइहऽ । तहँ तक खोजि बिदेहि लवटिहऽ ॥
गत सरद जे पहिले आई । सिय पावन सँमाद सुनाई ॥
मम सम विभव ऊ झट पाई । सुख पुरबक निज, दिन बिताई ॥
बड़ बलवान हव तूँ बानर । कुल उत्तम जनमल उजागर[१] ॥
आस मोर तोहरन पर बा । राम-रिन-उरिन भार सिर बा ॥
अस कहि द्रवित कपीस भइलें । तब जय बोलि प्रन दल कइलें ॥
सुधि सीता अवसि हम लानब । नात तजि तन प्रान विनासब ॥
जो होक्खि सिया दक्खिन देस । लाइब पता सुता मिथिलेस ॥
तब कपीस नायक बुलवलें । राम माथ मुदित सब टिकलें ॥
माथ टीकि क अंक लगवलें । आदरि एक एक क भेजलें ॥
माथ हनुमत जबे टिकवलें । आ निज अंक राम लगवलें ॥
फरकि अंग सुभ सगुन लखइलें । सब हरखल, मुदित मन भइलें ॥

---

१—भोगवती नगर एक पतालपुरी में भी थे ।

२—कुल उजागर=कुलको उज्जवल करनेवाला, होनहार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नील कंठ उड़ि सहुएँ बइठलि। गागरि ले सिर भिलिन निकसलि॥
दहिने आस्रम-मृगी दउडलि। सित बसन सिर धोबिन लड़कलि॥
फनधर गोबर फेंटि बइठल। खंजन उड़ि क ता फन थिरकल॥
कपि दल हरखि, जय ललकरलें। नभ से फूल, सुरन बरसलें॥
चिरई-चुरुँग हरखि चहकलें। रूख बिरीख झोमि क दोमलें॥
तब कपिराज राम से कहलें। आस नाथ, सब कपि प टिकलें॥
सब समरथ ई जोग गोसाईं! बल, बिक्रम, समान चतुराई!!
लइहें अवसि खबरि ई सीता! अस भरोस मोर मन मीता!!
लखलें सगुन सबे अनुकूल! लनिहे, सिय सुधि सक निरमूल!!
सिय-मातु कस चिन्हिहे इनका। जब ई कहुँक भेटिहें उनुका॥
यह से इन चीन्हा कछु दीहीं। जेहि से निज जन सीता चिन्ही॥
कथन सुग्रीव मन बिस्वसि के। हर्खि पुलकि कृतार्थ हो हँसिके॥
निज कर अँगुठी कपि प्रभु, दिहलीं। सीय देन पहिचान भखलीं॥
पुनि कृतग्य मन कहलीं कपि से। करि बिस्वास सिय तकिहें यहसे॥
हे उद्योगी, धीर, पराक्रमी! मोर, सुग्रीव समान बिक्रमी!!
अवसि सिध मो कारज होखी! कपि मो मन बिस्वास बिसेखी!!
प्रथम गुपुत हो भाव निरखिहऽ! लखि अनुकूल कथा बिसेखिहऽ!!
कहिहऽ तन सिय धीर धऽ रखिहें! सुधि पवते राम ध्रुव लनिहें!!
कहीं अवरि का, कपि समुझाईं? हिय अधीर बिकल हे भाई?
लवटि अवधि ले जो सुधि लइबऽ। सिया क राम त जीअत पइबऽ॥
आरत दीन बचन कपि कहलें। भरल कन्ठ आँसु द्दग बहलें॥
द्रवित, पाँव परि, गद गद भनलें। मुख से उतर न कढ़ि कुछ सकलें॥
भाव बिभोर राम उठवलीं। पुनि पुनि मेलि हिय कपि लवलीं॥
वार-बार मूक कपि तकलें। तब सँकेति माया प्रभु दिहलें॥
पा सक्ति तब हनुमत कुदलें। गरजि किलकारि दखिन धवलें॥
वढ़ कपि-दल अंगद अगुआइ। दक्खिन दिसि जनु अंधड़ धाइ॥
तोरत तारत रूख बिरिख के। समतल बनवत मारग गिरि के॥
उड़ल धूरि बन पसु जे भगलें। चिरई-चुरुँग उड़ि नभ ठेकलें॥
राम सुकन्ठ देखत रहलें। आँनद लखन न मन समइलें॥
आँखि ओट जब दल गुजरलें। त सुकन्ठ प्रभु बइठन कहलें॥
लखन डालि तूरि झट डँसले। बइठि, राम नृपति सँभखलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पूछलीं राम, कपीस कस ग्यान। देस बिदेस क इतना जान?
तब कथा जग-भ्रमन सुग्रीव। कथि, बिसेखलनि, मुदित सजीव॥
जस जस जगमें भरमत घुमलें। भाय-भय जस भागत फिरलें॥
गिरि, खोह, कँदरा, थल, नभ जल। सगर फिरलें घुमत जस छिपल॥
सब बताइ कपीस सुनवलें। राम मुदित मन, सुनि हरखलें॥
त-दिन दुइ रखि निज सेवकाई। कहलीं राम कपि घर जाईं॥
उतरत सरद दूत लउटिहें। अपने तब नृप आइ मिलिहें॥
त-बिरहाकुल प्रभु गिरि टिकलें। किकिस्कन्धा सुकन्ठ बिलसलें॥
एके थल त रितु, बन एके! राम दुखद तऽ सुखद सुकन्ठ के!!
इहे क्रम बा जग भर एके! पहिया फिरत सुख दुख लेके!!
भूखल काल्हु आजु से राजा! काल्हु राज आजु बिनु राजा!!

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के पन्द्रहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि कातिक पूर्निमा सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार ११ नवम्बर १९६२ इसवी, दिन मंगलवार।

# साहित्य-रामायन

(स्वतन्त्र)

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# किस्किन्धाकान्ड

## अठरहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि--अगहन बदी १, सम्वत् २०१९ विक्रमी, तदनुसार १२ नवम्बर १९६२ इसवी, दिन सोमवार।

हनुमान, जामवन्त आदि बानर-दल के जुवराज अंगद के अगुआई में दक्खिन दिसा में सीता के खोज कइल और मयासुर के बनावल आस्रम में जाके ओह आस्रम के मालिक मेरु सरवनि के बेटी स्वयंप्रभा से भेंट आ ओकरा कृपा से समुद तट पर गइल। स्वयंप्रभा के राम जी के पास गइल भक्ति वर पाके बेर बन में रहल तथा समुद तट पर अंगद के समुद्र पार करे में असमर्थता समुझि के हार मानल आ अनसन करि के प्रान त्यागे के निस्चय कइल। कुबुधि जनित मोह भरल मिथ्या विराग के तर्क वितर्क कइल आ सम्पाति से भेंट। सम्पाति के आपन आ जटायु के आत्मकथा कहल। फेन चन्द्रमा रिसि कथित सरीर, जीव आ आत्मा तत्व के व्याख्या सुनावल। फेन, जटायु के तिलांजलि देल आ पर जमला पर आकास में उड़िके लंका में सीता के देखल। नभ से उतरि के सीता के पता बता के आ कपिन से लंका जाये के कहि के महा प्रस्थान।

### १५ मात्रिक चौपाई

दखिन कपि दल बिन्ध पहुँचलें। बन, नद, गिरि सगर, प तलसलें ॥
मिलल बन एक उहवाँ सूखल। तहँ जल हीन थल सब दीखल ॥
स्रापि रिसि कँडु कानन जरलें। सुनि जे अचरज कपि गन मनलें ॥
तृसित बिकल दल आगु बढ़लें। रावन भरम असुर एक मरलें ॥
पौरुस अंगद तहाँ दिखवलें। दल-कपि के स्रद्धा ऊ पवलें ॥
अगवे बढ़ि क कपि पुनि थकलें। हारि मानि क हिम्मत हरलें ॥
तब डरि क अंगद उत सहलें। आग पीछ कहि क समुझवलें ॥
बन परबत जल थल सब ठवर। बल लगाइ खोजली हम संगर ॥
अवधि अन्त अब निअरल भाई। जानऽ भाव, सुकन्ठ कड़ाई ॥
सिय पवलीं भल, नात मुआई। राज-हुँकुम क बल फुरिआई ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह से धीरज पौरुख लाईं। अन्त सबे जेह से बनि जाई ॥
करम निरत नित रहनिहार क। सुफल मिले ले अवसि काम क ॥
रिस-भाजन हम सहज चचा क। अनभल चाहें मुअत पिता क ॥
तेह प हवें राम कर प्यारा। विफल होत, गर गिरी कुठारा ॥
यह से भाइ बटोरि क ओज। लाईं, बाँधि हिमति, सिय खोज ॥
पुनि गँधमादन कहि बुझवलें। धऽ धीरज दल आगे बढ़लें ॥
लगलि पिआसि तरु चढ़ि तकले। खग संकेत बिअरि इक दिखलें ॥
जूमि क दल बिलि में पइठले। उहाँ नगर सुन्दर इक पवले ॥
नाना भाँति सोन क पवधा। महल, मकान सोन क नवधा ॥
सरित, कूप, सुनर फुलवारी। फल फुल लदल रूख कतारी ॥
आस्रम इन्द्र पुरी अस बनल। अति रमनीय, जहँ मन मोहल ॥
तपति स्वयंप्रभा इक तपसिन। लता-भवन क बीच दरसलिन ॥
माया नगर गुनि कपि डरले। फँसल जाल असुर बिच मनलें ॥
ढिग तेहि तब हँलिवत गइले। चतुर बचन भनि कर रिझवले ॥
कहि निज कथा, देइ क परिचय। भूख प्यास क पीड़ा अतिसय ॥
सीता हरन, राम अवाई। बालि मरन, सुकन्ठ मिताई ॥
देव काज, असुर कठिनाई। सिय-खोज हित कपिन अवाई ॥
सबे बखानि, प्रसंसि रिजाइ। मँगले हनुमत तपसि सहाइ ॥
'स्वयंप्रभा' कहि आपन नाम। एह आस्रम क राखल काम ॥
"लंका मारग" कहलसि अगम। बसे पार सिन्धु सत जोजन ॥
जहवाँ रखलसि सिय क रावन। पहुँचे में लागत जँह बरिसन ॥
अस विस्वसि दल-कपि समुझाइ। निज कऽ निहचय राम ढिग जाइ ॥
तपसिन कपिन आँखि मुदवली। पल भर में तट सिन्धु पठवली ॥
चख खोलत कपि तट प पवले। लखत सिन्धु क हरखित भइले ॥
स्वयंप्रभा तब आँखि मुदली। छन भर में ढिग राम पहुँचली ॥
दरसन क मन वांछित पवली। छबि लखि राम गद गद भइली ॥
बिनती, प्रभु पद नमि क कइलीं। अनपावनि भगति हरि दिहलीं ॥
तब बइरि-बन राम पठवलीं। भजन भाव लीन तहँ रहलीं ॥
इहाँ देखि कर सिन्धु अपार। आपन बल, पौरुस कर हार ॥
अंगद विकल, अधीर भइले। भरि भरि लोचन नीर ढरले ॥
बिलखि बिलखि निज दल से कहलें। सखा,बृथा कइल सब भइलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बीतलि अवधि काज न सफलल। सीता के ना कछु सुधि मिलल।।
लखऽ महान समुन्दर भारी ! जा के सकिहें यहि ओ पारी ?
जे जाई से डुबि मरि जाई ! चाहे जस बल ऊ लगाई !!
विफल बहुरले, हऽ ध्रुव मरना। चचा सुग्रींव क अस कहना।।
तवना पर बा मन में नराज। लखत बहाना गिरई गाज।।
अस हमरन क दुहुँदिसि मउअति। लिखलनि हऽ विधि हमरन किसमति।।

एह से भाई, हम नहिं लवटबि। अनसन कइ के इहवें मरबि।।
कहि अस आसन कुस डँसवलें। जाइ सिन्धु तट पर बइठलें।।
कपि कुमार अस हाल निहार। देलसि कपि-दल हिम्मत हार।।
जूथ घेरि युवराज बइठल। कइलनि प्रन सब प्रान तेजल।।
बिरति भाव सब क मन जागल। छल, प्रपंच, जग से मन भागल।।
गुनि गुनि मन सब उठल बिराग। चित्त अथिर, बुधि कुतरक जाग।।
पाप पुन्नि त धरम क व्याखा। सास्त्र, पुरान, बेद क लेखा।।
सुख, दुख, असुभ, सुभ, कर तांताँ ! राज, मोह, छोह, रिपु,भ्राता !!
सकल भुवन अस जोरल नाता ! मुअत चिता प साथ जराता !!
पंच तत्त पिंजरा बिच बँधल ! की ई प्रान की हवा सँजोगल ?
जे क बिघटन साँस क बिछुरन ! अनु से अनु के साथ क अलगन ?
इहे सँयोग कि जीव अवरू ? प्रकृति, पुरुस के का अन ठवरू ?
जड़ सँयोग से चेतन जनमल ? त कस आइल कहाँ समाइल ?
का सगुन, का निरगुन भाखल ? का ब्रह्म ? का जीव बुझावल ?
के जानल ? के जानि जनावल ? सब त "नेति नेति" कहि भागल ?
अँटकर गरई धऽ सब बाँधल ? इहाँ उहाँ क महल उठावल ?
अस बिचार कर तांताँ बढ़ल। डरपेल बुधि में अनसन. जनमल।।
डरि क अंगद प्रस्न बढ़वलें। भय बस कपि सँग उनक धइलें।।
अइसे मन में बिराग जागल। अबुधि से ग्रसि बुधि करम नासल।।
खिन मन होइ हनुमान गुनलें। राम काज असत-बुधि नसलें।।
गइलें उठि जहाँ जमबन्ता। रहल गुनत बइठ मन चिन्ता।।
सुनत कपिन क अपक बतकही। अनुभव हीन, हारल, डरही।।
हलिवत आवंत लखि क हँसलें। समय पकल जानि चुप रहलें।।
हनुमत रिछ ढिक जा बइठलें। सिय खोजन क बिधि बतिअवलें।।
तब सम्पाति सुनि कोलाहल। गिरि कंदरा से सीस निकासल।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कपिन मरत सुनि क भुखि जागलि । दिन प ढेरि पूर भख पावल ॥
खग लखि क बतकही चुपाइलि । दरसन हारल, बुधि भुलाइलि ॥
भन कपि हम त अखरे मरलीं । गति जटायु के भी ना पवलीं ॥
सुनि सम्पाति जटायु के नाम । पुछलें पता, बिसेखि बयान ॥
त जुबराज कथा बिसेखिलनि । सुनि सम्पाति अति दुख मनलनि ॥
अभय दान कपि क खग दिहलें । कहनी आपन अनुज क कहलें ॥
हम जटायु रहीं दुइ भाई । भइलीं गीध पुरब कमाई ॥
दुनो बल पौरुस में एकता । खेल खेल में ठनली मनता ॥
रवि छूये क होड़ में उड़लीं । उड़ि जोजन सहस नभ चढ़लीं ॥
तवे जटायु तेज से रवि कर । भइले व्यग्र व्याकुल तपि कर ॥
हम तब नेह बस पख ढँकलीं । तेहि कइ नीचे ऊपर उडलीं ॥
पर पख जरल तुरत हम गिरलीं । चोट खाइ गिर भुइँ मुरछइलीं ॥
दिन जात चेतना जो लवटलि । विवस दसा गुनि क बुधि भरमलि ॥
ना जनलीं ई कवन हऽ देस । ना बुझलीं दिन कसत निसेस ॥
आस्रम सुनर एक सहुँ देखलीं । कसहूँ खिसकि क तहाँ चहुँपलीं ॥
नाम चन्द्रमा रिसि बस तहवाँ । लखि मो, विस्मित पुछलें उहवाँ ॥
रे सम्पाति, कस दसा ई पवले ? बली, त पाँखि कस क जरले ?
जनलीं बहुत दिनन से तोहि के । उचित मानु त कहु कारन के ॥
तब करनी निज मुनि से कहलीं । आ कइ अनसन मरल चहलीं ॥
तब दया क मुनि मोहि तकलें । करम-ज्ञान कथि धीर वँधवलें ॥
कहलें, खग, दुख आस्रये देह । करम जन्य तन ना सन्देह ॥
पुरुस अहं बुधि देह में करे । तवे करम में प्रवृति हो परे ॥
जनित अबिद्या अहंकार ई । सदा से कहलि बा अनादि ई ॥
अग्नि तपल लोहा समान ई । व्याप्त सदा से चिदाभास ई ॥
चिदाभास विसिस्ट हंकार । हो मिलि देह से एका कार ॥
चेतन युत देह बनि अपने । अहंकार बस कारन करमें ॥
'हम हईं देह' बुधि जोत्र गरहे । जेहि कारन जग दुख सुख सहे ॥
देह क निरविकार अतमा से । मिथ्या एक भइल कारन से ॥
जीव सदा निज मानि क कता । करम करे फल बँधि विवसता ॥
अस बस हो पुन पाप करम क । उँच नीच जोनि भरमि विवसि क ॥
सोचे, पुन क स्वर्ग हम जाब । तेहि अभ्यासि स्वर्ग सुख पाब ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस अभ्यसि बसि तहँ सुख पाइ। पुन छय हो प्रारब्ध पेराइ ॥
गरत नीच निज कर्म क गिरत। अनचाहत दुख तीव्र त सहेत ॥
गिरत जीव चाँद पर प्रथमे। सँग कुहेस, तहँ से भुइँ अगमे ॥
भुइँ प रहे ब्रोहादि धान्य में। बहुत दिनन तक रमत ताहि में ॥
भखत चारि बिधि पुरुस भच्छ के। भच्छ, भोज्य, लेह चोप बिधि से[1] ॥
तब हो परिनत बीज रूप में। गिरे जोनि स्त्री रितु-काल में ॥
योनि में गिर रज मिलि होय स्थित। झिल्ली लिपटि कलल बन कथित ॥
कलल होत कठिन दिन एक में। बुद बुद रूप पुनि पाँच राति में ॥
बीतते सात निसि मांस पेसि अस। होइ जात ऊ अंडकार जस ॥
भीतर पन्द्रह दिवस पेसि में। निभरे तिय तन रुधिर सहज में ॥
बीतत पचीस राति क ओह में। अंकुर उत्पति ताहि पिन्ड में ॥
जात माँस इक क्रम से बनलें। कन्ठ, कंध, सिर, रीढ़ उदरलें ॥
पुनि दू मास में क्रम से बनलें। पद, कटि, घुठना, पसली जतलें ॥
यह क्रम में भेद कवो न परत। अंग-सन्धि तीन माँस में गढ़त ॥
चारि मास सब अँगुरी बढ़त। पाँचवें नाक, कान, दृग गढ़त ॥
तवे दाँत नख गुह्य स्थान। होत सिरजना जगह प आन ॥
छठें चढ़त, छेद करन जनाय। गुदा, नाभि, योनि, लिंग, लखाय ॥
सात मास रोम केस बुझाय। अठवें सब अँग अलग सुझाय ॥
तरह एहि गरभ गरभासय। स्त्री पेट में बढ़त निरास्रय ॥
गरभ पहुँच जब पँचवाँ मास। चेतन सक्ति हो जीव अभास ॥
नाभि नाल क छेद से पिन्ड। भखि, भख अनरस बढ़े अखन्ड ॥
आ न मरे जीव करम क जोग। सहे दुख बीत जनम क भोग ॥
कर्म यादि क जन्म क पहिले। जठरानल में जीव जे सहले ॥
गुनत सत कोटि जोनि जनमि क। सुत बित नारि त मोह से ग्रसि क ॥
बस अभागि न हरि गुन गवलीं। सत्य भूलि, अधरम बटोरलीं ॥
ते फल सहलीं दुख ससना। असत, सत, भुलि फँसलीं तृसना ॥
कइली सदा अकार्य करम के। कबो न सधलीं हित धरम के ॥
निज के कइल करम अनुसार। भोगलीं सहलीं दुख निरधार ॥
निकसबि गरभ से कब न जानीं। निकसि सकबि कि ना अनुमानी ॥

---

१—भोज = भोज्य, लेह = लेह्य, चोप = चोप्य, भच्छ = भक्ष्य ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस चिन्तत, सहि दुख क महान । योनि यन्त्र दुखि गिरत जहान ॥
पुनि माया फँसि कस्ट अपार । फसत जीव बस कर्म संकार ॥
अस जीव गुनि "हई हम देह" । सहत असह्य दुख बसिनन गेह ॥
अभ्यास जनित तन अभिमान । बनि कारन जीव बध अज्ञान ॥
एसे जानि न प्रकृति से अलग । स्थूल सूक्ष्म दू देह से पृथक ॥
निज अतमा कै तजि तन ममता । लहे ग्यान, निज सम्पन्नता ॥
हीन ग्यान चेतन क रूप । रहित बिकार सद् चिद स्वरूप ॥
परे अवस्था आतमा माने । सुद्ध, बुद्ध सान्त रस जाने ॥
अस आभास आतम क आते । जनित अग्यान मोह बिलाते ॥
झट नसात प्रारब्ध क बेग । खुदे कटे सुख दुख आवेग ॥
त-प्रारब्ध जब लगि न नसान । रह केचुल बध सरष समान ॥
अस कहि रिसि लखि मोहि सप्रेम । कहले आगु कर मोर नेम ॥
सुनहु गीध, इक अन बतकही । जब राम त्रेता अवतरही ॥
अइहे इहाँ सहित सिय लखन । दन्डकारन में रहिहे, बसि बन ॥
रावन तब छलि सीता हरी । आ दल-कपि खोजन क निकरी ॥
ते भेंटबे उन क तट सागर । आ पता तब दिहवे सिय कर ॥
तबे झट तो पाँखि जनमिहें । आ दिन तोरो तुरत लवटिहें ॥
तव तक बसि गिरि तप ते करिहें । निज कृत करम क पाप कटिहें ॥
तब से मीत बसीं यह कँदरा । सुत सुपार्स भोजन दे हमरा ॥
बड़ पितु भगत बड़ा प्राक्रमी । बड़ जसस्वी सुर सम धरमी ॥
दिन एक देर जब ऊ अइलें । देर क कारन कहि बतवलें ॥
गिरि हेमेन्द्र प रहीं बइठल । आस लगवले भख क भूखल ॥
काल कलूटा राछस एक । धइले नारि सुनरि अतिरेक ॥
आइल तहँ मग डाँटि मगलसि । राह पाइ क तुरत सिधरलसि ॥
जातें कहलें मुनि समुझाइ । बचल जीव बड़ भागि कमाइ ॥
राछस रावन, नृप ई लंका । हरले जात सीय असंका ॥
जो मग देन में देर करिते । तुरत कुठार सिकार बनिते ॥
यह से तात पता अनुमानऽ । लंका जाकर सिय सुधि लानऽ ॥
सागिर तट मो के पहुँचावऽ । दिया तिलांजलि भाय तरावऽ ॥
कपि दल तब संपाति अनलें । तट तिलांजलि समुद दिअवलें ॥
दे तिलांजलि भाई तरलें । धइ के ध्यान राम सुमिरलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जामलि पाँखि खग नभ ठेकलें। लंका निरखि गवहिं उतरलें ॥
कहलें जूथ कपिन समुझाई। लंका विवरन सबे बुझाई ॥
गिरि त्रिकूट बसे ई लंका। रावन राज्ञ जहाँ निसंका ॥
तहँ एक जगह में सिय रखलसि। लखलीं कत क उनहिं रोअवलसि ॥
थकित, बृद्ध, न त जइतीं उहवाँ। लइतीं सुधि झट उनक इहवाँ ॥
पर दल राम कपि बहु बंका। जे जा सकें कूदि क लंका ॥
बाँधि हिमति रचि करिह हिआव। जेकर आस हऽ तेकर जमाव ॥
भेंटबि अवसि सिया सुकुमारि। लाँघबि निहचय समुद अपार ॥
अस कहि सर्ग सम्पाति गइलें। कपि दल सुनिके हरखित भइलें ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के अठरहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन :तिथि अगहन वदी ९ सम्वत् २०१९, विक्रमी तदनुसार २४ नवम्बर १९६२ इसवी, मंगलवार

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# किस्किन्धाकान्ड

## उन्नीसवाँ सरग

— प्रारम्भ तिथि-अगहन बदी १० सम्वत् २०१६ विक्रमी तदनुसार २१ नवम्बर १६६२ इसवी।

सम्पाति के कथ सुनके जाम्बवान आ हनुमान के कपि दल के पास आइल। आ समुद्र लाघें पर दल में विचार। सेना पतिन के आपन-आपन बल बतावल। जाम्बवन्त के हनुमान के बंस परिचय देल आ हिम्मत बढ़ावल। हनुमान के पार जाये के तैयारी कइल आ कूदल। मैनाक, सुरसा आदि से भेंट आ विजय। लंकातट सुवेल परबत पर उतरल।

### १५ मात्रिक चौपाई

तब दल ढ़िग जमवान अइलें। सँग में हनुमत मन मुदि गइलें॥
अवते उनक सब दल उठलें। सादर बइठा क सनमनलें॥
सभा कपिन क तब जुटि बइठल। अंगद सबहिं बोधि क पूछल॥
लंक गमन क के बल रखले। के सत जोजन कूदि सकेले॥
तब कपिदल के बड़ कन बीर। गुनि निज बल कथलें धइ धीर॥
गज गवाछ दस जोजन बीस। गन्ध पचास, सरभ चालीस॥
मन्द साठि, द्विविधि भन सत्तर। असी जोजन तार लमहर॥
कूदन सक्ति क निज निज भनलें। अधिक जात असमरथ मनलें॥
तब अंगद रिछपति सलहलें। पार जान बिधि पर बतिअवलें॥
जामवन्त अन्त बल भखले। बुद्धि थकल बल हीन मनलें॥
कहलें, जब जवान तन रहल। तबे युद्धि देवासुर छिडल॥
कहलें जब जवान तन रहल। तब युद्धि देवासुर छिड़ल॥
साथ सुरन क हमहूँ लड़लीं। पी के अमृत बड़ बल पवलीं॥
त्रिविक्रम जब बलि के नपलीं। बार एकइस महि घुमि नमलीं॥
जेहि प्रयास ई टाँग टुटलें। तबो कोस सहस कुदि सकलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर कारज न यह से सधिहें। पार समुद तन ज़ा न सकिहें ॥
तब बली के मो सम रहलें ? जरा आजु तन मो थकवलें !!
भन अंगद हम जा सकीला। सत जोजन लें कूदि सकीला ॥
पर लवटन में संका बाटे। मन बिसास यह से ना आँटे ॥
तब रिछपति अंगद बिनवलीं। रवाँ अनघ, नायक ठहरलीं ॥
जाइ, आइ दूनो सकीला। दर्प तूरि समुन्द्र सकीला ॥
सम सुकन्ठ तूँ कपि जुवराज। उचित तोहि, लऽ हमन से काज ॥
कस अस भनीला दीन बयान ? हनुमत बल दल रहत समान ?
सदा जे राम काज में ततपर ! जे रबि सुत, मन्त्री दल बानर !!
रहत बीर अस का हऽ अकाज ? का असाध्य ? का लभ्य न आज ?
रिछपति तब हनुमत से कहलें। कपि बल, बंस, अंस, सरहलें ॥
कहलें, सुनु कपि ते बड़ बंका। महाबीर परम निहसंका ॥
मा तो सुर-हित जग जनमलीं। अगिन स्राप से बनरी बनली ॥
स्वर्ग अप्सरिन में बड़ अप्सरि। पुँजिक-स्थन रह नाम तेकरि ॥
अगिन स्रापि क कइलें बनरी। जग में बनली पतिनी केसरी ॥
पड़ल नाम अंजना बानरि। परम रूप सील गुन आगरि ॥
नारि रूप बनि बिचरत रहली। जोबन गंध बिखरि अँइठली ॥
लखि युवती के पवन जवानी। उच कुच, कटि-लचक मस्तानी ॥
जाँघ सुडौल, नितम्ब भारी। ससि मुख, मृदु, अधर अजुठारी ॥
खंजन दृग मनमथ उनमाद। मारत तानि क बान जनात ॥
मन मदाइ गइलें मोहाइ। अरसि परसि कर बसन उड़ाइ ॥
खेललें खुनलें होइ निहाल। बेग बुझवलें काम बिसाल ॥
होत होस अंजना पुकरलसि। के, दुर्मति, मो सील बिगड़लसि ?
पवन दुलरलें तब कहि सुन्दरि ! कोप न करु ते मदइल बानरि !!
पवन हईं कइलीं हिय संगम। ना बिगड़लीं सील क बंधन ॥
यह प्रसंगें सुत अस जनमी। बल, तप, विक्रम, तेज मरमी ॥
मो सम गमन सगर ऊ करी। सूछम भीस्म सबे रूप धरी ॥
द्रुती, मंद, धीर, बलसाली। महा प्रचंड, महा सुचाली ॥
बचन क सुनि अस सुखद पवन से। मुदित भइलि अंजना हृदय से ॥
गर्भ पोसि सुत गुह जनमलसि। लाड प्यार से पालि बढ़वलसि ॥
दिन एक जब तूँ खेलत बकइयाँ। रवि लखि, पूरब-सोन-थरिया ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जानि कि नभ-फल पाकल लाल। चहलऽ भखल सुभाव तेहि बाल॥
कुदलऽ जोजन तीन सत नभ में। रंच क्लान्ति नहीं मनल मन में॥
रवि ढिग जा जब चहलऽ लीलन। इन्द्र बज्र हति हनु[1] तुड़वलन॥
हनु टूटल हनुमान कहइलऽ। पवन प्यार के कारन बनलऽ॥
कोपि बहल 'प्रभंजन तजलें। तीनु तब लोक सोर मचलें॥
सुर तब तोर पितु, क मनवलें। ब्रह्मा हरखि क वर तो दिहलें॥
कि हथिआर समर ना हतिहें। चाहे-जस केउ चोट करिहें॥
मुदि इन्द्र वर दिहलें तोहि के। मरबे तें ना बिनु इच्छा के॥
अस सुत केसरी छेत्रज तूँ। पर पूत औरस पवन क तूँ॥
अस पितु, मातु से तू जनमलऽ। अंजनि पवन नाम सुत पवलऽ॥
राम मुद्रिका यहि बस दिहलीं। सीय-खोज क भार सउँपलीं॥
तब पवन-सुत, चुप का बइठलऽ? आपन काज हमन सिर छोडलऽ?
हम जानी तो सक्ति अपार। करि ते सकसि समुद के पार॥
आ ला सकसि सिय-सुधि असहीं। लाँघि समुन्दर तहँ से तसहीं॥
कब तक बानर ते चुपइबे? निज क पौरुख देहि जुगइबे?
पवन तनय, कहा बजरंगी! चतुर सुजान, ज्ञान सरमज्ञी?
करे बरे सुर, हित अवतरले? राम मदति लगि कपि तें बनले?
सब सखा क बल ते देखले? जामवन्त क बूढ़ परिखले?
अब बल-पौरुख निज क जगाउ? पूरति अवधि काज कइ लाउ?
राम देल मुँदरिका लिहले? निज भुज-बल त अस प्रन ठनले?
से बल का तें भूलि गइले? आ कि राम भरोस बिसरले?
कि सुकन्ठ सहुँ कृत प्रन भुलले? कि सिय मातु कर ध्यान तेजले?
जागु, जागु, कपीस बहादुर! राम काज सफले में आतुर!!
तोर, मोर, कपि-दल, सब सुर के! राम, सुकन्ठ, सीय, जग भर के!!
तोर हाथ, हित, अनहित राम! अब का गूनत बइठल ठाम?
कपि अवले जे चुप बइठलें। मुनरी मुख से काढ़ि निरखलें॥
नमि मुनरी, पुनि राम प्रनामि। इत उत ताकि, कपिन मुसुकानि॥
कुदलें बड तन कइ क हहास। घूमलि पोछि लपेटि अकास॥
गरजि, हुँकारि, किलकि, क डँटलें। सागर, परबत, खोह, कँपलें॥

---

१—हनु = ठुड्डी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लबटि बइठलें गिरि के सीखर। तकलें सगरी, नीचे ऊपर॥
पुनि किलकारि तन समेटलें। हाथ पाँव तूलि तन सधलें॥
बिसतरलें तन गगन समान। लीलन सृस्टि प्रलय जिमि आन॥
पिता बायु क सुमिरन कइलें। हृदय राम चरन बइठवलें॥
पुनि पहाड़ प पाँव जमवलें। ऊपर कें निज कंठ उठवलें॥
छउके क कटि झुका छिपकलें। भौंह उठा जल रासि तकलें॥
सहुँ लखलें समुन्दर लहरत। अतुल अपार उफनत हहरत॥
लखि चहुँ ओर जलधि बिस्तार। रावन नगर क तकलें पार॥
कान उठा क काँध हिलवलें। पुनि कपि-दल इक बार तकलें॥
पोंछि भाँजि क तन बल अनलें। तौलि अंग पुनि बल परिखलें॥
नमि के राम अस बल कुदलें। कि सब दिग्गज सृस्टि डोललें॥
सन-सनात पवन के चिरलें। ऊपर समुद तीर अस चललें॥
बाजलि पाँखि जनु उठल तुफान। टूटि जोन्ह जनु गिरत जहान॥
तीव्र बेग नभ दखिन गमलें। जनु ग्रह मण्डल नभ में टुटलें॥
महा प्रचन्ड अन्धड़ बहलें। पृथ्वी, परबत, नभ, थल कँपले॥
खउलि समुन्दर उठल अकास। अनचासो तब बहल बतास॥
टूटि टूटि सिखर भुइँ गिरलें। महा प्रलय कर लछन लखलें॥
जलधर सँगवे बायु भगलें। कहे सनेस इन्द्र प धवलें॥
सिमिटि समुन्दर जल हलोरलें। एक ओर क पेट दिखवलें॥
कि यहँ सिय न रावन गोपलसि। निज क सिन्धु संफाई दिहलसि॥
सिन्धु सफाई अस दे करके। बोधि मैनाक गिरि आदरि के॥
भेजलसि ते सतकारे हनुमत। हरे बरे स्रम लेइ क अनुमत॥
लखि सहुएँ मैनाक बिसाल। कपि गुनलें यहि रावन चाल॥
चाहत डालल बिघिन क मग में। अहित कइल ई राम क, हितमें॥
तब बटोरि बल, भुज धकिअवलें। चक्कर खा गिरि नभ में नचलें॥
कहलें नर रुप धइ गिरि कपि से। हम न सत्रु, तव मीत सदा से॥
पठवल जलधि, हम सनमानीं। अइलीं कपि, करन अगुआनी॥
करऽ मोर आतिथ्य स्वीकार। बइठऽ, हरीं हम स्रम तोहार॥
आदि काल गिरि पंख रखलें। चाहें जहाँ तहाँ ते गमलें॥
जब गिरि पंख क गरबं कइलें। अति ऊधम जगती प मचलें॥
पंख कोपि तब इन्द्र कटलें। पंख हीन सब गिरि क कइलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब तो पिता पवन मो अनलें। पंख संग समुन्द्र छिपवलें॥
ते नाते तो अइलीं समनें। नहिं पराय, हित मानऽ अपने॥
सिखर-राज सीताचल पूत। नाम मैनाक पर मजबूत॥
तरु से तुरि फल निक निक खाइलऽ। छुधा क्लान्ति रचि रचि मिटाइलऽ॥
सत्रु नगर पइठे क बडुए। मग लमहर चले क हउए॥
बल बटोरि स्रम छुधा मिटाइ। रिपु घर जा मन तन पोढ़ाइ॥
अस कहि क मैनाक अदरलें। मुदि हनुमत तब रीझि भखलें॥
जलधि पार प्रन कूदन कइलीं। यह से बिच मग रुकल न चहलीं॥
गिरि, सतकार तोर गरहलीं। समुद-भाव सदू हम आदरलीं॥
राम काज हित सुभ सब चाह। अवसि क करिहें राम निबाह॥
तब कपि करतल गिरि थपकलें। कहि "अनघ जा" आगे बढ़लें॥
कपि बल से सुर अचरज मनले। हरखित हो कपि क असीसले॥
इन्द्र मैनाक तब दुलरले। समुद बसे क बर आदेसले॥
चलि आगे कपि सुरसा भेंटलें। जेहिके मुनि गंधरब भेजलें॥
पारिख करे बरे कपि बल के। रोकि क गति-चल उनकर मग के॥
नाग मातु ऊ रहलि बिसाल। छाया-ग्रहनी, साँस क जाल॥
राछसि बनि ऊ मग आ रोकलसि। कपि क डाँटि रोसिआइ कहलसि॥
के ते हवसि कि जलधि क लाँघसि? अस मो नभ अहार भगावसि?
धनि भागि मो जे तोहि पवलीं! बिनु भख, भूखि मरे से बचलीं!!
बचे क चेस्टा न ते करिहें? पइठि मोर मुँह सीधे मरिहें?
नारि. कहलं तब हँलिवत। मग न रोकु ते, मोर अभिमत॥
राम-काज, कइ क जब लवटबि। इच्छा तोर अवसि क पूरबि॥
असत बचन त हम ना भाखीं। होखु खुस, अनखुस भा माखी॥
तब मग रोकि डँटलसि कपि के। 'जायनहि देबि' कहलसि डटि के॥
अस कहि क जब मुँह ऊ बवलसि। तबतन दस गुन कपि बढ़वलसि॥
तब सुरसा मुख दुगुन कइली। कपि दुगुन तन तुरत बढ़वलीं॥
जस जस सुरसा बदन बढ़वली। तस तस कपि तन क बिसतरलीं॥
सुरसा ओठ नभ जब छुअलनि। तब कपि तन अंगुस्ट धरलनि॥
घुसि उदर झट बाहर गमलनि। ज्ञानी जनु जग मोह तजलनि॥
नभ से हँसि कपि कहलें पुकार। आग्या पूरि तो चललीं पार॥
तू-सुरसा सुनर रूप धइली। कपि प्रसंसि क प्रेम जतबली॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दे असीस कहली कपि जाईं । काज राम-प्रताप सिधाईं ॥
सिय खोजि रघुबीर मिलाईं । अवसि देव काज सफलाईं ॥
कपि सुरसा नमि आगु बढ़लें । बरसि फूल 'सुरन' असीसलें ॥
चलत वेग तब सहसा रुकल । अचरज क कपि इत-उत चितवल ॥
लखले जीव जल प इक ओर । छाया धइले खींचत जोर ॥
छाया ग्रहनी 'सिंहिका' जानि । कहल सुकन्ठ के मन अनुमानि ॥
तुरत घूमि युद्धि ललकरलीं । उत 'सिंहिका' मुख फैलवली ॥
लखि मुख कपि तन क विस्तरलीं । मुख बढ़वत 'सिंहिका' गइली ॥
तब कपि नीति गुनि निरधरलीं । बुधि से काम लेल तहँ चहलीं ॥
सूक्ष्म रूप धऽ उदर पइठलीं । तन विसालि ते पेट क फरलीं ॥
तब सब 'सिंहिक' बहल समुद्र । हरखल सुर समाज सँग इन्द्र ॥
तब कपि निकसि गगन में उड़ले । दखिन तेज तीर अस चलले ॥
पल भर में जलधि कपि लँघले । गिरि सुवेल प उतरि बइठलें ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम-दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहावाद, सूबा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के उन्नीसवाँ सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि अगहन बदी १३, सम्वत् २०१९ विक्रमी, तद्नुसार २५ नवम्बर, सन् १९६२ इसवी, दिन मंगलवार ।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

## ( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा-बिहार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# किस्किन्धाकान्ड

## बीसवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—अगहन बदी १५ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार २७ नवम्बर, १९६२ ईसवी, मंगलवार।

हनुमान जी के मुँदरी देके सीता जी के खोज में अँगद आदि बानर भालु के साथ भेजला का बाद आ सुग्रीव के किस्किन्धापुरी में चल गइला का उपरान्त राम जी के परबरखन परवत पर लछुमन जी का साथे रहल। तहवाँ राम जी द्वारा बरखा रितु के बरनन, बिरह निवेदन, हनुमान आदि के ना लवटला से परेसानी आ व्यग्रता, फेन अपना हृदय-बेदना के बरनन आ ग्यान तथा तरक द्वारा ओकर औचित्य के समर्थन, कइल आ बतावल कि देहधारी अवतारी भइला का वजह से माया के, त्रिगुन प्रभाव के प्रतिक्रिया दिखावल अवतार लीला में ठीक हऽ दोस ना। फेनु राम जी के लछुमन जी से ई समुझावल कि उहाँ का सब तरह से जितेन्द्री होके भी सरीर पर होखेवाला तृगुन तत्व के नियमन के प्रभावन के मेटल, लीला के उदेस के नास कइल होखी समर्थन ना। यह से अवतारी के अवतार लीला में ई सब कइल ओकर दोस ना कहाई सृस्टि नियम के निबाह में निर्विकार लीला ही कहाई।

फेनु सरद रितु के आगमन पर राम जी द्वारा सरद रितु के बरनन आ तबो सीता के सुधि ना पवला से चिन्ता आ अधीरता प्रगट कइल, फेनु क्रोध आइल आ न्याय नीति के आधार के अनुसार अपना क्रोध के समर्थन कइल आ कहल कि हमन के सामने बिग्रहल नवही बधू के छुद्र लुपार हर ले गइल आ हमन से कुछ ना सपरल! यह पर अपना के, अपना कुल, धनुस,बान,बंस,पूर्बज, सब के धिक्कारल आ प्रन कइल कि कातिक के पूरनमासी के रात खतम होत-होत जो सीता के सुधि ना मिली त राम के तीर धनुस पर चढ़ के सामूहिक दन्ड के रूप में संसार में प्रलय महा प्रलय ला. दीही आ राम, सती जी के मृत्यु के बाद वाला सिव जी के नासक रूप धारन करि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लिही। ई कहि के धनुस टंकोरल जवना के महाघोर रव सुन के रनिवास में बिलास में लीन तारा के भयभोत भइल आ सुग्रीव के राम जी के पास जाके फेनु सीता खोज बदे प्रयत्न करे के कहल आ अमुझावल।

## १५ मात्रिक चौपाई

जब से खोजे सिय कपि गमलें। अनुज सहित राम गिरि छवले॥
हो नित चरचा ग्यान विग्यान। सास्त्र, न्याय, स्नुति, बेद, पुरान॥
बरखा एने भइल अति उग्र। सँवराइल बन परबत रूप[1]॥
सहज सुनरता बन क खीललि। बरबस सुरति राम क खींचलि॥

---

१—यह सर्ग के कथा-क्रम और पहले के आठवाँ और दसवाँ सर्ग के कथा-क्रम के समय में उलट फेर जान बूझ कर दिया गया है। ऐसा करने में लेखक ने कथा के क्रम निर्वाह में अधिक स्वाभाविकता और तारतम्य लाने का तथा इसको बुद्धिवादी युग के अधिक अनुकूल बनाने का विचार मात्र रक्खा है। महर्षि वाल्मीकि जी अथवा सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने वर्षा और शरदऋतु का वर्णन सुग्रीव के राज्याभिषेक के बाद वर्षा बीत जाने और शरद के आगमन पर करवाया है और तब लक्ष्मण किस्किन्धापुरी जाकर सुग्रीव को प्रवर्षण गिरि पर लाये हैं। जहाँ कपिदल की महती सभा हुई है और जहाँ से कपि दल सीता खोज के लिये प्रस्थान किया है। वाल्मीकि जी ने इस सभा का वर्णन बहुत विस्तार रूप से किया है। ऐसा वर्णन क्रम साहित्य रामायण से भी रखा गया है। तुलसी कृत रामायण में यह विस्तार नहीं है।

साहित्य-रामायण में लेखक ने बाल्मीक रामायण के आधार पर अनुमान करके बालि-बध का समय वसन्तऋतु का मध्य या समाप्ति के कुछ पूर्व माना है क्यों कि वाल्मीक ने राम के पम्पा सरोवर पर राम के पहुँचते ही किष्किन्धाकान्ड के प्रारम्भ में हो वसन्त का प्रारम्भ बताया है। यह अनुमान वसन्त वर्णन के आधार पर आरोपित है। इसके तुरत बाद राम-सुग्रीव मित्रता और बालि बध को घटनायें हैं। बालि से युद्ध करते जाते

( शेष अंश दूसरा पृष्ट १२० की पाद टिप्पणी में देखो )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कहलीं, लखन मेंघ नभ छवलें। गरजत, सुनत परम मन भवलें॥
नभ में घुमडि, उमतलीं बादलि। स्वजन स्मृति, जनु बिसरल जागलि॥
घन घमंड नभ गरजे घोर। सिय बिहीन मन डरपे मोर॥
चमकि दमकि घन बिज्जु समाय। खल मन प्रीत न जसत थिराय॥
जलद हरखि, लखि मोर नाचत। भगत देखि जनु सन्त हुलासत॥
निअरि भूमि घन बरिसे घोर। नवलें बुध जस विद्या जोर॥
बूँद चोट सहलें गिरि ओइसे। सहे सन्त बचन खल जइसे॥
नदी ताल भरि बह उतराइ। जस पवले धन खल बउराइ॥
मिलि के कीच भइल जल ढाबर। माया लिपटि जीव जस आन्हर॥
बूँद बूँद सरिता सर भरल। जसत सुजन मन सद्गुन जमल॥
नद-जल थिर समुद्र में गिरि के। अचल जीव जस हरि से मिलि के॥
घास, तृन उगि, डहर भुलाइल। बस पाखन्ड धर्म तोपाइल॥
थकत न बेंगँ राति भर गाके। रटत बेद जनु बटु अगरा के॥
तरु सोहत नव पल्लव लादे। साधक मन विवेक जस जागे॥

---

( पृष्ट ११९ की पाद टिप्पणी अंश )

समय बन पर्वत के वर्णन से स्पष्ट है कि उस समय वसन्त बीता नहीं था। तो इस तरह सुग्रीव का राज्याभिषेक वसन्त के मध्य अथवा अन्त के पूर्व का समय था। तो इस आधार को लेकर साहित्य-रामायण के लेखक का अनुमान है कि सीता की खोज के सम्बन्ध में राम का पूरे ग्रीष्म और वर्षा काल तक चुप बैठा रहना और कोई प्रयत्न न कराना कुछ स्वाभाविक नहीं जँचता-खास कर तब जब ऐसा कराने के लिये ग्रीष्म का समय और सुग्रीव का राजा हो जाने से साधन का प्राप्त हो जाना प्रस्तुत थे। इसी विचार से सीता की खोज के लिये राम का, वर्षा ऋतु के शुरू में ही, जब सुग्रीव ने पूरे ग्रीष्म भर समय पाकर भी कुछ नहीं किया, व्यग्र हो जाना और सैन्य दल भेजवाना लेखक ने उचित माना है। नीति से भी यह बात समर्थित है। फिर दूसरी बात यह है कि शरदऋतु के शुरू में दूत दल भेजना और उसको इतनी लम्बी यात्रा के लिये केवल एक डेढ़ मास का समय देना जब कि उसे पैदल घूम घूमकर बन पर्वत सर्वत्र खोजना था और शरद के अन्त तक वापिस आजाने को बड़ी कड़ी आज्ञा दी गयी थी एक खटकने की बात होती है। इसी से यह समय का उलट फेर किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आँक जवास भइल बिनु पात। बिनसल जस खल उदम सुराज ॥
मिलति धूरि न खोजले कतहीं। क्रोध करत धरम जस दुर ही ॥
खेती कइलि सोह महि कइसे। उपकारी गृह सम्पति जइसे ॥
महा बृस्टि, बहि फूटलि क्यारी। हो कुतन्त्र जस बिगड़ें बारी ॥
भला किसान निरत निज खेत। बुध जस मोह तजत मन देत ॥
चकवा चकई रात बिलगलें। कलि के अइलें धरम परइलें ॥
ऊसर बरिसल बीज न गरभल। हरि-जन-हिय जनु मद न उमगल ॥
जमलें जन्तु बहु महि ऊपर। जनता बढ़ जस राज सुन्दर ॥
पथिक गोल बसि बिलसे इत उत। इन्द्रिन बेग, ग्यान जस बिलमत ॥
बहल पवन मेघ-नभ फाटल। जस सद धरम कपूत बिनसल ॥
धूप छाँह दिवस अस बदलें। संग, कुसंग ग्यान बनि बिगड़ें ॥
अस रितु बरखा धीर नसात। लखन काम तन जरत जनात ॥
कसहुँ बाँधि मन आनी धीर। तबो चित्त-बृति करति अधीर ॥
सिखवल लखन, तोहार मनलीं। धीर धारि मन सान्ति अनलीं ॥
पर रितु, अस ई जलद फुहार। बिरह जनित मन भाव सिङार ॥
इत उत दृस्य उदीपन पेरि। बरवस मनमथ जगवत फेरि ॥
समय, परिस्थिति, रितु अरु प्यार। लखन, सहाय हवें सब मार ॥
से सब मोहि मिलि करत सिकार। कसत रहे थिर, चित निरधार ॥

## सवैया

हिय भीतर ताप तपावत बा कढ़ि के नहिं बाहर आवत बा!
मन सोचत बा नित औरे कछू पर औरे कछू मुख भाखत बा !!
चित्त-वृत्ति न धीर बँधाइ सके प कहे केउ का बिसवासत बा ?
यह कौन सनेह के मारग बा कि न साँच कहे केउ मानत बा ?

## कवित्त

मन अरुझाइल, सुरझौलो प भुलाइल, सुरति नसाति सदा, लोचन पसीज जात।
हीतल तपत तेज ताप बिरहागिनु के, जिआ अकुलात नेह जानत भी खीझि जात ॥
हिय से आवत मुख, मुखसे भीतर जात, बाहर भीतर कुछु, अजब अरुझि जात।
लखन सौमित्र भाई, अजब ई प्रेम रंग, सूने दृग सूने मन, सूने सब देखि जात ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## बरवै

घन्न घमन्ड निसि नभ में, घहरत घोर।
सीय विहीन जी तन में, डरपत मोर॥
सावन घटा बिजुरिया, चमकति आइ।
चंचल चख प पलकवा, झँपि झँपि जाइ॥

जलद पटल बिच बिजुरी, कडकति जोर।
डाँटि डाँटि डरपावति, प्रान बिभोर॥
राका तम निसि बिजुरी, लखि दुख मोर।
चमकि क सिय-सुधि आनति, उर क अँजोर॥

सिय बिछोह चित आवत, सुधि अकुलाति।
भरल छोह से छतिया, फटि गरुआति॥
मुँह पर बिथुरि क लट-जट, सटि सटि जाँय।
सिय कर छोह-अँगुरिया, नहिं सुरझाँय।
गइलि बीति ऊ रतिया, जब सिय आइ॥

बिह्वल निरखि क मुखवा, प्रेम सुलाइ।
भरत न नेह क पतवा, बिरह बयारि।
हिय तरु कर हरिअरिया, रखत सँभारि॥
लखन, न हाल हिय पूछऽ, हिय उनमाद!
छोह, बिछोह, मदन से, कुछु नहिं याद॥

लगा लगी क बिलगलें, नयन अनूप।
हिय लगि हिय कस बिलगे? प्रेम सरूप॥
अब कर बिलग क बतिया, तब कर छोह।
जनु हिय दूनो पइठत, तप हिम खोह॥

लखन, कहीं जो सिय के, दोस निदान।
निज कस कहीं अदोसी, बरति समान॥
अरुझि अरुझि मन अरुझल नहिं सुरझात।
सुरझि सुरझि सुरझावत, तबो अरुझात॥

जो जनितीं सिया अइसे, बिलगी आज।
पिता बचन ना मनितीं, सुरहित काज॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## दोहा

लखन, तोहरा से का कहीं, अपना उर के पीर।
निकसि पइठि जनु भीतरे, चूसे चोखवल तीर॥
बूँदि बरसि हिय छेदि कत, कइलसि चलनी चाम।
ना सिय लायक ई रहल, ना रह हमरो काम॥
लखन, बिरह-सिय हिय कइल, झरना चाम समान।
सुख-मैदा झूरि झूरि गिरत, दुख-चोकर अवसान॥
चखन लखन, ई का कहीं, बरबस सगर से खींच।
दुख हिय आनत प्रलय-जस, जनो दबोचत मीच॥
पात-पात से लुढ़ुकि कर, जल बुँदि गिरत क सोर।
हिय कर कन कनसे निकसि, छोह झरत चुप लोर॥
उत प्रकृत्ति आनन्दमय, नस-नस सुख संचारि।
तरसत विलपत इत हिया, छन-छन दृग जल ढारि॥

## १५ मात्रिक चौपाई

त-अस बरखा रितु हे भाई। धीर न कसहूँ सकीं बँधाई॥
माया प्रकृति क, तन क सुभाव। कसहूँ सकीं न करि बिलगाव॥
पंच तत्व निरमित ई सृस्टि। सासति माया जगत समस्टि॥
छिति, जल, पावक, गगन, समीर। तत्व पंच ई कहल सरीर॥
अनु अनु मिलि सरीर ई बनल। कोस-केन्द्र क अनु तहँ बसल॥
कर्म-लेख गँठिआइ जे रखे। ते अनुकूल भोग विधि जोखे॥
भा कहु, कोस-तत्व तन नाम। सक्रिय रह जे नियम बँधि काम॥
तत्व के अनु अनु त्रिगुन क ठाम। सक्ति रूप, सत, तम, रज, नाम॥
तीनू क्रियासील तँह रहि के। हर प्रमानु के सक्रिय रखिके॥
गुन सुभाव भीतर अनु सरलें। सदा लीन करम निज रहलें॥
महा सक्ति सम्पन्न अनु-गुन से। गुन प्रभाव केउ मेंट न तन से॥
जीव पाइ तन कस गुन नसे ? गुन प्रभाव जग अमिट सदा से॥
जानीं, समुझीं, ग्यान-बिराग। काम, धरम भी तसहीं रागा॥
बुधि बल सकल बिकार जितलीं। सम, दम, सत्त, सदा बरतलीं॥
पर जो कहऽ प्रभाव-गुन मेंटीं। सकल सृस्टि-नियम के विघटीं॥
त-अस लखन, तब कइल हमार। लीला हित अवतार बेकार॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सकी ला कइ कि ना न सवाल ? नियम निबाहे के बा ख्याल ॥
यह सें तात, सब समुझि के बाति । चली ला नियम जे सृस्टि वताति ॥
त-हे तात, रितु बरखो बदललि । पर अजहूँ सिय-सुधि ना मिलिल ॥
बरखा बितलि सरद रितु आइलि । तवो न खबरि सिया सुनाइलि ॥
फूलल काँस, उजर महि सकल । जनु बुढ़ापा बरखा दरसल ॥
उगल अगस्त पंथ सब सूखल । जनु मद लोभ सँतोस सोखल ॥
रस रस सुखल सरित सर नीर । ग्यानी तज जस ममता पीर ॥
जानि सरद रितु खंजन अइलें । पा समय जस सुकृति सोहइलें ॥
सुखद, हीन कीच, धुरि धरनी । नीति निपुन नृप के जस करनी ॥
घटले नीर विकल अति मीन । अबुध कुटुम्बी जस धन हीन ॥
साफ नील निरमल आकास । हरिजन जस परिहरि सब आस ॥
छिट फुट वृस्टि सारदी थोर । विरले लहल भगति केउ मोर ॥
सुखी मीन बसि गहिर जे नीर । सरन गइले हरि रह न पीर ॥
फुलल कमल सर सुनर कइसन । निरगुन ब्रह्म सगुन हो जइसन ॥
गुँजलें भँवर कमल प अनूप । भगत मगन जस निरखि सरूप ॥
चकवा भइल दुखित ससि देखि । दुरजन जस पर सम्पति पेखि ॥
पपिहा पेंड़ तृसित रटेला । सिव सत्रु जस सुख न लहेला ॥
दरद ताप निसि ससि हरि लेल । टरल पाप जस सन्त क मेल ॥
देखि चाँद चकोर समुदाइ । चितवें जस हरिजन हरि पाइ ॥
सगर नसल निसि मस डँस त्रास । लोक द्रोह हो जस कुल नास ॥
जइसे हिय बिकार अग्यान । मिलते सद् गुरु मोह बिलान ॥
तइसे कीम कीट बरसात । आवत सरद देखि विनसात ॥
वरखो बितल सुनर दिन आइ । सिया-पता नहिं तात, सुनाइ ॥
सिय-सोध हित कपि दल गमलें । खबरि लेइ न अजो लवटलें ॥
अवधि लवटन क सरद जे वदलि । उहो त तात, बीत अब चललि ?
ना जानीं कब दूत लवटिहें ? अइहें कबो कि ना बहुरिहें ?
सिय क कसहुँ समाद न पावत । गुनि सुमित्र, हिय धीर न धारत !!
रंच मात्र पता सिय पइतीं ? कालो जीति सिया क लइतीं !!
अवसि क्रोध अब हिय उमगिहें । जे बस सगर असुर कुल नसिहें ॥
एक दोस वस सब क संहार ? अवसि ई धरम बिरुध व्यवहार ॥
दन्ड नीति पर अस अनुसासे । सास्त्र सामुहिक दन्ड विभासे ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



युद्ध सास्त्र भी त संभासे। समय पाइ समूह विनासे ॥
तोर मोर बल तात, ई आज, रघुकुल गर्व पराक्रम खाज,
कहाँ रहल जो सोझा हमने, असुर हरलसि बिअहलि अपने ?
धिक! भुज, बिक्रम; राज बिराट! राम, लखन, धिक!! भरत सम्राट!!!
धिक! दलीप, मनधाता पित्र! जाति जनित कुल सकल कलत्र !!
जेकर बिअहलि नवही नार! सोम्फ ले भागल छुद्र लुचार !!
यह से महा प्रन राम के आज! कान दे सुन ले असुर समाज !!
हित, मित, गोत-सुकन्ठ समाज! दानव, दइत, असुर, वन राज !!
धरती, जल, नभ, गम्य अगम जे! सुन ले कान खोलि सकल जे !!
कातिक पूरनमासी जात, बिसवत चन्दा फुटत प्रभात,
जो न खबरि सिय राम सुनाइ, धनु प धरो सर राम रिसाइ !!
आ सब प्रलय करी दिन अछते! सत्य प्रमानि कहीं हम सत ते !!
तब राम संकर रूप धरी! प्रलय प महा-प्रलय अवघटी !!
अस कहि राम खीचि प्रतंचा। टंकोरल धनु हल चल मचा ॥
दिगज महि सागर नभ खल बल। भगदड़ दानव दइत में मचल ॥
जे रनिवासे बिलसति तारा। उठलि काँपि सुनत रव घोरा ॥
डरि हिय सटि सुग्रीव चेतवलसि। प्रलय! नाथ, धनु राम टँकोरलसि !!
सरद आइ क चह अब बीतल! सिय क पता न अब तक मीलल ?
सिय सधि लगि पुनि करीं उपाइ! जाइ क मिलीं नाथ, रघुराइ !!

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार, विरचित साहित्य-रामायन के किस्किन्धा कान्ड के बीसवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-अगहन सुदी १, सम्वत् २०१६, विक्रमी, तदनुसार २८ नवम्बर सन् १६६२ इसवी, दिन बुधवार।

किस्किन्धा कान्ड के प्रारम्भ तिथि असाढ़ बदी एकादसी सम्वत २०१८ विक्रमी तदनुसार ८ जुलाई १६६१ इसवी दिन सनिस्चर रहे। त—यह तरह एक बरीस चार महीना २२ दिन के अवकास के समय सें, समय समय पर लिखा के ई कान्ड पूरन भइल।

जे यह कान्ड के मंन, वच, करम से स्रद्धा आ भक्ति के साथ नित पाठ करी तेकरा मन वाच्छित फल यह संसार में मिली आ भगवत कृपा से परलोक में सद गति होखी।

## इति किस्किन्धाकान्ड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## सुन्दर कान्ड

### पहिला सरग

प्रारम्भ तिथि—अगहन सुक्क २, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, २९ नवम्बर, १९६२ ईसवी, मंगलवार ।

ब्रह्म-बन्दना, राम स्तुति आत्मकामना ।

समुन्द्र लाँघिके सुवेल परवत पर बइठल हनुमान जी के लंका के सोभा निरखल । नगर के बरनन कइल, फेन ओकर बल वैभव के विचार कइल आ संका कइल कि कपि सेना कइसे यह बली लंका पर विजय पाई । साम दाम भेद नीति बरति के भी इहाँ केहू कुछ ना कर सकी । फेन चिन्ता तेजि के सीता खोजे के सोचल—आ नगर में प्रवेस करेके उपाय गूनल । प्रवेस करे कें निस्चय कस्के आगे बढ़ला पर लंका नाम क निसाचरा से भेंट, ओकरा से वार्ता आ मुठभेड । लंका के अपना वर के हाल बतावल आ हनुमान से नगर प्रवेस करे के कहल । हनुमान के नगर प्रवेस ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## ब्रह्म बन्दना

### १३ बर्निक छन्द

नमीं ले ऊ हम कारन[1] सृस्टी के जे।
सद चिद तत्व के, लोक आस्रय[2] जे॥
नमीं अद्वैत के नित्य हेतु[3], मुक्ति जे।
भजीं ब्रह्म के ऊ, सास्वत[4] व्यापक जे॥
भीस्म हऽ भीस्म के[5], भयी के हऽ भय जे[6]।
पावन[7], पावन, गति प्रानी के हऽ जे॥
हऽ महा ऊँच पदी[8], नियन्त्री[9] जे एके।
परे से परे हऽ, रच्छक[10] रच्छकी के॥
हऽ ऊहे सरन्य[11], त ऊहे बरन्य[12] हऽ।
ऊ सृस्टि कारन, परमऽ प्रकास हऽ॥
प्रहर्ता ऊहे हऽ, भव-कर्ता ऊहे हऽ।
निस्चय परं हऽ, निर्बिकल्प[14] ऊहे हऽ॥
सुमिरी ले वोही के, भजीं भी वोही के।
जग-साच्छी रूप जे, नमीं ला वोही के॥
सत्य निधान जे, निरालम्ब ईस के।
मन से भजी ला, जग-पोत राम के॥

---

१—कारन = कारण = सृष्टि रचना का आदि कारण। २—आस्रय = आश्रय = संसार का सहारा मात्र। ३—हेतु मुक्ति = जो मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन है अर्थात जिसकी कृपा से मुक्ति मिलती है। ४—सास्वत = शास्वत = सनातन। ५—भीस्म हऽ भीस्म के = भीष्म है घीष्म का अर्थात जो भीष्म बड़ा है उससे भी बड़ा है। ६—भयातुर को भय दिखाने वाले का भी भय है। ७—पावन पावन = पावन का पावन है अर्थात पबित्र जो है उससे भी वह पावन है। ८—ऊँच पदी = ऊँच पद का ग्रहरण करने वाला। ९—नियन्त्री = नियत्रण करने वाला। १०—रच्चक रच्छकी के = रक्षक का भी रक्षक है। ११—सरन्य = शरण्य = शरण में जाने योग्य, शरण देने वाला। १२—बरन्य = बरण्य = वरण करने स्नेह करने योग्य है। १३—निस्चय-परं = परम निश्चय है। १४—निर्बिकल्प = कल्पनातीत, कल्पना करने के परे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## राम बन्दना

### १४ बर्निक छन्द

भजें ले संकर, विधि, बिस्नू जे देव के।
जालें सरन देवगन सहुँ जेहि के॥
जग अवतरि जे रच्छे भक्त भाव के।
गहे लें जे बाँहि, कहि त्राहि, गिरल के॥

दया के समुन्द्र, भव-ताप, भय-हर्ता।
त्राता विभीखन नृप रावन निहन्ता॥
सिला के तारक जे, भिल्लिन बेर भख्ता।
चित्त-वृति सिव जे, आनन्द नित्त भर्ता॥

सुमिरी ले तेही राम, भजीं ले तेही के।
तेही दयालु के, देवता, देव तेही के॥
तेही ब्रह्म के, निस्कल, निरबिकल्प के।
सगुन रूप राम में लीला प्रतीक के॥

नियन्ता जगत के, भरन्ता जगत के।
पालक जगत के, कृपा-पात्र नत के॥
सरन्य बरन्य के, देव राम राम के।
सीता पती के, विस्वनाथ, नाथ "नाथ" के॥

अजोध्या के राजा, कर सर, चाँप धारी।
सुन्नर तुनीर, तीर भरि पीठ पारी॥
तन प बसन छाल; जटा सिर भारी।
निराधार-आधार जे मुनि मन हारी॥

नर रूप ब्रह्म के, सगुन देव, भक्त के।
भव-ताप सागर पोत एक मात्र के॥
माया फँसल नर, नारि के ओधार के।
प्रेम-पोतहार भव-सिन्धु अपार के॥

सुमिरी ले, नमी ले, विनयी ले भजि के।
तेही राम, राम के, द्वापर के राम के॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



असुर के नासक, तारक, भक्तन के।
लंका के विजयी, अवध राजा रामके ॥

## दोहा

पल निमेख परमानु युग, बसत कलप जेहि अंक।
भजु ना मन कस राम तेहि, करि हिय अमल निसंक ॥
सहज सदय रखवार जे, बनि जिव बस मध पिन्ड।
रवि-प्रकास बनि तम नसे, भजु मन सगुन से पिन्ड ॥
पंच तत्व गुन चित विकल, रंच न धरन दे धीर।
उलटि पलटि नित देत मन, सहुँ न रहन दे थीर ॥
सान्ति मिले कस प्रेम बिनु, प्रेम न बिनु विसवास।
निस्ठा बिनु विसवास मन, करत जगत उपहास ॥
जप, तप, करम, अभ्यास जे, धरम, लछन मन माथ।
बनत सहाय सब दरप के, बिनु सहाय रघुनाथ ॥
बार बार हिय जुटि विलगि, अनुरागी अनुराग।
होत न थिर, चंचल विकल, बिनु तव कृपा न जाग ॥
भव-भय हरन भगत तरन, कृपा सिन्धु रघुनाथ।
त्राहि, त्राहि मो गिरल के, कर धइ तारीं "नाथ" ॥

## १३ बर्निक छन्द

विरुदावली निज, मो अघ करनी।
गुनि प्रतीति मन, कीरति अपनी ॥
करबि उजित जे मो हित मनलीं।
हे प्रभु नाथ, अनाथ हम गिरलीं ॥

## आप्न कामना

पालक प्रजा के जगत स्वस्ति दाने।
नृपति न्याय मारग से जग गामे ॥
जगत गाइ साधुन के सुभ माने।
मानव समस्ते समाज सुख आने ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## कवित्त

माँगीं स्वर्ग सुख नाहीं जाँचीं धन धाम नाहीं,
बार बार जन्म भी न माँगी ले भर जोनी के।
वैभव आनन्द सुख, भोग लोक इन्द्रासन,
विलास हुलास रति, रंग संग इन्द्रानी के ॥
सम्राट बनीं भूपति समाज सास्त्र नेता भा,
रसी रस रंग नाद काव्य कला मस्तानी के।
नाहीं हम चाहीं, चाहीं जन्मीं जाइ जगती में,
जनम जनमान्तर ला नासीं ताप प्रानी के ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

नमि प्रभु मनमें कपि चहुं तकलें। सोभा अपलक लंक के लखलें ॥
बसल त्रिकूट गिरि पर लंका। रच्छित रावन बनल निसंका ॥
चारि ओरि गहरि जल खाईं। जहाँ से रच्छित किला चढ़ाई ॥
भाँति भाँति सस्त्रायुध संचित। योद्धा, बीर, सैन, सुरच्छित ॥
सहर प्रकोटा बड़, उँच कोट। सस्त्र सगर सजबल बड़ छोट ॥
चारि दिसा दृढ़ सहर पनाह। फाटक ऊँच, बिसाल, सनाह ॥
डटिके असुर दल देत पहरा। बँधले आयुध तन प उपरा ॥
सैन घुमति भीतरि सुसज्जित। करि कसरत, परेड़ कवायित ॥
बीच में नगर बसल मनोरम। इन्द्रपुरी बइठाल जनु उत्तम ॥
बड़ बड़ कोट, उठल अति ऊँच। चमकत चहुँ दिसि ऊँच से ऊँच ॥
सड़क विसाल, बजार कितेक। सर, तड़ाग, झर, निझर अनेक ॥
बाग, बगइचा त फुलवारी। चमन, लाल, बीथि फौवारी[1] ॥
फलि फूलि लदल बृच्छ बहुतेक। विविध मनोहर सुनर अनेक ॥
बिहरत पसु पंछी कइ केलि। किलकत, कलरत, साथ अकेलि ॥
उड़ि, लड़ि, दौड़ि, करत पुनि मेल। बाँटत चारा, मनमथ खेल ॥
अस पुर लंका लखि, हनुमान। कइले प्रस्न बहुत अनुमान ॥
असत सुरच्छित देस के आजु। करि केउ कस सकिहे अकाज ॥

---

१—फौवारी = फौवारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कपि दल यदि सकल जुटि अइहें। यहि करि कुछ न विनास सकिहें[१]॥
सुर लड़ि करि न सकल संहार। तब नर, कपि कर कवन सुमार॥
न चलि सकी साम नीति उहवाँ। दान, भेद न सफलीं[२] जहवाँ॥
करि कुछ बानर चारि सकिहें। अंगद, नील, सुकन्ठ डटिहें[३]॥
हमरो बुधि कुछु सकि फरिआई। होइहें दहिने जो रघुराई॥
त गुनि अस कपि सोच विमोचलें। प्रथम लेन सिय पता क चहलें॥
जीअति हई कि नाहीं सीता? छिपवलि यहँ कि घर अन मीता?
गुनि अस पुर घुसल बिधि गुनले। पता लगावल तहँवा चहलें॥
निहचय कइलें राति क गइल। लघु धइ रूप छिपल लुकाइल॥
गदहबेरि[४] हो लघु कपि चलले। नगर-दिवाल लुकाइ लघलें॥
सत अठ महल कोट लउकलें। जे कतार में अद्भुत सोभलें॥
सुबरन रतन जड़ल करिगिरी। रात चाँदनी चमकति सगरी॥
बन्दनवार सोन क जाली। सुन्नर टँगल विसाल दिवाली॥
सत रंगी सफेद तिमंजिल। महल पाँति खाढि नभ अंचिल[५]॥
लखि कपि कला भूरि सरहलें। रिपु गुन गौरव के नहिं निन्दलें[६]॥
पुनि गुनले अरि सैनिक सक्ति। रावन रच्छित किला क भिक्ति॥
गुनि निज बल रिपु बल क तुललें। सैन दृस्टि से सत्रु परिखलें॥
सोचलें इहाँ न जन क गिनती। चतुर सुजान बुद्धि के भिड़ती[७]॥
अंगद, मैन्द, सुग्रीव, जवान। द्विविद, सुखेन, कुमुद, जमवान॥
हँलिवत, नील कइ कुछु सकिहें। कपि बटोर[८] त निहचय मरिहें॥
आस रहल अब राम के विक्रम। लखनो करि सकिहें कुछ उपक्रम[९]॥
अतने में लंका कर मलिकिन[१०]। लंक नाम सामने अइलिन॥
डाँटि पुकार परिचय पुछली। जबले जीयत कहेक कहली[११]॥
रे बानर, ई नगर सुरच्छित। रच्छति सैन सगर सुसज्जित॥

---

१—विनास सकिहें = नुकसान नहीं कर सकेगा। २—सफली = सफल होगी। ३—डटिहें = सामना कर सकेगें। ४—गदहबेरि = अन्धेरा होने पर तुरन्त। ५—नभअंचिल = आकाशके अंचल। ६—निन्दलें = निरादर किया, निन्दा संज्ञा से क्रिया बनी। ७—भिड़ती = भिड़ान, मुकाबला। ८—बटोर = जमाव। ९—उपक्रम = घोर पराक्रम, उपाय। १०—मलिकिन = मालिक, स्वामिनी। ११—तुम्हारा मरना निश्चय है। मरने के पूर्व परिचय दो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सकसि न ते पइठि यहि नगरी । कतनो छल, बल लाउ सगरी ॥
होइ विनम्र हनुमत पुछलें । कस रे नारि, अस डाँटि बोलले ?
नयन तोर भयंकर लखलें ? कस अस भाखसि रोस रखले ?
तब भन नारि, हम हइँ लंकिनी । रच्छित रावन, लंक रच्छिनी ॥
जे हमरा पर आक्रम करी । बुला क काल युद्धि पचि मरी[1] ॥
अस भनि, रूप अति विसतरलसि । मारग रोकि क पाँव रोपलसि ॥
तब लंका हनिवँत बिनवलें । अमन नगर भर कइल चहलें ॥
अड़ि क लंका डाँटि गरजलसि । कपि ढिग जाइ चटकन[2] मरलसि ॥
हनिवँत कोपि क मारन चहलें । तबो दया कइ क मन रोकलें ॥
नारि जानि क लघु मुकिअवली । लंका विकलि मुरछि क गिरली ॥
तिय-कराह सुनि कपि दरवलीं[3] । हो विनीत तब लंका भखली ॥
हे पवन सुत, अब हम चिन्हलीं । रवाँ नीक मरजाद निबहलीं ॥
कि सतवान क करम कइलों । धरम भनित करतब बरतलीं ॥
हईं कपि, हम सचमुच लंका । जेह क रवाँ पछरलीं[4] बंका ॥
सुनीं मोर विधि वर कर बात ! कान खोलि के हे कपि तात !!
ब्रह्मा मुदि वर दिहलें मोहि । रच्छसि लंक अतुल बल तोहि ॥
पर जब वानर बल ते हरवे ! हो बिवस जब ते बल दुखबे !!
बल प्रभाव सब नसिहें तोर । घटि बल राछस होखी थोर ॥
आ कुल असुर क होई नास । विघटी रावन राज-विकास ॥
से वर हे कपि, अब फुरिआइल । सिय व्याज रावन विनसाइल ॥
त-जाईं अब नगर समाईं । जे चाहीं से काम सधाईं ॥
लंका दसमुख रच्छित आप । बिनसलि निज क आजु अभिसाप ॥
वर विवस हम हरलीं सगरी । मिलीं जाइ सिय सत के पुतरी ॥
तब आगे कपि सहजे बढ़लें । नगर प्रवेसि लघु-रूप घुमलें ॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य रामायन के सुन्दरकान्ड के प्रथम सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि—अगहन सुदी ४, सम्वत २०१९, विक्रमी, तदनुसार १ दिसम्बर १९६२ इसवी ।

---

१—पचि मरी = मर मिटेगा । २—चटकन = तमाचा । ३—दरवलीं = द्रवित हुए, दया जगी । ४—पछरलीं = हरा दिया, पछाड़ दिया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### दूसरा सरग

प्रारम्भ-तिथि—अगहन सुदी ४, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

हनुमान जी के लंका नगर में रात के सूच्छम रूप धइके सगरे घूम-घूम के सीता के खोज कइल आ नगर के दृस्य के बरनन। युवती समाज के रंग राग के बरनन। बेस्यालय के बरनन राच्छस जीवन के बिलास बरनन। रावन के रानिन के, रखनिन के, नाच रंग के सब बरनन। मदोदरी के सीता समुझ के हनुमान के खुस भइल आ फेन अपना बुधि के धिकारल, सीता के ना पवला पर दुखित भइल आ प्रान त्यागे के सोचल। फेन राम भक्ति से उतसाहित होके खोज कइल। बिभीखन के घर आइल। भेंट—भक्ति के चर्चा। बिभीखन से सीता के पता जान के बतावल राह से असोक बन गमन।

### १५ मात्रिक चौपाई

नगर सगर प्रइठि कपि ढुँढलें। करत खोज व्यग्र चहुँ तकलें॥
हाट, बजार, चौहट लखलें। गली, मकान, सड़क, तलसलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



टोल टोल घूमि कपि जँचलें। बड़ छोट गृह, नगर निरखलें॥
सहर घूमि घर घर निरिखलें। युवति समाज जमि कर ढुँढ़लें॥
करन कुंभ निकुंभ गृह देखि। मेघनाद आदिक घर पेखि॥
सुन्दरि एक से एक देखलें। रति रँग रंजित भेख पवलें॥
केहु मदिरा पति संग पीअति। केहु केलति मदं-रत हो विहरति॥
केउ भुज पास बाँधलि लवकलि। केऊ बाद नृत नीरति लखलि॥
केहु बसन तजि मद बेहोस। अटपट भनति ह भरि भरि जोस॥
केउ प्रकोट पर पति ले सूतलि। केउ पुर नायक संग ले बिहरति॥
दूत भाव कपि लुक छिपि झँकले। राम काज चोर बनि घुमले॥
जँह जँह कपि बुढिअन क देखसु। उलटि पाँव बात सुनि पलटसु॥
युवतिन सगर रँग रत पवलें। एक से एक गर्ना क सुनलें॥
नृप परिवार घुमि जब थकलें। नगर चौक मध्य प्रवेसलें॥
घुमि घुमि सगर बजार देखलें। छत, कमरा, अँगना निरखलें॥
कतो ना सिय जब पाइ सकलें। व्याकुल विकल बिलखि भटकलें॥
तब निरास हो गली समइलें। मुख मुख घर घुमि सीय जोहलें॥
हो निरास कपि अइलें उहवाँ। बेसवन के छबि-घर रह जहँवाँ॥
एक से एक सुनरि अटारी। रतन सोन कइल चितकारी॥
महा विसाल, ऊँच, अति कोठा। ऊपर निरखत गिरत मुरेठा॥
छूअत गगन, चाँदनी रात। मलय पवन रस बरसि सोहात॥
सड़क गली जे मह मह महकत। रतन विचित्र दीप चहुँ चमकत॥
युवक, वयस्क, असुर बूढ़, दल। सजि धजि टहरत मदमें मातल॥
मग दलाल दल ते फुसिलावत। लखवत माँति सउदा पटवत॥
रूप, उमरि, रँग कहि बुझावत। नया से नया माल बतावत॥
चमकति नभ में सुनरि अटारी। सजि धजि बनवलि जे मनहारी॥
अँगुरी दिखा चढ़न क कहत। छबि गवाछ बइठलि दिखावत॥
जहवाँ झाड़ फानूस हंडी। बरति चमकति छत में टंगी॥
सुन्दर साज सजवल कमरा। अतर गुलाब सुगन्धि से भरा॥
जरी क तकिया जरि क परदा। तोसक मसनद जरी क सुखदा॥
चम-चम चमकति झाड़से जोति। आसन-चित्र टँगल चहुँ भीति॥
चौरासी बिधि, रमन क केलि। लखत, जगाइ मदन झट देलि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस उदीपन साज सजवले । बेस्यालय क घुमि घुमि देखलें ॥
कतो नाद नृत कतो सराब । कतो ठहाका, कतो मजाक ॥
कतहूँ असुर मस्त रति रंग । कतो नसा में कर हुडदंग ॥
कतो दूइ पकड़ि एक रंडी । अति आपस में लड़ें उदंडी ॥
झगरत, मारत, पीटत एक । एक उठा फेंकत भुइँ एक ॥
बेसवा बनलि बीच बेहाया । बचवति उनक दिखवति दाया ॥
तसहीं बेसवा रमति निसंक । असुर संग सूतलि परजंक ॥
उर बँधि, मदि, सटि, कुच संचलति । दुइ भुज जोरि, खींचि उर सटति ॥
चूमति मुख, अधर मदि पीअति । मदन-नयन दुरा मुख पेखति ॥
बँधलि परस्पर लिपटलि परल । सजल सेज जलज जहँ बीछल ॥
झँपल नयन अध, रस में डूबत । रति रस मदन क समुझत बूझत ॥
तिय कहुँ उमगलि, क्रीड़ा करति । असुर बदन सटि मदन हिलोरति ॥
मदन मताइलि रति बिपरीति । लिपटति हिय पुनि हुलसि सुरीत ॥
अलसि, थकलि जो हिय सटि सूतति । झपि खुलि चख मुँख ऊँघि पेखति ॥
असुर-तसत निंदाइल लिपटत । रस तरंग मुदि बहत मातत ॥
हिय से हिय सटि मेलत निसंक । धइ धइ दाबि क बाँधत अंक ॥
गोल-कठोर कुच उर से सटल । रहि रहि उसकत उनमदि दबल ॥
जीमि भूमि पीअत मुदि नयन । आँनद मद-रस भइल विलयन ॥
सुरति विरति रमि दुनु रस लेत । देखत मुख चुमि चूमा देत ॥
अस रति अति जब लेति उसास । दृग अँध झँपल, सलज मुख हाँसि ॥
सुधि नाहिं तन कि छिपल उघार । जनु रति मदन, मारल सिकार ॥
सुधि बुधि बिसरल, लाज भुलान । कुच दुनु सहमल अंग थिरान ॥
अलसलि चूमति, लजि मुसुकाति । गाल प गाल धऽ हिय लिपटाति[1] ॥

---

१—यहाँ वेश्यालय के दृश्य-चित्रण में संयोग शृङ्गार का समावेश होना वर्णन परम्परा से बाहर की बात नहीं है। भवभूति, हनुमन्नाटक, प्रसन्न राघवम्, रघुवंश, कौशल रामायण, विद्यापति आदि के अतिरिक्त महर्षि बाल्मीक जी ने थी शृङ्गार वर्णन में कमी नहीं की है। फिर यह तो वेश्यालय का दृश्य था अतः साहित्य प्रधान साहित्य-रामायण में इसको छोड़ना ही खटकने की बात होती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



घुमत सगर अस लखत लजात। नसल साल कपि गुनि पछतात ॥
धिक्कारत निज, काम घिनात। घर घर घूमत तबो बलात ॥
दुखित, लजासु, कपि हो उदास। करतब गुनि तब गृह गृह जासु ॥
कइ रिसि, खीझि जो मन अकुलात। हिय हुलासि, प्रभु काज सुझात ॥
धरम-दूत गुनि धीर बँधात। तब पग दृढ़ होइ आगुब ढ़ात ॥
घुमि अस घर उहाँ जब थकलें। आ सिय कतो तहाँ न पवलें ॥
तब निरासि रनिवास चललें। जहाँ महल रावन क रहलें ॥
चौक सामने सौंध लउकलें। रावन राज महल जे रहलें ॥
महा बिसाल, महा रमनीक। सोन रतन निधि सुखमा टीक ॥
अस बिसाल, अस सुन्दर चमकंत। इन्द्र, कुबेर, स्वर्ग गृह निहसत ॥
चमचमात मनि सम दमकत। रंग रंग कला छबि, निखरत ॥
हीरा, मोती, पन्ना, लाल। मानिक, मूँगा, मनि बहु माल ॥
लटकत, जड़ल, बनावल चित्र। गृह-भिति सोभत अजब बिचित्र ॥
राज-ठाट लखि अस चिहइलें। कपि सुभाव से चकित हो तकलें ॥
हय, गज, रथ त बृसभ क साला। सुनर रम्य सुचि बड़ बिसाला ॥
अगिन[१]-अस्त्र बहु सस्त्रागार। राच्छस महाबीर रखवार ॥
सुबरन बनल महल के द्वार। महा बिसाल सोन केवार ॥
ऐरावत हौदा बँधवाय। दस बीस एक साथ समाय ॥
हीर क बन्दनवार लटकल। लरी मोति गूँथि छत लरकत ॥
बीथिन बीथि फूल नकासी। प्रकृति-गलइचा प महि हाँसी[२] ॥
मीन, हौज-फौवारा ग्राह। भरल, झरत, केलत उत्साह ॥
नाच, रंग दरबार, क भवन। सयन, मन्त्रिगृह, पाठन-पठन ॥
पृथक रानि, पटरानि निबास। लँउड़ी[३] नोकर अलगे बास ॥
सब रचलन बिसुकरमा[४] आप। ढ़ारि साँच जनु प्रकृति क छाप[५] ॥
जे लजवत इन्द्रासन रूप। बनवल देवन, रचल सरूप ॥
सगर घूमि रनिबास गमलें। जँह जुवतिन कर देस बसलें ॥

---

१—अगिन-अस्त्र = अग्नि अस्त्र, तोप, बन्दूक आदि। २—महि हाँसी = पृथ्वी की हँसी हो, अर्थात् फूले हुए फूल सब मानो पृथ्वी की हँसी हों। ३—लउडीं नोकर = नोकरानी नौकर। ४—विसुकरमा = विश्वकर्मा। ५—प्रकृतिछाप = प्रकृति के साँचे में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रस, सिंगार नर, नारि क रंग । हलरावें रति मनमथ संग ॥
सबे, बेहोस सब मदि क्रीड़ति । रति जनु मनमथ तन प लोटति ॥
नर तहँ एक, हजार जुवती । काम परायन, मद क चढ़ती ॥
केउ केलति, केउ केलि, थकाय । केउ बेहोस, केउ जोस बताय ॥
असन बसन केउ इतउत परल । तन उघार मुख छबि विरूपल ॥
मद रत, रति केउ सिथिल सूतलि । थाकल माँदलि मद, बिसूरलि ॥
सबनि केलि, रावन थकवलसि । सरिस ईन्द्र मदन मद नरलसि ॥
सबनि काम रस रंग में रँगल । तन धइ काम, रति जनु केलल ॥
जँह कपि जासु तहँ अर्स देखसु । एक से एक सुनरि क पेखसु ॥
एक एक रानि कपि तकलें । तेजि धरम प्रभु काज निबहलें ॥
रनिबासे के बिअहलि नारि । सब कपि खोजि बइठलें हारि ॥
भर रनिबास एक नर रावन । अनत नारि जे काम परायन ॥
मृगी झुंड जस मृगा केलत । भा इन्द्रासन इन्द्र बिहरत ॥
तस तँह भोग बरसा बरिसत । भर रनिवास रस रँग सरसत ॥
नारि तृपित सब प्रेम विभोर । रावन पति लगि प्रेम अथोर ॥
सहसनि[1] बिअहलि[2] क कपि देखलें । कतो न सीता के ऊ पवलें ॥
मन दुखल, लखि नारि क जूथ । नगन, उघार, बिलसत विरूप ॥
कारज जे कपि सील क नसलसि । आचरन, सास्त्र विरुध मनलसि ॥
जदपि तटस्थ मन कपि हरदम । निर विकार चित्त वृति निरमम ॥
तदपि दुख कपि बहुते मनलें । गुनि संकोच कि सील नसलें ॥
पर निज क प्रभु सेवक गुनि के । दास-धर्म गुनि तोखलें[3] मन के ॥
यदि उदास पर हिय उतहसलें[4] । आगू लागि हिय हौंस बँधलें ॥
तजि रनिबास आगे बढ़लें । गइले जँह घर नाच रहलें ॥
तहाँ के रंगति अति बेढंग । अेक से अेक नारि रत रंग ॥
मद पी, गत बुधि, गिरलि उतान[5] । असन, बसन, त नहटल तमाम ॥
कुच उघार त सारी खिसकलि । खुलल जाँघ प नीबी बिछुरलि ॥
बीनासे फेउ लिपटलि चिपटलि । केउ मृदंग पलु ढुकलि, पुढुकलि ॥

---

१—सहसनि = सहस्रों, हजारों । २—बिअहलि = व्याही हुई धर्म पत्नी । ३—तोखलें = तोख बोध बधाया । ४—उत्सहलें = उत्साह संज्ञा से क्रिया बनी । ५—उतान = चित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



केउ सरँगी क तकिया दिहले । केउ सराब सी सी मुँह लवले ॥
केहु सुराही क ढरकवले । भींजल बसन तन पर सटले ॥
केलति, थाकलि, मद बेहोस । नसा सराब में बहुसति[1] जोस ॥
नाँचि गाइ थकलिं केउ मांदलि । भीजलि स्रमि, मद, नींद माँतलि ॥
गिरलि लउकलिन तहँ नृत अन्त । जनु रँग उदसल[2] अन्त बसन्त ॥
ई सब रहिं नहिं बिअहलि नारि । हरि क बनवलि[3] बैठ से यारि ॥
जग भर के ई रहलीं सुनरि । बनवलि गइलीं हरि क अपसरि ॥
जिन सँग अन्त बिहरत रावन । मद माँस, भखि बनल अपावन ॥
उन क लखि कपि घिन अति मनलें । गुनि प्रभु-काज धीर न नसलें ॥
तबो खोजि सिय तहँ न पवलें । हो निरास उहाँ से हटलें ॥
नाच भवन कर बगले सटल । महल अवर तब अेक लउकल ॥
तहाँ पहरा में रहलीं नारि । राखलि लानि बलात निकारि ॥
किनर, जच्छ, गनधरब सबहीं । सुन्दरितम तिनमें जे नवहीं ॥
भा लोक तीनू के बड़की । सुन्नरि से सुन्नरि अति लड़की ॥
जबरन रावन ला जे रखलसि । बहुत भाँति पोल्हांवल[4] चहलसि ॥
मानलि,[5] खीझलि,[6] अध-अमानलि[7]। रहलिन बिबिधि भाँति सतावलि ॥
महां, दुखी बिलपति, परिसान । सब बिधि झेलति अति अपमान ॥
रोवति, कानति, बिवस, बेहाल । छछनति, बिलपति, दसा, कुहाल[8] ॥
ला तहँ आस[9] कपि घर घुसलें । सबनि देखि हुलिया मिलवले ॥
गम जे सिय क रहलीं दिहलें । कहि बहु भाँति रहीं बुझवलें ॥
पर सीता न तहां लउकलीं । हो निरास तब कपि लवटलीं ॥
तहँ से चलि अइलें जहँ रावन । सूतल पलँगा पर मन भावन ॥

---

१—बहसति जोस = नशा में जोश भर भर अटपट बात बकती है । २—उदसल = उदास से उदसल बना, उदासी हुई । ३—बनवलि = बनायी हुई । ४—पोल्हावल = धीरे धीरे हर तरह से मिला कर राजी करने की क्रिया । ५—मानलि = मान करके आत्म समर्पण कर चुकी है । ६—खीझलि = खीझलि, यानी जो उस व्यवहार से बहुत क्रोध करके चिढ़ रही है । ७—अधमानलि = नीम रजाँ, आधी राजी हो गई हैं । ८—कुहाल = बुरी-दशा । ९—ला तहँ आस = वहाँ सीता को पाने की आशा रख कर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तहँ क सोभा कस कवि कहे। कलम लोह से कस रस बहे[१] ॥
धइ तन जनु सुन्दरता अपने। बइठलि, डोलवति चँवर समने ॥
धन कुबेर, कला बिसुकरमा। इन्द्र राग, रस, छबि चनरमा[२] ॥
लछिमी क बैभव, रवि कर रंग। सुरधनु सुखमा, सब बसि संग ॥
बढ़वति छबि सुखमा परजंक[३]। दसमुख नृप जहँ सुतल निसंक ॥
तहैं बगल रति सम पटरानि। बयसि किसोरि त बड़ि छबिमानि ॥
दह दह गोरि त दमक पेसानि[४]। उधरल कुच, दुइ छबि लासानि[५] ॥
प्रफुल गाल, नयन अध झाँपल। जनु लजवत कमल अध विकसल ॥
लमहर भुज जनु लतरि सुबरन। जाँघ सुडौल केल क थम्भन ॥
मुख दमकत जनु चाँद मुखरा। नागिन लट अमिय पी उपरा ॥
धइके रावन सूतलि लिपटलि। अलसि मदन धऽ रति जनु पौढ़लि ॥
मानिक दीप जनु जरि बगले। हँसि छबि दिखवत लाज ढँकले ॥
प्रभा सहज तन क अस चमकत। जनु गलि सुबरन आगि दमकत ॥
लखि कपि तेहि भइलें निहाल। पोछि लपेटि चूमि खुस हाल[६] ॥
कपि सुभाव नचि, कुदले ऊँच। खँभि पकडि छत गइले पहूँच ॥
उतरि क पुनि लखलें पटरानि। मनलें उनके सिय महरानि ॥
कपि सुभाव किलकि पुनि कुदलें। गुनि प्रभु काज सफल हरखलें।
पर बुधि धइलसि तुरत ठिकान[७]। करि गलती आपनि अनुमान ॥
का कबो रवि पच्छिम उगिहें? का कबहुं सिय रावन तकिहें?
धिक बुधि यहि जे सोय समुझलसि! असुर नारि मातु निज मनलसि!!
हो दुखित कपि कुबुधि धिकरलें[८]। नभ नमि छमा सीय से मँगलें ॥
त पुनि गवरि[९] मिलबलें हुलिया। कहले राम जे सिय क चिन्हिया[१०] ॥
पवलें न रचि समता सगरी। उ रहलि पटरानि मदोदरी ॥

---

१—अर्थात लोह की बही हुई रस विहीन कलम कैसे उन रस भरी बातों का वर्णन करे। २—चनरमा=चन्द्रमा। ३—पर जंक=परयंक, पलंग ४—पेसानि=पेशानी, मस्तक। ५—लासानी=लाशानी, बेजोड़। ६—खुस हाल=खुस (प्रसन्न) ७—अर्थात् होस हुआ। बुधि अपनी गलती समुझ सकी। ८—धिकरले=अपनी बुधि को धिक्कारा। ९—गवरि=गौर करके। १०—सिय चिन्हिया=सीता के पहचान की चिह्नानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हो लजित कपि उहाँ से चललें। पुस्पक यान राहमें पवलें ॥
चढ़ि उतरि तहँ तकले बिसेखि। सूतलि युवतिन सुन्दरि पेखि ॥
हो निरास कपि तब अनुमनलीं। अवसि सीय अनत कहुँ छिपलीं ॥
भा निरास हो• तजली प्रान। सहि ना सकलीं जब अपमान ॥
भा मग में ही कुदि डुबि मरलीं। असुर यान समुद जब लँघलीं ॥
रवने जान कि मारि डललसि। कि गुनि सवति मदोदरी भखलसि ॥
कि तन सत-बल सत-हित तजलीं। बिरह लुतुकिये जरि कि मरलीं ॥
अस गुनि कपि अति भइलें उदास। काज बिफल लखि टूटलि आस ॥
लवटल बितले अवधि बेकार। नृप दौड़े मरिहें जान अकार।
गुनि अस मूअल जरि क चहंलें। पर बल प्रभु भगति उत सहलें ॥
गुनि कि नित उतसाह मफललें। नर बल बिनु उतसाह हरलें ॥
खग सम्पाति कहल इअदलें[1]। बन असोक में ढूँढल [2]ठनलें ॥
त चढ़ि कोट महल चहुँ तकलें। निकटे भवन अन इक देखलें ॥
झट कुदि क कपि उहां पहुँचलें। राम लिखल भीतिन प लखलें ॥
लगल पेड़ तुलसी क पेखले। पूजा थल बि ध कइल पवलें ॥

## दोहा

अनुमनलें तब कपि हरखि, अवसि इहाँ केउ सन्त।
प्रभु पूजत हो प्रेम रत, जीवन सफलत[3] अन्त ॥
लंका निसिचर विकट बस, करत सकल उतपात।
बसि कस सज्जन सक इहाँ, [4]बढ़वत तुलसी पात ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

पर बा इहों भजत केउ राम। घर पर लिखले सगरो नाम ॥
गुनि क कपि अस अचरज कइलें। सन्त मिलन क आतुर भइलें ॥
गुनलें, बलात करीं पहिचानि। साधु से होइ न कारज हानि ॥

---

१—इअदले=याद किया २—ठनले=निश्चय किया ३—सफलत=सफल करता है। ४—बढ़वत=रोप कर बढ़ाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कर बदलल तबले केउ भीतर। बोलल राम त्राहि प्रभु किंकर॥
भगत स्वांग धइ राम उचरलें। सुनत बिभीखन उठि क धवलें॥
करि प्रनाम पुछलें कुसलाइ। कहीं भगत निज कथा बुझाइ॥
का केहू हरि दास में हईं? जे हिय प्रीति मोरि अधिकईं?
कि हइँ राम नाम अनुरागी? अइलीं मो करन बड़ भागी?
तब कहलें कपि कथा बखान। सुनत बिभीखन तन मुलकान॥
राम क बल, सिय हरन बयान। कहि कपि, मगन प्रेम गुन गान॥
तन मन पुलकि दुनो क रहलें। गावत गुन प्रभु मन हरखलें॥
सुनु कपि, यहँ अस रहनि हमारि। जनु दाँतन में जीभि बेचारि॥
का कबहुँ मो जानि अनाथ? करिहन कृपा भानु कुल नाथ?
तामस तन, ना साधन हाथ। प्रीति न पद सरोज रघुनाथ॥
भइल भरोस मोहि हनुमान। बिनु हरि कृपा न सन्त मिलान॥
राम के हव ई दयालु सुभाव। कि कपि भेंटलीं रवाँ बुलाय॥
कहलें कपि, प्रभु क ई रीती। सदा करी ले दास प प्रीती॥
हमरे कहीं हम कवन कुलीन। बुधि कर चंचल गुन कर हीन॥
उठि सुति ले जे नाम हमार। दिनभर मिले न तेहि के अहार॥

## दोहा

अस हम अधम सखा सुनी, तबो गुनि क प्रभु दीन।
बिसवसलीं कइ दया अस, गुनि गुनि मन पद लीन॥

## १५ मात्रिक चौपाई

अस गुन जानि क जे प्रभु बिसरे? ते नर कस नहिं दुख से निभरे?
कइ कइ असहीं प्रभु गुनगान। पुलकित तन दुई सुधिहिं भुलान॥
पुनि बिसेखि बिभीखन कहली। जस सिय सहति दुख तहँ रहलीं॥
कपि कहले सुनु दससुख भाइ। चाहीं देखल हम सिय माइ॥
जुगुति बिभीखन तब बतवलें। कपि बुझाइ क राह दिखवलें॥
कपि लघु रूप धऽ चलले तहवाँ। बन असोक दुखित सिय जहवाँ॥

यह तरह महराज कुमार दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के दूसर सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-अगहन सुदी ६ सम्वत् २०१९, विक्रमी, तदनुसार ३ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराजकुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दरकान्ड

### तीसर सरग

प्रारम्भ तिथि—अगहन सुदी ७ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार ४ दिसम्बर १९६२ ईसवी, मंगलवार।

( बिभीखन के बतवला के अनुसार हनुमान जी के असोक बाटिका में गइल। असोक बन के बरनन, सीता जी के विरहिनी रूप के बरनन, हनुमान जी के असोक वृच्छ पर बइठ के सीता जी के देखल। रावन के आगमन। ओकर बरनन। रावन के सीता के प्रलोभन देके आपन पत्नी बने के प्रस्ताव कइल आ राम जी के निन्दा कइल। सीता जी के फटकारल आ राम जी के तारीफ कइल। रावन के भय दिखावल, सीता जी के प्रत्युत्तर आ तिरस्कार। रावन के तरुआर लेके मारे चलल। मदोदरी आ धन्यमालिन के रोकल आ समुझा के रावन के लौटा ले गइल। जात जात निसाचरिन से सीता के राजी करे के कोसिस करे के रावन के आज्ञा देल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## १८ मात्रिक चौपाई

उघु बनि क कपि अइलें तहवाँ । बन-असोक सिय बन्दी जहवाँ ॥
भीति कूदि कपि सिखर बइठलें । बन बिसाल असोक क देखलें ॥
साल, असोक, नीम, नागकेसर । ताल, तमाल आम लदि मोजर ॥
फरल फूलल हरिअर दिखइलें । भाँति भाँति क बिहँग बइठलें ॥
पीक, पहिहा, मोर, कबूतर । कोकिल स्यामा, कीर नभचर ॥
केलत, कलरत, गावत गान । बिहरि, फुदुकि, नभ ले उड़ान ॥
तसहीं, सहरस, हंस त टील । चकवा चकई चर सर, झील ॥
पसुन जमात इत उत विहरत । हरना हरिन, ससा तृन चरत ॥
भाँति अनेक बन उपबन सोभत । मलय पवन सुचि सीतल बहत ॥
लत्तरि, बेंवरि बृच्छ प चढ़लि । लिपटलि सटलि, लटकलि दीखलि ॥
फूल फूलि डारिन प झूमत । बिबिध सुगन्ध सगरो फेंकत ॥
जाते तहँ मन हो खुसहाल । लखलें बन बिस्तार बिसाल ॥
गिरल फूल सजलि जस महो । जनु बनि ठनि सिङार क नवही ॥
त-कपि कूदि तरुन जब झोमलें । हिल गिर पात फूल भुइँ ढँकलें ॥
तब तरु लंगधिडंग लखलें । जनु निज दाँव जुआरि हरलें ॥
कपि-हिलवल-तरु पुस्प निझरलें । जनु निज सुकृति पाप बिनसलें ॥
खग तरु तजि नभ में अस उड़लें । कुसमय में जनु खल मित तजलें ॥
रौंदि क बागि बनलि विरुप की । जनु तिय मद-तूरलि भोगल की ॥
कच, कुच खुलल, छबि मरदल की । अधर चुसल मुख-स्री नसल की ॥
झँपल नयन, पट तन हटल की । कुच नख गड़ल, गाल कटल की ॥
पलँग पडलि, कन-स्रम भिंजल की । मदन सिथिल तन मन लजल की ॥
बरखा-पवन मेघ बहवलसि । तस कपि मरदि लता गिरवलसि ॥
सर, झर, निझर थले भल सोभलें । जड़ल रतन सोपान चमकलें ॥
तट प लगल फूल क पवधा । चमकति तितिली-नारि नवधा ॥
जल कमल, हँस, चकई जोड़ी । सारस, सोल, टीक, पनबुड़ी ॥
बगल ऊँच काल सन परबत । भरल बृच्छ नद काँपत सरपत ॥
नदी छहरि गिरि से महि गीरति । उछलि अंक पिय नारि भागति ॥
नदी बेग तरु टहुनी रोकति । तिय क रूठलि सखिन मनावति ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बड़ भवन इक निकटे लउकल । खम्भ हजार प गोल बनवल ॥
स्वेत बरन कैलास के लजवत । सोन रतन जड़ि बेदि चमकत ॥
देखत सौंध ना दृस्टि टिकाइ । चिकन सुनरता चख फिसिलाइ ॥
निकटे खड़ा असोक ससोक । तरे बनलि बड़ि बेदि बिलोक ॥
जहँ इक बइठलि बिसुरति नारि । फाटल बसन मइल तन धारि ॥
कइ उपास जे लखति हऽ दूबरि । बिथुरि बार गिरलं कटि ऊपरि ॥
सुसुकि सुसुकि कइ लेति उसास । ताकति इत उत तेजि बिसास ॥
मंडलि असुरि बइठि चहुँ ओर । डरवतिं तरजतिं, कइ कइ सोर ॥
तन सारी जनु कब क पहिरलि । कच लट बँधि क पीठ प बिखरल ॥
धसल गाल, पलक दुनो झँपकत । नाग-बरौनि मुकुता उगिलत ॥
उससि क रहि रहि ओठ फरकत । बिरह ताप दाबि जनु सिसकत ॥
दूजि चाँद अस दूबरि निरमलि । गुनला पर बहु जाति चीन्हलि ॥
तन बिरुप बिच तेज दमकत । धुआँ में सनि जनु ज्वाल चमकत ॥
मइलि पुरानि पीअरि सारी । रछलसि तन क होत उघारी ॥
भूसन रहित क्रसित सुचि गात । कमल हीन जनु झील सुहात ॥
मंगल ग्रसित खीन रोहिनी । करति तपस्या तपति तपसिनी ॥
दुखिया, दूबर, सुखल सरीर । पीत गाल, दृग ढारत नीर ॥
चिन्ता, सोक, व्यग्र, मन दीन । खिन जनु बयखरि[1] आँवट मीन ॥
डूबति उतरति, सरिता-सोक । पिअत रकत-तन बिरह क जोंक ॥
लखति सगर प्रिय जन क अभाव । सदा लखत दृग असुरि डराव ॥
बिलगि जूथ मृगी सिसु आपन । घिरि बन डरपति झुन्ड स्वानन ॥
कच बिखरल कटि निहसति नारि । जनु बन घिरि घन मही दुखारि ॥
भोगे जोग सुख तिय रहली । पर यहि बयसि सँताप सहली ॥
तन न पहिले संकट सहलसि । दुख न नयन बिसाल निरखलसि ॥
असि क बिरहिनी, दुखिनी लखि क । जुगुति जुक्त कपि कारन गुनि क ॥
अनुमनलें कि होइ ना होइ । सिया इहे तन रखले सँजोइ ॥
राछस ओह दिन नभ रिखिमूक । भागल जे तिय धइले मूक ॥
लखलीं हमन नारि जस तबहीं । तस रूप भासत यह क अबहीं ॥
ससि सम रहलि लखति मनोहरि । भौंह बंक, कान्ति-अँग सुन्दरि ॥

---

१—बयखरि = व्याकुल, व्यग्र ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नागिन केस, बिम्बं फल अधर। सुडउल, सुनर, तन कटि पातर॥
काम क प्रेयसि, रति के समान। सुन्दरि, सरलि, सहज, छबिमान॥
सेहि अस इहो लखति हइऽनारि। चाँद प्रभा जस जगत पियारि॥
जदपि भीरु, चिन्ता चित बास। भयप्रद अन जनुं नागिन साँस॥
सोक पास फँसि यदि असोमति। तदपि धुआँ बिच अगिनी अँजोरति[1]॥

## दोहा

सन्देह भरल स्मृति जस, भूतल गिरि जनु रिद्धि।
टूटलि स्रद्धा, आस हत, बिधिन सहित जस सिद्धि॥

छीन भइल कीरति सहस, सदा हरासल बुद्धि।
नस्ट भइलि भविस्य जसत, बेदो यग्य असुद्धि॥

तसत पुन्य जनु खीन दुख, प्रकटत तिय तन साफ।
करत अँजोर प्रकास बनि, सतवन्ती सत लाफ॥

संग न रहि सक राम के, यह मन बड़ सन्ताप।
मृग नयनी पीड़ित असुरि, चहुँ तकि गोपति ताप॥

हिय दुख तउ छबिमान मुख, बहत गाल जल छार।
बिकल मीन-दृग पलक-सर, लखलें पवन कुमार॥

रोइ फुलल स्यामल पलक, बिधल बरौनि जनात।
सुजल नाक सुचि मध चलत, दीन उसास लखात॥

तन प बइठलि मइलि अति, बनलि दीनता दीन।
भूसन सून सिङार तन, ज्यन ससि प्रभा बिहीन॥

बिनु अभ्यास बिद्या सिथिल, तसत दीन छबि तीय।
बुधि सन्देहरत कपि भइलि, बन्दनीय लखि सीय॥

अलंकार अनुलेप रित, तस चिह्नाति न नारि।
बानी दोस व्याकरन युत, अरथ न आव निकारि॥

---

१—अँजोरति = अँजोर संज्ञा ।क्री।क्रिया बनी अँजोरति, प्रकाश करती है अँजोर करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## १५ मात्रिक चौपाई

जसत राम तसत ई मूरति। दूनहु जोड़ि समान तूअति ॥
असत जुगुति मन आनि हनुमत। इहे तिय सिय, कइलें अभिमत ॥
त बनि लघु छिपि पात बइठलें। तिय व्यवहार गँवहि परिखलें ॥
भाँति बहुत निसिचरी कितेक। बिबिध रूप धइले बहुतेक ॥
चहुँ दिसि बइठि तीय डरावतिं। भनि कुवाक कुपथ समुझावतिं ॥
एक दृग बहु दृग, पाँव अनेक। कुच, रद, कान भयंकर भेक ॥
नाक टेढ़, कुच लटकल पेट। कान टाट, तन ढकल लपेट ॥
माथ सींधि, रँग काल कलूट। अधर मोट, बड़, लटकल सूप ॥
अस्तन लबनी[1], छूअत डाँड़। कैयाँ आँखि, घुसलि बिच हाड़ ॥
भाखतिं घेरि क तीय कुबानि। जनु मृग छवनी स्वान घिरानि ॥
यदपि दीन डरलि तिय दीखति। प गुनि ताप पति-दैन्य विगोपति ॥
सत-बल रच्छित समुझति नारि। मृग-सिसु स्वान घिरि, मा निहारि ॥
सोक सजीव तन धइ बइठल। दुख लहरि जनु हिय-नद लहरल ॥
लखि अस दसा विदेह कुमारि। अनमन भइलें पवन कुमार ॥
तीसर पहर राति क बीतलि। लंका हँसल, अेक सिय बिलपलि ॥
तब सुनलें, कपि, वेद क नाद। संख गान, बहु यन्त्र निनाद ॥
ते सँग जोति लहकति आवति। उसा दमकि, सुनरता धावति ॥
बढ़त प्रकास पुंज लखाइल। बन क तम जनु खेदत आइल ॥
आवत निकट असोक चमकल। बन थल सगर अँजोर दमकल ॥
रावन सजल जमाति चहुँपल। रति समेत जनु काम गमनल[2] ॥
मदन-वेग असुर बउराइल। ऐरावत जनु बन मताइल ॥
घेरि सीय सब भइलें ठाढ़। जनु सिसुमृगी परलि सिँह दाढ़ ॥
लखि सिय व्यग्र, भेख बिद्रुप। भखलसि असुर बचन अनुरूप ॥
बहु बिधि सिय से प्रेम निहोर। कथलसि कुलिस कुवाक कठोर ॥
सुनी, सुनरि, हऽ मोर ई परन। रउरे लागि करबि सब जतन ॥
पर-तिय हरल असुर सद् धरम। पर बेचहल न करबि कुकरम ॥

---

१—लबनी मिट्टी का ताड़ी उतारने वाला लम्बा बरतन। २—गमनल = गमन किया, गमन से क्रिया बनी गमनल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राउरि बयसि थोर, तन सुन्दर। मो धन बैभव भोग लमहर॥
मय तनया त अन पटरानिन। राउरि बनिहनि छनमें दासिन॥
बीर बिक्रमी इन्द्र बिजयी। जग जानें हईं मद बिसयी॥
सुरा, यौवन, मद, रतन क खान। बसन, भूसन, सुख सब समान॥
रचि रुचि पवते सब तव दास। रवना राउर दास क दास॥
साँच कही ला ई प्रन मोर। पुरइबि ताकते रचि मो ओर॥
ई तन राउर भुईं प सूतल। ई कच विथुरि क जटा में बँधल॥
तपसि भेख, चित चिन्ता मगन। दिन बितवल, एक पहिर क बसन॥
बैभव लंका प्रस्तुत रहत, का सोभत तोहि मोर जीअत ?
सुन्नरि, रवाँ लखीं इ सम्पति। राम क का यहि आशु किसमति ?
निज धन राज से खेदरइलें। सब बिधि सब से तेजल गइलें॥
विजय-आस तजि बन बिचरलें, स्त्री-हीन हो तपसी बनलें॥
भुइँ प सुतलें, बन फल भखलें। त कस तोर जोग पति रहलें ?
जनक दुलारि, तू राज कुमारि ? कही के जोग राम भिखारि ?
रे सिया कस अबो न बूझसि ? का भिखारि पीछे हो रोअसि ?
का सुनरि, ते उन लगि बिलखसि ? ई रूप कस उन अनुकूलसि ?
राम जिअत कि मरि मिट गइलें ? का कबो ई मन अनुमनले ?
कस न भोगसि मो संग राज ? कस नाससि जौबन-सुख, साज ?
इन्द्र, कुबेर त बरुन, इसान। वायु, अगिनि, नैऋत, यम आन,॥
जीति कबो न सकिहें लंका। जस के केहु भने निज बंका ?
का समुझसि ते मनुसुत केहू, ताकि सकी यहि ओर कसहूँ ?
कहाँ राम ? कसत ऊ अइहें ? अइहें कबो त कस समइहें ?
कबनो तरह समा जो जइहें ? का डरे मो समने अइहें ?
जो सहुएँ हिम्मति कइ अइहें ? लड़े बरे कस धनु धऽ सकिहें ?
धइ कऽ धनु का बिक्रम सहिहें ? सहि सकिहें. त कब तक लड़िहें ?
बरिस छ मास लड़ि जो लीहें ? त का अन्तो जूझि न मरिहें ?
यह से अब जनि राखु ते आस। रावन बल पर करु बिसवास॥
आजु ले केउ न नारि जनमलसि ! जे सनमुख अस रावन भखलसि ?
सुनरि से सुनरि हरि क अइली ! दिन दुइ चार सोक मनवली !!
लखते बैभव, धन, सुख-साज, मोर अस मरद, बिक्रम, राज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मनमथ बान, उमिर क चढाव, मद दुलार, मन चाह; सुभाव,
जग के सब असलीअत जनली, तन निज अरपन छनमें कइली ॥
तो अस हठ केहू न निबहल ? बयसि यही का मद तो बिनसल ?
ई चढ़ती ? ई रूप निखार ? ई कुच, कच, कटि, मदन पुकार ?
नसवे कब तक सुमुखि, बेकार ? करु मो कहल भोगु सुख संार !!
बिधि, बिसनू सब सिकरल काम । इन्द्र, सिव, सुर एकर गुलाम ॥
काम, वाम बस जीव जहान । सुख क सार रति मदन मिलान ॥
निबृतिं मार्ग, नपुंसक बाद । जगत सार प्रबृत्ति के बाद ॥
पढि, मथि सास्त्र पुरान क ज्ञान । जप, तप, करम निबाहि महान ॥
गुनि धइलीं मारग प्रबृत्ति । जे अदेस सत, पुरुस, प्रकृति ॥
त अस जानि समझि जग सार, भोगु जगत, तजि असत बिचार !!
सुमुखि, भिखारि भूलु घिन राम ! बनु पटरानी रावन धाम !!
भनि अस दसमुख बिनयि बहोर, बार बार नमि प्रनय निहोर,
मद भरि दृग तकलसि सिय ओर । चाह-भाव, हिय प्रगटि अथोर ॥
तव सिय डरि, रिसि रिपु क तकली । तृन धऽ दृग सहुँ ओट क भखली ॥
बचन धीर भीरु रित कहली । सगर से सत-बल तन बटोरली ॥
मोरि ओरि से फेरि मन रावन । उहाँ टिकाउ जे तिय आपन ॥
पापी रखत न जस सिधि आस । तस मोसे ते होखु निरास ॥
जे पतिव्रता क निंदल काज । से न करन जोग मोहि समाज ॥
कुल इक हम जनमलीं महान । भइल बिआह घर तेहि समान ॥
तेहि निन्दल सठ मो नहिं काम । सत बल नारी जिअति जहान ॥
अत कहि फेरि क पीठ बइठलीं । कसि क रुलाइ आवत दबलीं ॥
पुनि उसासि गम्भीर बिनवलीं । बिपति जानि बल धीर धरलीं ॥
नृप, हम हईं सती, पर नारि । बने जोग ना तोरि दुलारि ॥
दसमुख, परखु तें सुचि धरमा । कइ प्रन, पूरु सतजन करमा ॥
जसते रच्छसि निज कर नारि । रच्छन जोग तसत पर नारि ॥
जे निज नारि से तुस्ट न भइल । से थल थल धिधकारल गइल ॥
अस परगसी पराभव लहल । बंस, बिभव, यस, धरम बिलसल ॥
का लंका सत पुरुस नै बससु ? बससु, त का तें उनें न मानसु ?
जेहि से बुधि अस तो बिपरीत ? बिमुख अचार, न माने रीति ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जे नृप नसि बुधि कइल अनीत, ग्रहलसि ना भल बात उचीत,
पड़ि जिन हाथ सुराज बिनसल, नगर, देस, यस, कुल बिलोपल ॥
तू-धन रासि भरल पुर लंका। तो चलते सठ नसी निसंका ॥
जसति न किरिनि सुरुज से बिलगति। तस न बिलगि सिय राम से सकति ॥
का तो राज रतन धन रावन ? सत सहुएँ अस ध्रुव उड़ावन ?
ले सिर, सुतल नाल-भुज राम, कस पौढ़ी बँहि-तकिया आन ?
जसत ज्ञान कह विप्र क सम्पति। तसत मानु ते राम क सिय-पति ॥
रे रावन, सुनु निज हित बात। आदरि राम, मानि उन तात ॥
निकट राम मो भेजु सनमानि। जस पितु पठवत कन्या दानि ॥
यदि रच्छल नगर कर चाहसि, बचल ताप से दारुन इच्छसि,
त-तोहि उचित राम बनु दास। नाहिं त निस्चय तोर बिनास ॥
लाइ नेह हिय बनु सरनागत। सुध मन मोहि क पठउ निरापत ॥
हईं राम सब धरम क पालक। असरन सरन जगत बिधायक ॥
गिरत बज्र से बाँचि सकेले। काल उपेच्छित रहि सकेले ॥
पर न सर रघुनाथ से बजबे। कोपि छुटल जो हति क मरबे ॥
तो बल रहे, सान कहाँ तब ? लंका पति गुमान कहाँ तब ?
हो असमरथ चोर जब बनले ? बीर बिरुध कइ करम छललें ?
आस्रम साधु रूप धऽ घुसले ? राम लखन रित मोहि क हरले ?
ठग-मृग पठइ क प्रभु हटवले ? ठगवा बनि क ठग अस ठगले ?
जो बली ते प्रभु से मनले ? कस न आइ के उन सहुँ लड़ले ?
जो अस करिते प्रभु बल जनिते। तहँ फल निज करनी क पइते ?
पूर्ब मरल कृत-कर्म ते बाडे। पाप चढ़ल सिर मन उभाडें ॥
बचि ना सकसु ते कतो लुकाइ। सपद माँगु धा राम सहाइ ॥
सुनि क कठोर वचन अस सिय के। असुर मरल रिसि, तिल मिलाइ के ॥
पर मनमथ बस दीन बनि के। मधुरे उत्तर देलसि तनि के ॥
नारि, तोर लखि अजब सुभावें, मन बिच घिन, हिय उठत दुराव ॥
सहज सुभाव होय अस नार। विनय भाव उर रस संचार ॥
जस नर बिनवे तिय मनलाय। तब तस बनत नारि प्रिय जाय ॥
प जिमि जस मो मधुर भनेले। तस बिपरीत ते टेढ़ि, चलेलें ॥
पर सारथि, चतुर, हय दउड़त। जसत कुमारग जात रोकत ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तसत प्रेम मो तो प्रति उपजत। क्रोध करे से अनुचित रोकत ॥
नारि प्रेम अति कुटिल जगत में। अनुरत भैल से फसल बिपत्ति में ॥
अन जाने मद, स्नेह व करुना। अपने उपजत हिय में अपुना ॥
यहि कारन प्रिय; हम तोहरा के, निदरति, निंदति, लखि हमरा के,
बध्य, तज्य भी मानि करिके, आस न अबले तजली तोहि के ॥
जस प्रिय भखले, बचन कठोर। प्रानो दन्ड बदले में अथोर ॥
अबो समुझि क सुमुखि, ते चेतु। हठ तजु, नारि जनम सुख हेतु ॥
अस भनि सिय तकलसि हँसि नेह। चितव वयन जनु नागिन गेह ॥
पर जब सिय सुसुकि उससली, रुद्ध कन्ठ निरुत्तर रहली,
तब मुसुकि रोसिआइ रावन, कहिक सबद कठोर अपावन,
भनलसि सुनु तिय, कान उघारि। कइलीं अवधि निहित निरधारि ॥
ते अनुसार प्रतीछु दू मास। बीत वलात चर लइहें पास ॥
गिरह बाँधु, दुइ मास बीतत। जो ना बनवले मो पति तुरत ॥
त-सुआर कटि कुटिया कुटिया। थाल परसिहें सुन्दर कलिया ॥
सुनि अस दरप भरल कुआग्या। गुनि निज, सत, पति सान अवग्या ॥
भन सिय उत्तर बचन परमान। पति यस, बल प्रति कइ अभिमान ॥
निहचय नगर न भल तो चाह। जे बरजे नहिं जात कुराह ॥
जस हइ सची इन्द्र क घरनी। तस हम राम-ब्रम्ह क पतिनी ॥
के सठ, तो बिनु अस जग बाय? मोहि ताके कुदस्टि जमाय?
तेहूँ हवसि त जियते मरल। दोस कर्म कृत अन्त उपजल ॥
दसमुख पाप जे ते बतकहलसि। ते बस कतो न गति निज रखलसि ॥
भागि क पेरल करि, खरगोस। जस बन जुटि युधि करें क रोस ॥
तस तोर युधि लड़ल सँग रामे। लमहा ते, गयन्द बल धाम ॥
कस सठ, निन्दसि रघुकुल नाथ? राहि क अलोत चढ़सि कत माथ?
रे पापी, कस फुटलि न आँखि? विन कुदस्टि मोहि लखि कुभाखि?
दसरथ बहु, हम राम पतिनी। कहत पाप कस गललि न जिभिनी?
निज क तेज, सत-बल, रे अधम। पल मारत करीं तोहि भसम ॥
पर प्रभु आज्ञा बिनु न जरलीं। तप-बल आपन रछित रखलीं ॥

## १६ मात्रिक चौपाई

हम मतिमान राम क भार्या। सक्ति न राखसि तके क आर्या ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर विधि पेरि क असत कहवलसि । निसन्देह बध-पास बुनवलसि ॥
तेँ त बीर बड़ सूर बखानसि । धन-कुबेर बल-सैन क बहससि ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

त सठ, कस ठगि राम हटवले ? कपट रूप धऽ मोहि क हरले ?
अस मनि रोसि सकुचि सिय चुपली । अंग बटोरि सिमटि बइठली ॥
सिय सुनि रावन भौंह मरोरि । तकलसि तनि के क्रोध बटोरि ॥
ऐँठि जीभि, लपट जनु आगि । कहलसि डाँटि सिंह सम जागि ॥
रे कायर भिखारि कर नारि । मौत बुलवले मनो पुकारि ॥
नासत रवि जस निसि अन्हार । तस तन काटबि तोर गँवारि ॥
नागिन, कइले ते अपमान । बचु सिर काटत कुटिल कृपान ॥
नांहि त सपद मानु मो बात । टेढ़ि, होत न त जीवन घात ॥
'तब रिसि, कँपि, सिय कहलि पुकारि । निसचर, मोहि न डर तरुवार ॥'
'स्याम सरोज दाम सम सुन्दर । करि कर सम भुजा प्रभु निसिचर ॥'
'से भुज कन्ठ कि तव असि घोर । सुनु सठ, सठ, प्रवान प्रन मोर ॥'
'चन्द्र हाँस हर मम परिताप । रघुकुल बिरह अनल संजात ॥'
'सीतल निसित बहति जल धार । हे, कृपान, हरु मम दुख भार ॥'

## दोहा

भनत कोपि, काँपत अधर, ताकत नयन तरेर ।
सहज लाज उर उठि मथत, डारत कोपि बिखेर ॥
लाज कोप कर लखि झगर, अन्य भाव मन जोर ।
सत-बल बनि विचवान तब, समवत सब कर जोर ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

सुनि कृपान तब असुर उठवलसि । मय तनया झट धाऽ क धइलसि ॥
धनिमालिनि धाइ हिय लिपटलि । भाँति बहुत दुनो समुझावलि ।
का बूतकहीं इ नारि दीन से ? नर कन्या से कान्ति हीन से ?
बिधि यहि लिखले ना सुख भोग ! जे तजलसि उत्तम संजोग !!
जे नारि ना नर के चहलसि । से चहले नर ताप पवलसि ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प अनुरागि नारि क मिलले। उत्तम सतत सुख नर पवलें॥
चलीं हमन संग लंक विहरीं। एक से एक नारि तहँ हतरी॥
तब ठठाइ क हँसलसि रावन। बोलि क रछसिन देलसि भासन॥
बहु प्रकार कहलसि बुझावन। अन्त अदेसलसि कृत अपावन॥
अस तब लवटि क चललि जमात। मद रस चूर त हँसत हँसात॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दरकान्ड के तीसर सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि—अगहन सुदी ११, सम्वत २०१९,बिक्रमी, तदनुसार ७ दिसम्बर १९६२ इसवी।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

## (भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ',
ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहावाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### चौथा सरग

प्रारम्भ-तिथि—अगहन सुदी १२, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार ८ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



( रावन के सीता जी से बतिया के चलगइला पर अनेक तरह के रूपवाली राछसिन के जमात के सीता जी के घेरि के रावन के कु प्रस्ताव स्वीकार करेके समुझावल आ भय दिखावल। फेन सीता के राछसिन के बात माने से इनकार कइल आ राम जी के सरहना कइल तथा राम जी के प्रति आपन प्रेम बतावल। तब राछसिन के भय दिखा के सीता के जीअते अेक अेक अंग काट्टि काटि के खा जायेके धमकी देल आ हथियार आदि तानल। दन्ड आ भय नीति के प्रयोग कइल। सीता जी के अन्तिम निरनय "ना, ना" कहि के देल आ राम के पुकार पुकार के बेहोस हो गइछ। तब त्रिजटा के राछसिन से अपना सपना के हाल बतावल आ मूर्छित सीता के ओही घरी सुभ अंग फरकल जवना के दिखा के त्रिजटा के राछसिन के समझावल कि रावन के नास निस्चित बा। हमनन का सीता से अच्छा व्यवहार करेके चाहीं। त्रिजटा के सीता जी क सेवा करके होस करावल आ सब निसचरिन के अच्छा व्यवहार कइल।)

## १५ मात्रिक चौपाई

बाग असोक से असुर क जात। रछसिन जुटलिन सजि क जमात ॥
लगलीं जमि क सिय समुझावे। बिधि अनेक प्रलोभि बुझावे ॥
मधुर, नम्र, अरु कुंलिस, कठोर। बानी कटु खल कहलिं निहोर ॥
कस जी, सिय रवाँ न समुझीं। असुर नारि बनल लघु बूझीं ॥
विधि-मानस-सुत प्रजापतिन में। मुनि पुलस्त चउथा गिनती में ॥
तिन सुत रिसि मानस बिसरबा। ते सुत रावन ज्ञात जगत बा ॥
उनकर बनि पतिनी यस लहबि। पद पटरानि पा सुख भोगबि ॥
तब हरिजटा कोपि क डँटलसि। रावन नारि बनल सलहलसि ॥
अठ बसु हरलें, रुद्र एगारह। असनि कुमारि, दुइ रवि बारह ॥
अस तैंतिस जे देव हरवलें? तिन सहुँ बल का राम रखलें?
अरे कुबुधि अब तजु हठ नारि? राम संग गहि बनु न भिखारि?
भन विकटा, जे जितलसि नाग। सिध गनधरब दानव निदाग ॥
से बनें पति आइल गँवारि! सहुँ तोरे ते देले नकारि?
हे सिय, रूप ई हव नसवान। अछत, बीर बरु नृपति महान ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जेहि डरि रबि तजलें निज तपल, पवन डरे ब्हल निज रोकल,
ते पटरानि ते कस न बनलें ? का बिधि भाँग बुधि तो घेरलें ?
रे सिय, डरे जे इन्द्र बरिससु, चहते गिरि, थल सगरो भरसु,
से रावन क कस न आदरलीं ? भागि आपन कस न सरहलीं ?
अबो चाहबि त बनबि दुलारि । नाहिं त होई लिखल लिलार ॥
कटु अस बचन सुनि रछसन के । नयन ढारि धार जल कन के ॥
कहलीं सिया, सुनऽ हो रछसिन ! पाप बचन जे तू समुझवलिन !!
सब अमनलीं, सब निरदरलीं ! फिर फिर कुहि क, यहि दुहरवली !!
कस सिय कुलिन, दनुज क होखी ? भले दनुज तन काटि क भखी ?
पति मोर दीन भा गृह हीन । रहलीं, रहबि त ते क अधीन ॥
देव क सेही सिय अनुरक्त । रवि सँग किरिन जसत आसक्त ॥
जस सचि करसु इन्द्र क सेवा, जस बसिस्ट अरुन्धती देवा,
रोहिनि ससि, नल में दमयन्ती, लीन सौदास में मदयन्ती,
तसत सदा सिय दासि राम क । दसरथ सुत भगवान राम क ॥
तब निसचरिन क धीर टूटल । मनवेवाली नीति बदलल ॥
पारी अब भय दन्ड त्रास क । सब मिलि डँटली घेरि रोसि क ॥
भाँति अनेक अंग चमका के । पी क, मद लेइ अस्त्र, तानि के ॥
घेरि बकली जब पाप अथोर । सिय तब उठलीं ढारत लोर ॥
अन असोक जरि जा वइठलीं । जेह पर छिपल हलिवँत रहलीं ॥
कपि, दबाइ रिसि, मौन सधले । राम अदेस जाँचत रहलें ॥
तहवाँ आ असुरि दल जूटल । आयुध तानि डाँटि क भाखल ॥
बिनत, बिकट, चन्डोदरि नाम । सुपनखि, अजमुखि, प्रघसरि, सातु ॥
बहकि बहकि कुबचन कढ़वली । भय दिखाइ राजी क चहली ॥
रावन बिरुद, राम क निन्दा । धन, जन, वैभव, मान, अनन्दा ॥
कहि, लुभाइ धमकाइ, डेरवली । सत छोड़न क सिय समुझवली ॥
कहलीं, चेति, तजु हठ ते नार । हाँ कहि, रावन बरन सकार ॥
नात गुरदा, तिल्ली, तुरते, कवल, करेजी, रान जिअते,
काटि कालि काँचे सब खाइबि । जिअते तन क बिलगि मुआइबि ॥
अबो समय बा समझि ले नारि ! अछत जान निरधरि ले गँवारि !!
ई जोवन ई रूव निखार । भोगि भोग, सुख करिले बिहार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बहुत भइल मान भल कहलू ? राम क प्रेम, कम न निबहलू ?
सत-प्रपंच भनि सान सनकलू ? सुजन समुख न दोसी रहलू ॥
अबो त पोम्भि[1] सत तजु ते गुमान ? मनमथ सिखवल सुनु, दे कान ॥
केलि ले, बिहरि ले, रावन संग ? पी के मदिरा बिलसि ले रंग ?
तजि हठ असत, सुभाव मन जानु । मद, यौवन, सुख, हिय अनुमानु ॥
तब जानबि जीवन क मतलब ? जब रति रावन पा क सहकबि ?
बस अब आइल अखिरी दाँव । समुझि क खूब उठाइबि पाँव ॥
अस भनि क सब साथ गरजलीं । सरव तानि क निरनय पुजलीं ॥
'ना, ना, ना' कहि क सिय चिखली । दृग मुदि, मन दृढ़ करि, भुइँ गिरली ॥
'मारु, मारु' कहि, रो उससली । निज जीवन क बिलखि धिकरली ॥
ओ जनम हम कम पुनि कइलीं ! तेहि बस दीन अनाथ मरलीं !!
मन न रहल अब अन अरमान ! दरसे ना दृग सहुँ भगवान !!
जे कारन ई तन अब छूटत ! से दरसत बिनु मूअल अखरत !!
नइहर छछनल, ससुरो छछनल ? बन से छछनि क रिपु घर मूअल !!
हा राम ! हे राम !! हा राम !!! सीय प्रान क प्रान हे प्रान !!!
नाथ, न सिय क रचि अविस्वासबि ! उहे सीय यहि अजहूँ मानबि ॥
अस भनि, सिय गिर तेजली होस ! ठाढ़ि निसाचरि नसलीं रोस ॥
तब राछसि त्रिजटा जे नामा । कथि सब क समुझवलसि सपना ॥
स्वप्न भयंकर रति देखलीं । रावन बिनसि क, राम जितलीं ॥
हाथी दाँत क बनल अम्बारी । जेह में जोतल घोड़ हजारी ॥
स्वेत बसन उर माल लवले । राम बइठि क ओमें अवलें ॥
पुनि देखलीं बड़का दुदन्ता । कसि हउदा चढ़ल भगवन्ता ॥
तहँ लछुमन ले चँवर डुलावत । बानर बड़ इक मग बतावत ॥
सुनर बसन पीत तम धरले । भाँति भाँति क भुसन पहिरले ॥
अइले तहँ जहँ बहठी सीय । उदसलि, गोरि, कान्ति कमनीय ॥
पुनि देखलीं खाढ़ ऊ हाती । गिरि क सिखर प मस्त उमाती ॥
तेह पर सोभत राम बइठल । सुमुखि सीय कर हँसि क पकड़ल ॥
तबे सीय क तुरते लखलीं । उछलि अंक पति नभ में उड़लीं ॥

---

१—पोम्भिक = सत्य पालन करने का नखड़ा, मिथ्याडम्बर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दुनो हाथ से तहवें अपना। रबि, ससि छूअत लखलीं सपना[1] ।।
दिखलीं फेनु कि ऊ गजराज। लंका ऊपर खाढ़ बिराज ।।
तब देखलीं अठ बैल सफेद। जोतल रथ इक निरमल स्वेत ।।
ते प राम लखन सिय बइठल। मन्द चाल से लंका पइठल ।।
उत्तर यान पुस्तक पुनि ऊड़ल। जे में राम लखन सिय बइठल ।।
दिखलीं फेनु कि हे सखि, रावन। सिर मुड़वले, बलल अपावन ।।
तेल में नहा, लाल पट धरले। मद पी, करवरि माल[2] पहिनले ।।
गिर क पुसपक यान से तड़पत। आ तेहि धइ इक नारि खींचति ।।
फेनु लखलीं गदहा-रथ चढ़ले। हँसलें, तेल, मद पी नचलें ।।
फिर चढ़ि गरदभ भगलें दखिन। पागल भ्रान्त ब्याकुल इन्द्रिन ।।
आगे चलि क गिरलें उतान। उठि पुनि बकले मदपि समान ।।
पंक में मल क अगवे गिरलें। आ धसि तुरते चींखि मरलें ।।
असत भयावन सखि कुसपना। देखलीं नीद में हम अपना ।।
केवल एक बिभीखन लखलें। लंक सिंघासन पर जे बइठलें ।।
त-ई सपना का फुरिआई ? का राज रावन बिनसाई ?
त डर आगे हम अब बूझीं। मलकिन अस सिय क अब समुझीं ।।
देखु, देखु, सखि सिय सुभ अंग। फरकत कस मुरछो में निसंक ।।
कस ई बाईं आँखि फरके ! कस भुज जंघ वाया थिरकें !!
ओठ कसत बा मुसुकि क हिलत ? जनु सुख-सपना में पति चूमत ।।
त सखि, अवसि सपन फुरिआई। राम विजय रावन विदाई ।।
तब झट सब सिय क उठवली। सुभ सुन्दर आचार वरतलीं ।।

यह तरह महराज कुमार दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के चौथा सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-पूस बदी २ सम्वत् २०१९, विक्रमी, तदनुसार ३ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

---

१—स्वप्नमें रवि और चन्द्रमा को हाथो से छूना सुभ स्वप्न माना है।
२—करवरि माल = करवीर पुष्प की माला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### पाचवाँ सरग

प्रारम्भ-तिथि—पूस बदी ३, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, १४ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

त्रिजटा जब अन राच्छसिन के साथ आदर भाव से सीता जी के मूर्छा छोड़ा के सद् व्यवहार करे लागलि तब सीता जी का आसचर्ज भइल कि अतना जलदी राच्छसिन का व्यवहार में परिवर्तन काहे आ गइल। अन्त में गुनि के निस्चय कइली कि इन्हन के ई व्यवहार बलिदान देवे वाला खसी के मारे का पहिले भोजन देला के अरथ रखता। निसचरिन से निहोरा कइल कि ऊ सीता के अकेल कुछ देर खाती छोड़ दऽ सऽ कि उहाँ के मन सान्त होखे। राछसिन के हटल आ सीता जी के अकेला में बिलाप आ प्रान तेज देवे के निसचय कइल। आत्म-हत्या करे के साधन पर विचार आ बार का रस्सी से फाँसी लगावे के निस्चय करके उठ के खड़ा भइल आ सासुर, नइहर, राम के याद करके बिलाप कइल। तबले सुभ सगुन भइल आ अनायास चित में प्रसनता के भाव आइल जवना के अर्थ आत्म-हत्या के ही सुभ काम सीताजी लग वलीं। फेन गला में केस के फाँसी लगावलआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आत्म हत्या के तैयारी। तबले हनुमान जी के ऊपर से राम जी के अँगूठी गिरावल। मुंदरी गिरे के आवाज से सीता के ध्यान ओने गइल आ मुनरी पहिचान के भावातिरेक बस सीता के बुरा दसा के भइल आ हनुमान के ई देखि के राम के बन के कहनी गावल आ सींता के होस में आइल आ नाना तरह के संका कइल आ अकुसल के संका कइ के व्यग्र भइल। हनुमान जी के प्रगट भइल। राम-कथा सुनावल। सीता के जब विस्वास ना भइल तब हनुमान के राम के अंग स्वभाव आदि के बरनन करके बिस्वास दिआवल। तब सीता के राम जी के समाचार पूछल।

## १५ मात्रिक चौपाई

होत होस उदसि सिय तकली। मृग-सिसु सिंह-मानि जस लखली॥
सुभाचार उन असुर बरतलीं। लखि सिय मन में अचरज मनली॥
सोचली, राज का यहि के भीतर? की बदलल ब्यवहार निसिचर?
बलि क पहिले बलि-पसु जइसे। लहत भोज्य पदार्थ तइसे॥
सद् ब्यवहार कि अरथ न रखत? मधुरि बात कि घात न साधत?
कि हऽ कुछु दूसर कवनो बात? बात बात यहँ झाँकत घात?
त्रिजटा से तब कथि समुझवली। 'छाड़हु मोऽ अकेल' निहोरली॥
जब दल निसिचरि हटले दूर। पा अकेल सिय रूदलि बिसूर॥
निहचय संत पुरुस सत कहल! बिना काल केउ काल न लहल!!
तबे त अछत रहत यहँ काल। चाहत भी ना मरीं अकाल!!
ई हिय बा निसचय बलवान! पाइ न बिदरत अस अपमान!!
अब हम सरन तोर रे मउअति! अनत सहारा कहुँ न लउकति!!
द्विज जस सुद्र न दे बेद मन्तर। रिपु तस तकबि न कवनो यंतर॥
अवधि जात त रावन मारी। कुटिये कुटिये कऽ संघारी॥
का सक कि नहिं तन अपमानी? सतवंती प बल नहिं आनी?
यह से भल अब प्रान क तेजल। मानी अब कस कि प्रभु जीअल?
जो न माया मृग मरलसि राम, भुललें कस सिय राम जहान?
त-भल कि मरीं पहिले मियाद। कि कइ रावन सके न कुघात॥
हा राम! हा लखन!! कोसिलया!!! छमबि छमबि मोहि करिक दया!!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हा पितु जनक ! ससुर अभागी ? छमबि गुनि कि कुल लगल न दागी ॥
बोझि नाव बूड़ति जस सागर । सिय तस मरति बीच निसाचर ॥
हा सतव्रती दयालु राम ! सीय अभागिन कर सुख धाम !!
पता न रउरा. कि सिय इहवाँ ! ला कच फाँसी मरति गरवाँ !!
सुत. पति, पितु, कुल खाती मूअति ! कसहुँ खबरि ई तोहि तक पहुँचति !!
त-सत, छमा, सयन भुइँ तापल । निसफल भइलें मो सब पालल ॥
जसत कइल सतजन उपकार । कृतघ्नी नर करि देंइ बेकार ॥
पुरुस त रउआँ हईं हे राम ! जानीं नर सुभाव, मन, काम ॥
पितु-प्रन पूरि, ग्रहबि अन नार ! पर बिनु तो सिया कहँ संसार ?
मो अनुराग त तो अनुराग । जिअत रहल तो संग सोहाग ॥
जिअलीं, बसलीं तोहि सुख लागि । मुइ कर अजो जिअबि तोहि लागि ॥
यस, गुन, सील, तोर मरजाद । निवहल, सफल, रखी जग याद ॥
स्नेहलीं रवाँ क सुख विनासि । निबहल तप, सत रउरे आसि ॥
छमबि, छमबि, प्रभु मो अपराध ! मृतु अकाल सिय मर निज साध ॥
कहँ से यहँ बिख, अस्त्र निकासीं ? भल मरन ला कच रजु फाँसी ॥
अस कहि कच बटि रजु बनवली । गरे बाँधि तरु डारि नववली ॥
मन दिढ़ाइ क इत उत तकली । दृग सहुँ लाइ प्रभु छबि नमली ॥
पात ओट से कपि तब गुनलीं । छने भर में त सिय तन नसली ॥
राम, सिय, सुर, तब हित सगरी । नसी बहे जस जल फुटि गगरी ॥
सिय पुनीत बदि-नीति गुनलीं । प्रभु रत नेह, सती, परिखलीं ॥
कहल राम क पुनि असमरलीं । सब बिधि सिय 'अनुकूल' पवलीं ॥
सोचलीं जब सब आँखि देखलीं । उन क सत सब तरह परिखलीं ॥
तब अनुकूले के का बाचल ? सबे तरह सिय सोन तापल ॥
अस गुनि झट मुँदरी गिरवलीं । खरकि पात जे दृग सहुँ पड़ली ॥
से रइ ठनकि ध्यान सिय खिंचलसि । आतुर नयन मुनरी लखलसि ॥
उठा, परखि, हिय ला, हसलली । पलक ढाँपि, लोर दृग ढरलीं ॥
मन बिभोर, मुख आव न बात । पुलकति, काँपत, गद गद गात ॥
मन थिर, हिय थिर, आनँद बेग । कुछ न बुझा हिय कर आवेग ॥
असत दसा लखि कपि अनुमनलें । बस उमँग तन छूटल चहले ॥
तब कपि झट बन रास कहनीं । गुन गुनगइ क गावन लगनीं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भाखा रहे अवध क देमज[1] । सरल, प्रवाह, सुनर, अति सहज ।।
सान्त सरित जस पवन हिलोर । प्रेम उमँगि तस चलल बटोर ।।
ढ़कन-पलक चख-सम्पुट खोल । तकलन खंचन-दृग चहुँ डोल ।।
मन सँह भाव के लहरि ऊठलि । राम कथा बन स्रवन सूनल ।।
कि सपना ? कि सामने क बात ? मन विभोर क् नाहिये बुझात ।।
प्रभु-छवि कलपित भइलि सजीव । कथा सुनत गुनि दसा अजीव ।।
जस जस कहनी प्रभु क सुनली । सुसथिर तस सिय मन में मनली ।।
प बुधि जगि तुरत उदवेगलसि । संक-लहरि लहरा उठवलसि ।।
कस ई सुनरी ? कत से आइलि ? केकरि ? कसक इहाँ फेकाइलि ?
राम लिखल न का सच राम के ? या कि दूसर चाल रावन के ?
राम के हऽ त का प्रभु जीअत ? प्रभु जीअत तव आइलि कसत ?
राम मुअल त सिय कस जीअल ? जीअति सिय राम कस मूअल ?
जीअत प्रान त चलत साँस हव । तन डोलत मन गुनत राम हव ।।
कहनी राम क सुनत स्रवन हव । राम प्रेम मन तपत अटल हव ।।
जब जीअति सिय अस सहुँ जग में, राम निधन का भ्रम नहिं सच में ?
हा विधि, धिक ! मो भागि क खेल !! अन्तो सुख मरि करे न देल !!!
अब ई जिअल मुअल क संका, भरहूँ मो न देति निसंका ?
जो मरबि त राम कस जीहें ? नहीं, राम त सिय कस रहिहें ?
प्रभु क रहत सिय तन कि न सेहें ? कि रामो सिय रहते मरि हैं ?

## दोहा

आस निरास के पेग पर झूला झुल मन मोर ।
निरनय अब करु सीघ्र बिधि, एहि ओरि ओहिं ओर ।।

जात चलल अवसर इहो, मरन जोग सुभ आइ ।
राम नेह बुधि मो बिकल, सकति न कछु निरनाइ ।।

---

१—देखिये बाल्मीक कृत रामायण सुन्दर काण्ड सरग ३०, श्लोक सं० १८,१९ यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् । रावणं मान्यमानां मां सीता भीता भविष्यति ।। १८ ।। अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत । मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता ।। १९ ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## १५ चौपाई

हे बन-देबि ! हे नभ-बानी !! गायक हैं सुभ राम कहानी !!!
हे असोक ! हे लंक भवानी !! हे गीत तू राम निसानी !!!
बयखरि सिय क मन नासि संका । जिये मुअे क करीं निसंका ॥
हे मुनरी ! सच बात बताउ !! मो मुअती कर राह दखाउ !!!
राम भेजलि कि सिरजलि जाल ? जिंअ राम कि मुअलें अकाल ?
अस भनि सिय जब जोर रोअलीं । कपि तरु से उतरि पग परलीं ॥
माइ माइ कहि क संबोधलीं । राम दूत निज क समुझवलीं ॥
पुनि सब कथा समाद कथलीं । पर सिय तबो न मन बिसवसलीं ॥
कहलीं, कपि, तो बात मानीं । दूध जरलि फुँकि पीअति पानी ॥
कहीं बात अस जे मन भरे ? मन बिसवास रवाँ पर करे ?
तब कपि परिचय दे निरधारि । राम क बन बिबरन बिसतारि ॥
कथा आदि से अन्त सुनवलें । इक इक घटना बन क कथलें ॥
सिय पट फेँकल, कपि संजोगल, तेहि दिखवल त प्रभु पहिचानल,
राम-लखन सुग्रीव मिताइ, बालि मरन, सिय खाज पठाइ,
मुनरी राम देल चिन्हानी, प्रभु सनेह, बिसेखि निसानी,
राम-लखन क अंग क हुलिया, चलन, सुभाव, गुन, प्रकृतिया,
दुनो भाय कर तेज, बिक्रम, कीरति, बुधि, यस बल क चितन,
साल, सुभाव, रहनि, गुन, ग्यान, हँसनि, उठनि, रुचि, चाल, महान,
उन क उमिर, कद, मुँह क कटाव, नाक, गाल, चख, अधर बनाव,
कंठ, कान भुज, काँध, अजान, रंग, पेट, कटि, बच्छ उतान,
जाँघ, फिली, पद अँगुरी रूप, कमर, नाभि, तिल, नोह सरूप,
सबे बिसेखि कपि समुझवलें । भ्रात भ्रात अलगाइ बखनलें ॥
निज यात्रा त लंक क आइल । भेंट बिभीखन लंकि पिटाइल ॥
सबे बखानि कपि जब बुझवलें । बिनय बिसेखि क हाल सुझवलें ॥
बिबरनसुनि सिय भइल बिसासि । दृग जल ढरिक कहली उसासि ॥
कहीं, राम उहां कस रहलीं ? कस प्रभु दुरदिन दुख निबहलीं ?
सक्रिय कि बिराग मन निबहीं ? क्रम रजनीति बूढ़, कि नवही ?
धरम, करम, संगठन के भाव ? मन अनुसरीं कि रखीं दुराव ?
मो बिरहे इनमें का ह्रास ? या कि प्रभु सब निबहीं प्रयास ?
निज बल रहत भरोसि कि राम ? सुर-बल भी बिनवत बल धाम ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बयसि काँच, दुख प दुख झेललें ? यह से कांच मन त ना भइलें ?
का अवध सुधि केउ कपि लेला ? हा ! सहाय के दुरदिन हेला ?
जस जल बिनु कमल सर सूखें ? तस बिनु सिय त प्रभु ना झुरझें ?
नारि, राज, गृह, मातु छुटले ? बचल धीर से तऽ नहिं नसलें ?
कहु, कपि-सुत प्रभु मो कि कहलीं ? मो लगि का सनेस पठवलीं ?
प्रभु का कबो करी ले याद ? कबो त भेजलीं ना सम्वाद ?
का अजुओ मोहि राम पिअरलीं ? कि मो संत अबहूँ बिसवसलीं ?
कपि, का राम अधिक दुबरइलीं ? कस तन, मन, कस दिन निबहलीं ?
बने रसोइ के, करे उपचार ? थाकि माँदि जब चरन दुखार ?
हे हो लखन, तूँ त बड़ भागी ! जे प्रभु चरन सेवत अनुरागी !!
धिक ! मो भागि कि भइल बिछोह ! धिक !! उमगल कस छल-मृग मोह ?
कबो कि प्रभु गुन अवगुन गवलों ? कहु कपि, साँच, झूठ न बालला ?
उहे प्रेम कि भइल अब थोर ? मो लगि कबो कि बहइं लोर ?
लखन के का हव मो प्रति भाव ? बहसु प्रेम की रखसु दुराव ?
तिय सुभाव बुध चंचल कहल। हमरो के का उन अस मानल ?
हे कपि, बड़क हम हत भागिन ! सत कहबि नहिं गोपबि दुखारन ?
जो अन भाव प्रभु मन मानीं, रउरा कबहूँ अस अनुमानीं,
त हित राम, जग, कुल, निज तोर, साँच कहबि सुनि मोर निहार ?
कि सिय दुखी दुख करे निसेस। की आगे कुछ रहे न सेस ।।
कपि मोहि के त खूब परिखलों। राम दूत सत क बनि गमलों ।।
राम विसास जोग जो मानीं। त उन तक मो कहीं कहानी ।।
नहिं त मोहि सुत, मरन दीं ईहें। जस जग मरति बिरहिनि बिरहे ।।
सागर में जस घन बुँद गीरल। तसत इहाँ मोहि छुद्रि क मरल ।।
महि से जनमि क महि अस रहलीं। महि दुख सहि क अनघ जो मरलीं ।।
त मो सम के सुखी सवितिरी। मरि मिटलि सन हित गाथितरी ।।
कहत कन्ठ भरि, मुंह बन्हाइल। ढ़रि द्दग लोर पलक झँपाइल ।।

यह तरह महराज कुमा श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम— दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार बिरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के पाँचवा सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि पूस बदी ४ सम्वत २०१९, विक्रमी, तदनुसार १५ दिसम्बर, १९६२ इसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीलपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### छठवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—पूस बदी ५, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, १६ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

सीता जी जब हनुमान जी से राम जी के सम्बन्ध में एक एक बात पूछ के, आ ई प्रस्न कइ के कि राम जी का अबो हमारा सत पर विस्वास करीला आ ओसहीं प्रेम करीला, रोइ के चुपइलीं तब हनुमान जी के उहाँ का दुख से द्रवित हो के राम जी के विनय विसेख सब हाल बतावल आ सीता जी के एक एक सवाल के जबाब देल। राम जी के सक्रियता, प्रेम, बिरह, विकलता आदि हनुमान जी के मुख से सुन के सीताजी के रोअल आ फेन सुधि बुधि भुला देल और संज्ञा सून्य हो गइल। तब हनुमान के राम-धुन गाइ के सीता के होस करावल। फेन हनुमान के राम के प्रेम के वरनन करके खुद भक्ति में बिभोर भइल और सीता के भी उहे हाल भइल। हनुमान के फेन सीता के अपना पीठ पर चढ़ा के ले जाये के प्रस्ताव कइल आ सीता के हनुमान के सक्ति औ बल पर संका कइल आ हनुमान के बृहद सरीर धारन करके बिस्वास दिआवल। सीता के फेन बानर पीठ पर चढ़ के चोर अस गइला से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राम के निन्दा के भय से इनकार कइल आ हनुमान जी से आपन कृतज्ञता जाहिर कइल आ हनुमान के फल फूल खाये खाती आज्ञा माँगल। सीता के आज्ञा ले के हनुमान के अपना पिता पवन के स्मरन करके तुफान बहावल आ असोक-बन के बिध्वन्स कइल आ रखवारन के भागल आ रावन से हाल सुनावल।

## १६ मात्रिक चौपाई

तस हिय कपि द्रवि मन दुखाइल। गद गद कन्ठ बचन भुलाइल॥
कहलें, सुनी. राम कहानी। प्रेम से निज उ दुगुना मानीं॥
प्रेम राम-सीय जग में एक। भइल न होखी यह से नेक॥
राम जान क जान जानका। राम प्रेम क प्रान जानकी॥

## दोहा

भूमि सयन बल-कल बसन, निसि सिय-नाम क जाप।
धरम करत, खोजत सिया, कटत दिवस कर ताप॥

## १५ मात्रिक चौपाई

मातु राम क जीवन चरचा। रहल प्रेम में जनु तो अरचा॥
ई ना कि नित रोइ के मरीं। कागर अस निस्क्रिय बनि फिरीं॥
परम, तेज, बल सील निधान। पहिले जस तस अजो समान॥
जप, तप, करमत, धरम पुनीत। नृप प्रिय प्राक्रम, बल, रजनीत॥
सब आचरि क नृप अस बरतीं। संगठि जन बल हित परतीतीं॥
बिघटीं दुस्ट त सतजन मिलईं। सबन में आपन प्रीति जमईं॥
सत अनुकूलि, असत दुराईं। गुन, सील, बल, धाम कहाईं॥
लखत लखत अस पौरुस बढ़ल। कि सुर सन्त सद असरा बँधल॥
कारन मितता प्रभु सुग्रीव। सीता-सोध बालि-बध नीव॥
उत्तर दखिन मेल क कारन। राज सुकन्ठ, सीय क पावन॥
भा ब्याजे यहि उत्तर दखिन। आर्य अनार्य क मिलवल लछन॥
भा यहि मिसे अवध रजनीति। बस में राखल भीतरी नीति॥
भइल बटोर जे कोटि कपिन क। सीय रहे खोज उदेस तिन क॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नृप सुग्रीव क इहे आदेस। अवधि पूजत दल सचे हदेस॥
बीतत सरद जे सुधि न लइहें। निस्चय से कपि कोटि हतइहें॥
तन्हे मातु, प्रभु तोर बदउलत। नभ पताल कड़ी दुइ जोरत॥
जब सब दून विफल लवटिहें। अवसि बिधटि जग राम मरिहें॥
तो लगि जतनसील भल राम। हो बेचैन करीं नित काम॥
मातु राम क अब लगि करनी। सुनी इहे, सहुँ रउरे कहनी॥
जब रिसिमूक राम पधरलीं। मिलि सुग्रीव क मीत बनवलीं॥
तब तो बसन अभूसन फेंकल। पा कपीस से प्रभु पहिचानल॥
जस सुनरि, 'यहँ रवाँ बिलखलीं। तेह से दुगुना राम झँखलीं॥
उन हिय मेलि सिसु सम रोअलें। तन जनु छूटल प्रान पत्रलें॥
जब लखन किसिन्धा गमलीं। आ बन राम अकेल पडलीं॥
तब रिसिमूक प बिरह क दृस्य, निसि भर बिलपल रउरे सहस्य॥
कहत होत मन अजो बेचैन। सुनि के मातु नांह बिनसाव चैन॥
चाँद उगल लखि तो क इअदलीं। बिरहा में कहि का ना घललीं॥
पागल असि हा नीति भुलइलीं। प्रेम रूप उमँतल दिखइलीं॥
सगर तोर कलपित छबि धरीं। बिलखि मताइल बन बन फिरीं॥
हो निरास जब मुरछि क गिरलें। खलबल नभ थल सगर मचलें॥
आइल जोग प्रलय क उहवाँ। जुटलें धाइ त्रिदेव तहवाँ॥
सुर बिनयि बन देबि रिझवलें। होस राम करावन कहलें॥
बन देवी तब धइली रूप। छुअली प्रभु पद रउरे सरूप॥
होस छुअत पद लहलीं राम। प चिन्हि देबी कइलीं प्रनाम॥
भरल सभा में राम क भाखल सांसि सम मुख प लोर बहावल,
नृप कहले तो हुलिया दीहल, सुनि, सनेस आवत के कहल,
हिय-सर उदबुद भाव बेहाल। घन जनु बरसत निरमल ताल॥
राम प्रेम हव राम क जोग। राउर प्रेम त रउरे जोग॥
एक से एक दुनो बा बढ़ल। दुनो जोग हिय दूनो जोगवल॥
का कबो जग यह के भूली! जो भूली त सत्य के भूली!
कहलीं सनेस आवत क जूनि। रखि हऽ इहो हिय कपि तू गूनि॥
जो यहँ अवधि बिताइ लवटबऽ। सायद राम क जिअत न लखबऽ॥
कहिहऽ सियं से मो प्रेम निहोरि। अब का कहीं न आव बटोरि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जीअत उन लगि अब लगि राम। ना त कबे तन तजितें प्रान ॥
नाँहि अंक अस रउरे मातु। जेह पर प्रेम करीं प्रभु तातु ॥
मो कपि पर भी तइसे नेह। जे पसु मूढ़ रूख पर गेह ॥
लखनो माँतल तसत सनेह। प्रेम लीन तस जनक बिदेह ॥
बयखरि मातु पिता त मुअलें। भरत खराउँ मड़ई पूजलें ॥
सबरा भिलिन तसहीं माँतल। जेहि जूठ फल प्रभु तहँ चाखल ॥
नेह बस पाथर बनल नारि। स्वयं प्रभा जपि सरग सिधारि ॥
बालि क भी त सुनी कहानी। जेहि बधि राम नसल निसानी ॥
मरतो पग गिर के सनेहलसि[१]। जनम जनम भगति वर मँगलसि ॥
लेलसि प्रेम राम अवतारि। निज जनु बँटलसि हाथ पसार ॥
भासे अमृत मोहि ये माई। नेह लहत नर पुरुब कमाई ॥
कहि कपि मगन प्रेम में पगलें। गद गद गात, दृग जल ढ़रलें ॥
सहुएँ सिय सुधि तन क बिसरलि। कब क जाने मन गति रूकलि ॥
बइठलि गत बुधि भाव बिभोर। काठ क मारलि ढ़ारति लोर ॥
ताकति हनुमत, उससति जोर। चिचकत हिय बिच भाव अथोर ॥
कपि क सुननि कि गुनति अन रंग ? उमगलि, माँतलि, की मति भंग ?
मगन प्रेम जनु प्रेम मूरति। सद, चिद, आनँद, तीनू सूरति ॥
नीरव, इस्थिर, संग्या हीन। ज्ञान नसल, गति भाव में लीन ॥
अस लखि क कपि हिय डेरइलें। राम राम भइ धीर जपलें ॥
राम सबद सिय तुरलसि ध्यान। गवलसि राम राम धुनि प्रान ॥
कपि सिय दूनो जपलीं राम। मन न अघात जपि प्रभु क नाम ॥
आइलि चेतना कपि बिनवलीं। का मातु मो आज्ञा दिहलीं ?
राउर दुख देखि मन दूखते। छन छन पल पल कस क बीतत ?
उहाँ राम तसत गिरि बिलपत। झुंड़ बिछुरि ऐरावत चिकरत ॥
बइठु पीठि प्रभु प पहुँचाईं। पिय दरसि, बिरहागि बुझाईं ॥
असुर सहित लंक ढ़ो घालबि। सकें ना यहि में राम बिसारबि ॥
प्रभु मुख अजुए मातु दरसबि। रिपु दरप, बल, छल, मद बिनसबि ॥
रोहिनि जसत चाँद ढिग जासु। तसत मिलबि प्रभु दास प्रयास ॥

---

१—सनेहलसि = सनेह किया, स्नेह से क्रिया बनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कहली सिय, कपि कस अत दूर। करबि पथ तय कहि कर अदूर॥
यहि कस कहनिं न कपि चपँलता? लखि क तोर बदन के लघुता?
मानि क संका कपि अपमान। नमि सहजे छुअलें असमान॥
महा उचान त महा बितान[1]। महा बिसाल जसत असमान॥
लखि सिय हिय प्रसंसि क कहलीं। बल कपि रवाँ, अतुल त धरलीं॥
सक्ति, पराक्रम तो बिसरलीं। प अस गइल त उचित न मनलीं॥
कारन बहु कपि यह क समुझीं। चतुर बुद्धि सद बात बूझीं॥
का सक ना कि पीठि से गीरबि? जसक तेज कपि रउरा चलबि?
कस क असुर आकरमन लड़बि? लड़बि त कस क मोहिं सँभारबि?
फिर बिनु आज्ञा प्रभु के लहत, मरद पीठि अन बइठबि कसत?
भागल इहाँ से अस चोरी से? प्रभु बल निन्दी रिपु ओरी से?
कही जगत असुर जस छललसि। तस सत, सील राम बिनसलसि॥
एह से कपि तो नहिं अविस्वासी। धरम, नीत युत मति क भासीं॥
जाई प्रभु क कसहूँ लानबि। निज बिक्रम प्रभु हमें उबारबि॥
तब कपि कहलें, हे सिय माई! बात परम त कहीं गुढ़ाई॥
भने बात नीति, सेइ भाखीं। लानबि राम बिसास राखीं॥
दिहीं हुकुम बन फलफुल खाईं। नगर पइठि कौतुक दिखाईं॥
तब पुनि मिलि क राम सनेसी। बिरह दुख प्रभु हिय क निसेसी॥
कहलीं सीय, सुन तो उपकार। मो मूअती क भइल अधार॥
जनम जनम तो मानबि रीन। कवनो बिधि न होखबि उरीन॥
मूरह अलग सुदिओ ना सकबि। जनम जनम जतन कइ थाकबि॥
मो वर कपि नित जग पुजाइबि। अजीर अमर त्रिकाल कहाइबि॥
खा पी करीं जे उचित जनाय। कौतुक लगि बल निज परिचाय॥
तब नमि तरु कपि कूदि चढ़लें। इत उत तकि पवन सुमिरलें॥
उर से तब झट उठल बवंडरु! हो प्रचंड बन कइलसि नमतर॥
रूख, बिरिख, गिरि, महल, मकान। तुरलसि, नसलसि, छन में तमाम॥
जे बाचल से कपि तब तुरलें। हिला दोमि, धकिआ गिरवलें॥
क्रीड़ा, नाच-गृह, फउवारा। तूल, तमाल, राज भँडारा॥
फूल पात लहरि जे बेंवरि। तूरि तारि क डरलें महि परि॥

---

१—वितान = चौड़ाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



खग पसु पोस, अपोसल सगर। गिरि परि, भागि भइले अबतर॥
जब अइलें रखवार निअरे। फूँकि उड़बलें नभ में उपरे॥
सब कइ हा हा कार भगलें। सहुँ रावन जा हाल कहलें॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार बिरचित साहित्य-रामायन के सुन्दरकान्ड के छठवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि—पूस कृस्न पख ५ सम्वत २०१९, बिक्रमी तदनुसार १६ दिसम्बर १९६२ इसवी।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### सातवां सरग

प्रारम्भ-तिथि—पूस कृस्न पख ६ सम्वत २०१९ बिक्रमी, तदनुसार १६ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

असोक बन के रखवारन से, आठ हजार रखवारन के मरल सुनि के रावन के रोस कइल आ जम्बुमाल के बुला के हनुमान के पकड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के ले आवे खाती भेजल । जम्बुमालि से हनुमान के युद्ध बरनन । जम्बु माल के मरल सुन के रावन के मन्त्री के सात सुत के युद्ध वास्ते भेजल । उन्हन के भी हार भइला पर दुरधर, प्रघस आदि पाँच सेना पतिन के युद्ध करे के आ हनुमान के पकड़े खाती भेजल । युद्ध और पाँचो के मराइल । तब रावन के आपन वेटा अच्छ कुमार के युद्ध करे वास्ते महान सेना ले के भेजल ओकरा से हनुमान के युद्ध बरनन । अच्छ कुमार के मराइल । रावन कें चिन्ता अ। सोक ।

## १५ मात्रिक चौपाई

कपि सहस्र रखवार मरलें । सुनि रिसि रावन क अति बढ़लें ॥
ते प गुनि रिपु दूत अवाई । अनल-कोप गइल दुगुनाई ॥
जम्बुमालि हँकारि बुलवलें । लेइ सैन कपि पकड़न कहलें ॥
निकसल सजि ले असुर कितेक । हय, गज, रथ बहु सैन अनेक ॥
निसि गत तब तहँ भइल प्रभात । देखलें रिपु तरु बइठल जात ॥
लखत चढ़ा धनु सर सन्धनलें । सीस ताकि क बान चलवलें ॥
सर पर सर हनि कपि क बेधलें । लहूँ लुहान अचल कपि दिखलें ॥
मनहुं किरिन-सर बेधल कमल । घिरल पात बिच चमकत सोभल ॥
पर सर असुर अन जब खिचलें । हनुमत परिघ उठा क फेंकलें ॥
परिघ जाइ साधे हिय हनलसि । जम्बु मालि उतान गिरवलसि ॥
गिरत प्रान असुर झट तजलें । भागु पराहु सैन रिपु मचलें ॥
दसमुख सुनत हतासि डरलें । सुत मन्त्री के सात बुलवलें ॥
कपि पछारि बाधन क कहलें । लेन सैन अतुल अदेसलें ॥
घन असाढ़ सम सैन महान । चढ़ि चललें सुत सात जवान ॥
चहुँपत सर बरसलें जुझार । जस गिरि निझरत जल कर धार ॥
उत कपि रँगल रकत बहु भाँति । सर सँग खेल पवन घन माँति ॥
खेल खेला क सातो मरलें । हय, गज, रथ सँग सैन नसलें ॥
बहल खून नद असुर बुडात । हय, गज, मछ, कछ पौंड़त जात ॥
रावन सुनि दूसरकी हार । मन डरल पर पुनि, सँभारि ॥
दुरधर प्रघस आदि पँच बीर । बोलि बखानि बल विक्रम धीर ॥
महारथी जें सोधल जवान । जितले लमहर युद्धि जहान ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नीति बुझा, युधि, कला चेताय। भेजलसि पकड़े कपि समुझाय ॥
हय गज, रथ ले पैदल सैन। चललें सब झट लड़न बेचैन ॥
फाटक प रबि सम कपि लखलें। देखत दुरधर सर चलवलें ॥
सर लगते कपि उडलें अकास। कुदलें रिपु पर तहँ से हहासि ॥
कइलें दुरधर चकना चूर। प्रघस क मरले चाँपि लँगूर ॥
सेस तीन तब जुटलें आइ। पटा, बानो सूल ले धाइ ॥
जमि क लड़लें हनि सर मरलें। कपि तन रकत-फुहार छुटलें ॥
कपि जस चल-फउवार धवलें। निकटे गिरि क सिखर, उखड़लें ॥
पटकि क मरलें बज्र समान। तीनु के कइले काम तमाम ॥
गिरत सेन पति सेना भागलि। दससुख निकट हारि निहोरलि ॥
तब सुन अच्छ कुमार रावन। तुरत बुलवलसि भेजि धावन ॥
सजि धजि क ऊ लड़न क धवलें। नभ, थल गामी रथ सजवलें ॥
जे रथ सुर नर जगत प्रसंसित। अस्त्र अस्ट से चतुर प्रवाहित ॥
बल निधान त युद्धि क ज्ञानी। अच्छ कुमार बिक्रमी मानी ॥
पितु नमि हौंस बाँधि क चललें। कपि बल मरदन प्रन क धवलें ॥
लखते कपि क अस सर हनलें। तिल मिला कपि गिरन से बचलें ॥
लखि सुघरई बीरता चाव। हनुमत मनमें अनलें भाव ॥
गुनलें बालक लख होनिहार। बड़ बलबान दीखत कुमार ॥
चहलें देन जान बकसीस। पर गुनलें रिपु बल क अधीस ॥
आग सत्रु न रहे दे सेस। करे से अस न होय निहसेस ॥
गुनि कपि अस झट नभ में उड़लें। अच्छ कुमार रथ चढ़ि खेदलें ॥
तब दु बीर नभ में अस लड़लें। सुर बिमान चढ़ि भूरि सरहलें ॥
असुर सर कपि तकि संधनलें। पवन रूप धइ कपि बचवलें ॥
जब बज्र कपि सिर पर घहरें। अद्दस हो कपि ऊपर ससरे ॥
पीठि मुस्टिका हनि क चिकरे। तसु कुमार धनु क टँकोरे ॥
लहू लुहान कपि कमल सद्दस। तन सर-किरिन बिधल भोर द्दस ॥
तब कपि गुनि रिपु हौंस क बढ़त। चटकन हनि हनि कइलें निहत ॥
पुनि तुरि रथ, रथ हीन कइलें। अच्छ कुमार अधोमुख गिरलें ॥
तब कपि घुमि क रिपु पग धइलें। घुमवे अच्छ कुमार क लगलें ॥
त घुमाइ चाक अस फेरलें। उलटि, झटकि, झट महि प पटकलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस कि गिरते भुज, पग, छाती। चकन चूर हो तन निपाती॥
अस विनासि युवक रिपु हनुमत। द्वार बइठलें युधि क उनमत॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के सातवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि-पूस बदी ७ सम्वत् २०१९, विक्रमी, तदनुसार १८ दिसम्बर, १९६२ ईसवी।

— —

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### आठवाँ सरग

प्रारम्भ-तिथि—१ फागुन सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, १० फरवरी १९६३ ईसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अच्छ कुमार के बध के सम्बाद सुनके रावन के चिन्ता आ इन्द्रजीत के बुला के प्रसंसा करके आ राजनीत तथा रिपु बल बता के युद्ध करे वास्ते भेजल आ हनुमान के जीअते पकड़ के ले आवे के आदेस देल। इन्द्रजीत के सिंह-रथ पर सवार होके गइल आ महान युद्ध कइल। सगरो से थाकि के आ हनुमान के अबध गुनि के ब्रम्हास्त्र के प्रयोग कइल आ हनुमान जी के ब्रम्हा के वर के स्मरन कइल आ बँधाइल आ रस्सा से बँधा के रावन के समीप गइल। रावन के हनुमान जी के मारे के आदेस देल आ बिभींखन के रावन से दूत के बध ना करे के समुझावल।

## १५ मात्रिक चौपाई

अच्छ कुमार क वध सुनि रावन। बिलखि, व्यग्र, क्रोधि हुतासन ॥
इन्द्रजीत क वेगि बुलवलसि। बहु प्रसंसि क तोखि सरहलसि ॥
कथि हित नीकि, नीति बुझवलसि। कपि-बल, असुर-हानि सुनवलसि ॥
अच्छ आदि क मरन जनाइ क, बल हनुमान के बताइ क,
मेघनाद सवधान कइलसि। कल, बल, छल से पकड़न कहलसि ॥
पुनि पौरुस उन धीर बखानि। भेजलसि सुत भल क सनमानि ॥
मेघनाद त इन्द्र बिजेता। चढ़ि रथ चलल सिंह जे जोता ॥
चारि सिंह दढ़िअल बिकराल। यम सम धवलें दाँत निकाल ॥
रथ-रव घर्स धनुस टंकार, सुनत हरखि अति पवन कुमार,
गरजि कूदि नभ, बढ़ा सरीर, सैल उखारि, धारि बल धीर,
धवलें मारन किलकि कोपि क, फेंकि सैल जनु बज्र साधि क ॥
धनु टंकोरि उत घन समान। कटलसि सैल क सर संधान ॥
सर प सर तब बरसे लागल। पकड़ि, सरकि क, कपि कुदि बाँचल ॥
छन लघु, छन बड़, छन बनि वायु। करि कपि कौतुक लड़त दिढ़ाय ॥
यहि बिच अवसर ताकि क कूदि। मर्दि सिंह-रथ दिहलें रौंदि ॥
तब दउड़ि दू बीर लिपटलें। मनहुँ धाइ बलि, इन्द्र भिड़लें ॥
एक दावि जब दाव क करे। दूसर काटि क पेंच नव भरे ॥
सचल युद्ध अस महा विसाल। लड़हिं सिंह, करि जनु बिकराल ॥
दूनो कर बल दुनुहि समान। बिक्रम पौरुस दूनहुँ महान ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कपि रिपु सक न पकड़ि गिरावल। नहिं सक मेघनाद पछाड़ल ॥
देव सुरिस दुइ हटि जुटि लड़ल। एक अजय दूसर क मनलें ॥
चहलसि इन्द्रजीत धऽ पकड़ल। प रिपु-बल लखि विवस हो निहसल ॥
तब हटि क झट धनु संधनलसि। ब्रम्ह अस्त्र ले धनु टंकोरलसि ॥
कपि आदरि ब्रम्हास्त्र बँधवलें। विधि क वर[1] गुनि मुद मन मनलें ॥
पुनि कि अरि वर भरम न जनलसि। जे अनभिग अस अस्त्र चलवलसि ॥
गुनि, आदरि के सुर सन्मानी। आ ब्याज यहि असुर निदानी ॥
अस मन बँघि गिरलें हनुमान। रखत अतुल बल, सहि अपमान ॥
जातुधान धा बँधले रस्सा। लखि मन मेघनाद क रिस्सा ॥
सोचि कि दूसर बन्ध नसलसि[2]। ब्रम्ह अस्त्र प्रभाव मेंटलसि ॥
मरम भिज्ञ कपि मन मुसुकाइल। दस मुख सहुएं ला धराइल ॥
लखि रावन-बल कपि चिहाइल। तइसे कपि लखि नृप, निहसाइल ॥
दुनो एक दूसर बल जनलें। विक्रम पौरुस सबे परखलें ॥
पर असुर हँसि परिचय पुछलसि। हेतु गमन क जानल चहलसि ॥
सुमिरि राम, बन्दि निज हिरदा। कह कपि, दसमुख बात हितदा ॥
नृप, जस छवि ले स्वान भगलें। तसत पतिनी जेहि क तें चोरलें[3] ॥
तेहि प्रभु अन्तरयामी राम। हईं दूत पठवल हनुमान ॥
सेहि नृप-अवध मतँग गिरि आय। बनल सुकन्ठ मित्र अपनाय ॥
बालि मारि, कपि -राज दिहलें। कपिन-सैन संगठि बन बसलें ॥
सिय सोध हित दूत उ भेजलें। बीर बली दस दिसि जे गमलें ॥
तिन महँ एक पवन क जामल। हईं भ्रमत हम दूत चहुँपल ॥
खोजि देखि सिय सब समुझलीं। लगलि भूखि फल फूल भखलीं ॥
कपि स्वभाव बस द्रुम तृन तुरलीं। प्रकृति सुभाव सहज निबहलीं ॥
असुर दल जब जुटि ललकारल। हनि तिनके निज जान बचावल ॥
त का मोर यह में अपराध। जेहि लगि युधि अस मचल निदाघ ॥

---

१—ब्रम्हा जी ने पवन कुमार को वर दिया था कि मेरा अस्त्र तुमको एक मुहूर्त्त में ही अपने बन्धन से मुक्त कर देगा। २—सान्त्रानुसार ब्रम्हास्त्र दूसरे वस्तु के बन्धन पड़ने से अपना प्रभाव मुक्त कर देता है। ३—चोरले = चुराया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जे मोहि मरलें तेहिं हम मरलीं। सैन नीति के न्याय बरतलीं॥
मेघनाद पास जब फेकले। विधि आदरि हम खुद बँधनलीं॥
यहि मिस तव सहुं आइ दया क। कइल चहीं हित बात बुझा क॥
उर आनहु हे असुर, बिबेक। कुकरम निज कृत सोचु अनेक॥
तेजि-असुर बुधि सद-बुधि आन, जे भव-बन्धनं बिनसे महान॥
ब्रम्हा कर कुल उतम जे भनल। तहँ सुत ते विस्रवा क जनमल॥
भइल भाय धनी कुबेर के। तस पुनीत नाती पुलस्त के॥
कस आचरसि मारग कुपथ क? जे बाधक बन लहत सरग क?
कुल, यस, बुधि, न्याय से तोह क। अस बृति असुर न भल दसमुख क?
तब ते कस कुबृत्ति गरहले? निज पपौति देवत्व भुलवले?
जेहि बस मन सद् बुधि भुलइले? पँच तत गुन से सिकरल गइले?
निर विकार तो जीव रहलें। इन्द्री बस सुख दुख सिकरलें[१]॥
इन्द्री परे जीव न मानसि? भरमि अविद्या असत क ग्राहसि?
सपना सरिस जगत हव असत। फँसल अविद्या अतमा लखत॥
ध्रुवे सत्य, तृप, मानु कि अतमा, निर विकार सरुप रख अपना,
रहि अद्वैत न ग्रहत विकार, सगर व्याप्त जस गगन अकार॥
तस अतमा रह देहि अलिप्त। सूछ्म रूप, बनि साखि, निलिप्त॥
'देह, प्रान, मन मिलत ई जीव'। अस जे भन गड़ असत क नीव॥
जे कारन से जग बन्धन ई। मिथ्या माया मोह फसल ई॥
अविनासी, चिद, सत अजन्म नित। आत्मा हवे सदा बन्ध रित॥
भुँइँ बिकार असि तन अनात्म हऽ। प्रान, वायु, रूप से अनात्म हऽ॥
अहंकार हा प्रकृति बिकार से। बुधि भी जनमे मन बिकार से॥
आत्मा नस्वर मन न प्रान में। भरमे नर अस गुनि अग्यान में॥
चिदानन्द सरूप अविकारी। देह संघात से रह नित न्यारी॥
स्वयं स्वामि, स्वयं अबिनासी। स्वयं प्रकास, स्वयं निबासी,॥
निरमल सदा, रहित उपाधि से। अज, निरंजन, नित्य, अखण्ड से॥
आत्मा क अस मानु असुर ते। कुवृति तेजि, लहु ज्ञान सुवृति ते॥
आ मुक्त बनु जग बन्धन से। लहुँ मन सान्ति क प्रवृति द्वन्द से॥
अब सुनु रे नृप, निज हित बात। कहीं तोहि जे सास्त्र बतात॥

१—सिकरल = सिकार खेला हुआ, सिकार से बना सिकरल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिस्नु-भक्ति करति मन निरमल। उपजल ज्ञान हिय करि परिमल ॥
जे बल अनुभव करि नर पाय। आत्मा-बोध परम पद लाय ॥
यही से भजु रावन ते राम। नारायन, हरि जे भगवान ॥
तजु हिय कुबृत्ति, सत्रु कुभाव। मन में आनु सरनागत भाव ॥
सिय सहुँ कइ हित सहित कुटुम्ब। प्रभु ढिग जा लहु छमा अखण्ड ॥
कइ क दया प्रभु करि हैं माफ। अस कृत-पाप क करवे साफ ॥
सुनते असुर गइल रिसिआइ। जस घृत पड़त अगिनि धधकाइ ॥
कह, कपि, धन ते भइले ग्यानी ? जे सिखवसि मो ग्यान बखानी ?
बहकि भिखारि करसि बड़ाई ? जे डरि भागि नारि हरवाई ॥
छोटि जीभि बात बडि घार्लास। फूँकि पहाड़ उड़ावल चाहसि ॥
अस उत्तर प्रत्युतर बढ़ले। बात बात से साख निकसले ॥
तब बतकही बढ़लि बहु भाँति। कपि-वुधि, रिपु-मद दुनहुँ बतात ॥
जस जस रावन रिसि बढ़वलसि। तस तस करखा कपि सुनवलसि ॥
दुनो पारंगत सात्र ज्ञान। राज नीति, गुन, न्याय, पुरान ॥
रिपु वुधि ग्रसल बिकार जे बाय। ताते छन छन होय हताय ॥
पर वुधि कपि क बिवेक जगाव। सान्त सुथिर प्रभु भक्ति क पाव ॥
यह से तर्क उपर हो जात। निहत असुर बुधि छन छन माँत ॥

यहि बिधि बहसत रिपु रिसाइल। त लखि अवसर कपि गरमाइल ॥
नीति न्याय पुनि धरम बखानि। दसमुख कुल पुलस्त प्रमानि ॥
नृप-करतव कहि, राज क धरम। धरमे राज, नसे मति भरम ॥
पुनि कइ राम बंस गुन गान। सील, पराक्रम, सौर्य बखान ॥
बालि मरन, सुग्रीव मिताइ। सीय-खोज आधार सुनाइ ॥
दखिन-उत्तर, आर्य-अनार्य। एकता, मितता, सब निरधार्य ॥
सिय-हरन, असोक बन छिपवन। बिना सरत उनकर समरपन ॥
राम-दया, अभय आस्वासन। सील, सुभाव, राम सुसासन ॥
विनय-बिसेखि पुनि पुनि कहलें। रावन क्रोध उतेजि बढ़वलें ॥
जसत परत घृत अनल क कुन्ड। उठ ज्वाल बरि धधकि निक ॥
तसत उठल बरि रावन रीसि। मारु मारु कपि, कहलसि खीसि ॥
समय बिभीखन तब अनुमानि। विनवल नृपति पूर सनमानि ॥
दूत बध, नृप सास्त्र मना बा। रन नीति भी भनत आसत बा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तो समान ग्यानी विक्रमी, वड़ कामन में सदा उद्यमी,
के यस गौरव होई बिनास। सह्लएँ सत्रु करी उपहास॥
हते दूत कछु लगी न हाथ। अजसे भर रह रउरे माथ॥
भनलें सास्त्र दूत बहु दन्डा। भावे जे दंण्डी मिटे बितन्डा॥
सुनि रावन मन हँसत रिसाइ। अंग भंगि कंपि दिही पठाइ॥
कपि सहजे प्रिय पोंछि हउए। पट लपेटि झट फूँकी सहुँऐ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के आठवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि–फागुन कृस्न ६ सम्बत २०१९, विक्रमी, तदनुसार १५ फरवरी, १९६३ इसवी।

—:❀:—

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराजकुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# सुन्दरकान्ड

## नउवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—फागुन बदी ८ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १७ फागुन १९६३ ईसवी।

बिभीखन के सलाह सुन के हनुमान के पोंछि में कपड़ा लपेटे के रावन के आज्ञा। राच्छसन के हनुमान के पोंछि में कपड़ा लपेटल आ हनुमान के पोंछि बढ़ावल। रावन के खीझल आ नगर में हनुमान के घुमावे के हुकुम देल। हनुमान के नगर में घुमावला के बरनन। फेन रावन के सामने आइल आ तेल धीव पोंछि पर पोतल। भँडार के तेल घीव के चूकला पर सहर गाँव से चिकना मँगावल। तवनो पर जब ना पोंछि भीजलि त रावन के ब्यंग आ हनुमान के उत्तर। रावन के रोस आ पोंछि में आगि लगवावल। फेन हनुमान के अटारिन अटारिन घूमि घूमि सउसे लंका में आगि लगावल आ जरत लंका के सांगो पांग बरनन। जरत प्रानिन के बरनन। आगि के प्रकोप आ जनता के भाग पराहु। लंका जरा के हनुमान के समुद्र में पोंछि बुतावल।

### १५ मात्रिक चौपाई

सुनि आज्ञा असुर दल धवलें। लाइ लाइ पट पोंछि बँधलें॥
जस जस पट उ पोंछि लपेटलें। तस तस कद कपि पोंछि बढ़वलें॥
तब बजार, भँडार घर बसन। ला असुर बँधलें समपूरन॥
पट निधि होत कम लखि रावन। भन मयावि कपि घिन अपावन॥
घुमावऽ बजा क बजना नगर। दिखवऽ तमासा प्रजा क सगर॥
बजना बजल जमल तमासा। सिसु नगर जुटि पारत हाँसा॥
थपरी पीटि हँसत ठहाका। पथ घुमावत हनत हुताका[1]॥

[1]—हुताका = हुतुका = अंगुठे और तरजनी तथा अनासिका को सटाकर चुपके से मारने की क्रिया को हुतुका कहते हैं, हुतुका मारना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नर नारी जुटि लखत हुलासा। हँसि क, बिरा क, करि परिहासा॥
भूँके कुकुर बिजुके गइया। पूत गोद ले हलरें मइया॥
मन में मुदि कपि डरपत, काँपत। छटपटात जनो दुख पावत॥
पुर घुमा नृप सहुँ दल आइल। ला चिकना पट-पोंछि पोताइल॥
जब घी तेल भँडार क चूकल। त-हाट हेरि नगर पठावल॥
तबो रहल अधभींजले बसन। जसत थोर पद तस घृत वजन॥
लखि लजाइ असुर तब बोलल। कपि दरिद्र कत पट घृत पीअल॥
लेसु आगि घृत काफी परल। ना त बोझ कपि अपने मरल॥
चुप्पी सधले कौतुक करत। हनुमत अब तक रहले हँसत॥
ने जस बके सभे कपि सुने। राम काज साधन मन गुने॥
पर सुनि असुर क टेढ़िकी[1] उक्ति। भनलें कपि हँसि व्यंग क सूक्ति॥
भखि असोक बन फल अघइलीं। जल घृत पी भँडाँर सुखइलीं॥
धनी लंक, प बसन ओराइल। तबो न पोंछि नगन ढ़ँकाइल!
अब जाइबि हम राम क द्वार। लहि पट छिपइबि पोंछि उघार॥
नात माखि नृप नारी लँगटो। पट बटोरि अस पोंछि लुपटी॥
लखि तिय लंग धिडंग माँती। मन बांछित लहि असुर उमाँती॥
लंक नगनता-पट पहिना क। लंका पुरी क सभ्य बना क॥
नृप रावन मन बिलसी काम। पट घृत उन क कवन हव काम?
लंक रंक, दूत इक अवले! कसत कटी, प्रभु सैन क गमले?
यही धन नृप रिपु राम निघाली! दिग बिजयी लंका निहाली!!
राम-सैन क भी सतकारी!! रिपु-सतकार सान बघारी!!!
हमरे अस जँह कपिन हजार। बड़हन एक से एक जुझार॥
नृप अस मो क लंक अतिथलें! कस सकिहें सहुँ लाख क अवलें?
लंक देस गुलरि सम बड़का। राम देस त लघु जनु भँडका[2]॥
दस मुख भल भुज बीस राखसि? कस निबही साधन अभावसि?
लघु नहरनी सान पजावल। सकी कि काटि साखु बढ़ावल?
अच्छा, अब मो बोझ उतारीं। आगि पोंछि लगा लघुआईं॥
सुनि रावन बरि उठल रिसाइ। उठा चलल असि मारन धाइ॥

---

१—टेढ़की = टेढ़ी बानी बक्रोक्ति। २—भँड़का = भाँड।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब बिभीखन "हाँ ! हाँ !!" कहलें। सचिव बृन्द भी त अनुमोदलें॥
अधिक हवन जस बुतवे आगि। बइठल रावन तस रिसि दाबि॥
असुर अदेसित[२] आगि लेसलें। एक साथ भभकि सब उठलें॥
लहकलि अगिनि जर जनु सम्बत। किलकि कूदि चढ़ल कपि गुम्बद॥
कूदि कोट महल रनिबासा। किला नग्र ध्वज सब निवासा॥
छन में घुमि कपि आगि लगवलें। तवे बायु अनचास बहलें॥
दम मारत में लंका दमकल। अति प्रचंड अनल लव लपकल॥
लंका बनल अगिन कर गंज। सत सत कोटि रविन कर पुंज॥
लव एक बनि लहकलि लंका। रवि सत थल प उतरल बंका॥
महा प्रलय क अगिनि उदीपति। कढ़लें जीभि भसम सब करति॥
बहति पवन सँग ज्वाल समेटि। चउआई लव उपर उमेठि॥
उठि ऊपर लव होत बिलीन। धुआँ सनाइ धुमिल बनि झीन॥
अगिन धुँआ बिच लख जनु मेघ। बिजु-सेन्हनी नभ काटति सेँध॥
एँठि जीभि ज्वाल चहुँ लपकति। महा प्रभंजन सँग ले खेलति॥
चट चट पट पट पद-रव करति। लहरि, भभकि लव अनल में मिलति॥
इन्द्र देव जुमि नभ में गमले। संग गिरत गिरि क थल लखलें॥
बन, तृन, रूख बिरीख बिसाल। खाढ़ जरत जनु प्रकृति मसाल॥
टूटि टूटि क कोट अटारी। गिरत कडाकि विज्जु जुभारी॥
सोन रतन कर बहु करिगिरी। गलि गलि ढरकति बुँद बुँद झरी॥
कड़कड़ा फाटत गृह ऊपर। हड़हड़ा गीरत छत सीखर॥
हय, गज, ढोर, ऊँट जे साला। बँधल लोह जंजीर बिसाला॥
कूदि फाँदि क चिकरत, तड़पत। ज्वाल लपट भुनि डँकरत मरत॥
तसत पंख खग बृन्द जरलें। भा उड़ि नभ जरि भागि मरलें॥
निबल सबल दल असुर अनेक। गिरत जरत घिरि भागि कितेक॥
ज्ञानी गुनी बीर बांकुरा। अबल, सबल नारि नर सगरा॥
दसा सबन कर एक समान। नृप अकिंचन लघु भा महान॥
सबे समान जरत बिच ज्वाल। करत अनल उन पद क न ख्याल॥
बचल बहर जे लव लपट के। बिकल सेहु सिर धुनि पद पटके॥

---

२—अदेसित = आज्ञा पाये हुए, आदेस से विशेषण बना अदेसित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बाल बृन्द लखि क वे जरले। भय ग्रसि क मूत्रल अस पहिले ॥
नग्र मचल चहुँ हाहाकार। रोइ, चीखि, हिय पीट, कपार ॥
जे बाचल से हा! हा !!, कइ क। पुका फारि रोअत, हतासि क ॥
सत महला पर, नारि सूतलि। खोलि कपाट चीखि क भागलि ॥
झपटि ज्वाल अंग झट चुमलसि। बसन जारि नगन तन कइलसि ॥
लड़खड़ाइ साँस गिर तुरलिन। गिर कइ, गिरत, बीच में मुअलिन ॥
ऐँठि लोथि भइलि जनु धनुहा। कण्ठ ऐँठि, टुटि गिरल लुलुहा ॥
चाम माँस लख सब जरिछार। महा बिकृत, मुख दाँत चिहार ॥
फटल ब्रह्माण्ड बोलि फटाक। चटकलि हड्डी सर्बदि चटाक ॥
सबे गतर जरि लहकत पेट। मज्जा, चरबी, धधकि उपेट ॥
लाल, पीत, धूमिल, ध्रूम स्वेत। जोति–रेख, मज बरि रंग देत ॥
बढ़ि दुगन्धि चिराइनि महकलि। गिर गिर लोथि प लोथि लहकलि ॥
अस नसि कपि रावन क नगरी। घुमि घुमि आग लगा क सगरी ॥
भगत बिभीखन गृह बचवलें। सेस सकल लंका क जरलें ॥
तब सागर गरजि कर कुदलें। पोंछि बुता बाहर निकसलें ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—विहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—विहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के नउवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि–फाल्गुन बदी १० सम्बत २०१९, विक्रमी, तदनुसार १९ फरवरी, १९६३ इसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीलपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### दसवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—फागुन बदी १०, सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, १९ फरवरी, १९६३ ईसवी।

समुद्र में कूदि के अपना पोंछि के आगि बुता के सान्त भाव से हनुमान जी के जरत लंका के देखल आ बरनन कइल, फेन संका कइल कि सीता जी भी त यह आग में ना जरि मरलीं ? ई संका के उठते मन में बड़ा दुख भइला से अपना कुबुद्धि के धिक्कारल। तबे आकास बानी के भइल आ सीता जी के सत बल के बरनन आ ना जरला के जय जयकार सुनाइल आ सती के बल के स्तुति। आकास बानी के सुनते हनुमान जी के मोह के नास आ लजाइल। सीता जी के पास गइल आ अपना मोह के बरनन कइ के छमा आ लवटे वास्ते बिदा माँगल सीता जी के भगवत लीला के आ भक्त रच्छा के रहस्य बतावल आ हनुमान जी के तोख देल आ आपन कृतज्ञता जाहिर कर्के वर देल आ राम के वास्ते अपना हृदय के सुभ कामना के सनेस सुनावल। हनुमान के सीता जी से सहिदानी माँगल आ सीता के चूड़ामनि दे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ओकर इतिहास कहल आ आपन दीनता दिखा के राम से कहे के सन्देस सुनावल। फेन कपि पीठ पर चढ़ के जल्दी से जल्दी राम पास पहुंचे के आपन इच्छा जाहिर करके भी राम यस के रच्छा वास्ते ओइसन ना करे के बात बतावल। फेन राम के साथ अपना गोप्य बातन के कुछ हाल कहि के सहिदानी रूप बनावल आ रोअल।
हनुमान के प्रस्थान।

## १५ मात्रिक चौपाई

सान्त चित हनुमत चहुँ तकलें। जरत अनल एक रंस पवलें ॥
गुनि, रवि कोटि तेज जँह बरत, ऐंठि जीभि-ज्वाल लव लपकत,
तहँ कस बची मातु मो सीता ? हा ! अस गुनलसि कस न चीता ?
गुनि कपि अस हिय मैल अधीर। मन पछतात बहत दृग नीर ॥
कहँ सिय अगिन लहक में पाइबि ? कहाँ मातु बिच ज्वाल खोजाइबि ?
थल थल लहकत, रंच न बाँच। सबे जरत, चहुँ अनल क आँच ॥
जरि जरि, गलि गलि मधु अस बहत। गलल सोन जनु जहँ तहँ ढगरत ॥
एक बरन ठवर सब चमकत। माँटी पथ्थल गलि गलि बहत ॥
जे बाँचल से तप बल बाँचल। यत असुर, सिध, दँइत निपातल ॥
ठवर रंच न लउकत जहवाँ। त-सिय अजरल बच कस तहवाँ ?
गुनि अस कपि तब भैल बेचैन। बिकल चित्त नंहिं हिय में चैन ॥
बार बार कपि निज धिकरलें। निज कुबुधि मन मोह तरजलें ॥
हा ! धिक बुधि जे प्रथम न सोच !! मातु कुसल हित यतन बिमोच !!!
क्रोध-पाप से सिय क गँववलीं ! कइल कमाई निज क नसलीं !!
हाय, त कस क प्रभु ढिग जाइबि ? निज क करनी कलुहि सुनाइबि ?
नासत रिपु क प्रभु प्रिय भुललीं ! अइलीं जे लगि सेहि गववलीं !!
जाति जनित निज चंचलताइ ! नसलसि सुभ सब कइल कमाइ !!
तबे बोलल नभ जय जय जय। सत क सतवंती सत जय जय ॥
जेहि सहुँ निहसल अनल क तत्व। महा प्रचन्ड अगिन क महत्व ॥
जे सत बचवल सीता निसंक। डालि प्रचन्ड ज्वाल कर अंक ॥
जे सत सता क आपन तेज। बचा बनवलसि अनल नितेज ॥
जेहि अनल पड़ि पथल पिघलल, जरि जेहि अगिनि सृंग भुइँ गिरलें,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जे ज्वाला ग्रसि लंका भसमल, आगि प्रलय जे बसु संहारल,
से ज्वाला सिय रोम न जरलसि । सत सहुएँ ते तन न परसलसि ॥
सत सतवन्ती सिय बचवलसि । आवत प्रलयानल दुरबलसि ॥
अस सिय मातु धन्य तू धन्य । परम पुंज सत सिय धन धन्य ॥
सुनत गिरा कपि क सुधि लवटलि । फाटल मोह कुबुद्धि बिनसलि ॥
कुबुधि कुहेस बिच झलकल तेज । जसत प्रलय-तम ब्रम्ह क सेज ॥
सत सहुँ पावक तत्व निहसल । अगिन भूत जड़, सत चिद झलकल ॥
चेतन बल सत, तत्व बल अगिन । जड़ चेतन अस अन्तर बिभिन ॥
कपि बिवेक पल भर में जागल । मातु सीय क सत बल जानल ॥
गुनि निज मोह उठलें लजाय । दरस मातु हित चललें धाय ॥
जा सहुँ सिय नमि ठाढ़ भइले । हाथ जोरि बनि दीन भखलें ॥
मातु कृपा त कौतुक कइलीं । क्रोध बिवस हो मोह फँसलीं ॥
रउरे दया से सेहू नसल । प्रभु लीला क कौतुक झलकल ॥
दीं बिदाइ जाईं प्रभु पासु । पहुँचाईं सनेस तो आसु ॥

## दोहा

करपुट नमि पद नाइ सिर, ढारत लोचन नीर ।
बिदा कहत गद गद गिरा, थर थर काँप सरीर ॥

उत सीता हिय हरख जनु, आनँद लख ससरीर ।
पुलकित गात सनेह हिय, आभारी दृग नीर ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

कहली, सुत सुनु तोर मोहा । अस जानब सब प्रभु क छोहा ॥
जे कइ लीला भगति क जगईं । जड़, प्रमाद, मद भगत नसईं ॥
हमरो भगति हऽ प्रभु क लीला । जेहि जोगवत प्रभु निज क सीला ॥
कस सुत करीं तोरि बड़ाई । जे काल त्रिकाल तक पुजाई ॥
बूड़ति सिय जसत दुख हरले । रिपु उर जस ते त्रास उपजले ॥
तस नसिहें दुख जे तोहि पूजिहें । मन बच करम से तो अरजिहें[1] ॥

१.—अरजिहें = अर्ज करेगा, निवेदन करेगा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वर ई मोर सदा फुरि आई। केउ बल सकि न यहि बिनसाई॥
तोर दिहल रिन सिय कस भरी। जनम जनम भरि सूदि न पूरी॥
जस सुत आ ते सिय उपकरले। रखी याद सिय जीअति, मुअले॥
जा सुत, प्रभु पहँ बिनय सुनइहऽ। कसत कटत दिन सबहिं बुझइहऽ॥
भीतर एक मास प्रभु अइहें। मोहि मुअती क कसहुँ उबरिहें॥
बिता क अवधि जो प्रभु अइहें। सिय तन क जग माँहि न पइहें॥
प्रभु क निहचय दीहऽ बताई। मास एक सिय आस लगाई॥
तेहि बीतत अनुसरी उ उहे। जे सतवन्ता बिरहे निबहे॥
अवरु का कहीं सुत, तूँ जानऽ। प्रभु कर मोर प्रेम अनुमानऽ॥
सहे क अन्त, सीम कछु हटे। लाँघत जेहि क सब बल बिघटे॥
त मोरि बिनती राम से कहबि। भाँति बहुत समुझाइ निहोरबि॥
सहि सहि दुख सिय कातरि भइलि। जीवन बोझ नाव लदि गइलि॥
अब आगे कछु हौंस न बाय। अस नहिं होय जे बाय नसाय॥
कहत कण्ठ भरि दृग जल बढ़ल। पलक ओट खंजन चख झँपल॥
तन रोमांच, स्वेद, मन सीदत। करुन सिन्धु जनु प्रान बूडत॥
कपि सहुँ खाढ़ दसा अवलोकलें। जनो त्याग मूर्ति सिय दिखलें॥
छन भर में सिय पलक उघरलीं। कपि नमि दीन बचन उचरलीं॥
मातु, कहबि हम सब समुझाइ। आइबि प्रभु तो लेबि छुडाइ॥
दीं चिह्न जे कछु ले जाईं। प्रभु दिखा बिसवास जमाईं॥
चूडा मनि सिय दिहली निकासि। नमि कपि लिहलें हीय हुलासि॥
कहली, सुनु, सुत, मनि मो प्रान। जेहि मो दिहलें प्यारि क रास॥
समुद से मनिक इन्द्र निकसलें। से वर में ऊ जनक क दिहलें॥
पिता दहेज राम क दनलीं। मुँहदिखाइ मो राम दिहलीं॥
तब से सुत, ई सिर मो बसलें। प्रान आधार विपति क रहलें॥
जब जब मन मो होत निरास। लखि यहि बँधवत रहलीं आस॥
जब आ असुरा हिय संतापे। भाँति भाँति क वाक विलापे॥
तब तब लखि यहि धीर बँधाईं। राम दया क आस लगाईं॥
रवाँ क कपि, यहि आजु दिहलीं। सहिदानी जे प्रभु लगि मँगलीं॥
भले प्रान केउ काढ़ि लीहित। पर कसहूँ पा मनि ना सँकित॥
पर दूसर का बडुये पास। जेहि दिहितीं हित प्रभु बिसवास॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



देखीं पट इ फाटल पुरान। लाज ढँकवे क बचल उपान[1] ॥
इहो राम क दीहल बड़ुये। जे अजुओ तन ढकले हउये ॥
मनि कै भी अब काम इ पुरई। तन प्रान सिय दूनो जोगई ॥
देखबि कपि यहि जिव अस रखबि। राम हाथ देइ बिसवासबि ॥
रवाँ कहीं मोहि ले चलन क। न अविस्वासी रउरा बल क ॥
पिय पहँ कपि पिठि जात न लाज। सुत तन परसत सत न अकाज ॥
इहे प्रेम, मन क भी भावे। कि झट दरसन नयन ई पावें ॥
पर सुत जब हम राम क गुनीं। उनकर कुल जस गौरव सुनीं ॥
पितु जनक, दसरथ यस देखीं। रघु दलीप, मनधात साखीं ॥
देस, जाति, मरजाद, आँकीं। रास्ट्र, हित, कुल धर्म विलोकीं ॥
गुनिलें तब तो बल कस जाई ? प्रभु बल, सुकृति कसत नसाई ?
नारि चोर कि प्रभु न कहइहें ? कि नहिं रिपु सम जगत हँसइहें ?
जे निज बिअहलि राम हरवलें। बल अछत छलि तेहि चोरवलें ॥
प्रभु क कि अस निन्दी न दुनिया ? कि प्रभु खुद समरथबि ई बतिया ?
बिरहे भले हम मरि जाईं, भा राम भी सुधि बिसराईं,
बिरह, दुख, बन तपल आ हरन, सब सकलीं क सकबि भी सहन,
पर सिय प्रभु कस अपजस सही ? अपयसी कस प्रभु निज हित ही ?
भा प्रभु गौरव, सील महान, रंच दाग कस सही इ प्रान ?
यहि से हे कपि, राम से बिनवबि। रहत प्रान निज बल उबारवि ॥
पूँछीं कपि कछु बात अइसन। राम जे रवाँ क सुनि विससिहन ॥
त-चितकूट परबत क बात हऽ। मन्दाकिनि के पूरब तट रहऽ ॥
जल बिहार में जब हम रूसलीं। भिंजल बसन झट प्रभु निकसलीं ॥
पग सहुँ दीन बनल बइठलीं। रूठलि मो हँसि हँसा मनवलीं ॥
तहँ हमन मिलि कइ निसि सुतलीं। पहरा पारा पारि दिहलीं ॥
बहिँ-तकिया इक दूसर बनईं। एक सूति दूसर क जगईं ॥
लोलुप मांसु काग इक आइल। चोंच मारि मो कुच पराइल ॥
रकत से भींजि जब प्रभु जगलें। लखि मो बिकल बहुत बिरुझलें ॥
आसन तृन तुरि मन्त्रि मरलें। भरि त्रिलोक काग सर खेदलें ॥
जब खग सरन कतो न पवलें। तब आ पुनि प्रभु पद पँ गिरलें ॥

१—उपान = उपन्ना, गमछा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सरनागत झट उठा के छमलीं। दन्ड में पर दृग एक फोरलीं॥
पूछबि दिन ऊ प्रभु भुलइलीं? पंचवटी हमन जब रहलीं?
तब अँग राग मिटल जो लखि क, उठि झट हँसि फरसे सँबारि क,
लखत, चूमि मोहि क दुलारि क, कइलीं कतना सुखी प्यारि कें!
पुछबि आजु सर कस न छाड़ीं? हिय से कस सिय प्रेम उखाड़ी?
ऊ दुलार प्यार का भइलें? कहँ उ तून सर मन्त्रल गइलें?
कि यहँ बिलपति सिया असहाय? कसत निठुर हिय अब न पिराय?
पुछली कपि कहलीं सहिदानी। कहबि राम से भाव निदानी[1]॥
त सुत, राम क सत समुझाइबि। निहोरबि अब न सिय भुलाइबि॥
भनि अस सिय दृग लोर पोछली। कपि असीसति बिदा दे रोअली॥
उत गद गद कपि, पद सिय नमि के। पुनि बिसासि चलले पुनि नमि के॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के दसवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरत तिथि फागुन बदी १२ सम्वत २०१९, विक्रमी, तदनुसार २१ फरवी, १९६३ इसवी।

---

१—निदानी = निदान करके, भाव अच्छी तरह से जान करके कि अनुकूल है कि विपरीत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### एगारहवां सरग

प्रारम्भ-तिथि—फागुन सुदी ४ सम्वत २०१९ बिक्रमी, तदनुसार २७ फरवरी १९६३ ईसवी।

सीता से बिदा होके हनुमान के अरिस्ट नाम के परवत पर आइल। परवत के बरनन आ हनुमान के कूदि के समुद्र पार कइल। समुद्र के भारत तट पर इन्तजार करत कपि समाज से भेंट आ स्वागत। जामुवन्त के हाल पूछल आ हनुमान के सीता के, विनय बिसेख के हाल बतावल। हाल सुन के अंगद के लंका जाके सीता के लेआवे आ रावन से लड़े के प्रस्ताव रखल। जामवन्त के आपत्ति कइल आ हनुमान के सीता के सन्देस कि 'राम जी खुद आके हमरा के उबारीं' कहल। तब सब सभा के यह बात के समर्थन कइल आ सारा दल के आकास मार्ग से किस्किन्धा वास्ते प्रस्थान। प्रस्थान के बरनक। किस्किन्धा के पास राज बाग, मधुवन देख के दल के अंगद से मधु पीये आ फल फूल खाये के अनुमति माँगल आ उनकर आदेस देल। कपि दल के मधुवन में प्रवेस आ पीअला खाइला के बरनन। दधि मुख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आ अंगद के झगड़ा आ दधि मुख के सुग्रीव किहाँ अंगद से पिटा के गइल। सुग्रीव आ दधि मुख के वार्ता आ कपिदल के सफलता के अनुमान करके दधिमुख के समुझा के भेजल। लखन सुग्रीव वार्ता आ राम से सुभ सन्देस सुनावल।

## १५ मात्रिक चौपाई

लहि कपि विदा समुद पधरलें। गिरि-अरिस्ट पर कूदि चढ़लें ॥
देवदार, पदमक[1] जे भरल। उचकल,घन घटा बिच लउकल ॥
नार, नदी मधुरे रव करति। जनो गीत सरगम अभ्यसति ॥
लहर लहरि सिर तट प पटकत। वेद पाठ बटु मिलि जनु करत ॥
झूमत पोत पतझो क झूर। अगिन लगल गिरि काँपत पूर ॥
हिलत, स्वरत सुचि वाँस क वन। टेर जनु गिरि बसुँरी मुदि मन ॥
उत सुर मधुरे विख धर ठनकत। कढ़ि फन कि धुनि सीस ठोकरत ॥
सिखर, कुहेस साम्ति वढ़वलें। छटा ध्यान क अलग बँधवलें ॥
गिरि जनु नींदि उठि अँगडाइल। सिखर-भुजा उतान तनाइल ॥
सिध, गनधरब, खग, पसु बिहरत। फुल फुल प भँवरा रसि केलत ॥
अस हँनिवत गुनत गिरि चढ़लें। बइठि सिखर प चहुँ दिसि तकलें ॥
उत लख लंका जरति नगरी। इत सागर गरज सहुँ सगरी ॥
उत्तर मुख कइ राम क ध्यान। सिमटि, उठा तन, पोंछि महान ॥
छिपकि, तउलि, कपि जमि क कुदलें। गिरि काँपल, सिखर टूटि गिरलें ॥
अस नभ-उत्तर हलिवँत उडलें। जनु सर छूटि धनुस पिनकलें ॥
जनु तुफान हहासि क धावल। बाजल पाँखि हवा क ससरल ॥
छन वन घुसि कपि छन निकसलें। जलद में ढकि ससि जस बहरलें[2] ॥
अस छिपि निकसि चलत हनुमान। टुटल नखत जनु जा असमान ॥
गरजि, किलकि क कर चीतकार। जनु बिजु तड़कति मेघ जुझार ॥
मिलि मैनाक उतर क बढ़लें। समुद क तट दुसर निअरवलें[3] ॥

---

१—पदमक = पद्मक, देवदार के जाति का जंगली वृक्ष। २—बहरले = बाहर से क्रिया बनी, बाहर निकले। ३—निअरवले = निकट आये, निहरा संज्ञा से क्रिया बनी, निअरवलें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जहाँ बइठल कपिन क जमात । सुनि अकास रव अति हरखात ॥
गुनि प्रसन्न 'हनुमान आवत' । ताकि कूदि नाचि मुदि गावत ॥
रुख चढ़ि केहू, गिरि चढ़ि लखत । एँडि उठवले केउ नभ तकत ॥
हनु महि छुअते जोर पुकरलें । सिय दरसन क खबरि सुनवलें ॥
सत करले दल नभ से उतरत । करि करि स्वागत मन में हरखत ॥
सुनि सफल दल गरजल जय अय । राम सिया सुग्रीव जय जय ॥
जय पर जय धुनि पुनि दुहराँय । बार बार जयकार कराँय ॥
केउ कूदत, केउ गावत, चोकरत । केउ चढ़ि रूख हनुमत दरसत ॥
'कहँ उठाईं 'कहँ बइठाईं । कस हुलास, उमंग जताई ॥
कपि सबके मन हरख उमंग । पाव रंक जनु जस धन संग ॥
तब अंगद सब के बटोरलें । उचासन हनुमत बइठवलें ॥
जब कपि सभा सान्त बइठले । अंगद तब हनु हाल पुछलें ॥
तब उठि सब नमि कपि बिनवलें । थोर में हाल समेटि कहलें ॥
मुख मुख बात तबो न छड़लें । निज बल विक्रम सगर छिपवलें ॥
कस क हनुमत सागर लँघले । कस सुरसा, मैनाक भेटलें ॥
कस छाया ग्रहनी क हतलें । कसत लंकिनी क मुकिअवलें ॥
जे बिसेखि ब्रम्हा बर कहलसि । असुर बिनास बात बतवलसि ॥
लंका सिय कसत कपि ढूढ़लें । कस भाई बिभीखन भेंटलें ॥
बन असोक सिय कस दरसलें । कसत दसा उनके ऊ पवलें ॥
कसत आइ क असुर सतवलसि । तेहि क सिय तब कस निरदरलसि ॥
कस उत्तर कथ पाप दिहली । कसत राम क जस गुन गवली ॥
पुनि निसचरिन कर डेरवावल । मारन काटन क धमकावल ॥
त्रिजटा के तब सपना कहल । जब सिय मुरछित रही पड़ल ॥
पुनि निस्चरि ब्यवहार बदलल । आ सीता क फाँसी लगवल ॥
तब हनिवँत क मुनरी फेंकल । जेहि लखि सिय क हरखल विसुरल ॥
तब हलिवँत जस राम गावल । आ जाइ सहुँ परिचय दीहल ॥
सिय संका कपि क पुनि मिटवल । आ सिय क निज बिरह निवेदल ॥
पुनि असीसल, कपि विस्वासल । गा गा क गुन प्रभु समुझावल ॥
तब कपि क असोक बन नासल । आ असुर दल, बल संहारल ॥
रिपु सुत अच्छ कुमार संहार । फेन मेघनाद युधि जुझार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ब्रम्हास्त्र पुनि असुर चलावल। नमि अस्त्र कपि निज क बँधावल ॥
रावन सभा बीरता तहँ क। असुर रोस समुझावल कपि क ॥
पोंछि बँधल पट घृत क चूकल। लंका दहन त रिपु क बिघटल ॥
सिय क मिलन पुनि उनकर कहल। रोवल बिलपल, बिरह निवेदल ॥
हिया खोलि सनेस क दीहल। आ बहुँ भाँति राम निहोरल ॥
उनकर सत बल, उनकर त्याग। उनकर तप बल, सील क आग ॥
निसकलंकता तेज क तपल। बिरह क ताप से घुलि घुलि मरल ॥
कहल मास प्रभु दू न अइहें। त ध्रुवे सिय प्रान बिनसिहें ॥
चूड़ा मनि सहिदानी दीहल। बात क गुपुत सबूत में कहल ॥
बिनय बिसेखि सब कपि कहलें। आ तब सभा से करतब पुछलें ॥
तब उठि अंगद थोर में कहलें। सिय दुख निजक सक्ति बखनलें ॥
समय क कमी, सैन क सजल। गइल, बहुरल, समुद क लाँघल ॥
सब करते दुइ मास क बीतल। अवधि बितले सिय प्रान तजल ॥
भनि अंगद प्रस्ताव रखलें। सिय दुख आपन-बल बुझवलें ॥
आ प्रस्ताव कि "इहें से जाईं। रिपु हनि क लंका बिनसाईं ॥
सिया उबारि क साथ ले चलीं। प्रभु सुग्रीव लखन खुसिहलीं[1] ॥
सुनि, प्रस्ताव सभा समरथल। 'जय अंगद क स्वर इक कहल ॥
'साधु साधु', सब सुन्दर भनल। 'हमन जितबि', बल पौरुस बढल ॥
चलीं अभी. रिपु नसि सिय लाईं। आ सुकन्ठ बल राम दिखाईं ॥
तब जमुवत उठि सान्त भखलें। बात नीकि नीति समुझवलें ॥
कह, का राम यहि के समरथबि ? आ कि यहि सुकन्ठ अनुमोदबि ?
नृप आज्ञा सुधि लान क रहल। करतब दूत कइल भर कहल ॥
यह से अधिका हम कस करब ? करबि त आज्ञा का न उलँघबि ?
यह से हमन चलीं किस्किन्धा। कथि बिनयी सब प्रभु से सीधा ॥
आ उहाँ सब जसत अदेसी, तसत करीं पुनि हम हुलासी ॥
सुनि हनुमत तब उठि क कहलीं। भलै ई कथ हमू समरथलीं ॥
सिया मातु भी चलत क जूनि, निवेदलीं हम चले क ऊनि,
जे अदेसि हम के बुझवलीं, आ प्रभु से कहे क कहलीं,

---

[1]—खुसिहलीं = खुश करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



से रह, कह जे, रिछपति बतिया। न्याय, नीति, स्रुति के समतिया।।
बनि कृतग्य सिय मो समुझवलीं, आ बिकल हिय अस संभखलीं,
'रउरा कहीं मो ले चलन क। न अविस्वासी रउरा बल क।।
प्रिय पँह कपि पीठि जात न लाज, सुत-तन परसत सत न अकाज।।
इहे प्रेम मन भी त भावे, कि झट दरसन नयन ई पावें।।
पर सुत, जब हम्म राम क गुनी, उनुकर कुल यस गौरव सुनी,
पिता जनक दसरथं यस देखों, रघु दलीप मनधाता साखीं,
देस जाति-मरजाद आँकी, रास्ट्र हित कुल धरम विलोकीं,
तब गुनों बल तो कस जाईं ? प्रभु बल कीरत कसति नसाईं ?
नारि चोर कि प्रभु न कहइहें ? कि नहिं रिपु सम जगत हँसइहें ?
जे राम बिअहलि हरववलें। से बल अछत सोय चोरववलें।।
प्रभु क कि अस निंदी न दुनिया ? प्रभु कि खुद समरर्थाब ई बतिया ?
साधु साधु सुनि सब रो कहल। सिय कर मानि बात समरथल।।
तब सब उत्तर दल कपि उडल। गगन मार्ग उडि द्रुत गति चलल।।
जस टिड्डी दल झुंड हहसलें, नभ तोपले घर छाड़ि उड़लें,
तस कपि दल तब प्रभु बल उड़लें। पल मारत कि स्कन्धा लखलें।।
तबे सुकण्ठ सुरच्छित मधुबन। कपि दल फल भरल मधु लखलन।।
थाकल सब मधु लखि ललचलें। उतरि भूमि अंगद से पुछलें।।
थाकल माँदल हम पिअसलीं। मधु मद बरसत लखि ललचलीं।।
अनुमति दिहीं त बुझईं प्यास। खा पी करि के नासीं ह्रास।।
गुनि क थाकल काज सँवरलें। कतना दिन से दुख उठवले,
दल अँगद उतसाह बढ़वलें। खान पान क अनुमति दिहलें।।
बस मधुवन झट पइठलि फउदि। सगर कूदि क इत उत दउडि।।
प्रथमे घट मधु पी बउरइलें। भरल मटकन खलिहा कइलें।।
कुछ चढ़ि तरु फल मधु गपकलें। एक से एक चुनि रस पीअलें।।
पुलुई लवनी पकडि, पुकारि। गीत गाइ पीअत किलकारि।।
द्रोन[१] द्रोन मधु मटका भरल। एक साँस बड़ योधा सुरुकल।।

---

१—द्रोन = द्रोण द्वापर के तौल का एक नपना जिसमें आज के तौल से ३० सेर अटता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अन चढ़ि फल फूल खूब गपकलें। हँसि हँसि, गट गट, झट गटकलें ॥
मद पी जुटि क बैठि अलपलें। बकि बकि जोस थपरी पीटलें ॥
छनि गावें, छनि हँसें ठठाइ। डाँटे छनमें, चुप हो चिल्लाइ॥
गाइ बजाइ, बक्रि झकि क जोस। अट पट स्वर लड़खड़ा वेहोस ॥
तरु से कूदि कहूँ केउ लोटत। पेटकुनिये परि कग्र केउ करत॥
एक धाइ दूसर से मीलत। डाँटि, बिबाद वेसहि क लड़त॥
दउड़े केह जोर से लागत। गिरत, उठत, पुनि हँसि क धावत॥
दउड़ि क केउ चढ़ि रूख प हँसत। पकडि डारिहि लटकिं मुँइँ कूदत॥
पुका फारि क[१] जब केउ रोवें। दौड़ि दुसर ढिग तसत बिरावे॥
अंगद कहुँ त हनुमत जोधा। एक एक बिकट रन सोधा[२]॥
सब माँतल मद मस्ती रंग। खाइ पीइ मदि हरखि उमंग॥
जब रखवारन लखि दउड़लें। हनि उनके कपि दल भगवलें॥
दधिमुख से जा रछक निवेदलें। बनल मुख्य जे मधुबन रहलें॥
अंगद नात नाना लगलें। जे सुनि नास रोसि तिनकले॥
नियम भंग, राजाज्ञा नसल, गुनि दधिमुख खिसिआइ दउड़ल॥
भेंटते अंगद डाँटि भिड़लें। पकड़ि उठा उतान पटकलें॥
छाती चढ़ि क चटकन पिटलें। उलटि पलटि क हनि मुकिअवलें॥
खींचि भूँभुर, घुटुना तुरलें। लहूलुहान गतर करि डरलें[३]॥
रिसि दधिमुख सुकण्ठ प चललें। जे गिरि पर सँग राम रहलें,
बइठल सुनत कपिन कर सोर, बकल, झकल, मद माँति विभोर,
गूनत, सफलल दल कि जरूरि। तव पइठल बन निडरि गरूरि॥
राजाज्ञा विरुध बन नासल; पुस्तैनी मधु बन बिनासलें॥
तवे आइ दधिमुख रोअलें। कहि बिनास बन क समुझवलें॥
हँसि क सुकन्ठ हरखित भइलें। कहि क दधिमुख बात बुझावलें॥
अवसि सफलि युवराज आइल। उमँगि जे नीति सील भुलाइल॥

---

१—पुका फारिक = जोर से चिल्ला कर, गला फार कर। २—रन सोधा = रण का सोधा हुआ जवान। ३—यह मद्यपान का दृश्य बाल्मीक रामायण के सर्ग ६१, ६२ में वर्णित हैं। देखिये पृ० १०३२-३९ गीता प्रेस बाल्मीकी रामायण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मद पी क बनि निडर मताइल। दल उमंगि हरखि बउराइल ॥
कि नाना निज मारि गिरवलसि। मधु बन रौंदि मरिं उजरलसि ॥
अर्स बुझाइ दधिमुख अदेसलें। कपि दल तोखि पठवन कहलें ॥
ज्ञात दधिमुख लछुमन पुछलें, नृप, पितु का सम्बाद लवलें ?
तब सुकन्ठ हनुमत क लवटल, अंगद दल मधु बन उजारल,
आ मद पी सब के बउराइल, दधिमुख, पहरू के पीटाइल,
सबे बिसेखि[१] कं कहलें, "तात, सिय क सुधि दल पवलें जनात ॥
न त हनुमंत, अंगद बुधिमान, नीति बिरुध कस करिते काम ?
सफल उमँगि उतसाहिं माँतल, दल अपार जे थाकल माँदल,
तिन के तुस्टि हेतु ई कइलें। आज्ञा राज उलंघित भइलें ॥
जो सफल नहिं रहितें ऊ सब, बिता क अवधि अइतें अहँ जब,
दन्ड प्रान क बात कि गुनितें, कि उमंगि मद पीकर मतितें ?
कि दल आज्ञा अस अवहेलित, जेहि सजाय हऽ फाँसी घोसित ?
नील कन्ठ तबे सहुँ बइठलि। घैल भरल ले भिल्लिन निकललि ॥
फन सरप उडि खँडलिच थिरकलि। धोबिन धोअल पट ले चललि ॥
बिप्र बेद ले सहुँ से निकसल। लखन राम सुभग अँग फरकल[२] ॥
खबरि लखन मुदि राम कहलें। दुनो भाइ सुख सरग पवलें ॥
मन आनँद मुख कढ़त न बात। प्रफुलित बदन नयन जल जात ॥
तन सिहरल रोमांच भइलें। जनु केउ बूड़त तिन का धइलें ॥
इहे हाल सुकन्ठ क बनलें। आनँद बरिसल तीन भिन्लें ॥
छवो नयन ताकत मधुबन के। सिमटलि सब चेस्टा तन मन के ॥
पा आदेस दधिमुख लवटलें। प्रभु निदेस अंगद सुनवलें ॥
तबले दल रह मद उतरले। मूँति ओकाय, नसा बिनसले ॥
तेह पर प्रभु क आज्ञा सुनलें। सुनते नसा अउरि बिलइलें ॥
तब-निज दल नायक बटोरलें। उचित बुझाइ चलन अदेसलें ॥
दल तब उत्सहि नभ में उड़लें। प्रभु पहँ करि जयकार चललें ॥

---

१—बिसेखि क = बिसेस रुप से वर्णन करके। २—ये विभिन्न प्रकार के सगुन शास्त्र भनित हैं। आज भी ये सर्वमान्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उमँगि, हरखि हहासत[१] गरजत, किलकत, चिकरंत, अइँठत[२] हँसत ॥
दल चलल जनु टिड्डी उड़लें। नभ तोपले महि छाँह कइलें ॥
जसत राम समने लउकलें। हनुमत "जय सिय जंय" पुकरलें ॥
छूअत मुइँ धा प्रभु पद पड़लें। दल जयकार नादि उचरलें ॥
भइल सोर जनु सर्गानन्द। गगन फारि भुइयाँ उतरंत ॥
गद गद प्रभु मुख कढत न बात। बहत लोर दृग भिगवत गात ॥
उत अति अलगे लखन बिभोर। सुनि क कुसल सिय हुरुख अथोर ॥
उठि भुज हनुमत राम बँधलें। लखन दउड़ि युवराज लिपटलें ॥
रिछपति धइ सुग्रीव मिललें। जय जयकार गगन में भरलें ॥
आनँद, उमँग, प्रसनता, मूर्ति। जनु ससरीर खाढ़ि महि कीर्ति ॥
उत कपि दल जयकार नादत। लखन, सुकन्ड प्रभु जय भाखत ॥
धा सुकन्ड राम पद पड़लें। राम उठा उर उन क लवलें ॥
तबे अंगद लखन चहुँपलें। राम उनहुँ उर सँग लपेलें ॥
रिछपति नील नल पद पड़लें। सब अँकवारि राम उठवलें ॥
उर भुज बढ़लें दूनो साथ। सब उर बँधलें सँग निज हाथ ॥
अस अनंद जब उमँगि थिरान। बइठि राम कपि कहल कथान ॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ" ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दरकान्ड के एगारहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि–फागुन सुदी १० सम्वत २०१९, विक्रमी, तदनुसार ३ मार्च १९६२ इसवी दिन रविवार।

---

१—हाहसत = हहास (सोर) करते हुए। २—अइँठत = इठलाते हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## सुन्दर कान्ड

### बारहवाँ सरग

प्रारम्भ-तिथि—फागुन सुदी १० सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार, ५ मार्च १९६३ ईसवी ।

राम द्वारा हनुमान अंगद आदि के परवरखन गिरि पर स्वागत भऽ गइला का बाद अंगद के राम आ सुग्रीव से संच्छेप में सीता के सुधि पवला के बिवरन सुनावल। फेन राम के प्रस्न आ हनुमान के संच्छेप में प्रभु–लीला के बरनन कइ के चूड़ामनि के देल। राम के अन्तद्वंन्द आ क्रोध में अतना बेहोस हो गइल कि धनुस बान लेके चले के तैयार हो गइलीं आ जब लखन सुग्रीव गोड़परि के रोकलें तब क्रोध के आबेग अतना बढ़ल कि राम जी बीर रस में बड़ बड़ सार भरल कबिता पूरन बात कर गइलीं। तबले हाथ के मनि गिर गइल आ ध्यान बट गइला से क्रोध कुछ सान्त जब भइल तब आगे बढ़ के हाथ जोरि के सुग्रीव के युद्ध करे के हुकुम माँगल आ बिनय कइल कि रउरा सीता के पूरा पूरा सनेस सुनि के जवना तरह से हुकुम दीहीं ओही तरह से हमन सीता के लंका के नास करके ले आईं। अपने इहाँ चुप बइठि के हमन के हुकुम भर दीहीं आ कौतुक देखीं। अवसर देखि के लखन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सोझा आइल आ नीति के बात बुझा के ई बात समुझावल कि पता मिलला पर अब फौरन हमन का चल देना चाहीं। सेना भी तैयार ही बा। बाकी ई युधि खाली राम रावन के युद्धि नइखे ई संग्राम आर्य-अनार्य के मिलि के असुर आ अधर्म से लड़े वास्ते युद्धि बा। त हमन अकेले नाहीं सब मिलि के चली आ राजा से राजा अस बनि के लड़ीं। अपने सत्रु के बल के सब हाल हनुमान से पूछि के जान लीं आ तब अइसन तैयारी से चढ़ाई हो कि दिन बिहाने रावन मारल जाय आ माता सीता के तुरत उबार कइल जाय। नृप से लड़े खाती नृप अस बनि के चलीं जा।

## १५ मात्रिक चौपाई

त–उठि अंगद बिनयि क कहले। तो कृपा प्रभु कारज सिधलें ॥
सिय क सुधि हम खोजि निकसलीं। सकुसल तन से सिया क पवलीं ॥
अब तक अनहित कछु ना भइल। यदि बहु मातु सतावलि गइल ॥
सत-बल उनकर सत बँचवलसि। सतवन्ती क तेज जिअवलसि ॥
राम प्रीति हिया अस सुनुगत। कि बल लंक सकल डरि निहसत ॥
रावन कुछू उठा न रखलसि। सम, दम, दान, दन्ड बरतलसि ॥
थकि दुइ मास समय हऽ दिहले। यदि न सीपति हतन हऽ कहले ॥
रछसिन घेरि पहरा पारतिं। रोसि, डराय, तरजि बुझावतिं ॥
सिसकति रोवति प्रान रखले। एक आस प्रभु तोर बँधले ॥
चहे मरन पर जोगवति प्रान। बाँधि भरोस प्रेम-बल राम ॥
समुद लाँघि क हनुमत गमलें। भेंटि सिया, रिपु मर्दि लवटलें ॥
लंक दहन कर छन में नसलें। हर तरह प्रभु यस बिमतरलें ॥
अस भनि क अंगद जब चुपलें। प्रभु तब ढरि ढरि लोर पुछलें,
कपिन, बताईं सिय कहँ हमार ? कस भेंटली ? कस, मिलली निडरि ?
का सनेस सिया मो दिहली ? सहिदानी संकेत कि कहली ?
कस विस्वासी हम रउरन क ? कस लँघली मग बिकट समुद क ?
असुर लंक भरल रजनीचर ! छलबल निपुन, मयाबि ऊ ठवर !!
तहाँ कसत सिय मिलि निकसलीं ? रिपु से कस पकड़ाय से बचलीं ?
तब उठि सीस हनुमत नवलें। हो बिनीत बचन अस भखलें;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नाथ, भइल से सब प्रभु जानीं। दास क निज बल देल मानीं ॥
जे कइलीं से रउरे लीला। जे निबहल से रउरें सीला ॥
जा पर कृपा नाथ क होई। कठिन काज न तेहि लगि कोई ॥
रवें कृपा प्रभु सिन्धु लँघलीं, पूछीं रवें समुद कस टपलीं ?
नाथ मातु भी इहे कहलीं। बल रवें सील-सृस्टि निबहली ॥
भगत लाज दया प्रभु रखलें। जेहि जस भाव ते तस पवलें ॥
भनि अस कपि कथा बिसेखलें। सुरू से अन्त सार विवेदलें ॥
तब मुँह से मनि काढ़ि क दिहलें। जेहि हिय लाइ राम सिसकलें ॥
पुनि बनि मूक अपलक लखलें। निकसि गाल प मोती ढुरलें ॥
काँपत ओठ दाँत से चँपलें, छुटत रोवाइ बल से दबलें ॥
इक टक बँधि दृग रहल निरखत, गुनत अतीत, सिय छबि दरसत ॥
उत सुकन्ठ लखन प्रभु निरखत। बिहबल दसा देखि क कलपत[1] ॥
कपि दल दुखित, सब चुप सधले, कृति चुप, कहुँ खर न खरकले[2] ॥
सब खग पसु सनाटा बँधले, निरखत राम साँस क दबले[3] ॥
रस करुन नभ थल चहुँ बरिसत। अगल बगल फुटि धार बगरत ॥
तब निज नयन राम उठवलीं। ढ़ब ढ़ब लोर भरि, लखि कहलीं,
चिन्हलीं तात, हम यहि मनि क। दिहले जनक रहीं य ह हम क ॥
इन्द्र से रहीं उहाँ क पवले। इन्द्र समुद से मथि क निकसलें ॥
निसि सोहाग मुँहदेखी[4] यहि क ! प्रिय सिय पवली हम से हँसि क !!
निसि-सोहाग ऊ दिन, सुख, सीता !! हा कहँ गइहें हे प्रिय, मीता ?
लखि, दिन बीतल, मन सब पड़ल[5]। नग्र अजोध्या दृग में झलकल ॥
लखि यहि दिवस गत सुरताइल[6]। नग्र अयोध्या दृग में समाइल[7] ॥

---

१—कलपत=दुःखित होना, कलपना। २—खर न खरकले=कहीं एक सींकके खरकने की आवाज नहीं होती थी। ३—साँस क दबले=साँस रोक कर के चुप चाप ताकते हुए, जरा भी हिल डोल नहीं करते थे। ४—मुँहदेखी=पहले पहल मुँह देखने पर जो भेंट दी जाती है उसे मुँह देखाई कहते है। ५—मन सब पदल=सब स्मृति पटल पर नाचने लगे। ६—सुरताइल=सुरति (स्मृति) पर आयी। ७—दृग में स्पष्ट दीखने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पितु बिदेह, कोसिला मइया. नेह रूप, भरत लघु भइया,
सीय सिंघासन, बइठल, हँसल, रहनि-सहनि,ऊ क्रीड़ल, मोदल,
मन प चढ़त सब एक प एक। सिय सँग बिहरल,. कहल कितेक ॥
सदा रहल मनि सिय सिर केस। दमकत चमकत बार बिसेस॥
जस सुख दिन सिय छबि बढ़वलसि। तसत बिपतिं में साथ निबहलसि॥
अन्त पुनि भो धीर बँधवलसि। कपि सनेस क हिय बिसवसलसि॥
अवसि अवसि सिय जीअति बाय। अवसि अवसि कपि भेंटल जाय॥
त तेहि पठवलि ई सहिदानो, कस क तात, न सत येंहि मानी ?
जो सिय हा! दुइ मास जीहें! राम न यह में अचरंज मनिहें!!
पर अचरज त इहे हे हनुमत ? कि सुनि सिय बिपदा हम जीअत ?
बिनु सिय क मनि देखीं, निरखीं, प कुछ करीं न खाली बिलखीं ?
आ सिय तहँ मो सुधि कऽ तड़पति ? मो भरोसि क मग नित चितवति ?
लखन लखऽ हम यहँ कस जीअत ? सिय विपदा कस कान सूनत ?
तोर, मोर, धनुस, सर, विक्रम, बल, पौरुस, आर्य-पराक्रम,
कहँ गइलें ? हा, कि हम मरलीं ? निज बिअहलि असुर घर छड़लीं ?
छिया,राम, क छात्र मरदुमई[१] ! रघु कुल गर्व सकल कमिनई[२] !!
कसत लखन, तू सेस क अंस ? कसत राम हम, अन्ह नितंस ?
पता पाइ हम कस क बइठल ? बगल धइल सर धनु नपुंसल[३] ?
रे तेज-कुल, अब कब जगवे ? तें अजानु भुज, धनु कब धरवे ?
रे अंगुस्ठ, कब सर पकड़बे ? तें प्रतंच, कब धनु प चढ़बे ?
आ रिपु हनि कब सिय उबरवे ? ला सोय मो त्रास बिनसवे ?
हा, धिक्कार हऽ राम क जीअल ! दुइ मास तक अवधि क गूनल !!
जे यहँ बइठल दल-सुग्रीव। के हऽ भरोसत[४] बनि निरजीव॥
का लखन, हम तूँ कम बानी ? कि न जाइ रवना क निदानीं[५] ?
कस सिय क छन छन तहँ बीतत ? का हम तूँ तनिको न गूनति ?
कस बिच रछसिन घिरल उ भारु ? ससना रवना सहति सधीरु ?
त-सिय, कस तहँ रोवति होई ? गुन के कि का हमर न कोई ?

---

४—मरदुमई = मरदानमी बहादुरी। ५—कमिनई = कमाई। ६—नपुंसल = नपुंसक शब्द से क्रिया बनी। नपुंसल अर्थात् विक्रम हीन हो ७—भरोसत = भरोसा करता है। ८—निदानी = अन्त करना मारना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उठऽ लखन, अत कस तू चुपइलऽ ? कबो त ना अस कायर बनलऽ ?
चलऽ उठऽ हम अबहूँ पधारीं ? जलदी चलि क सीय उबारीं ?
हे पवन सुत, तूँ बड़ मानी। भगत सभाज के सिरमानी[1] ॥
सिय, मोर, रघुकुल, हितकारी। चलऽ हमन उठि करऽ अगुआरी[2] ॥
छन में हमने सिथा उबारीं[3]। कवन काम बटोर गोहारी ॥
अस भनि क फुँफुँकारि सरप अस, चितइ लाल चख बरि ज्वाल जस,
धनु तुनीर उठा उठि चललीं। धाइ लखन तब पद प पड़लीं ॥
उत सुकन्ठ कर जोरि गिरलें। हनुमत गदा गरजि उठवलें ॥
अंगद रिछपति कुदि क चललें। घोर निनाद कपि दल करलें ॥
दुन्दुभी सुर हरखि बजवलें। पुष्प बरसि क परबत तोपलें ॥
पद निघात से बसुधा कँपली। सेस नाग फन कढ़ि हिलवलीं ॥
दिग्गज डोलि थर थर काँपल। खग पसु डरि क काँपत भागल ॥
सिंह मानि, उठि, गरजल घोरि। हाथी चिकरल, हाथनी छोरि ॥
लखन, सुकन्ठ गहत पद राम। सील-भाव बस क्रोध दबान ॥

उठा सुकन्ठ लखन हिय लवलीं। रोकत रोस, जल द्दग ढरलीं ॥
हनुमत रिछपति, अँगद समेटि, लवलीं सब हिय साथ लपेटि ॥
सील-भाव बस दबले क्रोध। नजर सगर फेरलीं अबिरोध ॥
मौन, व्यग्र, हो बिकल बइठलीं। इत उत बन. गिरि, नभ निरखलीं ॥
रौद्र रोस रह मुँह प क्रीड़त। बनल गँभीर तेज तहँ खेलत ॥
धसल कपोल, अधर दु फरकत। नयन लाल, कमल दल डोलत ॥
सिंह कध रहि रहि क झूमत। तनल भृकुटि जगत जनु प्रलयत[4] ॥
सब हव चुप, जड़ चेतन चूप। सीक्र न डोलति पवनो चूप ॥
नभ क तकते केउ क पुकरलीं, रिसि बतकही गजब क कथलीं,
"तात" ? न, "लखन ?" न, "तबके ? सेस ?"
"सेस ?" "त-कस गुन बल से निसेस ?"
जागु, सेस. फन तनि फुफुकारु ! फनधर रे, फन कढ़ि फुफुकारु !!
लप लप जीभि से ज्वाल निकासु ! जहर भरल निज स्वाँस उसासु !!

---

१—सिरमानी = सिरमौर। २—अगुआरी = नेतृत्व, अगुआई, राह दिखाना। ३—उबारी = छुड़ावे। ४—प्रलयत = प्रलय से क्रिया बनी प्रलयत यानी प्रलय बुला रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिखिधर, बिखि फुँकि, प्रलय बुलाउ ! जहर उगिलं, नभ थल बरसाउ !!
फन हिलाइ महि दिगज डुलाउ ! लछिमी पति कर सयन छुड़ाउ !!
झोरि झारि, रिसि, पटकि के माथ, नभ थल चूर चूरं करु साथ !!
रहे न सेस, सब करु रे असेस ? अरे सेस, कस मौन ? बिसेस ?
तब हो मौन, रोसि, सहुँ तकते, बोललों धीर निमेस बितते ।।
'के सुकन्ठ ?' न, 'तारा पति ?' ना, 'तब के ?' 'तेरें ?' अत चुप मौना ?
के हऽ, हित ? न, अनार्य समराट ? हँ, आदिम अनार्य समराट !!
मनु सुत ! मानव, आदि मानव !! मोर भाइ लघु विस्व मानव !!!
बन निबासी त चिर प्रबासित !! जुग जुगसे संताप से सापित !!!
तबो मूक ! मूकता बोललि !! मनु क आदि !!! सभ्यता जागलि !!!
गुन सुभाव तो आदि अविकृति जागु मनु सुत, रछु निज संस्कृति ।।

---

२—इहाँ हर चौपाई में अपने सम्बोधन फेन अपने से प्रस्न आ ओह प्रस्न के उत्तर तथा ओह उत्तार पर फेन आपन कथ सब भगवान क्रोध का आवेस में कहत गइल बानी। आ चौपाई भी पूरा एक साथ पढ़ला पर पूरा होत गइल बाय। जइसे—भगवान पुछतानी—तात ? तूँ के हव ? त अपने एकर उत्तर देतानी, "न" यानी नाहीं, तू तात ना हव। अर्थात् तूँ हमार भाई ना हव ? तब फेन पुछतानी "लखन ?" यानी तब के हव लखन ? तबो फेन जवाब देतानी "नाहीं तू लखनो ना हवऽ। त फेन पूछतानी, "तब के ? सेस ?" "तब के हवऽ सेस नांग ?" त उत्तार देतानी, "हाँ सेस" "हाँ तूँ सेस नाग हवऽ हम पहचानतानी। तब फेन पुछतानी, "सेस नाग हवऽ त अफसोस बा कि सेस नाग अपना गुन बल से रहित कइसें हो गइल ? एकर मतलब ई कि यह घरी हमरा लखनं के, तात के स्वभाव रखे वाला लछुमन के जरुरत नइखे। हमरा सेस नाग के अवतारी लछुमन के जरुरत बा। दूसर चौपाई में जब जान गइलीं कि सेस नाग अस लछुमन आ गइलन तब कंहतानी, सेस नाग तू जागऽ जागऽ। आपन फन काद आ फुफकारऽ, हे फनधर, फन तानिके तू फुफुकारऽ।

असही रामजी आवेस में अपना सब साथी के पुकरले बानी आ ओह लोग के कवनो दूसर रूप से पहचाने से भी इनकार कर देले बानी ? जब ऊ लोग अपना विध्वंसक रूप रुप में सोझा आवता तबे ओह लोग के पहचानतानी आ आदेस देतानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लाउ एकता, तजु तें जड़ता ! आदि अनार्य के नसु सठता !!
बाँधु उत्तर दक्खिन एकता ! मोर तोर, करु दृढ़ तें मितता !!
ढाहु लंक, बिधंसु असुर का ! मर्दि रौंदि भखु गुलरि लंका !!
पुनि मवनि, गुनि उत्तर तकलीं। आँखि फारि नभ लखि क भखलीं ॥
केहो, भरत ? न, 'अवध नरेस ?' न, 'केकइ सुत ? जती ? सुर भेस ?
ना, 'तब के ?' भारत समराट ?' 'हाँ रे, हिन्द-आर्य समराट' ?
'रे समराट ! आजु तें मौन ? रघुकुल वैभव ! तो सम कौन ?
उठु, उठु झट रन बिगुल बजाउ ! आर्य संस्कृति टुटल एकाउ !!
प्रेम, नेह न गेह बिलगाउ ! गुरु बसिस्ट ज्ञानी अपनाउ !!
पुनि चुपि, गुनि कछु, बन क तकलीं। बृछ छिपल कपि कलपित लखलीं ॥
मुसुकि, बोंध, दृढ़, धीर, भखलीं। सान्त, गँभीर, बचन उचरलीं ॥
'के ! अंजनि सुत ?' ना, 'त हनुमत ?' 'नाहीं तब के तें ! पवन सुत ?'
हाँ, सुत पवन ! बली !! पवनसुत !!! चतुर से चतुर भगत पवनसुत !!!
बहु, बहु, रे तें, पितु बवंडर ! बिस्व धरा नभ के बवंडर !!
सृस्टि बिनासु प्रलय बवंडर ! बहु, बहु तें रे, पितु बवंडर !!
उलटि पलटि झट बिस्व दे रे ! उडा असीम क चूर्न करु रे !!
महि तूरि धुरि गर्दि बहा दे ! पौरुस प्राक्रम, प्रलय दिखा दे !!
बहु, बहु, रे ते, पितु बवंडर ! हरसि संहारु रे बवंडर !!
तब चुपि लखि बगल रिसि, पुछलीं। अचरज भरल बचन उचरलीं ॥
के तें मौन ? बगल में बइठल ? मुकुट पहिनले, रिपु ललकरल[१] ?
अंगद ? तारा-सुत, बनराज ? न, 'सुत बालि ?' ना 'के ? युवराज ?'
'हँ-हँ हवसि अनार्य जुवराज ! राज अनार्य, बल जुवराज !!
गरिमा गर्व अनादि सक्ति क ! सत-युग के अवसेस राज क !!
रे जुवराज ! जुवक जुवराज !! उठ ललकारु असुर कर राज !!
बिघटि बिनसु ते म्लेच्छ सभ्यता ! घिन सभ्यता, असुर सभ्यता !!
अचके तब्बे हाथ मनि गीरल। जनु रस-धार में कंकड़ परल ॥
मन बदलल झुकि मनि उठवलें। तब रस-बीर सहमि समिटलें ॥

१—ललकार संज्ञा से विसेसन बना ललकरल यानी ललकारा हुआ अर्थात् वह जिसका बल ललकार करके शत्रु करवा द्वारा जगा दिया गया हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब सुकन्ठ चलि सहुएँ अइलें। बिचन बिनीत कर जोरि भनलें ॥
नाथ, दास, अंगद, हनुमान। अनार्य भारत के प्रतिमान ॥
आज्ञा प्रभु सहुँ खाढ़ माँगत। छन में लंक क बिनसल चाहत ॥
बइठि इहें बस हुकुम भ दिहीं। कपि दल कौतुक मुदि लखि लिहीं ॥
इऽ अनार्य दल बल भरपूर। असुर निपाते भर के सूर ॥
सोक ताप निज क प्रभु बिनसीं। रिसि निवारि हमन आदेसीं ॥
सुनि सनेस प्रिय मातु जानी। उनक हाल बिसेखि निदानीं ॥
तब यस कहीं हम तस लानीं। छन में बिनु स्रम मात भवानी ॥
अवसर लखि लखन सहुँ अइलें। कर पुट सिर नऽ बिनती कइलें,
तात, पता हम सिय क पचलीं। बड़का कठिन काम करव ीं ॥
अब झट चलीं हमन, हे भाई। अबिलम्ब सिय मातु छुड़ाईं ॥
दल बल सब त बड़ले बाटे। देर कूँच त करे क बाटे ॥
न प्रभु इ राम-रावन जुटान। आर्य-अनार्य असुर भिडान ॥
सुर, सद्, नीति सत्य-बल सकल। सबका एकि अधरम से लड़ल ॥
अधरम रूप असुर इक ओर। राम धरम मूरति अन छोर ॥
चलीं तात, साथ सब मिलि के। नृप से लड़ीं त नृप अस बनि के ॥
नीति सास्त्र रिपु चढ़न क जूनि। न बधु बिसरे बिचारल गूनि ॥
यह से तात, सान्त उर आनी। हनुमत पूछि बल रिपु जानी ॥
रिपु बल, निज बल, मारग यान, अस्त्र, सस्त्र, रिपु आयुध ज्ञान,
जानि, बटोरि, क करीं पयान, कि नसि सकीं रिपु साँझि बिहान ॥
लखन, सखा सुनि प्रभु हरखाइ, हनुमत अंगद आदि बुलाइ,
सब सनेह लखि दृग बरसाइ, भाइ क सान्त पीठि सुहुराइ,
हनु से पुछलीं लंक सँबाद, सियसनेस-रिपु-बाद-बिवाद,
सैनिक बल रिपु, संयम, सील, आयुध, देस, नग्र, नद, झील,
सबे कहे क आयसु दिहलीं। कथा बिसेखि कहे क कहलीं ॥
तब उठि हनुमत लगलें कहे। कथा बिसेखि बिनयि क निकहे[1] ॥
आ सान्त राम मन होइ के। सुने लगलीं काम ओरि के ॥
जह जँह बिचमें संका उमगे। भा प्रसंग बस कौतुक जगे ॥

---

[1] निकहे = नीक। अच्छी तरह से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब कइ प्रस्न सबहिं क समुझीं । नीति भाव रिपु सक्ति बूझीं ॥
भा अवेस में बहि दृग झरीं । करुन भाव हिय कहि क निभरी ॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के बारहवाँ सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि फागुन सुदी १३ सम्वत २०१९, विक्रमी, तदनुसार ८ मार्च, १९६३ इसवी ।

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

## ( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराजकुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार ।

## सुन्दरकान्ड

### तेरहवाँ सरग

आरम्भ तिथि—फागुन पूर्निमा १५ सम्वत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १० मार्च १९६३ ईसवी दिन रविवार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राम जी से हनुमान के लंका यात्रा के विस्तार पूर्वक बरनन कइल सीता से भेंट, सीता के आ रावन के सम्बाद, सीता के रोअल कलपल, उनकरा सत-बल आदि के बरनक सुनावल। फेन सीता के फाँसी लगावे के तैयारी कइला पर आपन मुंदरी गिरवला के हाल बतावल। अँगुठी लेके सीता के विलाप कइल। फेन राम के सकुसल रहला के संका कइल. फेन रावन के दूसर माया रचला के अनुमान कइला आ.द के सारांस हनुमान के राम से सुनावल। सीता के हाल सुनि के राम के बिलाप कइल। फेन हनुमान के सीता के हनुमान के पीठि पर चढ़ के राम के पास जाये से इनकार करेके वजह बतवला आदि के वृतान्त सुनावल। राम के सीता के यह त्याग के हाल सुन के विलाप कइल। फेन हनुमान के सीता के सहिदानी देत के जूनि के हाल बतावल आ अन्त में राम से सनेस जे सीता कहले रही से कहल। राम के विलाप। फेन हनुमान के लंका दहन रावन हनुमान वार्ता आदि के सारांस कहल।

## १५ मात्रिक चौपाई

कपि तब प्रभु सहुँ नमि क कहलें। हाल समुद जतरा बतवलें॥
पुनि लंकिनी क भेंटल भनलें। विधि-वर दीहल कथ सुनवलें॥
तव प्रवेस लंका क कहलें। कस सहर रिपु किला बखनलें॥
आयुध, सेना, सहर समाज, सब बल, बैभव वायु-जहाज,
बड़का योद्धा उनक निबास, नारि, माँस, मद, हाँस, बिलास,
पटरानिन, रानिन क जमात, केललि बिअहलि, हरलि, बलात[1],
इन महँ पइठिक सिय क निरखल, लुकि छिपिक चोर अस घूमल,
प ा न सिय पा निज निरास ', चलत जूनि बिभीखन भेंटल,
रावन से जे पीड़ित सतावल, प. पग पर तेह से उदबेगल[2],
उनकर प्रेम भगत क हिरदय, प्रभु सरनागत भाव निरनय,
उनदत पते प्रमद बन गमल, निजक घुम्हि सिय सगर निरेखल,

---

१—केलति बलात = बलात्कार कइल। २—उद वेगल = परेसान कइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब तरु तर इक तिय क दरसल, लखि छवि जे क सिय अनुमानल,
भनि कपि १.इलों, जोरि क हाथ, छिपलीं निअरे चढ़ि तरु माथ ॥
प्रभु-बतवल हुलिया मिलवलीं। जिन क समता नारि में पवलीं ॥
तब गुमानि सिय ढिग से देखलीं। पात ओट चोर अस छिपलीं ॥
निअरा से छबि जे हम लखलीं। आजो नाथ, आँखि में नचलीं ॥
सजिव बिरह कर मूरति बनलि। उदसलि मूल असोक बइठलि ॥
कृसित तन दुख काँपति सहमति[1]। जोति रेख धुआँ बिच दमकति[2] ॥
कीट मइल तन मुखरा दीन। कच मुख ढँपले धूरि धूरिन ॥
सटल बसन तन फटल पुरान। लाज तोपे क बचल उपान[3] ॥
कच खउराइल धूरि सनाइ। सयन भूमि कुस बिछल चटाइ ॥
रहि रहि सिसकति नभ क निहारि। राम नाम जप जल दृग ढारि ॥
बइठलिं, चहुँ से रछसिन तरजतिं पाप बचन समुझावतिं बकति ॥
पर सिय कान न उनक सूनत। राम नाम मुख उदसल[4] जपत ॥
असुर राति पछिली पधरले, बिधि अनेक सजाव सजवले,
निज पटरानि साथ लिहले, सिय सहुँ आ बहुत बतकहले ॥
साम, दान, भय, दन्ड कथलें। भाँति भाँति प्रलोभन दिहलें ॥
बचन पाप कथि उतर मँगलसि। तब सिय सत अनल फुँकि बरलसि ॥
तृन सहुँ रखि उघरल दृग ज्वाल। खुलल नयन सिव तिसर बिसाल ॥
फटकरलीं अस असुर कि डरल। सत-बल सहुँ जनु पाप निहसल ॥
राउरि बड़ाइ खल क निन्दा, सत क निस्चय, जब लगि जिन्दा,
कहि दिढ़ाइ पुनि पुनि बुझवली। "हो सरनागत प्रभु" उपदेसली ॥
कहली, पितु दुहित जस पठवत। सठ मो पठउ राम पहँ तसत ॥
माँफी निज करनी कर माँगु। लहबे तेहि क जो गिरबे आगु ॥
तब रिसाइ असि गहि क रावन, चलल तानि सिय ओरि मारन ॥
मंदोदरि तब धइ क रोकलसि। सत-बल समुझा क पलटवलसि ॥
जात जूनि तबहूँ अदेसलसि। रछसिन क बहु भाँति बुझवलसि ॥

---

१—सहमति = सिहमती हुई, डरी हुई,। २—दमकति = चमकति, अँगार अस चमकति। ३—उपान = उपन्ना, तीन गज की गमछी इतनी बड़ी सारी जो फट फट कर छोट, हो गई थी। ४—उदसल = उदास से बिसेसन, उदासल, उदसल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जो न राजि दुइ मास में होखति। तब अवसि इ मउअति पावति ॥
काटि सुआर माँसु रीन्हिहें। मुदि क रावन मद पी चखिहें॥
भा पकड़ि सहुँ रावन लनिहें[1]। बल प्रयोगि, ढोंग-सत नसिहें॥
कहि जमाति अस महल जो चललि। तब अकेलि मातु सिया पडलि॥
बहुत भाँति पुनि रोइ कलपलि। जे सुनि मो पसु, छाती फाटलि॥
ऊ बिलाप जो सुनितीं हे राम! रवाँ का करितीं, केहु न जान?
तबने छन जुटि असुरि जमाते। भाँति भाँति भनि कइ उतपात॥
असि दिखा सिय निरनय पुछलीं। हाँ करु, ना त काटन कहलीं॥
जिअते अँग अँग काटि क भखबि। सता सतः क छन छन मारबि॥
तबो नाथ, सिय रचि न डरलीं। 'मारु, मारु,' कहति मुरुछइलीं॥
चहलीं त प्रभु, झट कुदि निकसीं। मारि काटि के रछसिन बिनसीं॥
पर पालन लगि तोर अदेस। रोकलीं निज के दाबि आवेस॥
तिन मँह त्रिजटा नाम राछसि। कहि कुसपना सखिन सुनअलसि॥
होत होस व्यवहार बदलल। असुरि जमात आदर दरसल॥
तब सिय हुकुमें तहँ से हटलीं। आ सिय असत अकेल पड़लीं॥
पड़त अकेल, बिलखि बिलपलीं। भाँति बहुत प्रभु तोहि पुकरलीं॥
सहमि, उदासि, बिछोह रोअलीं। बहुत भाँति भनि तो इअदलीं॥
कहि, कहि दुख, निज हिय कर ताप। रावन ससना, निज निसपाप॥
प्रभु जस, गौरव, तन मन रछल। आ अनाथि अस रिपु घर मरल॥
बार बार भनि अति बिलपलीं। ढरि दृग लोल कपोल धोअलीं॥
तोर अज्ञान कि कस सिय मरलि? पाप चढ़लि, निस्पाप कि मुअलि?
कहि क बिनयि, छमा रो मँगलीं। पितु जनक, दसरथ संबोधलीं॥
'नइहर सासुर क जस रच्छति'। कहलीं, 'जानकि! रिपु घर मरति!'!
दाग न लागल रउरन बंस। पूछि क मानबि, रहबि निसंस॥
छमबि, मोहि कि डारति फाँसी। हो, बिबस सत् रच्छति दासी॥
अस भनि कच बटि, गर लगवलीं। तब प्रभु, हम मुनरी गिरवलीं॥
मुनरी लेइ क हिय ला रोअलीं। कहि कहि राम नाम बिलपलीं॥
पुनि ससंकि बहु भाँति रोवलीं। कुसल कि अकुसल नभ से पुछलीं॥
कि नव-माया रिपु क ई रचल? कि अन जाल असुर पुनि बिछवल?

[1] लनिहें—ले आवेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



असत व्यग्र बयखरि बहु भाखि । भ्रमि बुधि सिय जब मुदली आँखि॥
प्रभु गुन गान तव हम गवलीं । जे सुनि प्रेम मगन सिय भुललीं॥
तबे उतरि तरुँ परिचय दिहलीं । कहि बन-कथा प्रभु बिसवसलीं॥
तब बिसासि, 'कुसल तो पुछलीं । राउर 'प्रेम क हाल जँचलीं॥
पुछलीं कब कस प्रभु इअदलीं ? अबो कि मो सत क बिसवसलीं ?
जब हम विससि, चलन निवेदलीं । यहँ चढ़ि पीठि आवन कहलीं॥
तब सिय जे कहलीं प्रभु सूनीं । दूत धरम बस से हम भनीं॥
सूनत जे प्रभु-हिय मो विहरल । प्रभु कस सहबि कठिन से कहल ?
कह सिय, कहीं मो ले चलन क । न अबिस्वासीं रउरा बल क॥
पिय पहँ कपि पिठि जात न लाज । सुत तन परसत सत न अकाज॥
इहे प्रेम मन भी त भावे, कि झट दरसन नयन इ पावें !!
पर सुत जब हम राम क गुनीं, उनकर कुल, जस, गौरव सुनीं,
पितु जनक, दसरथ जस देखीं, रघु, दलीप, मनधात साखीं,
देस जाति मरजाद आँकीं, रास्ट्र धर्म हित कुल विलोकीं,
गुनी तब तो बल कस जाईं ? प्रभु बल सुकृति कसत नसाईं ?
नारि चोर कि प्रभु न कहइहें ? कि नहिं रिपु सम जगत हँसइहें ?
जे राम बिअहलि[1] हरववलें[2], बल अछत[3] छलि ते चोरववलें ?
प्रभु के कि अस निन्दी[4] न दुनिया? प्रभु खुद कि समरथवि[5] इ बतिया ?
बिरहे भले हम मरि जाईं ? भा[6] राम मो सुधि बिसराईं ?
बिरह दुख जग तमल आ मरन ? सब सकलीं क सकबि भी सहन,
पर कस सिय प्रभु अपजस सही ? निज हित लगि कस प्रभु अपजसी ?
भा प्रभु गौरव सील बखान ? रंच दाग क स सही इ प्रान ?
यहि से रवाँ कपि राम से कहबि । प्रान अछत प्रभु आ उबारबि॥
सुनत राम 'बिलखि क रोवलीं । हाय ! हाय ! सिय कहि पुकरलीं॥
राम-प्रेम का सिय सहुँ बाय ? जीअत राम कि सिय हरवाय ?
त्याग, नेह, सत-बल क मूरति, विधि कहँ दुसर रचल उ सूरति ?
सुहि लगि हाय, सीय कत सहति ? कत मो तन मन बच से चाहति ?

---

१—बिअहलि—सास्त्रके अनुसार व्याही स्त्री । २ हरववले—हरन या हरण करवाया । ३ अछत—रहते हुए । ४ निन्दी—निन्दा करेगा, सकायत करेगा। ५ समरथवि—समर्थन संज्ञा से क्रिया बनी समरथबि यानी इस बात को समर्थित करेंगे। ६ भा—अथवा, या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कहु कपि, प्रिया आगु कि कहलीं ? का सनेस कहे ला दिहलीं ?
तब कपि नयन जल भरि दूना। अनमन मन तकत नभ सूना ॥
कहलें, प्रभु जब चीन्हि मँगलीं, आ कथ गोप कहे क कहलीं,
कि लखि, सुनि प्रभु करीं बिसवास, तब सिय चुप कछु गुनत उदास,
कमल नयन जल ढ़रि क रोअलीं। कँपते कर बसन मनि खोललीं ॥
निरखि हिर्चकि क मनि चुमि देलीं। आ गर भरि क उदसलि कहलीं ॥
लीहीं सुत, इ मनि भो प्रान। जेहि मो दिहलीं प्यारि क राम ॥
इन्द्र समुन्द्र से मनि निकसलें। सेहि वर में ऊ जनक क दिहलें ॥
पिता दहेज राम क दनलीं। मो मुहदेखी राम दिहलीं ॥
तब से सुत, इ सिर मो बसलें। प्रान अधार बिपति क रहलें ॥
जब जब मन मो होत निरास। लखि यहि बँधवत रहलीं आस ॥
जब रवना आ क संतापे। भाँति भाँति क वाक प्रलापे ॥
तब तब लखि इ धीर बधाईं। राम दया क आस लगाईं ॥
रवाँ क कपि यहि आजु दिहलीं। सहिदानी जे प्रभु लगि मँगलीं ॥
भले प्रान केउ काढ़ लीहित ? पर पा कसहूँ मनि ना सकित ?
प दूसर का बडुये पासे। जे दिहितीं हित प्रभु बिसवासे ॥
देंखी पट इ फाटल पुरान। लाज ढँकवे क बचल उपान ॥
इहो राम क दीहल बडुए। जे अजुओ तन ढँकले हउए ॥
मनि क भो अव काम इ पुरई। तन प्रान सिय दूनो जोगई ॥
देखबि,कपि, यहि जिव अस रछबि। देइ राम हाथ बिसवासबि ॥
पुछीं गोप बात कछु अइसन। जे सुनि राम रवाँ बिसवसिहन ॥
त बात सयल क चित्रकूट ह। मन्दाकिन क पूरब तट रह ॥
जल बिहार में जब हम रूसलीं। प्रभु भिजले बसन कढ़ि अइलीं ॥
मो गोदी, बनि दीन बइठलीं। हँसा, विनयि क मोहि मनवलीं ॥
सूतीं हम दुइ, निसि दिन तहीं। परापारि जगि पहरा दिहीं ॥
बँहितकिया इक अन बनाईं। एक सूति दूसर जगाईं ॥
लोभि माँस इक काग आइल। चोंच मारि कुच मो पराइल ॥
भींजि रकत से प्रभु जब जगलें। लखि मो बिकल अति खिसिअइलें ॥
आसन-तृन तुरि मन्त्रि मरलें। खग त्रिलोक में भागल फिरलें ॥
जब खग कतो सरन न पवलें। तब आ पुनि प्रभु पद्द प गिरले ॥

RajGuru Math, Shivala, Varaṇasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सरनागत क उठा क छमलीं। पर दृग एक दन्ड में फोरलीं ॥
पूछब्रि दिन कि प्रभु ऊ भुललीं? पंचबटी हमन जब रहलीं?
तब अँग राग मिटल मुख लखि क, उठि झट करसे निज सँवारि क,
हँसि कइ, चुमि क, मोहिं दुलारि क, कइलीं कतुना सुखी प्यारि क !!
पूछबि कस सर अब न छाड़ीं? हिय से कस सिय प्रेम उखाड़ीं?
ऊ दुलार, प्यार का भइलें? ऊ कहँ तृन क मन्त्रल गइलें?
इहवाँ कि सिया बिलपति हाय? तबो निठुर प्रभु हिय न पिराय?
पुछलीं कपि कहलीं सहिदानी। कहबि राम से भाव निदानी[1] ॥
त-सुत, प्रभु सब कहि समुझाइबि। निहोरबि कि सिय अब न भुलाइबि॥
सुनत राम मुदि चख चुपइलीं। चित्र कूट छबि चित प लखलीं॥
भूलल दिन जे दृग सहुँ झलकल। मन बेचैन करि लोर बहल॥
सुसुकि क साँस रुकि रुकि खींचत। गर भरल, तन पुलकित पसिजत॥
इत कपि चुप निज भाव भूलल, ढ़ारत लोर, सिय कथ गूनल॥
राम क बोधि, लखन निहोरलें। दृढ़ बनि, आगु, सुनन क कहलें॥
आ कहि कपि बुझा उतसहलें। अन्त सनेस कहन क कहलें॥
तब बल ला कपि आँगु कथलें। सिय समाद क राम सुनवलें॥
मो असीसि वर, दे क कहलीं। निज निहोर समुझा सुनवलीं॥
जा सुत प्रभु पहँ विनय सुनइहऽ। कसत कटत दिन सबहिं बुझइहऽ॥
मास एक बितत प्रभु आइबि। मोहि मुअती क कसहुँ छुड़ाइबि॥
प्रभु बिताइ अवधि जो आइबि। सिय तन क जग माँहि न पाइबि॥
निहचय प्रभु क देबि वताई। सिय मास इक आस लगाई॥
तें बितले अनुसरी ऊ ऊहे। जे सतवन्ती बिरहे निबहे॥
और कहीं का सुत तू जानऽ। प्रभु क प्रेम, नेह मोर मानऽ॥
सहे क सीम, अन्त कछु हटे। लाँघत जेहि क सब बल बिघटे॥
त-मोरि बिनती राम से कहिहऽ। भाँति बहुत समुझा निहोरिहऽ॥
सहि सहि दुख सिय कातरि भइलि, जीवन-बोझ नाव लदि गइलि॥
अब आगे कछु हौंस न बाय, अस नहिं, होय जे बाय नसाय?

---

१ निदानी—निदान करके, रोग को ठीक ठीक पहचान करके वैद जब रोग का निश्चय करता है उसे निदान करना कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस भनि सिय भइली बेहाल, अन न कछु मुख सकली निकाल ॥
कहत कन्ठ भरि दृग जल ढरल, पलक ओट खंजन चख झँपल ॥
तन रोमांच स्वेद मन सीदत, करुन-सिन्धु प्रान जनु बूड़त ॥
सहुँए खाढ़ हग अवलोकलीं, सिय जनु त्याग सूरति लखलीं ॥
छन भर में जब नयन उघरलीं, मातु बुझा नमि क पद चललीं ॥
दसा राम सुनि भइल अजीब, जनु करुना-रस तड़प सजीव ॥
सब चुप राम क बिलपत लखत, करुना, नद जनु बहत रोवत ॥
तबे समय आ खुद उबरलसि, धीर धरा प्रभु से पुंछवलसि ॥
कपि कहि कथा अन्य समेटलें, रिपु-बल युद्धि बिघटल कथलें ॥
मेघनाद बली से लड़ाई, निज बँधाइल, नृप गमनाई ॥
रावन बार्ता, लंका दहन, लवटि क पुनि समुन्दर लाँघन।
कहि कपि आदि अन्त चुपइलें. त उठि राम उठा उर लबलें ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह "नाथ"। ग्राम—दलीपपुर, जिला—साहाबाद, परगना—बिहिआ सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के तेरहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि फागुन पूर्निमा सम्वत् २०१९ विक्रमी तदनुसार १० मार्च १९६३ ईसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार बाल्मीकी आ तुलसीकृत तथा अन्य रामायन )

( भाखा भोजपुरी )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'।
ग्राम—दलीपपुर, परगना-बिहिआ, जिला-साहाबाद, सूबा-बिहार।

## ( सुन्दर कान्ड )

## चौदहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—सुद्ध आसिन कृस्न ४ सनिवार सम्वत २०२० विक्रमी तदनुसार ७ सितम्बर १९६३ ईसवी।

राम के हनुमान से आपन कृतज्ञता जनावल आ प्रेम दान देल। फेन लंका के बरनन पूछल आ हनुमान के बिसेस रूप से लंका के बरनन कइल।

### १५ मात्रिक चौपाइ

ला हिय हनु के अन्तरयामी। कहलीं बचन प्रेम में सानी॥
सुत, कइले जस बड़हन काम। के क सकी अस के ? बा महान् ?
रिनी राम, रघुकुल, समराट। सुरदल, रिसि, मुनि, भारत बिराट॥
अवध रहितीं देतीं धन धाम ! सरबस निज सब रतन क खान !!
कसकत हिय यहँ बिनु धन ठाट ! का कपि दिहीं तो निरधन गाँठ ?
न दे सकीं बदलो उपकार। तेहूँ न माँगसु चाह उघार॥
एक मात्र, हिय प्रेम क दान ! गाँठ हमर बा कपि, यहि ठाम !!
एही के ले मन में अनुमान। निरधन राम के परम इ दान॥
अस कहि क प्रभु हिय कपि बँधलीं। विहवल प्रेम दृग जल ढरलीं॥
प्रेम बिकल कपि परि पद कहलें। मोहि समान भाग के पवलें ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जेहि क प्रभु असत बकसीसलीं ? छूद्र अघो क अस सनमनलीं ?
उठइँ राम त कपि पद परसु। अनत दसा अस कहँ कवि देखुसु ?
'माँगु माँगु वर' प्रभु जो कहलीं। हनु पावनि भगति सब मँगलीं ॥
एवमस्तु कहि पीठि ठोकलीं। ढिग बिठाइ बात बतकहलीं ॥
तप बल हम सुत, समुद सोखबि। छन महँ लाँघि, लंकपति हनबि ॥
रचि बताउ तें कस गढ़ लंका ? कस कत दुर्ग सैन्य बल बंका ?
पुर, मग, फाटक रन क आयुधि ? बिधि बिधान जे तहाँ बज्रल युधि ?
रहन, सहन, स्वभाव, रिपु, बिक्रम। जूथपति दलपति, क नित उपक्रम॥
कहि बुझाइँ जे देखलीं रउरा। सैन भाव, गुनि, लखि ते ठउरा॥
त-कपि सुनि, नमि कहलें बयना। नीति निपुन ज्ञान कर अयना॥
रच्छ-व्यवस्था सैनिक सक्ति। दुर्ग द्वार मग समृधि[1] समस्ति[2]॥
हय गज, पैदल, सैन्य संख्या। बाहन बिबिध, चरित्र, व्याख्या॥
कहि बिसेखि[3] बता हनुमान। अलग-अलग कहलें आख्यान॥
भरल अमोद प्रमोद नगरी। बड़ बिसाल गज, हय, रथ सगरी॥
राच्छस बिपुल, बसल सब ओर। गृह[4], महल, कोट, उठल ते ठौर॥
चारि द्वार बड़ सहर पनाह। अति उँच चौड़ा लगल किवाड़॥
महा परिधवति[5] दृढ़ मजबूत। मोट सलाख लड़ल अरगूल[6]॥
बहुत बिसाल उपल[7] तहँ यन्त्र। रखल निवारत[8] आवत सैन्य॥
करिया लोहा चोख के बनल। सहस सतघ्नी[9] राछस रचल॥
सजाइ के धइल दिवालन प। छोड़े खातिर आगत दल प॥
चहुँ दिसि नगर ऊँच परकोट[10]। सोन बनल दृढ़ कठिन जे तोड़॥
मुकुता, नीलम, रतन से जड़ल। मोट ऊँच केउ लाँघि न सकल॥
पर-परकोट भय-प्रद खाई। गहिर ग्राह जल मीन बसाई॥

---

१ समृधि—सम्मृधि, वैभव। २ समस्ति—सम्पूर्ण। ३ कहि बिसेखि—बिसेसरूप से कह करके। ४ गृह—घर, अवास। ५ परिधवति – परिघन्वित फाटक, बज्र, गदा यहाँ फाटक या किवाड़ से अर्थ है ६ अरगूल=आगेला=किवाड़ के पीछे लगाने वाला बेंड डंडा रोक पथल पाषाण ७ उपल=उपल यंत्र, फेंककर मारने वाला यंत्र। ८ निवारत=रोकता है। ९ सतघ्नी=शतघ्नी =तोप। १० परकोट=मोटी दिवारका किला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चारि द्वार सहुँ संक्रम[1] पूल। भरल रखल बड़ यन्त्रन तूल॥
जे रिपु आक्रम करत बेकार। फेंकि क गिरवे गरत मझार॥
उनमें अति अभेद्य इक संक्रम। वेदि सौन युत् दृढ़ बल बिक्रम॥
चहुँ दिसि नदी त बन, गिरि खाइं। देव-दुर्ग सम लंक जनाइं॥
प्रकृति से दसमुख बड़ सवधान। तत्पर स्वस्थ धीर बलवान॥
अति दूर पार सिन्धु बस लंक, पथ नहिं नाव न तरन क यंत्र,
गिरि-सिख बसि दुर्गमय सोभति। हय, गज, अजय सुरपुर निन्दति॥
विविध यंत्र, सताघ्नि त खाई। भरल लंक असुर प्रभुताई॥
दखिन द्वार चारि अंग सेन। लाख एक सहस्र बल देन॥
पूर्व द्वार सहस दस राच्छस। सूल ले खड्ग तयार ताकसु॥
पछिम द्वार प दस लछ जोधा। जे असि ढाल सस्त्र में सोधा॥
घूमि तत्पर पहरा पारत। अभय, सजग, निरत चहुँ ताकत॥
उतर द्वार उत्तम कुल बीर। अर्बुद[2] अस्त्र ले इ धनु तीर॥
घुड़सवार, रथ, अस्त्र में मँजल। अलग बचाइ रच्छित राखल॥
पुर लंका मध बस सत सहस। असुर कोटि उच अति दुरधरस[3]॥

१ संक्रम = पुल वह पुल जो जरूरत पड़ने पर तोड़ भी दिया जाय।
२—अर्बुद=दस करोड़, ३—दुरधरस=दुर्धंस=दुर्जय, कठिन से जोता जानेवाला।

* यहाँ पाठकों को यह ज्ञान कराने के लिए कि द्वापर में रामायन के समय के अस्त्र-शस्त्र तथा युद्धि व्यवस्था, रक्षा विधि और सैन्य संचालन विद्या कितनी विकसित थी हम बाल्मीकि रामायण में हनुमान द्वारा वर्णित लंका को युद्ध तैयारी तथा अस्त्र-शस्त्र का ठीक वैसा ही वर्णन यहाँ देते हैं जैसा बाल्मीक रामायण के श्लोकों में है। जहाँ अस्त्र आदि के नामों के अर्थ का ठीक अनुमान नहीं लगा था मत भेद भासित हुआ है वहाँ उसी शब्द को रख दिया गया है। इससे तथा पाद टिप्पणी में उघृत अन्य शास्त्रीय प्रमाणों से पाठक को ज्ञात हो जायगा कि उस समय भी भारत में आधूनिक विज्ञान की संग्राम-सामग्री से बहुत कुछ मिलते जुलते अस्त्र-शस्त्र या विस्फोटक वैज्ञानिक यंत्र उपस्थित थे और किलों दुर्गों आदि को सुरक्षा व्यवस्थित रुप से होती थी। यहाँ कवि ने अपनी स्वतन्त्रता न रखके श्लोकों का भावानुवाद मात्र किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लंक जराइ पाटि क खाई। तुरि क संक्रम सक्ति घटाई॥
नसली असुर सेन चउथाई। तो बल प्रभु रिपु भैल छ्साई॥
कसहुँ पार हमन जो जइतीं। प्रभु बल छन में लंक बिनसितीं॥
अंगद, द्विविद, मैन्द, जमवन्ता। पनस, नील, नल जे बलबन्ता॥
छन बिनसिहें लंक क सगरी। दसमुख मारि जराइ क नगरी॥
लइहें बिजय संग सीता। बिनु प्रयास बल प्रभु अभीता॥
त हे नाथ, सजि धजि के जल्दी। दिहीं सैन्य कूँच के मरजी॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ"। ग्राम—दलीलपुर, परगना–बिहिआ, जिला–साहाबाद, सूबा-बिहरा विरचित साहित्य रामायन के सुन्दर कान्ड के चौदहवाँ सरग सम्पूरन भइल सम्पूरन तिथि सुद्ध आसिन कृस्न ५ सम्वत २०२० विक्रमी तदनुसार ८ सितम्बर, १९६३ ईसवी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य रामायन

( स्वतन्त्र )

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम-दलीपपुर, परगना-बिहिआ, जिला-साहाबाद, सूबा-बिहार।

( भाखा भोजपुरी )

## सुन्दर कान्ड

### पन्द्रहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—सुद्ध आसिन आमावस, सम्वत २०२०, विक्रमी, तदनुसार १७ सितम्बर १९६३ ईसवी दिन मंगलवार।

हनुमानजी से लंका के विवरन जानि के रामजी के सेना प्रस्थान करेके आज्ञा देल आ बिधि विधान समुझावल कि कइसे सेना चले आ का सेना के अनुसासन रही सेना के प्रस्थान आ मारग के तथा यात्रा के बरनन। समुद्र तट पर पहुंचल। सेना के बिस्राम आ समुन्द्र के दृस्य वरनन। राम जी के विरहानुभूति।

#### १५ मात्रिक चोपाई

सुनि कपि बचन राम हरखलीं। बिनसबि सत्रु अवसि क कहलीं॥
तब बुलाइ सुकन्ठ बुझवलीं। विजय मुहूर्ति कूँच अदेसलीं॥
हरवलसि रिपु सिय, हरि अवसि के, पर का बचि सर सकी उ भगि के ?
सिध से सुनि सिय खबरि चढ़ाई। अवसि जिये क आस बँधाई॥
आजु नछत्र हऽ उत्तर फगुनी। जोग हस्त चन्द्र कल मिलनी॥
एह से अजुये सेन प्रस्थानू। करीं तात, सुभ सगुन जनानू॥
दहिन पलक ऊपर क फरके। हिलि भुज दहिना मन मो हुलसे॥
अस जनात विजय हम पाइबि। रिपु हनि, सिय सकुसल ले आइबि॥
सुनि सुकन्ठ कह सिर पद नाइ। पालबि हम अदेस रघुराइ॥
प्रभु जस आज्ञा दिहलीं मोहि। तस झट चली सैन प्रभु सौंहि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब प्रभु मुदि विधि-दल-प्रस्थान। कहलीं कपीस नीतिज्ञ महान॥
सफर मैंन[1] दल नील अधीन। सजि इक लच्छ बानर प्रबीन॥
चलसु आगु मग खोजत नीक। जे भख फल जल मिलत जाँ ठीक॥
सबल सिन्धु सम वेल केसरी[2]। मिलि जुलिके मग सजवत अगरी[3]॥
दिखवत राह, बढ़वत सेना। आगु चलसु दल सफर मैना॥
रिपु भख बिख क सकेला प्रयोग। चलिहें सजग लाइ मन योग॥
कतो छिपल ना हो अरि सैन। सावधान रहिहें दिन रैन॥
बाल बृद्ध दुखल जे बीर। लवदि जासु किस्किन्धा तीर[4]॥
गज गवाछ, गवय हो आगे। चलसु सबल रन तेज पागे[5]॥
रिसभ लेइ दल कपि बड़ चंचल। रच्छत चलसु भाग दहिन[6] दल॥
भाग बाम ले बानर बाहिनी। मादन रछसु जस सिसु सिंहिनी॥
काँध बिसाल हनु दल बीच। चढ़ि हय जस ऐरावत इन्द्र॥
चलब बढ़ावत कपि-दल हर्स। साथ सुग्रीव करत बिमर्स॥
जस कुबेर दिगज सारभौन[7]। बैठि करत यात्रा दिग भौम॥
तस चढ़ि अंगद कंध महान। चलिहें लखन उमिर क समान॥
विक्रम विजयी जे जम्बुवान। रिच्छ राज सुखेन बलवान॥
पृस्ट भाग सेना के रछिहें। सजग अभय बढावत चलिहें॥
अस प्रभु आज्ञा सुनि के सुकन्ठ। बोलि, अदेसि, नियोजि, दल बृन्द॥
कहलन चले सकल दल बानर। अनुमति जस प्रभु क गुन आगर॥
महा बली बानर तब तुरते। राजाज्ञा सुनि मुदि गरजते॥
कइ कइ कसरत उछलि कूदि के। लइ लइ बज्र सूल आयुध कै॥
निज निज दल में भइलें ठाड़। करत भयंकर नाद प्रगाढ़॥

---

१—सफर मैना—आगे जिन्स आदि और मार्ग ठीक करने का सामान लेकरजाने वाली सेना, यह अंगरेजी शब्द है जरूर परन्तु १८५७ की क्रान्ति से भेजपुरी में रूप बदल कर खप गया है। २—केसरी—बहादुर, बन्दर विसेस ३—अगरी-अग्र आगे नेतृत्वकरते हुए। ४—तीर=तट, निकट, पास। —५पागे=पगे हुए. परिपूर्ण। ६—भाग दहिन दल=दक्षिण भाग से रक्षा करते हुए चले, राइट ऐडवांस। ७—सारभौम=कुबेर के हाथी का नाम विशेष।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब जब दुंदुभी बाजलि जोरि। डंका कूँच क घहरल सोरि ॥
तब-सुकन्ठ ढिग राम जाइके। सिर पद नमि क विनवले कहि के ॥
नाथ, सैन अब भइल तयार। कूँच मुहूर्ति आइलि पास ॥
करीं कृपा, चढ़ीं हनु क कंध। की हम बजईं कूँच क संख ॥
सुनि सिव नमि प्रभु कंध चढ़लें। मुदि सुकन्ठ तब संख फूँकलें ॥
हरखि किलकि क कपि दल चललें। महा निनाद सोरि नभ फरलें ॥
ह्रिस्ट पुस्ट, सुग्रीव पालल। कपिन कोटि लाख बिच घीरल ॥
चललीं राम दखिन चढ़ि लंक। सजि धजि भरल उछाह उमंग ॥
सबतर कपि दल उछलत, कूदत। हरखत, मूदत, इत उत ताकत ॥
घन जस गरजत सिंह दहाड़त। तस सहुँ दउडि गरजि क धावत ॥
खेलि में केउ क केउ लेइ भागत। पटकत केहु के केहु धकिआवत ॥
एक दुसर तकि मुँह बिरावत। दूसर दुसरा हँसि चिढ़ावत ॥
करत खेलि जात अस बानर। बल बिक्रम पौरुस क आगर ॥
मारवि असुर लंक विनासबि। सिया आनि राम सतकारबि।
भनि अस जोधा कूदि क धावत। राम सुनावत हँसि क भागत ॥
आगु नील कुमुद चलि सेना। मग बनवत दल सफर मैना ॥
बीच राम सँग लखन सुकन्ठ। चढ़ल काँध हनुमान निसंक ॥
जात सुसोभत मघ कपि सैन। सुर दलं, हरि जनु गरुड क डैन ॥
लखन राम अंगद हनु कंध। सूक्र बृहस्पति मिलि रवि चन्द ॥
सँग सत कोटि लेइ के बानर। सजग अकेल चलत निरन्तर ॥
पनस केसरी कोटि ले सेना। रच्छत भाग कपि दल दहिना ॥
लेइ अर्क सज अतने दलवा। रच्छत सेना भाग बयवाँ ॥
कठिन कठोर राम आदेस। करे न केउ जन अहित बिसेस ॥
यहि से डरि रिछ कपि कर सेना। चलति दुराइ नगर क कोना ॥
जहँ से दल गुजरें किलकारत। जनु जनाय हऽ सिंह दहाड़त ॥
रचि संकेत राम क पावत। उछलि कूदि क सहुँ दल आवत ॥
अस प्रसन्न सजि राम-सेना। चलति बढ़ाय गति दिन दूना ॥
हृस्य पुस्ट बलवान असेस। युधि अभिनन्दन करत बिसेस ॥
सब योधन हिय लडन क चाह। मन उमंग प्रभु काज उछाह ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तन बुझात थकान न तनिको[1] । चाह बिस्राम क मन न जरिको ।।
यहि बिधि दल महेन्द्र प पहुँचल । फल मधु जहँ गिरि तरु प लउकल ।।
भइल हुकुम बन घुसि फल भछहु । फल मधु भखि क भूखि मिटावहु[2] ।।
सुनि कपि रिछ दल रुख प लदलें । खा पी कर फल मधु अघइलें ।।
द्रोन द्रोन मधु छता भराइल । चाटि चूटि दल सुटुकि[3] अघाइल ।।
दल सोभत तहँ डारिह बइटल । जनु चमगादुर तरु प लटकल ।।
खाइ पीइ क भूखि मिटवलें । उमगि नाचि, मुदि, मन बहलवलें ।।
तब जब डंक कूँच क बाजल । जुटि दल झट समुद तट धावल ।।
गिरि से उतरि बन तट क लँघलें । बिस्तृत पाट समुद निरखलें ।।
पथ्थर जहँ के फेन सनाइल । वेल चोट से चिकन घिसाइल ।।
हहरे समुद, ज्वार तट टकरत । एक प एक धाइ सिर पटकत ।।
महा बिसाल, महा बिस्तार । सूझि ना परत पाट क पार ।।
लउकति तीनू दिसि जल रासि । जानो आवत प्रलय हहासि[4] ।।
दल लखि लहरि चित घबड़ाइल । हौंस उमंग तुरत थिराइल ।।
तब पवलें दल हुकुम रुके के । सावधान हो खाढ़ रहे के ।।
उत लखि राम समुद कर बेग । मन चित बिकल उठल आवेग ।।
कहलीं, लखन, तट त पहुँचलीं । पुनि पहिलीं चिन्ता प उठलीं ।।
सिन्धु लाँघि कस पहुचबि लंक । समने गरजत उमगि निसंक ।।
इहाँ से आगु समुद विदमान । जे सरितन कर स्वामि महान ।।
कतो न लउकत यह कर पार । रुकल मार्ग अब करी बिचार ।।
कि लाँघबि कस कवने उपाय । नाव जहाज न कतो लखाय ।।
हुकुम दऽ इहवें पड़े पड़ाव । करे सेन बिसराम अराम ।।
ढिग निज सेन सेनपति रहसु । कतो न कवनो वजह से हटसु ।।
सब नायक रच्छसु निज दल के । यथा स्थान रहसु सब रुकि के ।।
भय यहँ असुर गुपुत संचार । तेह से सवे रहे होसिआर ।।
सुनि सुकन्ठ लखन सँग गमले । बृच्छन बीच सेन ठहरवलें ।।
सुख प्रबन्ध सबन कर कइलें । रिछ, लंगूर, कपि अलगवलें ।।
क पड़ाव दल नित कृत कइलें । उत सन्ध्या करि राम बइठलें ।।

---

१—तनिको=जरा भी, २—भूखि मिटावहु=क्षुधा मिटाओ, तृप्त होते जाओ, पेट की भूख को तृप्त करो, ३—सुटुकि=जल्दी से पीकर। ४—हहासि=शोर करके, तुफान मचाते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दल पड़ाव प हरखत बइठल। सोभा सिन्धु अपार निरखल ॥
तबले पच्छिम किरिन विसवलि। पूरुब पूनो चान निकसल ॥
समुद्, हहासि उपर क ऊठल। महावेग लहरि चढ़ि लहरल ॥
नभ उठि लहरि गरजति, उफनति, ।खउलति,लहरि प हहरि,क गिरति॥
महा भयंकर, गजब प्रचन्ड। उठल ज्वार उदय संग चन्द ॥
थिरकि, ताल, प नाचत तरंग। उफनत, फेनि क हँसत उमंग ॥
चन्द बिम्ब कन कन प चमकत। जनु छितरि, छबि मुकुता दमकत॥
नाग, ग्राह, जल जीव बिकराल। पौड़त, उतरत, बहत उताल ॥
महा वेग बायु हहकारति। एक प एक लहर ले धावति ॥
खन ऊपर खन नीचु हो चलति। धुनि सिर एक प एक पटकति ॥
चमकि लहरि प, जल-कन छितरल। जनु सगरो चिनगारी[१] बिखरल॥
भा गगन में नखत जे चमकल। से नभ सहित समुद प उतरल ॥
भा कुगरह गगन के तमाम। धइ रुप लहर-सरप उतरान ॥
दृंइत पच्छ ले घात में दउडत। राम मार्ग लाँघन से रोकत ॥
यहि बिधि समुद अकास भासल। भा समुदे चढ़ि नभ प पसरल ॥
मिलत छोर जल गगन जनात। नभ जनु लरकि समुद से छुआत ॥
उत तारा त इत जल मोती। उत-नभ गंग, सरित इत सोती ॥
उत घन घट, इत तरँग क माल। उत गरजन इत स्वर बिकराल ॥
समुद उछालत रतन क दान। नभ कन-सीत-मोति, बरसान ॥
हस अस लखि दल इत हरखात। बिघिन क गुनि प्रभु उत अकुलात॥
कहि बिधि सेन समुद जा पार। रिपु रावन क करे संहार ॥
महा भयंकर यहि विस्तार ।करि न सकति बुधि बिधि क विचार॥
उत सिय देली अवधि दू मास। यहि में करे क सब हव निकास ॥
अस मन में प्रभु बिकल हो सोचलीं। दीन बचन लखन से बोललीं ॥
सहज जना न समुद के लाँघल ।कठिन अवधि भीतर सिय लानल॥
समय क साथ सोक भी घटत। जग जे कहत से हमहूँ सूनत ॥
पर मो सोक त दिन दिन बढ़त। तात, ताप-बिरह हिय जारत ॥
दुख न भाय सिय, हरन जनात। बिकल चित्त गुनि समय नसात ॥
बितइ अवधि जो चहुँपबि लंका। कि सिय पाइबि जिअति निसंका ॥
जा पवन! जहँ सिया अनिन्दित !! बइठलि निरखति मग मो चिंतित!!!
मास अवधि दु अँगुरिन गीनति ! जेहि बीते कछु करे क सोचति !!!

१—चिनगारी=चिनगी, ज्योति.कण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हिय प्रवेसि तूँ तेहि समुझइहऽ! मो प्रस्थान क हाल बतइहऽ!
पहुँचल निसचय आ रिपु हनल! बुझइहऽ कहिकर बिघिन क पड़ल!!
बिसासि क अस तूँ धीर बँधइहऽ! बीतलो अवधि प जिअत बचइहऽ!!
सिय उर छू, आ मो हिय छुइहऽ! अत उपकार पवन हो करिहऽ!!
यहि असपरस से कलमो मिलिहें! तृसित तप्त हिय हिम जल पइहें!!
'हाय नाथ', हरन जूनि दूरि, कहली जे सिया मोहि बसूरि,
से लखन, बिखि सम हिया जारत! अजो याद तेहि, हिय बिदारत!!
प्रिय बियोग हऽ जे कर ईंधन, जे क लपट हिय लहकत चिन्तन,
से प्रेमागिन हा! तन जारति, निसि दिन छनछन सुधि, जगावति॥
अदेखल दृश्य असूनल गीत। देखल, सुनल दुनो, से पुनीत॥
भेंट बिसेस त भाव इसमृति। होति न सुरति से कबो बिसमृति॥
खास मिलन के मधु मुसुकान, लटपट छबि, कबनो अहवान,
समय समय क उ मधुरी याद। मदपी अस उठि मन उनमाँद[1]॥
बंक, व्यग, रिसि प्रेम, क मान, समय समय कर बिहवल ध्यान,
रंग तरंग अनङ्ग कर सान, कमल नयन कर मनमथ बान,
चित-वृति-प्रीति प खुदि अमिट्य। जग सुभाव तन तात, अकाट्य॥
लखन इहाँ तें रहि रिपु लड़िहें! घुसि क सिन्धु राम अब सुति हें!
तहें अमर विसराम इ पइहें। प्रेम निसान जगत ई रहिहें!!
सिय सटि, बन, भुइँ हम जे सुतलीं। सिन्धु सूति नरबि दुख गुनलीं॥
जीअति सिय, समाद सुनि लखन। तन न नसात इ जरि बिरहागन॥
भरल किआरी पास क धान। जस ना सूखत तेहि सरदान॥
तसत तात, ई राम न मूअत। जीअत, सुनि गुनि कि सिय जीअति॥
हा लखन! कब दिन ऊ आई? आ सिय यहँ यहि राम जुड़ाई?
सुनऽ लखन अब जा तूँ सूतऽ। राम अकेल क छोड़ऽ बिलफ्त॥
दुख अकेल में होला शान्ति। रोइ लोर नर नासत क्लान्ति॥
एहि उदीपन समय अकेल। पाइब हम सुख बिना ढुकेल॥
सुनि तब लखन अदेस हटलें। राम अधीर अकेल पड़लें॥
नयन फारि उदीपत ऊ दृस्य, चाँद समुद आकरखन नृत्य॥
लखि लखि भइलें राम बिभोर। पगलें सुधि-रस मधुर अथोर॥
हा! कब उ मुख चाँद अस हँसत, चूमबि हम हनु धइ क उठवत?

---

१—उनमाँद=उनमाँद संज्ञा का प्रयोग यहां क्रिया के रूप में हुआ है, उनमाँद उत्पन्न करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हा ! सिय कब आ हिय यहि मिली ? उर बँधि, मदि, उठि, कुच संचली ?
हा ! कहाँ ऊ दिन अब गइलें ? जब ई भुज मिलि चारि बँधइलें ?
रस सिङ्गार नद बहुत उतरत, जीवन सुख रस समुझत बूझत,
उदय अस्त पूनो ससि देखत, दुख सुख भाँति माँदि बतकहत,
रही हमन जगि जगि निसि बितवत। बन उपबन सोभा चहुं निरखत ॥
कोईल पीक गावत सूनत, कमल पराग मिलि मिलि सूंघत ॥
नभ-गंगा नहाति जोन्हिन के, लुकत छिपत घन लखि निसिपति के ॥
नद-बिलास तरि तीर उतरिके, रहीं राति बितवत हँसि हँसि के,
दिन में तसहीं सब गृह काज। करति प्रेम रत सिय सुख साज ॥
रचि चिन्तित लखि, होइ बेहाल। करि क उपाइ करति खुसिहाल ॥
जब चिरइ उमगि गीत गावति। सुनि हरखा सिय मोहि सुनावति ॥
बन से साँझ फूल तूरि लावति। सिला डँसा सुचि सेज सजावति ॥
हमहुँ फूल चुनि भूसन बनाईं। पहिरा निसि मुख लखि हरसाईं ॥
तब सिय मगन, प्रेम उत्कन्ठित। सलज बिभोरि हो, कस निबन्धित ॥
हाय ! तसहिं उत्कन्ठित होइ के। लगी गले कब सिय फिर मोहि के ?
हाय ! हाय !! यह निसि उदीपन। सुधि सिय उठि करति मन न्नभन ॥
हा ! हा !! ऊ दिन फिर कब आई ? जब सिच धइ उर राम लगाई ?
गुनि गुनि अस प्रभु निसि बितवलीं। मौन बनल रस-नद नहइलीं ॥
एक एक रस रंग के बाति। कइल केलि सुधि आवति जाति ॥
ढरि ढरि लीर कपोल धोअलें। समुद चाँद दृग नभ निहरले ॥
अन्त बटोरि सुधि प्रभु बोधलें। बल प्रयोगि चित सुस्थिर कइलें ॥
प्रगट बोलि क समुद से पूछलें। मन के बाति-रस मन में गोपलें ॥
हे समुद, दिन का ऊ लवटी ? राम भागि ऊ का फिर पलटी ?
हा ! सती साध्वी ऊ सीता। अजु रिपु मध परि बनलि सभींता ॥
कसंत दुखित दिन बितवति होखी ? कत बिलपति कत झंखति होखी ?
हा ! दिन कब ऊ आई राम ? जलद पटल हटि निकसी चान ?
अस बिलपत अति राति बीतलि। बिसवत चाँद छितिज में छीपल ॥
तवो राम के नींदि ना अइलि। रस में सनि सनि मन भर माइल ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम दलीपपुर, परगना-बीहिआ, जिला-साहाबाद, सूबा-बिहार विरचित साहित्य, रामापन के सुन्दर कान्ड के गन्द्रहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि १२ अधिक आसिन सुक्ल पख सम्वत २०२० विक्रमी तदनुसार ३० सितम्बर १९६३ दसवी। दिन सोमार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### सोलहवां सरग

प्रारम्भ-तिथि—१२ सुक्ल पख अधिक आसिन सम्बत २०१९ विक्रमी, तदनुसार १ अक्तूबर १९६२ ईसवी दिन मंगलवार।

लंका में रावन के समुन्द्र तट पर रामचन्द्र के अवाई सुन के रावन के चिन्तित भइल। मन्त्रिन के सभा कइल आ सलाह बात। बिभीखन के तहाँ नीति युक्त बात कहि के समुझावल आ सीता के वापिस करे के सलाह देल। मन्त्री के कर्त्तव्य आ मन्त्रना देबे के बिधि बतावल। रावन के मन माफिक बात ना सुन के चुप लगावल आ दूसरा दिन बृहद सभा करे के आज्ञा देल।

### १५ मात्रिक चौपाई

उहाँ रावन सुनि राम चढ़ाई। आगम तट त सेतु बँधाई॥
कपि जमाव, सुकन्ठ मिताई। लच्छ कोटि बानर क अवाई॥
भइल बिकल गुनि हनु कृत नास। लंक बिध्वंस त सैन बिनास॥
मन्त्रिन बोधि क पुछलसि राय। बहु बिधि कहि, बुद्धि नीति बताय॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



निज बल, पौरुस, सिथ प आसक्ति । कहि क बुझवलसि निज अनुरक्ति ॥
मन्त्रिन सुनि दस कंध अभिमत । हाँ में हाँ मिलवलें अनुमत ॥
तब बिभीखन उठि, सनमानि, नमि बहु भाँति, सील नृप मानि,
कहले, नृप अनुचित न भानबि । रऊरे हित, हित–बाति भाखबि ॥
रउरि बड़ाई, राउर मान । बल, बिक्रम सब जान जहान ॥
नीति निपुन, विद्वान महान । सासन, पौरुस, बिजय समान ॥
नृपति नीति भी जानी खूब । असत प सत्य सदा मजबूत ॥
भनत साख सत जीतत निरभय । यह से सत पछ लें बुध निरनय ॥
त–केकर हंव, पद सत पछ में । के बा जात कुपथ पथ भ्रम में ॥
ई निरनय निरपच्छ हो कइल । बिपति समय कर करतब भइल ॥
यहि अमनख नहिं मानबि तात । बा कटु पर त साँच ई बात ॥
गुनीं रवें हरन–सिय राउर । ओह अकेल बिजन बन ठाउर ॥
कारन बिना काम बस होई के । सकी कि पाइ बल सत केहु के ॥
तवना पर बल बिक्रम राम । जाहिर सब पर जगत तमाम ॥
जस संजमी धरम धर बीर । तस बिक्रम बल पौरुस धीर ॥
पिता बचन हित तपसी भेख । भाय-प्रेम बस तज पद, गेह ॥
फिरत अकेल करत मुनि न्याय । तपत सत्य हित, हानि अन्याय ॥
जो कारन खरदूसन मानीं । जेहि रिसि हरलीं उनक रानी ॥
त–सुपनखा बहिन क करनी । गुनि पछ हमन क नीचु दबनी ॥
अस जा असुर जे पहिले लड़ल । से बस असत पच्छ ते निरबल ॥
सब हइऽ रखत निज रछ अधिकार । न्याय तुला अस अरि बरिआर ॥
रवाँ पँडित हइँ बड़ क ज्ञानी । न्याय, नीति, ज्ञान, अभिमानी ॥
कसत यहि क सत से समरथबि ? निज पछ निरबल हारि क मानबि ॥
फिर कुल, बंस, असुर, दल, राज । रच्छल परम धरम नृप आज ॥
पितु, पुलस्त उत्तम सन्देस । कि सिय–हरन बिनास कुल हेत ॥
यहि से, सिय दे, राम हटाय । करसु देस, कुल-असुर रछाय ॥
उत्तम परम, धरम हित राय । पालीं नृप, हिय गुनि मन लाय ॥
नीति भने नर तीनि प्रकार । मध्यम, अधम, उतम निरधार ॥
मानत देव, हित मित सलाहि । करे करम जे उतम कहाहि ॥
निज अकेल करतब निरधार । मध्यम करम करत से उदार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिनु बिचार गुन दोस करमे। अहं, दर्प भरमें से अधमे ॥
यहि बिधि, उत्तम मध्यम, अधम। मन्त्र देल बिधि भनल बुध जन ॥
सास्त्र साखि मन्त्रि जहँ सहमत। उत्तम मन्त्र, बुध तेहि हित कहत ॥
पहिले भेद प अन्त में एकमत। से मन्त्र मध्यम भन अभिमत ॥
जहाँ त्रास बस ठकुरसुहाती। से हऽ मन्त्रल नृपति कुघाती ॥
हईं भाय, राउर सहोदर। सदा सुभेच्छु हितैसो लमहर ॥
सही जानि, भल जे हम भनलीं। अनुसरीं, से गुनि भल कहलीं ॥
अरि अवसि लँघि अइहें लंका। नसिहें हमन क गढ़ ई बंका ॥
यह से पहिले कि बिखि उपजे। करीं निदान भेजि सिय सहजे ॥
सत, न्याय, बल तब नृप, राउर। लही समर्थन जन भल, बाउर ॥
अस असुर-कुल भावी हानी। राज मान, सकल नुकसानी ॥
तुरत बिनसिहें, सुख चहुँ छाई। धन, जन, लंक, बिभव दिढ़ाई ॥
भनि क बिभीखन असत चुपइलें। जरि, बरि, रावन मन दुखइलें ॥
चुप उठि गइलें अपन प्रसाद। बृहद् बटोर अदेसि प्रभात ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार विरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के सोलहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि—अधिक आसिन कृस्न १ सम्बत २०२०, विक्रमी, तदनुसार ४ अक्तूबर १९६३ इसवी। दिन सुकवार।

---

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार बाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन )

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"
ग्राम—दलीलपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार

## सुन्दर कान्ड

### सत्रहवाँ सरग

प्रारम्भ तिथि—अधिक आसिन कृस्न पख ४, सम्वत २०२० विक्रमी, तदनुसार, ६ अक्तूबर, १९६३ ईसवी, दिन रविवार।

दूसरा दिन सभा में जाये के पहिले मदोदरी के रावन के समुझावल आ सीता जी के वापिस कर देवे के सलाह देल। रावन के ना मानल। वृहद-बटोर-सभा में रावन के सम्भाखन आ आपन अभिमत कहि के सभा के राय पूछल। कुम्भकरन आ बिभीखन के छोड़ि के समूचे सभा के रावन के रुचि के अनुसार उनका मत के समरथन कइल। आ प्रहस्त नाम के सेनापति के सीता जी के जल्दी सत नासे वास्ते सुझाव देल। तब रावन के यह में आपन असमर्थता बता के ब्रह्माजी के स्राप क हाल बतावल। कुम्भ करन के तब रावन के फटकारल आ सीता हरन के निन्दा कइल। बाकी तबो भाई भइला का नाते रावन के मदति देवे के बचन देल। तब बिभीखन के नीति सास्त्र सलाहि के सील का साथे सीता के वापिस करे के राय देल। बिभीखन आ प्रहस्त के बार्ता। बीभीखन के फटकारल। फेन इन्द्रजीत के साथ बिभीखन के बार्ता आ बहस। तब रावन के क्रोध करिके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिभीखन के धिक्कारलआ देस-द्रोह के दोख लगा के लंका छोड़ देवे के आदेस देल। बिभीखन के आकास में उड़ि के गइल आ, उहाँ से रावन के चेतावनी देल।

## १५ मात्रिक चौपाई

कइ नित कृत, जलपान सम्राट, बनि ठनि रथ पर, सधि धजि ठाट,
सभा जाय जब भइले ठाढ़, तब मदोदरी दृग जल काढ़ि,
कहलसि, का प्रभु बात सुनात ! आइल अरि चढ़ि सेतु बँधात ?
फल संग्राम हऽ सदा बिनास। दूनो पच्छ हो हित से निरास॥
कुल परिवार सब हित नतई। सहिते लंक सोन बिनसई॥
का निसचय हम जितबे करबि ? जितबो करबि त बहुतें बिनसबि॥
सुनलीं नर न राम सधारन। अवतरलें जग पाप बिनासन॥
काम बसी हो पर-नर नारि। हरल साख मन पाप, बिचारि॥
सीय हरन क नीक न कइलीं। हम सब उनकर सत परिखलीं॥
सतवन्ती कर सत बड़ अस्त्र। सनमुख जेहि बिफल ब्रह्मास्त्र॥
भले सकल दल, कुल, परिवार। प्रभु सहुँ आइ न कहे बिचार॥
पर सब मन में करम ई निन्दत। ठकुर सुहाति प्रभु सहुँ बन्दत॥
जब से आ कपि लंक बिनसलसि। तब से असगुन सब नित लखससि॥
दहिन अंग मो तबे से फरकत। आइ सिआरिन गढ़ में फेंकरति॥
गीध ध्वजा प बइठल लउकत। छत पर केलसि चील्हि दरसहि॥
हवन कुंड अगिनि नित धूमति। हवि सुख काठ पाइ न लहकति॥
सरप चुहानि दलानि मरात। घासि पाइ भी घोड हिहिनात॥
लखि असगुन ई हम डेराति। टारीं बिपति ई कवनो भाँति॥
मो जान सिय आदर से फेरल। राम पास समुद तट भेजल॥
टारी अवसि बिकट लड़ाई। त-सुख-सान्ति दुनो पछ छाई॥
भनि अस रोवति परलि चरना। सुसुकति, भनति आतुर बयना॥
बले उठाइ लाइ हिय रवना। चूमि दिढ़ाइ कहलसि वचना॥
नारि सुभाव नित रह कोमल। कुल परिवार के प्रेम में रसल॥
सदा ससंकित, सान्ति चाहत। पति, पूत प्यार में सनत रहल॥
एह से अस प्रिय, गूनल तोर। नारि सुभाव के सहज बटोर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हो अधीर नहिं गुनु प्रतिकूल। बिधि सब करिहें हित अनुकूल ॥
प्रिय, बात इ' हऽ राजनीति के। करु बिसवास निडरि निज पति के ॥
अस कहि चूमि क धइ उरलाइ। चढ़ल असुर रथ हँसि मुसुकाइ ॥
जाइ सभा बइठल सिंहासन। बटुरल रहें जहँ जोधागन ॥
ईन्द्रजीत, कुम्भकरनं, निकुम्भ। सहित बिभीखन मन्त्रिन बृन्द ॥
निज निज आसन बइठल बीर। करत प्रतीछा नृपति क धीर ॥
आवत देखि, सबे सन मनले'। उठि आसन से सील निवहले' ॥
बैठि सभा सब लखि मुसुकाइ। कहलसि रावन बात मिठाई ॥
हे निसाचर, ऊ लघु बानर। लंक घुसल चुपुके छन भीतर ॥
तहस नहस कइ क गढ़ लंक। भेटलसि सिया से जाइ निसंक ॥
कइलसि चैत प्रसाद बिध्वंस। मरलसि मुख मुख असुर निसंस ॥
भल हो तोहरन ! अब का करीं ? का उचित अब कस निरधरीं ?
हईं रवाँ सब अति बुधिमान ? सोचीं नीति कवन अब मान ?
देबि जे सम्मति मोहि विचारि। हम करीब तस नीति निरधारि ॥
राम कोटि बीर ले बानर। सिन्धु पार में जुटले आकर ॥
दूत बात ई सत हव कहल। कि निस्चित रिपु सिन्धु क लाँघल ॥
की सुखवइहें समुद अपार। बाँधि क सेतु कि लघिहें पार ॥
एह स्थिति में कइल का जोग। दिहीं सलाह लाइ मन योग ॥
मोहि पूछीं त मोर ई राइ। आइल रिपु जब चढ़ि क दबाइ ॥
तब उत्तर कस देबि न तेहिके ? कस रहबि बल अछते दबि के ?
का मो भुज बल थाकल पहिला ? का बल सैन्य घटल जे पिछला ?
करन कुम्भ, इन्द्रजीत जोधा, का न बसलें लंक में सोधा ?
कि गढ़ लंक बनल अस सवल, बल में बिनसि क भइल निरवल ?
का बिजय-ध्वज विस्व जे फहरल, सुर पुर, सिवपुर जे जमि लहरल,
सहजे रिपु सहुँ झुकई सीस ? बिना युद्धि, कइले नसि खीस ?
का दसमुख जग कइलिऽ कीर्ति, सहजे विनसी राम क भीति ?
जे करि नारि हम हरि तरजीं, से चढ़ि माथा का अस गरजी ?
जे निज देस निकासल डरल, माँगत भीखि बन बन फीरल,
से ले बानर भालु निसंके, चढ़ि लंका प अस आ सहके ?
की असुरन के बीर सकल ई, सहि सकिहें चुप बइठल लखि ई ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस कहि रावन जब चुपाइल। भरल सभा उठि क चिचिआइल ॥
हमन युद्धि चाँहीं नृपराज ! डर यहँ रंच न मनमें बिराज !!
जा उहँवे हम मारबि राम। खाइबि कपि धइ धइ अविराम ॥
सभे सभासद हाँ मिलवलें। जस रुख पवलें तस बतकहलें ॥
कुम्भ बिभीखन केवल भाय। बहठल रहलें, सुनत चुपाय ॥
महापार्स्व जब बहुत बहकलसि। सिय प करे बलात सलहलसि ॥
जे नासी सतवन्ती धरमा। आ सिय विवसि क करी बरना ॥
सुनि रावन त विवसि चुपाइल। गुनि विधि-स्राप मनें से डराइल ॥
तब कहलें उठि कुम्भ मखाइ। भल न करम सिय हरन कहाइ ॥
यह से घटल बल, भइल हँसाइ। छुद्र करम कृत कीर्ति नसाइ ॥
रहलीं सिय प जो अनुरक्त। सहुं जा भिड़िर्तीं राम ससक्त ॥
करम न असुर धरम विपरीत। बल से हरल नहिं नीति अनीत ॥
मरितीं भा लड़ि खुद मरइतीं। नारि, बीर गति में इक पइतीं ॥
नृप क करम ना नारि चुरावल। अस बनि चोर बन बन घूमल ॥
हरे के रहे त पहिले कहितीं। हम चलि के तो रन जितइतीं ॥
जे भनित न्याय करम नृप करत। ना पछतात न गरत में गिरत ॥
बिनु उपाय गुनि करम जे कइल। लोक विरुध आचरन अचरल ॥
तेहि कृत पाप हो प्रनभल नित्य। जग्य होमल जस असुध हविस्य ॥

---

१—बाल्मीकि रामायण में रावण ने कहा है—"एक बार मैंने आकाश में अग्निशिखा के समान प्रकाशित होती हुई पुंजिक स्थला नाम की अप्सरा को देखा जो पितामह ब्रह्मा जी के भवन की ओर जा रही थी। वह अप्सरा मेरे भय से लुकती छिपती आगे बढ़ रही थी। मैंने बल पूर्वक उसके वस्त्र उतार डाले और हठात उसका उपभोग किया। इसके बाद वह ब्रह्माजी के भवन में गयी। उसकी दशा हाथी द्वारा मसल कर फेंकी हुई, कमलिनी के समान हो रही थी। मैं समझता हूँ कि मेरे द्वारा जो उसकी दुर्दशा की गयी थी वह ब्रह्माजी को ज्ञात हो गया। इससे वे अत्यन्त कुपित होकर मुझसे कहे—'यदि तू किसी दूसरी नारी के साथ बल पूर्वक समागम करेगा तो तेरे मस्तक के सौ टुकड़े हो जाँयगे। इसमें संशय नहीं है। इसलिये भय से मैं ऐसा नहीं कर सकता। देखिये युद्ध काण्ड त्रयोदश सर्ग श्लोक ११—१५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आगु क करम करेजे पीछे, पीछु कृत्य क आगु जे इच्छे,
ज्ञान न नीति क से नृप मरम। विघटत निसचय नित कृत करम॥
नीतिवान नित अरि त्रुटि देखि। सफलत चतुर ते छिद्र बिसेखि॥
बेसोचले भावी परिनाम। नृप आरम्भ जे कइले काम॥
से जस, बिखि भोजन मिलि तात। अवसि अवसि कर करी निपात॥
तबो सहोदर हवऽ तूँ भाय। करबि यहि लगि तोहर सहाय॥
आ गुनि कि हव खतरा में देस। नागरिता तेहि रछल उदेस॥
लड़बि, रार्स सें परिघ ले हस्त। नासबि कपि रिछ दल के समस्त॥
यम समान, जे परिघ ले हस्त। समर भूमि जा लड़बि बिसस्त॥
घालबि सत्र करबि संहार। दानबि विजय तो राम क मार॥
करीं बिहार पीहीं सराब। आचरत करम जस मन भाव॥
अस कहि क जब कुम्भ चुपइलें। उठि बिभीखन सीस नववलें।
राजन, सिय रूपी ई नाग, के डारल गर राउर आग?
तन जेकर धइ बिपति सरीर, बिखि जेकर बनि चिन्ता तीर,
सुन्दरता बनि कर बिकलता, पँच फन अँगुरी बिखि फुँकरता,
जारि, वेधि, डँसि तो दिन रात, हर बिधि जुटा समान निपात,
कइलें राउरि दसा कुहाल, लाइ परोसलें बिपति क थाल॥
एह से बिपति क कइल उपाय, मारग धइल जे सत्य बताय,
समय, परिस्थिति सबहिं के जानि, निज अरु अरि बल सब पहिचानि,
लंक परम करतब्य हऽ आज। जेहि से सधे सब सहजे काज॥
त-ओर जान रिपु समुद से पार, पद रोपे आ लंक मझार,
पठईं राउरा सिय सतकारि। राम के पास समुद ओह पार॥
यह से हसन क केउ न हँसाई। दुनो पच्छ क यह में भलाई॥
जो के उ दर्प से कहे यहि हारल। त हम मानबि बात बिगाडल॥
भूलि जात मग जानि बहुरल, असंत बरति क पुनि गुनि सुधरल,
कइल पाप क जानि मिटावल, कुपथ जाइ क सुपथ प फीरल,
के जग बुध कही यहि हारल? जे अस कही से बुद्धि निपातल?
यह से तात, लघु भ्रात क बात। करबि बिचार मन कति क सान्त॥
जदपि नृपति मन सुमति सराहि। देलसि पच्छ में रावन सलाहि॥
पर झूट दम्भ कुमति जगवलसि। रावन रोस, दुद बढ़वलसि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तबो क्रोध क दससुख द्वलसि। अरथि दृस्टि प्रहस्त प डललसि ॥
उठि प्रहस्त तब कह अनखाइ। हम न डरीं जग केहु नृप-खाइ ॥
सिध, गनधरबं, जछ, बलवान। देखल सब बल असुर महान ॥
रवाँ असत्य, असुभ कस बात, बिनु सोचले, डरि करत हे तात?
हम अकेल राम हनि घालबि। कपि दल सकल क धइ धइ भछबि ॥
कहसि असत्य तें बातें प्रहस्त। कहे बिभीखन उठा क हस्त ॥
समय आई जब राम तूँ लड़बऽ। के जीती से हमहूँ देखब?
इन्द्रजीत तब कहलें मखाइ। चचा, कहीं बुधि कसंत गँवाइ ॥
यह कुल बीर जनम जे पाई। कायर अस से कस बतिआई?
हे पिता, कुल राउर महीन। चचा क छोड़ि सबे बलवान ॥
बल, बिक्रम, नसि पौरुस हीन, इहाँ अस केउ न जनमल दीन ॥
ऊ तपसी दू बनल भिखार, का बल तुलिहे समने हमार?
हम में केउ एक बीर छोटका, जाइ सकत बा मारि उनका !!
चचा, हमन क का अस डरईं। हउआ बोलि बाल कि सुतईं?
हम अकेल, सुरपति संहरलीं। ऐरावत क दाँत उखडलीं ॥
का भिखारि दू हमरा खोझा? बल पौरुस जे जानल समुझा?
सुनि अस सुत कर अटपट बात। कहलें बिभीखन हँसि मुसुकात ॥
सुत, ते नृप क कहा क बालक। बढ़ि क भाखसि बनि कुल घालक?
अस न कहइबे नृप हितैसी? भीतर सत्रु ऊपर क मैत्री?
उमिर क छोट न जानसि नीति, भनि मन भावत करसि अरीति !!
बयसि त काँचि, तसत बुधि काँचि। तपल न ज्ञान, अनुभव क आँचि ॥
सील-सभा न, बड़न कर प्रीति। आदर, भाव भा सभे कुरीतिं ॥
समर में न जीतति सेन क सक्ति। जीत सदा जग सत अनुरक्ति ॥
हमन पच्छ वा सत बिपरीत। चढ़ल राम पछ रथ सत-नीति ॥
यही से जन-बल राम के साथ। जेहि से हऽ जन-मत हमन घिनात ॥
कतनो बड़ हो बूँट क दाना। न नसि सक घट तन फुलि अपना ॥
तस हमनी कतनो बल साली। असत पच्छ ले होखबि बेहाली ॥
भरत खन्ड से लंक न बड़हन। संख्या जनमत दुनु में हरलन ॥
सस्त्र सम्पन्न भले इम बली। आयुध भरल किला में रखलीं ॥
जोधा बीर भी एक से एक। जीति सकब जग, जीतलें कितेक !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर जे हमन हइँ सत्य बिहीन । यह से बनल हइँ सब रबि दीन ॥
फिर बल राम क कस कम बाय ? लखन भी का कम बली कहाय ?
सिव-धनु जे जम्म केउ ना तूरल । रावनो बल अजमा क फीरल ॥
तेहि धनु तूरि क सिय बिअहलें ! तब कस न ऊ बलीं कहइले ?
हनि खरदूसन बालि अकेल । दखिना खन्ड से कइले मेल ॥
सेहि बालि कबो हमन हराइ । रखलसि रावन काँखि दबाइ ॥
बधि तडिका यस उत्तर पवलें । परसु राम भ न ब्रम्ह नमलें ॥
से निरबल कस हमन क कहले ? समुद सेतु जे आइ क बँधले ?
त सुत, उमिर क काँच तें बाडसि । यहि से बढ़ि बढ़ि बात बघारसि ?
रोस जोस में नासल लंका, सहित पुलस्त कुल जे बंका,
असत पच्छ पर अस क बहसल, न्याय नीति ताख धइ बहकल,
भल का केहू कही जग भीतर ? जे जरि को गुनि समुझी मन भर ?
रावन, मोर अपराध छमबि । मो हितैसी आपन समुझबि ॥
ठकुर सुहाति भनल से सतरू । सत कटु जदपि सदा हऽ सुखदू ॥
रहलऽ लंक असुर ! आनन्द से !! सब सुख भोगलऽ नृप रावन से !!!
कहइलऽ अबले सुहृद हितैसी । करनी कइलऽ हित कर जइसी ॥
रावन आइ काम क दलदल । फँसल विवेक सद् निज नासल ॥
त—यहि अवसर हित क हऽ काम, सत पछ सुझवे कइ क निदान ॥
आ कसहूँ नृप लावे राह ! बल से, बुधि से जात कुराह !!
पकड़ि क खींचे रावन बाँहि । डूबत तृसना सागर माँहि ॥
सच्चा मन्त्री उहे हे तात । जे हित अनहित सोचि क बात ॥
कहें बुझाइ, सुझवे मारग । बचे नृपति जेह से होत गारत ॥
भनि बिभीखन जब अस चुपलें । सीस नवा नृप, नमि बइठलें ॥
तब रावन विधि पेरि कहवलसि । कुसमय में बुधि दूरि भगवलसि ॥
भल हे भाय सरप सँग निबसल । भल हे तात, जा समुद में धसल ॥
पर भल नाहिं रहल सँग हित के । जे बनि भाय मदति दे रिपु के ॥
प्रगट में बोले हितकर बात । बनल भितरिया सत्र के तात ॥
गोतिअन के जग इहे हऽ बात । करें सरप अस हित बनि घात ॥
देखि न सकें गोत के बढ़ती । हरखें निरखि पड़ल ते बिपति ॥
अवरु सत्र देइ भेद तसहीं । करें सहाय सत्रु के ओसहीं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हित न भाय अस, न तस दुसमन । कहलि कहाउत्ति सच भइलि छन ॥
यह से तोहरा भाय क दुखदा । सदा, द्वेस बस, हिय में सुखदा ॥
धिक, रे बिभीखन तोहि धिक्कार । रहितऽ अन त, डिहितीं मार ॥
यह से आदेस–'भागु अभाग!' कुल ते बोरले लाइ क दाग ॥
गुनि सहोदर भाय न मारीं । नहिं ते मृत्यु दन्ड अधिकारी ॥
सुनि बिभीखन उडलें अकास । गदा मान्त्रि ले संग हहासि ॥
अन्तरीछ से कहले पुकारि । सुनी नृपति, अब बाति हमारि ॥
हईं बड़ भाइ, पिता समान । कहलीं जे सुनलीं सनमानि ॥
मो सद बाति तो बुधि न समात । हित कर उक्ति जे अहित बुझाति ॥
मीठ बोलुआ त मिलते रहिहें, सत बकता जे कठिन से मिलिहें ॥
सत हम कहलीं हित के रउरे । पर अरथ तेहि लवलीं उलटे ॥
जात हईं जो रवाँ निकसलीं । हम त नित भल रउरे चहलीं ॥
नीक न लागल छमबि त तेहिके । बड़ हइँ भाइ, छमबि गुनि लघु के ॥
रच्छबि रवाँ लंकपुर निज के । हो कल्यान असुर रह रछि के ॥
मो बिन सुख जो मानत रउरा । त तजि जात जनम हम ठउरा ॥
छोड़ निसंक मो गइले अपने । बिलसीं राज, भोग, जे समने ॥
खाली तन भर साथ ले जात । लइको बाला तजि प्रिय मात ॥
अबो हितैसी हइँ हम कहत । यही से रोकलीं सत समुझावत ॥
पर रत-मद-बुधि अहित उ मानि । तेजलीं मोहि क अस अपमानि ॥
त–ना दोस तोहि, छन बिपरीति, नसत बिबेक सब जग रीति ॥

यह तरह महराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार बिरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के सत्रहवाँ सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि ७ अधिक आसिन कृस्न पख सम्वत २०२०, विक्रमी, तदनुसार ९ अक्तूबर १९६३ इसवी दिन बुधवार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य-रामायन

( स्वतन्त्र )

(आधार वाल्मीकी आ तुलसी कृत तथा अन्य रामायन)

(भाखा भोजपुरी)

रचयिता—महाराज कुमार श्री दुर्गा संकर प्रसाद सिंह "नाथ"

ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा—बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### अठारहवाँ सरग

प्रारम्भ-तिथि—अधिक आसीन कुस्न पख १० सम्वत २०२० विक्रमी, तदनुसार, १२ अक्तूबर १९६३ ईसवी, दिन सनिवार।

आकास मार्ग से बिभीखन के अपना मन्त्री के साथे उड़ि के समुन्द्र पार आइल आ राम जी के सेना के सामने आकास में विमान रोक के आपन परिचय देल आ मिले के इच्छा प्रगट कइल। कपिदल में सत्रु के आकास में खड़ा देखि क हलचल। सुग्रीव के सेना के सजग होखे के आदेस देल आ राम से भेंट करके बिभीखन के आइल कहल आ भेंट करे के उनकर इच्छा सुनावल। राम सुकन्ठ बार्ता। राम के हनुमान आदि योधा से राय लेल। हनुमान के उत्तर! राम के सुकन्ठ से छमा धरम के गुन बतावल आ बिभीखन के ले आवे के आदेस देल। बिभीखन के राम के पास जात के मन के भावना। राम बिभीखन भेंट आ राम के लंका के राज के टीका देके उन्हका के लंकापति बनवला के घोसना। राम बिभीखन बार्ता आ रावन के लंका के बरनन। समुन्द्र लाघे पर विचार! बिभीखन के पहिले अनसन करके समुन्द्र के चेतावनी देबे के सलाह देल। राम के तीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दिन तक तट पर अनसन कइके समुन्द्र से मार्ग देवे वास्ते प्रार्थना कइल। समुन्द्र के प्रार्थना न सुनला पर राम के रोस आ दुस्ट मनुस्य के लच्छन बतावल फेन समुन्द्र में बान मारल। समुन्द्र पर प्रथम आ दूसर बान मरला के प्रतिक्रिया आ विनास दृस्य। समुन्द्र के प्रगट भइल। स्तुति कइल आ सरन में गिरके नल द्वारा पुल बाँधे के राय देल।

## १५ मात्रिक चौपाई

भाइ चेताइ उड़ले उत्तर। नभ से बिभीखन सिन्धु ऊपर॥
उड़ि दू घरी में पार पहुँचले। तट ऊपर नभ ठाढ़ रुकले॥
जहाँ राम कर रहे पड़ाव। लखत सजग दल ठाँव कुठाँव॥
लखि सह मन्त्री असुर क दिव्य। ठाढ़ि नभ सुनरि सूरति भव्य॥
कपि नभ तकलें फारि नयना। अचरज कइ क भनले बयना॥
निज निज दलपति ढिंग जा धाइ। लखीं गगन रिपु खाढ़ हऽआइ॥
तब नभ से बिभीखन उचरलें। साफ, दीन, निडर स्वर भखलें॥
लंक, निसाचर रावन राज। असुर कुचाली, जेकर काज॥
देस-द्रोह कर पातक लाइ। खेदलसि मोहि के लंक छुड़ाइ॥
असत प्रबासित रिपु लघु भाइ। नाम बिभीखन अति दुख पाइ॥
अइलीं इहाँ राम सरनाइ। आरत दुखित आस प्रभु लाइ॥
भल कहले मो लंक निकललसि। सत्रु सहाय कलंक लगवलसि॥
हरि सिय, हनि गीध, रख जे बन्दी, करे के कहलीं तेहि अबन्दी॥
प्रभु पहँ सिय पठवे क सलाहै। कि सत क पथ के होय निबाह॥
लंक बिपति त रावन निपात। बचे जे असुर कुपथ प मरात॥
अस बस कहल भइल बिखि हेतु। कहि मो द्रोही देलसि खेदि॥
यह से सरन में राम, बिभीखन। बिछूरि नारि निज बाल बच्चन॥
रखि राम दया क आस मन में। चाहत गिरल राम चरन में॥
माँगत सरन हऽ खाढ़ अकास। राम कृपा क करि बिसवास॥
जाइ निवेदऽ बात इ बानर। सीघ्र राम सहुँ कृपा गुनाकर॥
सुनि दलपति सुकन्ठ से मिललें। सब बुझाई कथ कहि निवेदले॥
लखि सुकन्ठ खाढ़ रिपु नभ में। 'सजग होत जा' कहलें दलमें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब जा राम से कहि सब हाल। पूछलें कहीं त करीं कुहाल॥
मो जाने माया इ असुर के। भेद लेन हित माँग सरन के॥
जाति असुर क छली कहालीं। अवसर पाइ करी कुचाली॥
सरन बहाने प्रभु बिसासी। आ मिलि दल में भेद बिकासी॥
भील, कोल, भल, भृत्य बिसासे! पर न नाथ, भल असुर से आसे!!
जाति सुभावं भनै इ निसिचर। तेह पृ भाइ कहत दसमुख कर॥
यह से यह पर कइल बिस्वास। कवनो तरे न उचित मो भास॥
चले चाल गुप्त चर आइल। भेद हित, मित-भेख छिपाइल॥
तब प्रभु सबं प्रमुख क बोलवलीं। सब क बोधि राय तिन पूँछलीं॥
निज निज मति दे भनलें बचना। बिबिध सुभाव रखलें समना॥
सब सुकन्ठ क कथ अनुमोदलें। असुर बिसास जोग न मनलें॥
तब हँलिखत उठि नमि क बोललें। प्रभु मो जान भल दल न कहलें॥
परिखल दोस भा काम से जाँचल। भेजि गुप्तचर बात बूझल॥
सम्भव नहिं हवें यहि अवसर। न निरनय अस सकब हमन कर॥
तजि क नीच ऊँच सहुँ आवत। दुनो दोस गुन, ठीक भाखत॥
देखि दुस्टता, भाय क जानि। सत बल, भुज बल प्रभु अनुमानि॥
मानि उचित समय कइ अवसर। आइल सद हिय भाव रखि कर॥
यह से जनात नियति यहि साफ। छलकइ कपट कहत न खिलाफ॥
बिधि उत्तम सब से परिखे के। स्वर क भेद समुझल बतकहि के॥
नर नहिं दुस्ट सके सहुँ आइ। स्वस्त निसंक अस भय भगाइ॥
स्वह हऽ साफ, निडर, दोस रहित। आदर, हिय, भगति भाव सहित॥
बाहर भाव से हिय कर भाव। कसहूँ न छिप सक लाख छिपाव॥
नीति, चतुर, भल हिय बिभीखन। पंडित महान तसद आचरन॥
त-असत्य पछ असुर पराजय। नीति बुधि गुनि क मन क निहचय॥
धन, बल, लहबि राज, मान गुनि। सरन गिटल राउर बिरद सुनि॥
त-प्रभु, अस बिभीखन क आइल। हव छलरहित मोहि जनाइल॥
अस कहि जब हनुमंत चुपइलें। सीस नवा ससील बइठलें॥
तब मन्त्रिन प्रभु बोधि कहलीं। सुनि मत मीत हमरो गुनिलीं॥
भल हित रउरन हई हमार। सलहबि[1] करतब कस न बिचार॥

---

१—सलहबि = सलाह संज्ञा से क्रिया बनी सलहबि, राय भली राय देगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भखि, भल भाव जे आइल पास। तेहि हम कस कइ सकबि निरास?
सम्भव बा हो ओइ में दोस। पर दोसी देल सरन न दोस॥
तबो सुकन्ठ सुनि कहल दिढ़ाई। प्रभु, ई गुनि सद जन क कहाइ॥
असुर में दुस्ट, अदुस्ट बिचार। कइल न उचित हऽ राइ हमार॥
हऽ ई निसिचर का कम बाय। कि समुभीं हम बात बढ़ाय?
त असतीन सरप अस पोसल। भला न नाथ, बुझा मो कहल॥
सुनि, निसकपट सुकन्ठ क बात। कहलीं राम लखन मुसुकात॥
जसत सुकन्ठ सुभवलें नीति। बिनु सद भाव न कहि सक मत॥
पर सुछम यहँ मोहि इक बाति। लखि जे धर्षा बा सत्य बुझाति॥
दू बिधि छिद्र कहल नृप गेंह। जनमल[1] कुल में पड़ोस क देह[2]॥
संकट में नृप पड़ल बा देखि। बैरी निकट, कि भाय, बिसेखि॥
स्वार्थ सिद्ध हित करत प्रहार। यह से भयंकर भाय विचार॥
सभे भाय नहिं लखन समान। सबे नृपति नहिं जनक जहान॥
सब सुत राम, न भाय जे भरत। न सब सुहृद सुकन्ठ कहावत॥
यह से राज लोभ क कारन। सहज[3] न जाय सकत दुरावन[4]॥
हम नहिं निकट कुटुम्बी इनके। जेह से डर यहि हक नहिं हानिके॥
यह से भाइ, बिभीखन अवाइ। असुर सुभाव न हेतु कहइा॥
राच्छसन में बहु चतुर सुजान। हितकर मीत हो सके लें समान॥
इन्ह क यहँ आ कइल पुकार। कहत असुर दल फूट-बिचार॥
भेद नीति मिलवल के सफली। असुर परसपर फूट फयली॥
तबो सुकन्ठ न राम मनलें। कइ बिसबास असुर न सकलें॥
कहलें, दूध पियाइ क साँप। बिखि दुराइ रछि सकत के आंप?
यहि से बध्य हम यहि के मानीं। आइल छलि करें नुकसानी॥
मन प्रभु, सुनु सुकन्ठ ते मानु। सकी न ई कइ टुक नुकसान॥
दुस्ट, अदुस्ट, भा साधु जे होइ। सत क छति कइ सकत ना कोइ॥

---

१—जनमल कुलमें = अपने ही कुल में उत्पन्न हुआ हो। २—पड़ोस क देह = निकटवर्ती ग्राम, नगर के देह (सरीर) में उत्पन्न हुआ हो, अर्थात् नजदीक पास में शत्रुता की कारण उत्पन्न हुआ हो। ३—सहज = स्वभाविक रूप से, स्वभावतः। ४—सकत दुरावत = नही हटाया जा सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सुनु कपीस, जबे हम चाहवि। पल भर में दल असुर निपातवि ॥
धरम सत्य-बल से बड़ दूसर। जगत, बिस्व, कहुँ सरग न सगर ॥
सरनागत के सरन क दीहल। बिकले गिरल के सत-बल उठवल ॥
महा धरम त महा हऽ करमा। कपटी, कुटिलो, सुधरे सरना ॥
खेदल गिरल क महा अधरम। ना सत ई सब निज सुभ करम ॥
त हम गिरलै क देबि सरना। चाहे जे हो यह से भयना ॥
जाँचत रच्छा जे गिर समने। तेहि क अभय करीं हम अपने ॥
इहे मोर संत प्रन सुग्रीव ! परम धरम क इहे हऽ नींव !!
ओहि क, तात, जे होय, लें आवऽ। पवलसि ऊ दान अभय, ले आव !!
बिभीखन, भा खुदे हो रवना, लावऽ तेहि जे मँगलसि सरन। !!
छभा-दान हम दिहलीं पहिले। रंच न भय तेहि राम कइलें ॥
अस्त्र सस्त्र ले साजि धजि आइल। सेन सहित भा कसहुँ, सोझाइल[1] ॥
कहि जो सरन गिरल हम चहलीं। सरनागत कर भाव रखलीं ॥
सहुँ आ जो मुख भखलसि सरना, तेहि दिहलीं अभय बल अपना ॥
जो छल करि त अपने गिरी। सत-बल, धरम, खुदे जस पेरी[2] ॥
त-सुग्रीव बिभीखन बुलावऽ। सील, सतकार सहित ले आवऽ ॥
सुनि सकन्ठ हिय गदगद भइलें। मन सराहि प्रभु गुन हिय गवलें ॥
सील, भगत-बतसल क गुनलें। प्रेम-भगति-प्रभु-नद मुदि बहलें ॥
मन में मुदि बिभीखन बुलवलें। सील भाव से सनमुख लवलें ॥
इत मन मुदि बिभीखन गूनत। प्रेम, भगति प्रभु गुनि मन सोचत ॥
जे पद सिला जिलाइ तरलसि। जे पद जोगी ध्यान लगवलसि ॥
जेहिं पद के सुन्नरि अरुनाई। सूत सील आधार कहाई ॥
सुर, नर, मुनि, सब जेहि पद पान[3]। तरसत, अभ्यसत,[4] दरस क ध्यान ॥
सेहि पद, अधम मोर सिर आज। नयन, ई मोर जे पाम समाज ॥
परिहें, लखिहें, मन उमगाय, बिनु प्रयास प्रभु सोझा जाय ॥
—जप. तप, त्याग ध्यान अभ्यासि, कइ बहु भाँति, बिराग मन आसि,—

---

१—सोझाइल = सोझा ( सामने ) संज्ञा से क्रिया बनी, सामने आया। २—पेरी = प्रेरित करेगा। ३—पान = प्राप्त करने हेतु। ४—अभ्यसत = अभ्यास से क्रिया बनी, अभ्यास करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जनम जनमान्तर सुर.नर तपत, जेहि अद्वैत ब्रम्ह लगि तरसत,
सेहि पुंज आनन्द, निस्कल, चेतन, अग्रज, नित्य, अविकल,
सत्य ब्रम्ह क लीला दिखवल, धइ नर रूप जगत अवतरल,
लखबि, निरखबि, सहुँ इन नयना। बिनु प्रयास अनुगमि तेहि सरना ।।
असत गुनत मन भइल, बिभोर, चललें बिभीखन प्रभु के ओर ।।
लखते परलें धाइ क चरना। त्राहि त्राहि कहि अइलाँ सरना ।।
जेहि दरसन हित नयन तरसलें। जेहि लगि जीव जनम बहु गमले ।।
सेहि प्रभु सहुँ लखि नयन जुडान। हिय तिरपित मन मगन महान।।
भनत असत दृग ढ़ारत लोर। सुधि बुधि भूललि भगति बिभोर ।।
गहि दुइ चरनन सीस सटाइ। परल बिभीखन पद लिपटाइ ।।
तसत लोर ढ़रत प्रभु नयनन। बले उठाइ लावत हिय सन ।।
धइ बिठाइ बगल बिसवासि। कहलीं लखन बुलाइ क पास ।।
लावऽ लखन समुन्द्र जल जाइ। लंका राज टिकबि रिपु भाइ ।।
अत्र तट-सिन्धु लक अभिसेक। जनवऽ घोसि क असुर जितेक ।।
अस जल टीकि बिभीखन भाल। कहलीं भुजा उठाइ बिसाल ।।
बनलें लंक नृपति बिभीखन! संक न राखे आजु से केउ मन !!
छन भर में सब काज ई कइके। पास बिठाइ लंक नृप नव के ।।
रावन बल, वैभव कर बात। अस्त्र, सस्त्र, सब सेन-समाद ।।
बल निज, रिपु बल, तुलन के भार। दे बिभीखन पुछलीं बिचार ।।
सत्रु छिद्र, निज दल क छिद्र। छिद्र लाभ लहि, भइल अछिद्र ।।
बतकहलीं जनु मात पुरान। पुछलीं रिपु क सक्ति महान ।।
हित भल बिधि कवने परिवार। रच्छल जइहें लंक तोहार ।।
आ रिपु ससना, सीय क तपना। निज सत, तप बल उन क रछना ।।
आदि बाति प्रभु बिनइ बिसेखि। पुछि रिपु-भाइ, जनलीं बिसेखि ।।
तसत बिभीखन रावन छिद्र। लाभ लेन बिधि कहलें सीघ्र ।।
सब बीरन क कमी बतवलें। किला, कोटि, रछ बल बतवलें ।।
हय, गज, रथ पैदल दल सारा। अस्त्र, सस्त्र, आयुध दुधारा[1] ।।

---

१—दुधार = दो धार वाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



*सतघ्नी[२] अग्न्यास्त्र[३] क बिबरन। बिधि-निवार, सहुँ रिपु क बिघट क[४] ॥
भोग, बिलास, काम अतिरेक[५]। मद्य, मांस, नृत नाद जितेक ॥
सील, न्याय, सत बल क अभाव। नित मद बउरल[६] तेकर प्रभाव ॥
अपना अस भनि निछल बिसेस। कहलें बिभीखन बतकहि बेस[७] ॥
रावन बल, सब छिद्र बतवलें। करन चढ़ाई-बिधि बिसेखलें[८] ॥

---

२—सतघ्नी = तोप ३—अग्न्यास्त्र = अग्नि या गैस या अणु आदि शक्ति के प्रयोग से चालित होने वाले अस्त्र। ३—विधि निवार = रोकने की बिधि अर्थात् आक्रमण को रोकने के तरीके या यन्त्रादि। ४—सहुँ रिपु बिघटक = सामने के सत्रु को बिविध्वंस कर देने वाला अस्त्र। ५—अतिरेक = अत्यन्त। ६—बउरल = पागल सा बना हुआ बौराया। ७—बेस = अच्छी तरह। ८—बिसेखलें = अच्छी तरह से समझाया। विसेस रूप से समझाया।

* बारूद के यन्त्रों का तथा बारूद का आविष्कार भारत में हुआ था अरब वालों द्वारा इसके आविष्कार का होना मान्य इस लिये नही हो सकता कि उनके ग्रन्थों से बहुत पूर्व के भारतीय ग्रन्थों में इसके उल्लेख हैं। महा भारत के शान्त पर्व के ६९ श्लोक न० ४४-४५ में शताघ्नी का जिक्र आया है। यथा—"राजा को युद्ध कोट बनाकर नगरों की रक्षा करनी चाहिये। कोट के द्वारों पर बड़े बड़े यन्त्र रखवा देने चाहिये और दिवारों पर शताघ्निया (तोपे) चढानी चाहिये।"

इस सम्बन्ध के दो लेखो का उद्धरण पूर्वो कथन के समर्थन में यहाँ उद्धृत कर देना सर्व साधारण के ज्ञान के लिये आवश्यक है।

**'आज' दैनिक काशी**

**दि० १८ मई १९६२ ई०**

**प्राचीन भारत में रक्षा-व्यवस्था**

**लेखक—चिरञ्जीलाल पाराशर**

भारतीय वाङ्मय से यह सिद्ध है कि देश की प्राचीन रक्षा-व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ होती थी। रक्षाके लिए शक्तिशाली सेना रखी जाती थी और उनको युद्ध-कलामें भली भांति प्रशिक्षित किया जाता था। यदि वेदकाल और

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४० की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब बिधि–लाँघन समुद क पार। बइठलि मंडलि करे बिचार॥
त–सुकन्ठ बिभीखन सलहलें। सिन्धु पार बिधि ज्ञान पूँछलें॥
तब नमि चरन बिभीखन कहलें। तात, ताप-जग प्रभु बिमोचलें॥
प्रभु चहते दल उतरीं पार। कछु न बात सहुँ राम ई यार॥

---

( पृष्ठ २३९ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

महाभारतकालके मध्यकी स्थितिका अवलोकन किया जाय, तो विदित होगा कि भारतमें राष्ट्र-सुरक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाता था। उस कालकी राष्ट्र-सुरक्षापर 'शुक्र-नीति सार'में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

उक्त ग्रन्थमें दिये गये विकरणके अनुसार वैसे तो सेना कई भागोंमें विभक्त होती थी किन्तु मोटे तौरपर उसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—स्वगभा और अन्यगमा। अर्थात् पैदल सेना और वाहिनी सेना, जो घोड़ों और रथों आदि का प्रयोग करे। इसके भी दो रूप थे, राष्ट्र द्वारा निमत्रित सेना और सुरक्षासेना। इनमें पहली सेनाको सरकार शस्त्रोंसे सज्जित करती थी और दूसरी अपने शस्त्रोंका संग्रह भी स्वयं ही करती थी।

राष्ट्र अपनी सेनाको तो कई वर्गों या भागोंमें विभाजित करता ही था युद्धकालमें मित्र राष्ट्रोंसे भी सेनाकी सहायता ली जाती थी। प्रथम वर्गमें, 'स्वीय' नामक सेना होती थी। यह राष्ट्रकी 'वेतनभोगी' सेना होती थी। इसके बाद 'मौल नामक राष्ट्रकी पुरानी स्थिर सैना होती थी। 'साद्यस्क' नये रंगरूटकी टुकड़ी, 'सार' युद्ध करने योग्य सेना, 'असार' युद्ध करनेके अयोग्य सेना अर्थात् सप्लाई करनेवाली, शिक्षित सेना जो व्यूह रचनामें कुशल होती थी। गुल्मीभूत' सेना वह होती थी जिस सेनाके नायक सरकार द्वारा नियुक्त होते थे, 'अगुल्मक' वह, जिसके नायक सैनिक ही स्वयं चुने और 'दत्तास्य' वह था जिस सेनाको सरकार शस्त्र देती थी। इसके अतिरिक्त राष्ट्रोंकी-सुरक्षाके लिए कवालियोंकी भी सेना सीमा पर रखी जाती थी। इसे 'आरण्यक सेना' कहा जाता था। यह सेना सरहदपर रहनेवाले जंगली जातिके लोगोकी होती थी और पूर्णतः स्वतन्त्र होतो थी। यह केवल देशकी सुरक्षाके लिए बचनबद्ध होती थी।

लड़ाईके समय पैदलके अतिरिक्त, रथों, ऊटों, घोड़ों और हाथियोंपर

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४१ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर लीलाबस जे प्रभु पूछबि। निज लघु बुधि गुनि ते हम कहबि॥
सगर क लवले सागर बनल। सगर महान रघुकुल जनमल॥
राम क रच्छि संकेत पावत। सिन्धु पार करिहें दल धावत॥
यह से पहिले सिन्धु से पूछल। मोर जान भल मति ई सूझल॥

---

( पृष्ठ २४०-की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

बैठकर सेना लड़ती थी और वर्तमान हथियारों का प्रयोग उस समय भी भारतीय सेना करती थी। रथोंका वर्णन करते हुए 'शुक्र नीति' में कहा है—'युद्धके रथ लोहेके हों, वे पहियों द्वारा सरलतासे घूम सकते हों। रथारोहीके लिए बैठनेकी जगह ऊची हो। सारथिका स्थान रथके मध्य हो। रथके अन्दर यथेष्ट हथियार रखने चाहिये। रथका छाता भी घुमावदार हो। घोड़े उत्तम हों।'

इसके बाद रथोंकी लम्बाई-चौड़ाई भी दी गयी है और हाथियोंको युद्ध-कला सिखानेका भी वर्णन है तथा योग्य घोड़ेकी पहचान और लड़ाईके प्रशिक्षण तथा नस्लोंका वर्णन किया गया है। यह भी बताया गया है कि लड़ाईके समय किस स्थितिमें घोड़ेको कहाँ मारना चाहिये। वर्तमानमें इन वाहनोंका स्थान मोटरों, ट्रकों और जीपोंने ले लिया है। युद्धके अस्त्र-शस्त्रोंमें भी परिवर्तन हुआ है, परन्तु युद्धकी कलाओं और नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अतः प्राचीन भारतकी युद्ध-कला और नीतिको राष्ट्र-सुरक्षाकी वेलामें समझना आवश्यक है।

## सैनिक प्रशिक्षण

'शुक्रनीतिसार'में सैनिक प्रशिक्षणके लिए लिखा गया है—'वाद्य यन्त्रों'-बिगुल आदि-द्वारा सैन्य संकेतोंका निर्धारण इस प्रकार करना चाहिये कि उन्हें अपने सैनिकोंके अलावा दूसरे देशका सैनिक न समझ सकें। वाहनों और पैदल सेनाओंके लिए भी यह संकेत अलग-अलग रखे जाने चाहिये। युद्धकालमें जो भी सैनिक जहां हो उसे अपने अधिकारीका संकेत सुनकर उचित कारवाई करनी चाहिये।

'सैनिकोंकी टोलियां बनाकर, उन्हें प्रतिदिन टोलियोंमें फैलाना, घुमाना, तेज चलाना, मोड़-तोड़से चलना, संकुचित करना एक दम आगे बढ़ना और

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४२ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सुनि प्रभु, बिहँसि कहल, सुनु तात । हमरों नीकिं ई बात बुझात ।।
बल प्रयोग के पहिले अवसर । समुझ बूझ हित दीहल हितकर ।।
सुनि उठि लखन मुसुकि क कहलं । तात, ई भल मो सूझ न जँचलं ।।
बल, विक्रम, दल रहते अइसन, जँचना दीन मँगना कइसन ?

(पृष्ठ २४१ का पाद टिप्पणी का शेष अंश)

पीछे लौटनेका अभ्यास व्यायामको दृष्टिमें रखकर करना चाहिये । इसी प्रकार सीधी पंक्तिमें होना, सीधे खड़े होना, लेटना झुककर खड़ा होना, गोल घूमना, सूचि व्यूह, शकरव्यूह, अर्द्धचन्द्र व्यूह आदिका भी अभ्याससे कराना चाहिये। साथ ही हिस्सोंमें बट जाना एक दम लम्बी पंक्ति बना लेना, शस्त्रोंको एक साथ विधि-पूर्वक उठाना और रखना, लक्ष्य भेद तथा एक साथ शस्त्र चलानेकी शिक्षा देनी चाहिये ।

'सैनिकोंको व्यूहाभ्यासकी शिक्षाके लिए इन बातोंका सदैव ध्यान रखना चाहिये कि शस्त्रोंको एक साथ उठाना, उन्हें शीघ्र नीचे कर लेना संकुचित होकर अपनी रक्षा कर लेना तथा कदम मिलाते हुए सीधे या मुड़कर चलनेका अभ्यास अवश्य हो ।

'शुक्रनीति'में सैनिकोमें बार-बार अनुशासन भावना का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि प्रत्येक सैनिकको सैनिक नियमों के अन्तर्गत कार्य करना चाहिए । वह राष्ट्रविरोधी कोई कार्य न करे और राष्ट्रके शत्रुओं से कोई मित्रता भी न करे । अपने अफसरोंकी आज्ञाके बिना छावनी से बाहर अर्थात् नगरमें न जाय । साथ ही अपने अफसरोंकी आलोचना भी न करे । अपने अस्त्र-शस्त्र साथ रखे । उसे अपना भोजन तथा पानी साथ रखना चाहिये । शासनके विधानको आज्ञाका उल्लंघन करनेवाले सैनिकको मृत्युदण्ड देना चाहिये ।

शुक्रने लिखा है—सैनिकोकी गणना प्रातः और सायं दोनों समय करनी चाहिये तथा सेनामें रखते समय नाम, जाति, आयु, लम्बाई, मोटाई, निवास भूमि और प्रान्त और नगरका नाम भी लिखना चाहिये ।

आचार्य शुक्रने सैनिकोंको जुर्मानेका विरोध किया है । उन्होंने शारीरिक दण्डकी व्यवस्था दी है और निम्नलिखित अपराधोंके लिए प्राणदण्डकी सजा उपयुक्त मानी है—

(शेष अंश आगामी पृष्ठ २४३ की पाद टिप्पणी पर देखिये)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



त-दुलारि प्रभु लखन बुझवलीं। मरम सत्य भनि कर सुझवलीं॥
सत ई तकाजा करत, हे लखन। बुधि बिकार ग्रसि चलत न सुजन॥
दोस प्रहल नर, सहज सुभाव। इन्द्री कुपंथ स्वयं चलि जाव॥
पर बुध जगत क सील बँधाय। साब समाज जे नीति सुझाय॥

---

( पृष्ठ २४२ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

'जो विद्रोहियोंसे सम्बन्ध रखते हों या जो शत्रुओंकी प्रशंसा और अपने राष्ट्रके शासकोंको निन्दा करते हों।' आरामपसन्द सैनिकोंको राज्यसे निकाल देना चाहिये। उस समय भी रक्षासचिव ही युद्धमंत्री भी होता था और राष्ट्र-रक्षाके लिए वही उत्तरदायी माना जाता था।

अस्त्र-शस्त्र

भारतमें प्राचीन कालमें भी लगभग उन सभी हथियारोंका प्रयोग होता था जिन्हें आज विज्ञानकी देन माना जाता है। यहांतक कि बारूदका प्रयोग भी बराबर होता रहा है। बारूदके आविष्कारका श्रेय अरबी लोगोंको देना, इतिहासकी अज्ञानता का द्योतक है। 'शुक्रनीतिसार'में बड़े स्पष्ट शब्दोंमें बारूदके फार्मूले'का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थमें तोप, बन्दूक, गोलोंका वर्णन कई स्थानोंपर आया है। महाभारत तो इस प्रकारके अस्त्रोंके संकेतोंसे भरा पड़ा है।

महाभारतके 'शान्ति पर्वमें राज धर्मके प्रकरणमें लिखा है ( शा० अ० ६९, श्लोक ४४-४५ )—राजा को युद्ध कोट बनाकर नगरोंकी रक्षा करनी चाहिये। कोटके द्वारोंपर बड़े-बड़े यन्त्र रखवा देने चाहिये और दीवारोंपर शतघ्नियां ( तोपें ) चढ़ानी चाहिये।'

भीष्मपर्व ( अ० ९६ ) में युद्धका वर्णन करते हुए लिखा है—'रथी लोग अपने रथोंपर चढ़कर कर्णि पत्रवाले याणों और नालिकास्त्रों' ( बन्दूकों ) से वीरोंको मारकर सिंहनाद करने लगे।

द्रोण पर्व० ( अ० १५६० ) में लिखा है—'उस समय राक्षस जिनका बल सन्ध्याकाल होनेसे और भी बढ़ गया था, चारों ओरसे भारी पत्थरोंकी वर्षा कर रहे थे। लोहेके बने चक्र, भुशुण्डि तोमर, शक्ति, शूल पट्टिश और शतघ्नियां ( तोपें ) बराबर चल रही थीं।

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४४ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



करत, भन ", सुकर्म, आचार। कइ जग, निज, हित अहित विचार॥
दोसी दोस क कहि सब तेहि के। हित सुधार ते समय दे कहि के॥
सत्या ह पथ सत बलतला दें। पथ सुधार भल कहि समुझा दे॥
तबो न मान ज़ो जड़ कुभाव से। दन्ड विधान तब करे न्याय से॥

---

( पृष्ठ २४३ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

इसके बाद तोपोंका वर्णन भीष्म पर्वमें भी बार-बार आया है। साथ ही बन्दूकों और तोपोंका वर्णन द्रोणपर्व ( अ० ३०, श्लोक १६-१७ ) में भी है और 'उद्योगपर्व'में भी। ( अ० ५१, श्लोक ३ )

महाभारतके 'वनपर्व' ( अ० ४२ ) में एक विशेश प्रकारके अस्त्रका वर्णन है। लिखा है—'अशनिशस्त्र ऐसा होता था कि उसमें एक मनका गोला डाला जाता था। उसके नीचे चक्र लगे रहते थे। गोला वायुमें फूट जाता था और बड़ा धक्का पहुंचाता था उससे बादलोंकी तरह घोर नाद होता था।'

इसके बाद द्रोणपर्व ( अ० २००० ) में 'नारायण' नामक अस्त्रका वर्णन है। इसे एक प्रकारका परमाणु अस्त्र ही कहा जा सकता है। लिखा है— 'प्रथम अगले भागोंसे चलते हुए बाण प्रकट हुए और सारी दिशाओंमें फैल गये। उसके बाद तारोंकी भाँति दीप्यमान सीसे ( कार्ष्णायस ) के चमकते हुए गोले छोड़े गये। पश्चात् ४ चक्रोंवाली विचित्र प्रकारकी शतघ्नियां बड़े-बड़े गोले और ऐसे चक्र जिनकी धारें छुरे के समान तेज थीं, प्रगट हुए। वे ज्यों-ज्यों बढ़ते चले गये, त्यों-त्यों वह अस्त्र बढ़ता चला गया। उस नारायणास्त्र द्वारा सब शत्रु ऐसे मारे गये, जैसे आगने उन्हें भून दिया हो। जिस प्रकार शीतकालके चले जाने पर आग बांसको जला देती है, उसी प्रकार उस अस्त्रने भी पांडवोंकी सारी सेनाको भस्म कर दिया। इसके अतिरिक्त अंन्तर्धानास्त्र तथा 'अशिनि' नामक ऐसे अस्त्रोंका वर्णन आता है, जिसका प्रयोग अभीतक भूमण्डलपर नहीं हुआ और न उनका निर्माण ही हो सका। इनमें अशनि बारुदसे बनाया गया था और 'अन्तर्धानास्त्र' दिव्यास्त्र था। इनमें एकके निर्माता कुबेर थे और दूसरेके रुद्र।

'महाभारत' और 'शुक्रनीति'के अतिरिक्त पुराणों और स्मृति ग्रन्थोंमें भी बारूदका वर्णन आता है। ओलैंग्लेने सन् १७८९ में फ्रांसकी साहित्य परिषदमें एक निबन्ध पढ़ा था जिसमें इस बातकी पुष्टि की गयी थी और जो

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४५ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस भनि तट प आसन डँसाइ। बहु बिधि पूजि सिन्धु मन लाइ॥
अनसन कइ क बिनती कइलीं। सिन्धु पार क मारग मँगली

२० बर्निक छन्द

हे सिन्धु बिसाला दीन दयाला उर जन्तु जीव पालीला॥
नीर, निधाना, सक्ति महाना, लहर लहरि लहरीला॥

---

(पृष्ठ २४४ की पाद टिप्पणी का शेष अंश)

बैकमैनने भी अपनी पुस्तक आविष्कारोंकी दुनियांमें इसकी चर्चा की है। दोनोंने यह माना है कि अरबके लोगोने भारतीयोंसे बारूद बनाना सीखा और उनसे यूरोपके अन्य देशोने सीखा।

हमारी मनुस्मृति (अ० १०) में भी आग्नेयास्त्रोका वर्णन है और हरिवशपुरान' में भी लिखा है—

'आग्नेयमस्त्रं लब्ध्वा च भागवत् सगरो नृपः। जिगाय पृथ्वी हत्वा तालजंघान् सहैहयान।'

(हरिवंश पुराण अ० १४, श्लोक ३३)

राजा सगरने भार्गव ऋषिसे अग्न्यास्त्र प्राप्त करके सप्त तालजंघो—को मारकर सारी पृथ्वीको जीता। 'इनके अनन्तर श्री हर्षने 'नैषध' में दमयन्तीकी परिभाषा करते हुए लिखा है—

'धनुषि पञ्च बाणयोरुदिते विश्वजयाय तद्भवो।'
नालिके न तदुच्च नासिके त्वयी नाभिका विमुक्तिमाटनुयौ।'

(नैषध सर्ग २ श्लोक २८)

दमयन्तीकी दोनों भवें मदन और रतिकी भवोंके समान जान पड़ती हैं। उसकी नाकके दोनों छेद कामदेवकी बन्दूकोंके समान है जिनसे कि वह सारे संसारको जितता है।'

शुक्रनीति १९१, १९२, १९३, १९४ में अस्त्र, शस्त्रोंकी परिभाषा करते हुए लिखा है—'जो मन्त्र, मशीन या आगकी सहायता से फेंका जाता है उसे 'अस्त्र' कहते हैं। इससे भिन्न हथियारोंको शस्त्र कहते हैं। अस्त्र दो प्रकारके होते हैं—मन्त्रकी सहायतासे फेंके जानेवाले। जीतकी आशावाले

(शेष अंश आगामी पृष्ठ २४६ की पाद टिप्पणी पर देखिये)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बड़वा संथीला फेन उफनीला नीचे जल खड़लीला ॥
मदि लहरीला, रत्न रंगीला, तट दे सिर पटकीला ॥ १ ॥
बनल अपारा, प्रकृति पटारा, लाँघ न सक केउ पारा ॥
मा दल कपि रीच्छा, हिय से ईच्छा, सरन चहल निस्तारा ॥

( पृष्ठ २४५ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

राष्ट्रको यान्त्रिक अस्त्रोंका प्रयोग करना चाहिये। आकार और तीक्ष्णतासे इन अस्त्रोंके अनेक भेद हो जाते हैं।

अस्त्रोंकी परिभाषा करते हुए लिखा है—'अस्त्र दो प्रकार के होते हैं—छोटे ( बन्दूक ) और बड़े ( तोप )। नालिक अस्त्रमें एक टेढ़ी और ऊपरतक गये हुए छेदवाली नालिका होती है जो ढाई हाथ लम्बी होती है। इस अस्त्रके एक सिरेपर बिन्दु बना होता है इससे निशाना साधा जाता है। इसके नीचे एक स्थान होता है जिसमें बारूद रखा जाता है। इसपर कल द्वारा दबाव पड़नेसे आग पैदा होती है। इस अस्त्रका कुन्दा मजबूत लकड़ी का बना होता है। नालिका छेद बीचकी उंगलीके बराबर मोटा होता है, रखनेके लिये एक मजबूत धातुकी शलाका बनी होती है। इस लघु नालिका द्वारा पैदल और घुड़सवार दोनों युद्ध कर सकते हैं।

इसके बाद भी श्लोक संख्या २१९ तक, गोला बारूद और तोपोंका ही वर्णन है। तोपका वर्णन करते हुए लिखा है—

'मूल कील भ्रमाल्लक्ष्य सम सन्धान भाजि यत्।
वृहन्नालिक संस तत् काष्ठ बुध्न विनिर्मितम् ॥

अर्थात् बड़ी नालिकाके एक सिरेपर कील लगी होती है। जिसके द्वारा उसका मुंह यथेष्ट घुमाया जा सकता है। इसका दबाव मजबूत लकड़ीका बना होता है। इसे छकड़ोंपर उठाकर लकड़ पर ले जाया जाता है। युद्धमें विजय प्राप्त करने के लिय यह मुख्य साधन है।'

गोले और गोलियोंका वर्णन करते हुए 'शुक्रनीति'में लिखा है—

'गोलो लोहमयो गर्भ घुटिकः केवलोऽपिवा।
सीसस्य लघु नालाये ह्यन्तधातु भवोपिवा।'

—'तोपके गोले लोहेके होते है, यह दो प्रकारके होते।

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४७ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पाप निंफाते, जग उपकारे, करेला असुर संहारा ॥
सुर, सिया उबारे, सत्रु बिनासे, काहीं ला जा हम पारा ॥ २ ॥
मो पुरुखा पुराना, सागर नामा, सिन्धु तो लवले जहाना ॥
अस तूँ मो मीता, कुल गुन ज्ञाता, नीति, न्याय सब जाना ॥

---

( पृष्ठ २४६ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

भरा होता है दूसरेमें केवल लोहेके ही बने गोले होते हैं। बन्दूककी गोलियां सीसेकी बनायी जाती हैं। यह किसी अन्य धातुसे भी बनायी जा सकती हैं।

नालास्त्र ( तोप ) के लिए लिखा गया है लोहा या किसी अन्य मजबूत धातुसे बना होना चाहिये। इसे स्वच्छ रखना चाहिये और सशस्त्र लोगोंका इसके चारों ओर पहरा होना चाहिए। बारूद बनानेकी विधि के लिए लिखा गया है—सुवर्ची नमकके पांच हिस्से, गन्धकका एक हिस्सा और आंक स्नेही वा किसी ऐसे ही पेड़की लकड़ीके कोयलेका एक हिस्सा। कोयला लकड़ी जलाकर इस प्रकार बनाना चाहिये जिससे धुंआ न निकले। इन्हें अलग-अलग पीसकर मिलाना चाहिये। बादमें स्नेही या आकका रस मिलाकर धूपमें सुखाना चाहिये यही बन्दूकका बारूद है।

तोपके गोलेकी बारूदके लिए लिखा है—कोयला, गन्दक सुवर्ची पत्थर, हरिताल, सीसा, हिंगुल, लौहचूर्ण, कपूर, जतु नील, सरल वृक्ष के रस आदिसे भी बारूद तैयार की जाती है। तोपमें गोलोंको रखकर उन्हें आग छुआकर लक्ष्यपर फेंकते हैं।

प्राचीन भारतमें इन अस्त्रोंका प्रयोग युद्धके लिए ही नहीं, नगर-रक्षा जैसे कार्यों के लिए भी होता था। लिखा है—

'यामिकैः रक्षितो नित्यं, नालिकास्त्रैश्च संयुतः।
सुबहु दृढगुल्मश्च, सुगवाक्षप्रणालिकः ॥

नगरके चारो ओरवाली दीवारपर सदैव बन्दूक हाथमें लिये हुए मजबूत सिपाहियोंका पहरा रहना चाहिये। फिर राजा के तुरगीगणमें तोपोंको भी गिनाया गया है।

## युद्धोंके रूप और कला

प्राचीन भारतके निर्माता ऋषियोंने युद्धोके कई रूप और कलाओंका दिग्दर्शन कराया है। आचार्य शुक्रने 'धर्म-युद्ध' और 'कूट-युद्ध' में भी भेद

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४८ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रच्छक मरजादा प्रभु जल जीवा, दया, सील, खजाना ॥
दया उर लानी, पार उतारीं, पातक जगत नसाना ॥ ३ ॥

## १५ मात्रिक चौपाई

अस बिनती प्रभु बारहिं बार, बइठि सिन्धु तट करत पुकार,
कऽ अनसन दिन तीन बितब्लीं। ध्यान धारि करपुट बिनवल ॥

---

( पृष्ठ २४७ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

किया है। उन्होंने लिखा है—धर्म-युद्धमें बहुतसे नियमोंका ध्यान रखना चाहिये, परन्तु कूट-युद्धमें सब प्रकारकी धोखाबाजी क्षम्य है। उसमें केवल विजय और शत्रुनाशका ही ध्यान रखना चाहिये। कूट-युद्धके लिए आचार्यने धनका लोभ, धोखा, शत्रु सेनामें फूट सभी का आश्रय लेनेका आग्रह किया है।

आचार्य शुक्रने यहांतक लिखा है—

'उपयेषू तमो भेदः षडगुणेषु समाश्रयः।
कार्यो द्वौसवंदा तो तु नृपेण विजिगीषुणा।'

'साम, दान आदि उपायोंमें भेद और षडगुणोंमें समाश्रय सर्वोत्तम है। सब युद्धोंमें इनका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।'

आगे लिखा है—

उपायान् षडगुणान् वीक्ष्य, शत्रोः स्वस्यापि सर्वदा।
युद्धं प्राणात्यये कुर्यात्, सर्वस्वहरणे सति।
अधर्मः क्षत्रियस्यैष, यच्छय्यामरणं भवेत्।
विसृजन् श्लेष्म पित्तानि, कृपणं परिदेवयम्।

'युद्धप्रारम्भ करनेसे पूर्व अपनी शक्ति की जांच कर लेनी चाहिए। यदि शक्ति कम होतो युद्ध शुरू नहीं करना चाहिये। परन्तु एक बार युद्ध प्रारम्भ हो आनेपर फिर जब तक जरा भी शक्ति या सामर्थ्य शेष है, युद्ध बन्द नहीं करना चाहिए। क्षत्रियके लिए युद्धसे बढ़कर और कोई उत्तम कार्य नहीं। चारपाईपर पड़े-पड़े बीमारीसे हाय-हाय करते हुए मरना क्षत्रियके लिए पाप है।'

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २४९ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर न रंच जब समुद पसिजलें। ध्यान न टुक प्रभु कथ प दिहलें॥
तब रिसिाइ सर धनु धइ हांथ। उठलीं राम लखन लेइ साथ॥
तात बिना भय के कर प्रीति? बिनु स्वारथ रत के वर नीति।
सोफि अँगुरि नहिं निकसत घीव। नीति क भीति उठलि यहि नीव॥
समुन्द्र सुभाव भयंकर भ्रस्ट। जेहि से न सहुँ मो प्रगटत दुस्ट॥

---

( पृष्ठ २४८ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

उस समय सेनापति लोग व्यूहरचना अत्यन्त कुशलतासे करते थे। इनमें क्रौंच-व्यूह, श्येनव्यूह, मकरव्यूह, सूचिव्यूह, सर्वतोभद्रव्यूह, शकटव्यूह ओर सर्पव्यूह मुख्य है।

क्रौंच-व्यूह—इसमें क्रौंच पक्षीके आकारके समान सेनाको खड़ा किया जाता था। इससे व्यूहका गला पतला, पूंछ मध्यम आकारकी और पंख मोटे होते थे। यह व्यूह इसी रूपमें अग्रसर भी होता था। 'श्येनव्यूह'—यह बाजके आकारका होता था। पंख लम्बे, गला और पूंछ मध्यम और मुंह छोटा होता था। 'मकर-व्यूह'—यह मगरमच्छके आकारका। टांगें लम्बी और पतला मुंह तथा दो होंठ। 'सूचि-व्यूह'—आठ छल्लेके समान चक्कर हों, मुंह केवल एक हो। 'सर्वतोभद्रव्यूह'—इस व्यूहके आठ पासे होते है। 'शकट-व्यूह'—रथके आकारका होता था। सर्प-व्यूह—सापकी तरह कुण्डलोदार बनता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतकी प्राचीन युद्धकाल अत्यन्त विकसित थी।

## आर्यावत पटना

दि० ४ अगस्त १९६३ ई०

## प्राचीन भारतके शस्त्रास्त्र

ले०—डाक्टर सत्यप्रकाश

यद्यपि आधुनिक युद्धविज्ञानमें प्रायः सभी देशोंके प्राचीन अस्त्र-शस्त्र आज अनुपयोगी हो गये हैं किन्तु वर्तमान नवीनतम अस्त्रोंके क्रम विकास की एक उल्लेखनीय कड़ीके रूपमें प्राचीन भारतके शस्त्रोंका अध्ययन अत्यन्त रोचक एवं ज्ञानवर्धक तथ्य प्रस्तुत करता है।

"इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका" के अनुसार भारतमें आर्य जातिको प्रति इंच भूमिके लिए लड़ना पड़ा था अतः उस कालमें दोनोंही प्रकारके आयुधोंका

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २५० की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सान्ति, छमा, सरल मधु भाखन । ह्वन स सन ई गुन सद पुरुसन ॥
पर निगुनी सँग इन क प्रयोग, फल रह कि गुनि, लह असद्‌योग ॥
समुझे निगुनी तेहि असमर्थ । गुने सुनल तेहि बात हऽत्यर्थ ॥
करत जे निज क प्रसंसा डाँकि । दुस्ट, घृस्ट, घुमि सवतर हाँकि ॥
दन्डत नर सद, असद कठोर । सब भय से तेहि नमत निहोर ॥

---

( पृष्ट २४९ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

प्रयोग था । इनमें प्रहारक अस्त्रोंमें तीर-धनुष, त्रिशूल, भाला, तलवार, बर्छा, कटारी, कटार परशु, कुदाल, मुख्य थे । संरक्षक शस्त्रोंमें शिरस्त्राण, वक्षस्त्राण, अंगुलिस्त्राण, पादस्त्राण आदि थे ।

## वैदिक युगके अस्त्र

शस्त्रास्त्रोंमें तलवार और कवच का आविष्कार आर्यो द्वारा ही किया गया था क्योंकि उससे पूर्व की मोहन जोदड़ो-हड़प्पा सभ्यताके जो हथियार प्राप्त हुए हैं ( जिनमें पत्थर तांबे और कांसेके हथियार मुख्य हैं ) तलवार और कवच नहीं हैं ! उस समय धनुषबाण, भाला, कुल्हाड़ी, गदा और छुरीका प्रचलन था ।

आर्योंने युद्ध कलाके विकासमें न केवल तत्कालीन पड़ोसियों अपितु समूचे विश्वको अपनेसे पीछे छोड़ दिया । आर्योंके शस्त्रोंका वर्णन वेदोंमें दाशराज्ञ युद्ध ( ऋग्वेद ६।७५ ) से प्राप्त होता है । तदनुसार आर्य सैनिक धनुष और बाणसे सज्जित होता था । उसका धनुष मजबूत डंडे को टेढ़ा झुकाकर और दोनो सिरोंको प्रत्यंचासे मिलाकर बनाया जाता था । प्रत्यंचा ( ६।७५।११ ) गायके चमड़े की बद्धासे बनी होती थी । बाण कान तक खींच कर छोड़ा जाता था अतः उसे कर्णयोनि कहते थे । वेदमें धनुष बाणकी बड़ीको प्रशंसा की गयी है । एक सूक्तमें विषाक्त बाणका भी उल्लेख है । बादसे चन्द्रगुप्त मौर्यके समय आनेवाले यूनानी यात्री मेगास्थनीजके अनुसार भारतीय सैनिकों का धनुष आदमीकी लम्बाईके बराबर होता था । उनके तीर तीन क्यूबिट लम्बे होते थे और ढाल या वक्षस्त्राण कुछ भी उनसे रक्षा करने में असमर्थ रहते । ऋग्वेदके पांचवें मंडलमें शस्त्रसज्जित मरुतोंका वर्णन करते हुए कहा गया है कि वे सिर पर शिरस्त्राण, कन्धेपर ढाल वक्ष स्थल पर वक्षस्त्राण, पावोंमें पादत्राण हाथोंमें परशु, बर्छा और तीर धनुष लिए हुए थे ।

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २५१ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



साम नीति चलि जग केउ लखन। कीर्ति लहत, प्रकासि जस सक न ॥
न यहि नीति बरति संग्राम में, पाइ सकत केउ बिजय सहज में ॥
यह से दन्डनीय खल मानल। आ बिधि दन्ड प्रयोग क घालल ॥
समय, परिस्थिति, नीति अनुकूल। सहमत सास्त्र से सब बिधि तूल ॥
लखि मोहि समुद छमा सम्पन्न। गुनि असमर्थ मो रहत नृसंन्न[1] ॥

---

१—असन्न = नृसस = निर्भय, अत्याचारी।

(पृष्ठ २५० की पाद टिप्पणी का शेष अंश)

ऋग्वेद मंडल ६ सूत्र ७५ में इन सभी शस्त्रों का विस्तारसे वणन दिया गया है। शिरस्त्राण लोहे, तांबे या सोनेका होता था और सिर तथा मुहको ठुड्डी तक रक्षित करता था। शिरस्त्राण पहने योद्धाको शिप्रिन कहते थे। पदत्राण चमड़ेका बना होता था और तागेसे घुटने तक बँधा होता था। कवच कई धातुओं के टुकड़ोको एक साथ जोड़कर सोने से बनता था। हाथका दस्ताना प्रत्यन्चा की रगड़से रक्षा करता था। ऋग्वेद में इन्द्रके वज्रका वर्णन करते हुए एक स्थानपर कहा गया है कि इन्द्रने वृत्रके मस्तकको सौ धारवाले वज्रसे छेद डाला था। ये वज्र लोहे, सोने या हड्डीके बने होते थे। दधीचिकी हड्डी से बननेवाले वज्रकी कथा सुविदित ही है। इन शस्त्रों के अलावा अथर्ववेद में फेंककर चलाये जानेवाले अस्त्र 'दिद्यु' और गौफनेमें गोले-गोलियाँ रखकर फेंकनेके अथियार 'अशनि' का भी वर्णन है। अथर्ववेद में कई दिव्यास्त्रों का भी उल्लेख है।

## रामायण कालमें

रामायणके महायुद्धमें ऐसे विचित्र, शक्तिशाली और बहुत शस्त्रों का वर्णन मिलता है कि अकल्पनीय लगने लगता है। इस कालमें जहाँ वानरों द्वारा आदिम मानवके अस्त्रों का प्रयोग मिलता है वहाँ राक्षसों द्वारा आधुनिकतम युद्धास्त्रोंके प्रयोगके उदाहरण प्राप्त होते हैं। बानर दांत नख, लात, हाथसे या वृक्षसे हथियारों का काम लेते थे। हनुमानने वृक्ष उखाड़ कर ही मेघनादके रथको चकनाचूर कर दिया था। वानरोंके अन्य हथियार पत्थर मुदगर और मूसल थे। पर राम एवं रावणके मध्य प्रयुक्त हथियार अत्यन्त दुर्लभ थे। रावणने रामकी सेनापर स्वान कुकुट मुख, मकरमुख, सर्पमुख

(शेष अंश आगामी पृष्ठ २५२ की पाद टिप्पणी पर देखिये)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह से करां ह दप बिनास । हनि सर-सक्ति, सुबल क प्रकास ।।
सर चलते मच्छ, मगर तमाम । उतरइहें, सब बहिहें उतान ।।
सरप, जल हाथी, झुंड के झुंड । तन छति बिछति हो खन्ड क खन्ड ।।
मरि, भठि, पटिहें समुद के छाती । लघु जल जीव के कवन गिनाती[1] ।।
कहल अछोभ्य हऽ समुद जहान । पर हनि करबि बिछुब्ध महान ।।
रछत तरँग सत रखि मरज़ाद । तट सीमा से नहि बहिरात[2] ।।

१—गिनाती = गिनती, सुमार गणना । २—बहिरात = बाहर से क्रिया बनी, बाहर नहीं जाता ।

( पृष्ठ २५१ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

तथा वराहमुख जैसे ध्वंसक यन्त्रोंका प्रयोग किया था। इन अस्त्रोंके लिए ग्रिफिथ साहबका कथन है कि ये एक प्रकारके लड़ाकू (सामरिक) इञ्जन थे। इंग्लैण्डके सम्राट एडवर्ड प्रथमने चीनको घेरते समय ऋक्षमशास्त्र ( वार-वाल्फ ) का प्रयोग किया था। इनवरपर आक्रमण के समय ( केट हाउस ) तथा खा (SOW) का प्रयोग एडवर्ड तृतीयने किया था।

रामायणमें राक्षसिनियाँ भी अस्त्र शस्त्र रखती थी। रामायण कालमें शस्त्रोंकी सैकड़ों किस्में थी। धनुष भी अनेक प्रकारके थे। इसी प्रकार बाण भी विभिन्न प्रकारके थे। उस समय शब्दवेधी बाण भी थे। इसीको दशरथने श्रवण पर चलाया था। ऐसे विशेष अस्त्र भी थे जिनसे साधारण अस्त्र व्यर्थ हो जाते थे। इन्हें दिव्यास्त्र कहते थे। विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को अपने आश्रममें दिव्यास्त्र का ज्ञान कराया था जो ९ प्रकारके थे। इनमें चक्रमें दंड चक्र, धर्म चक्र, बाल चक्र, विष्णु चक्र तथा इन्द्र चक्र नामक ५ चक्र थे। अस्त्रोंमें शैवास्त्र, ब्रह्मशिरा एषीक, नारायण आग्नेय, वायव्य हय शिरोनाम तथा क्रौंच थे। गदामें मोदकी तथा शिखरी के नाम प्रसिद्ध हैं। पाशमें धर्मपाश, कालपाश और वरुणपाश थे। अशनीमें शुष्क तथा आर्द्रशनी के नाम है। शक्तिमें कंकाल और कापालके नाम हैं। १२ प्रकारके गांधर्व अस्त्र हैं तथा ९ प्रकारके पैशाच हैं। इसके अतिरिक्त वैद्याधर अस्त्र है। मेघनादने लक्ष्मणपर जो शक्ति फेंकी थी उससे आठ घंटे तक आवाज निकलती रही। रामने रावणका अन्त पैतामह अस्त्र से किया था जो पहाड़ोंको भी भेदने की क्षमता रखता था।

( शेष अंश आगामी पृष्ट २५३ की पाद टिप्पणी पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर सर हनि सीम करबि निदान । हल चल मचा उठाइ तुफान ॥
रचि क दबा सर कइलीं तयार । छुटि प्रचंड सर चलल संहार ॥
स्वर टँकोरि जग कऽ आतंकित । इन्द्र बज्र तनु कडकित, कम्पित ॥
तेज से लेहकत भभकत बान । महा वेग जल समुद धसान ॥

---

( पृष्ठ २५२ की पाद टिप्पणी का शेष अंश )

## महाभारत काल

इस कालमें शस्त्रोंके आविष्कार में और भी प्रगति हुई। महाभारतके सभी प्रमुख वीर किसी एक विशेष शस्त्रमें निष्णात थे। अर्जुन धनुष चलाने में तो भीम तथा दुर्योधन गदामें, नकुल-सहदेव तलवार चलाने में, तो कृष्ण सुदर्शन चक्रके प्रयोग में। महाभारत कालमें युद्ध शास्त्रकी विधिवत पढ़ाई पढ़ाई होती थी। गुरु द्रोणाचार्य इस शास्त्रके आचार्य थे और वे सभी युद्धास्त्रोंके ज्ञानमें पारंगत थे। महाभारत कालमें बाणके अद्भुत प्रयोग मिलते हैं। इस कालमें विशेष अस्त्रोंका भी प्रयोग मिलता है। अर्जुनने विराट पर्वमें द्रोण कर्ण, भीष्म, कृपाचार्य, अश्वत्थामाके सम्मिलित आक्रमण को ऐन्द्रास्त्रसे निष्फल कर दिया था। अर्जुन ऐन्द्रास्त्रके अलावा पाशुपतास्त्र तथा संमोहन अस्त्रसे भी परिचित थे। अनुमान किया जाता है कि पाशुपतास्त्र एक छोटा-मोटा बम ही था। संमोहन अस्त्र एक प्रकार की विषैली गैस छोड़नेवाला अस्त्र था जिससे सभी मूर्च्छित हो जाते थे।

महाभारतके उद्योग पर्वमें निम्न शस्त्रोंका भी उल्लेख है—१–शत्रुका केश पकड़ कर दूर फेंकने वाला २–उबलता हुआ तेल, गुड़ और बालू फेंकने वाला, ३–सांपोंसे भरे घड़े फेंकने वाला, ४–राल-द्रव्य फेंकने वाला, ५–पत्थर, तलवार, छुरी तथा गर्म गोले एक साथ शत्रुपर फेंकने वाला, ६–रामायण काल की शक्ति जैसा अस्त्र से कर्ण और घटोत्कचमें शक्ति युद्ध हुआ था।

## तोपका प्रारम्भिक रूप

महाभारतमें शाल्व जब कृष्ण की अनुपस्थितिमें द्वारकापर चढ़ आया था तो उसके पास कई नवीन आविष्कृत अस्त्र थे। इनमें एक युद्धयंत्र मृगिका जैसा था जिससे बड़े बड़े पत्थरोंकी चट्टाने सहजमें फेंकी जाती थी।

( शेष अंश आगामी पृष्ठ २५४ पर देखिये )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तब रुप लहरि भयंकर धरि। प्रलय तुफान महा हहूकारि।
तरँग माल, समुद उठि खडतल। अंधकार क धूँआ उठवल॥
जीव जन्तु मरि भइलि बेहाल। दानव दसा पताल[1] कुहाल॥

१—इसी सर्ग के पृष्ठ २३६ से २५४ तक के पाद टिप्पणी में अन्य विद्वानों के लेख का उदाहरण देकर के प्रतिपादित किया गया है कि राम काल में विस्फोटक अस्त्रों का प्रयोग होता था। यहां वाल्मीक रामायण के सुन्दर काण्ड २१ और २२ सर्गों में राम द्वारा जिन शक्त्यास्त्रों का प्रयोग समुन्द्र के ऊपर मार्ग न देने पर किया गया है उनकी प्रतिक्रियाओं का जो वर्णन है उससे भी स्पष्ट हो जाता है कि उन अस्त्र-प्रयोगो का प्रभाव आज के अणु बम के बिध्वंसक प्रतिक्रियाओं के समान ही होता था। मैं ऐतिहासिकता की रक्षा हेतु उस वर्णन में वाल्मीक रामायण के सुन्दर काण्ड के इक्कीस और बाइस सर्गों के श्लोकों का ही यहाँ अविकल अनुवाद इन चौपाई में दे रहा हूँ। जिससे पाठकों को स्वयं इस सम्बन्ध में विचार करने का अवसर मिल सकें।

१—दानव दसा पताल = पाताल पुरी में भी दानवों की दशा बुरी हो गयी।

पृष्ट २५३ को पाद टिप्पणी का शेषांश

इस यन्त्र को आधुनिक तोप का पूर्वरूप कह सकते हैं जिससे बम के आकार के गोल पत्थर फेंके जाते थे।

महाभारत के टीकाकार नीलकंठ ने मृगिकाकी व्याख्या "गोलकानां उत्क्षेपण यन्त्राणि" गोले गिराने वाली मशीन के रूपमें किया है। बंदूक की गोली की तरह पत्थर फेंकने की कला भी प्रचलित थी। उसमें ढेलवांस पर पत्थर रखकर शत्रुपर फेंके जाते थे। इनका निशाना अचूक होता था। इससे शत्रुके अंग-प्रत्यंग क्षत-विक्षत कर दिये जाते तथा बात को बात में उसकी आँख फोड़ दी जाती। और इस प्रकार का प्रयोग आज भी नागा मुंडा और उरांव जाति में मिलता है। पर पत्थर फेंकने के यन्त्रों में शाल्व ने सर्वाधिक सफलता पाई थी। शाल्व ने इसके लिए ऐसे यन्त्र बनाये थे जिनसे बड़ी-बड़ी चट्टानें द्वारकापर गिराकर उसे नष्ट कर दिया था।

महाभारत के बहुत समय बाद इस प्रकार की तोपों का पुनः उपयोग अजातशत्रु के समय में प्राप्त होता है। ५५० ईस्वी पूर्व में अशोक महान के पिता अजातशत्रुने लिच्छवियों पर जो आक्रमण किये थे उनका हवाला जैन ग्रन्थों में दिया गया है। तदनुसार अजातशत्रु के पास दो विशेष युद्ध-यत्र थे। इनके नाम महाशिलाकंटक तथा रसमुसल थे। सधन्य वाद उद्धृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



परवत जल जनु उठल अकास[1] । ढे़के ढ़ेरिमें करत हहास ॥
लगलें सब घुमि चक्कर काटे । मछ, कछ, ग्राह लगलन घाटे[2] ॥
जल सर चलत कोलाहल बढ़ल । जीव-जन्तु सब तड़पि क मरल ॥
दुसर भयंकर अन वेगवान । पुनि रिसि राम कइल संधान ॥
लछुमन उछलि के पास अवलें । 'वस-बस अब नहिं' द्राव क कहलें ॥
कहत असत धऽ धनुहा थम्हलें । 'रवाँ भाग्य बीर हइँ' भनलें ॥
बिनु बिध्वँस सिध काज जो जाय । युक्ति सुखद जो अन मिलि जाय ॥
जे जनगन भल होइ क हिताय । रहे काल तक करत सहाय ॥
गुनि अस कुछ कइल जा उपाय । जीव लाखों कत मरत दुखाय ॥
नभ से सुर भी असहीं भखलें । 'अब नहिं अब नहीं' स्वर दुहरवलें ॥
त-रुकि समुद वोधि प्रभु कहलें । रहबि न आजु तो बिनु सुखवलें ॥
हे सागर, जल-रासि तो सगरो । झट सुखइहि हनि सक्ति दुसरी ॥
होइहें नस्ट जीव तो सगरी । जल नसाय बालुका बगरी ॥
भनि अस ले ब्रह्मदण्ड समान । सर, ब्रह्मास्त्र से मन्त्रि क राम ॥
रखि निज धनुस चढ़ाइ छड़लें । तेहि प्रभाव पृथिवी नभ फटलें ॥
गिरि हिलि, सगर अन्हार छपलें । दिसा ज्ञान सब सहजे भुललें ॥
सर सरिता सरोवर हलचल । सूर्य्य,चन्द्र तीयंक गति रूकल ॥
अछत सूर्य तम नभमें छवलसि । हा हा कार भनि सब उठलसि ॥
उलका जरि सयकड़न उठलीं । गड़गड़ाइ बिज्जु नभ फटलीं ॥
परिवह नाम भेद समीर । उडवत घन तरु तुरि ससरीर ॥
वहि क बेग टकरा गिर सीखर । खन्ड-खन्ड करि गिरवे महि पर ॥
वज्र विसाल गगन टकराइल । गड़गड़ाइ गिरि बिज्जु छिटाइल ॥
लख अलख जीव कड़का समान । कड़कि, कराहि क सब्द करान ॥
कितुना मरलन, कितुना गिरलन । कितनन डरि घबड़ाइ भगलन ॥
घोरि रव उठि सिन्धु झटपट । प्रलय बेग सम सहसा अटपट ॥

---

१—पर्वत की तरह ढ़ेरकी ढ़ेर में जल इकट्ठे होकर आकाश की ओर उठने लगे और विकराल स्वर होने लगे ।

२—इस तरह सम्पूर्ण जलराशि घूम-घूम कर चक्कर काटने लगी और मछली, कछुए उसमें मरने लगे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लाँघि सीमतट जोजन आगे। सिन्धु लहरि तीव्र गति भागे¹ ॥
तबो रामजी जहाँ के वहवाँ। अचल,अडिग रह खाढ़ उहँवाँ ॥
तब होइ सभय बिदरूप बनल। लहरिं क बीच से काँपत डरल ॥
मूर्तिमान सिन्धु हो प्रगटल। हाथ जोरि, त्राहि कहि बोखल ॥

## २२-बर्निक छन्द

अगम तो महीसा, कर्ति गरिमा, नेति नेति स्रुति बेद भने।
ब्राह्मा-ड सजावा, नियम बँधावा, बिबिध सक्ति रत कर्म रमें ॥१॥
जोगी मुनि ज्ञानी परम बिरागी, बुधिबल थकि सब सीस नमें।
माया गुन ज्ञानातीत महाना, लखि कीरति गुन चित भरमें ॥
जगती तो लीला ज्ञानातीता, प्रकृति पुरुस जीव अलख रहे।
इन्द्री जड़ताई करम कमाई, अहँ बुद्धि नित निरत रहें ॥
तत्व त माया गुन प्रभावा, करमत नित फल फँसल रहें।
फल तूँ दायक कर्म बिधायक, पाप पुन्य नित लखत रहे ॥२॥
तो कृपा सहारा सब उबारा, अछल त्राहि कहि पद जे गिरे।
तो दया महाना करुन खजाना, अगम लीला नहिं समुझि परे ॥
प्रभु अघी के तारीं दया प्रमानीं, दर्प ढ़म्भ बुधि टूटलि फिरे।
सरनमें बानी हत अभिमानी, अब आरत पद सीस गिरे ॥३॥

---

१-२-इन दोनों चौपाइयों में, जो बाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड के सर्ग २२ के श्लोक १४.१५,१६ के अविरल अनुवाद हैं स्पष्ट है कि ऐसे शस्त्रास्त्र का प्रयोग करके राम उसके प्रभाव से अपने कुप्रभाव से अवने तथा अपनी सेनाको बचाये रहे यद्यपि उसी शक्त्यास्त्र -अस्त्र के कुप्रभाव से उनके ही सामने समुद्र का विध्वंस हो रहा था और उसका जल बारह कोस की सीमा से, ऊपर बह कर चला आया था। आज के ऐटम बम के प्रयोग में प्रहारक को फेककर या हवाई जहाज से भागना पड़ता है। उसके प्रभाव को रोकने का अविष्कार अब तक नहीं हुआ है पर रामके उस शक्ति-शस्त्र से, जिसका प्रभाव ठीक-ठीक वर्तमान अणु-बम के समान ही विध्वंसक तथा अपने को बचाने की विधि का ज्ञान राम को था। तभी उनकी सेना तथा वे सुरक्षित रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## मात्रिक चौपाई

अस बिनीति, कह जोरि दुनू कर। त्रहि नाथ! मोहि अनत न ठवर॥
भूल चूक जे दहीं भुलाई। करी कबूल दास सेवकाई॥
छमीं, अकिल अपराध लमहर। करीं कृपा किंकर प धरि कर॥
एक दोस न सकलें बिनासीं। जन्तु जे उदर मों रह निवासी॥
घटत हईं त कईं दल पार। होंय ऊ जीव बेकार सँहार॥
भा प्रभु, नल बिसुकरमा पूत। सिल्प-ज्ञान; बड़का अवधूत॥
सहजे सेतु के बाँधि सकेलें। प्रभु अदेस के आस तकेलें॥
सिला, मसाला, जन-बल लभ्य। ज्ञान, विज्ञान त नर बुधि, सभ्य॥
प्रभु के कृपा ऊपर से बड़ुए। मोर दर्प भी टूटले हउए॥
सब अनुकूल नाथ मो राय। दीं आज्ञा कि सेतु बँधाय॥
दैव योग संजोग जुटलें। प्रभु ~~चलले~~ अस सेतु बँधलें॥
त-प्रभु, अस मोहि बाँधि क सेतु। सिन्धु लाँघि दल करे रिपु सेसु॥
अस भनि सिन्धु सीस नववलें। कर कंपित मुख बचन कढ़वलें॥
लखि उठि दया भाव सरनागत। गिरल समुद्र क सुनत पुकारत॥
भइली विवस राम रिसि मेंटि। उतरल धनुहा फुरि निज टेक॥
द्रवित हृदय प्रभु समुद सरहलीं। दरप तूरि तेहि सरन ग्रहलीं॥
अभय देइ तेहि विदा दे तोखली। सेतु सिन्धु बिधि बँधे अदसलीं॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम-दलीपपुर, परगना-बिहिआ, जिला-साहाबाद, सूबा-बिहार, बिरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के अठारहवाँ सरग सम्पूरन भइल। सम्पूरन तिथि सुद्ध कुआर सुदी दसहरा सन्बत् २०२० विक्रमी, तदनुसार २८ अक्तूबर १९६३ ई०, दिन सोमवार

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साहित्य रामायन

( स्वतन्त्र )

( आधार वाल्मीकीआ–तुलसीकृत कल अन्य रामायन )

( भाखा–भोजपुरी )

रचयिता—महाराजकुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
ग्राम—दलीपपुर, परगनो बिहिआ, जिला—सांहाबाद,
सूबा –बिहार।

## सुन्दर कान्ड

### उन्नीसवां सरग

प्रारम्भ तिथि-कातिक सुक्ल पख ६ सोमबार, सम्वत २०२० विक्रमी तदनुसार २५ नवम्बर १९६३ ई०।

लंका से विभीखन का चल आइला पर रावन के सारदूल नाम कें सेनापति का सलाह से सुक नाम के मन्त्री के दूतबना के राम के सेना के बल जाने खाती आ सुग्रीव के समुझा-बुझा के राम के खिलाफ कर के उन्हकर साथ छोड़ देबे पर राजी करे खाती भेजल। सुक के सुग्गा बनि के समुद्र पार उड़ि के आइल आ राम का सेना में गुप्तरूप से भेद लेल आ तब सुग्रीव के पास जाके रावन के सन्देस सुनावल। सुग्रीव के सुक के पकड़ के नाक, कान काटे के हुकुम देल आ सुक के चिला के राम के सरन गइल। रामके छमा देल आ सुकन्ठ के सुक कें रावन के समुझावे के कहि के भेजल। सुक रावन सम्बाद—सुक के सीता के वापिस करे के राय देल आ रावन के लात मार के सुक के देस निकासन के हुकुम देल। सुक के राम पास आइल। अपना आपके हाल कहल आ वर पाके आपना आश्रम गइल। सेना के पुल बांधल आ राम के सेना साथ सिन्धु पार कइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## मात्रिक चौपाई

उत रावन सलाहि सुर दूल। भेजलसि नीति चतुर सुक दूत॥
गुपुत रूप बलि राम के देखे। सैन्य सक्ति अनुपात निरेखे॥
आ बुझाई सुकन्ठ के डेरे। भेद बरति बल राम क तोरे॥
कहलसि बात सुकन्ठ सिखावन। कसहूँ जोगि राम दुरावन॥
ए रूपधई सुक उड़ले पार। घुसले सेना राम अपार॥
सेना सब लखि बल समुझले। मनही राम अजेय तेहि मनले॥
तब सुकन्ठ सहुँ जा बइठले। बोलि मीठ सनेस सुनबले॥
रिपु-सनेस सुनि भेद सुकन्ठ। जानि गुप्तचर चतुर उदन्ड॥
दन्ड अदेस पकड़ि क दिहले। नाक, कान काटन क कहले॥
कपि सुकध, जब दन्डे चलले। त्राहि त्राहि भनि प्रभु पुकरले॥
सुनि प्रभु आरत दीन बचना। ढ़िग बुलाइ सुकन्ठ क अपना॥
छमा करे कर राय दिहलीं। दूत अवध्य कहि क बुझवलीं॥
प्रभु उदारता लखि सुक अइसन। परि चरनन प कइलसि बन्दन॥
त-सुकन्ठ रिपु उत्तर दिहलें। सुक रावन बुझावन कहलें॥
निहचय नास दसानन मनले। साथ विनास असुर क कहले॥
रहत समय सिय देन सलहले। विमुख दसानन मरन भखले॥
दे सुक मुक्ति दान अस भेजले। जे सहुँ रावन आ सब कथले॥
एह बिधि बात साँच सब कहि के। राम अजेय सत बल कथि के॥
रावन कुपथ राम सुमारग। कहि सलाहि सुक बिधि निरापद॥
सिय देन बहु भाँति सलहलसि। नहि त लंक-विनास भखलसि॥
सुनि रावन सुक-दूत बयान। जरि भुनि क्रोधि क भइल मसान॥
बहुत तरह बकि झकि रिसिआइ। कथि, कथ, अकथ फेनु गरिआइ॥
हनि पद सुक क देलसि निकासि। फेनु गरबि बहु कथलसि हाँसि॥
चुप बनि सुनि, सुक देस निकास। जे कठोर नृप आज्ञा भास॥
गवँ नृप नमि उहाँ से चलले। लंक तेजि राम दिग उड़ले॥
अब ते त्राहि क गिरले चरना। कथा बिसेखि क कथले बचना॥
असुर-पाप-सर डूबत रहलीं। प्रभु किरिपा तेहि तरि उतरलीं॥
साप अरत असुर जनमलीं। पाइ समय प्रभु पातक नसलीं॥
भइल कृपा तें ज्ञान पहिलका। करीं कृपा जे सुधरे जविका॥
सुनि प्रभु एवमस्तु कहि हँसलें। आसब मुदि निज आस्रम भेजले॥
तब दल बाँधे सेतु दौड़ल। टिड्डो झुण्ड समुद्र जनु छापल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गिरि परवतसे वड़बड़ ढोका लाइ लाइ दे नल कर नीका ॥
जे नल ले झट पुल बइठावसु । बात बात में सेतु सजावसु ॥
नायक बलीं पहाड़ उखाड़ि । लानसु सहुएँ नल क ... ड़ि ॥
जे नल उठा नापि जल राखसु । सहज जोरि दृढ़ भीति ... वसु ॥
बिच-बिच खंभ बिरचि क जोड़ले । सुदृढ़ ... न मोट ... ढलले ॥
तिन पर जुड़ल खिल... ... ताँ । सूत ... में नपल तू... ॥
रचल सत जोजन के अस सेतु । प्रभु अह्वानि सिव पुजलीं वेद ॥
सुन्दर प्रतिभा सिव असथली । सेतु रामेस्वर नाम ते दिहली ॥
अस विधि सास्त्र थापि सिव पूजि । देग दिगंत जस कीर्ति गूँजि ॥
प्रभु अदेस दिहलीं रन कूँच । डंका बजि रव घहरल ऊँच ॥
नभ में सुर दुन्दुभी फुँकले । बरसि फूल महि ढकि ढकि दिहले ॥
घड़ियाल संख विविधरन बजना । तूरही धूँधुक ढोल दमामा ॥
सिघा, तासा, डफ करतार । बंसुरी बीन मृदंग सितार ॥
झाल, मजीरा, त डफला ढढ़ । बजावत दल चल लंका गढ़ ॥
उत जल समुद जीव असंख । मुदि क वजाइँ हरखले संख ॥
चीखत, गरजत, फारि अकास । ललकारत दल करत हहास ॥
कूदि फादि हहकारि क आगु । महाप्रलय जबु अंधड़ जागु ॥
कपिदल बढ़लें पुल प निसंक । उत लंका भर मचल अतंक ॥
सिन्धु पार सुवेल पहुँचलें । दल आज्ञा पड़ाव प्रभु दिहलें ॥

यह तरह महाराज कुमार श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ग्राम—दलीपपुर, परगना—बिहिआ, जिला—साहाबाद, सूबा – बिहार, बिरचित साहित्य-रामायन के सुन्दर कान्ड के उन्नीसवाँ सरग सम्पूरन भइल । सम्पूरन तिथि सुद्ध कार्तिक सम्बत् २०२० बिक्रमी, तदनुसार २५ नवम्बर १९६३ ईस्वी, दिन सोमवार ।

सुन्दर कान्ड के प्रारम्भ अगहन सुक्ल पख २ सम्बत २०१९ विक्रमी तदनुसार २९ नवम्बर १९६२ ईसवी मंगलके भइल रहे । त-एह तरह एक बरिस ६ दिन में अवकास का समयमें समय-समय पर लिखा के ई सुन्दर कान्ड सम्पूरन भइल ।

जे यह कान्ड के मन-बच, करमना श्रद्धा या भक्ति साथ नित पाठ करी तेकरा मन वाञ्छित फल यह संसार में मिली आ भगवत कृपासे परलोकमें सद्गति होखी ।

इति सुन्दरकाण्डे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.